CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

10.3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य दण्डी स्वामी श्री १०८ ...करानन्द सरस्वती ...ोरीमठ वाराणसी

ॐ

...गुरु कृत कल्पतरु

विश्वगुरु-प्रार्थना

...पूरण परमात्मा, पावन हों जीवात्मा ।
...विश्व बने धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ॥

✻

अनन्त श्री विभूषित योगेश्वर
...जी महाराज महामण्डलेश्वर को सादर भेंट
त्वदीयं ग्रन्थ गुरुदेव तुभ्यमेव समर्पये

...हित भेंट करते हैं, कर कमलों में हम सब आज ।
...कार अनुग्रह कीजे, श्री विश्वगुरु जी महाराज ॥

भेंटकर्त्ता
...श्वर विश्वगुरु मुनीशानन्द ट्रस्ट वेद निकेतन धाम
...र पोस्ट-स्वर्गाश्रम ऋषिकेश (हिमालय) फोन—२७९

...३

मूल्य ५ रु० केवल
(डाकव्यय अलग)

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

॥ पूज्य सन्तों की पावन वाणी के प्रसाद

० अनमोल बोल—नव रत्न ०

१—पूज्यपाद ब्रह्मलीन श्री एकरसानन्द सरस्वती जी महा
अखण्ड पुरुषार्थ करो गंगा प्रवाहवत् आलसी मत बनो।

२—पूज्यपाद ब्रह्मलीन श्री हीरानन्द सरस्वती जी महाराज
आसक्ति के त्याग और सत्य के ग्रहण में ही आत्मोन्नति

३—पूज्यपाद ब्रह्मलीन श्री विद्यानन्द जी सरस्वती [भोले
है श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ तू पर चाह करके भ्रष्ट है।

४—पूज्यपाद महामण्डलेश्वर श्री शुकदेवानन्द सरस्वती जी
परमार्थ निकेतन-ऋषिकेश [हिमालय]
दैवी सम्पदाओं के गुणों का ग्रहण तथा आसुरी सम्पदाओं
ही चरित्र सुधार व राम राज्य का निर्माण होगा।

५—पूज्यपाद श्री पथिक जी महाराज, लखनऊ
सुखासक्ति के कारण ही समस्त दोषों का जन्म होता है

६—पूज्यपाद श्री अखंडानन्द सरस्वती जी महाराज, बम्बई
निन्दा की परवाह न करना बहादुरी हो सकती हैं, पर
मीठा जहर पचा लेना उससे भी बड़ी बहादुरी है।

७—पूज्यपाद श्री शंकर देव मुनि परमहंस जी महाराज [
जब मानव हृदय की सब कामनायें समाप्त हो जाती
तब वह मर्त्य धर्मा प्राणी अमर बन जाता है।

८—पूज्यपाद श्री शान्तानन्द जी महाराज उदासीनाश्रम पु
शंकर भगवान के सदृश मस्तक में शान्ति रूपी चन्द्रमा
तभी सुख शाँति मिलेगी।

९—पूज्यपाद संत श्री सच्चे बाबा जी महाराज प्रयागराज
अपने आपको वस्तुतः पूर्णतः तथा यथार्थतः जानना ही

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वावतपुर मगारी - निज़ननपुर २११७
रामप्रसाद सिंह बसनी - बतरा
स्कूलके

विषय–सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
१	प्रस्तावना (भूमिका)	१७
२	शुभाशीर्वाद विश्वगुरुजी का	२३
३	इस ग्रन्थ में क्या है ?	२४
४	विश्व के प्रति सद्भावना	२५
५	विशेष सूचना	२६
६	जीवन की संक्षिप्त झांकी	२७
७	विश्वगुरु जीवन चरित्र	२९
८	गुरु स्तुति	३२
९	मंगलाचरण सरस्वती पूजनम्	३३
१०	विश्वगुरुजी कृत स्तुति	३४
११	हुआ आज बीमार मैं (पद्य)	३४
१२	प्रबल प्रेम के पाले पड़कर ,,	३५
१३	प्रेम का भूखा हूं मैं ,,	३६
१४	श्री रामचरित मानस महिमा	३७
१५	श्री रामायण जी के पाठ के अद्भुत चमत्कार	४२
१६	मानसमंत्र सिद्ध करने की विधि	४६
१७	अन्य आवश्यकीय बात	४७
१८	रक्षारेखा मंत्र	४९
१९	पालनीय नियम	५१

श्री रामायण जी की मंत्र सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
१	विपत्ति नाश के लिए मंत्र	५३
२	कठिन क्लेश दूर करने को	५४
३	विघ्न व खेद नाश के लिए	५४
४	महामारी हैजा आदि के लिए	५४
५	उपद्रवों तथा रोगों की शान्ति	५४
६	संकट नाश के लिए	५४
७	विष नाश के लिए	५५
८	मस्तिष्क पीड़ा (सिरदर्द) को	५५
९	भूत भगाने के लिए	५५
१०	नजर झाड़ने के लिए	५५
११	खोई हुई वस्तु पाने के लिए	५५
१२	जीविका प्राप्त करने के लिए	५५
१३	दरिद्रता दूर करने के लिए	५५
१४	सुख सम्पत्ति के लिए	५६
१५	लक्ष्मी व सुख प्राप्ति के लिए	५६
१६	पुत्र प्राप्त करने के लिए	५६
१७	विवाह के लिए	५६
१८	शत्रुता नाश के लिए	५६
१९	शास्त्रार्थ में विजय के लिए	५६
२०	यात्रा की सफलता के लिए	५६
२१	यात्रा व उद्योग की सफलता	५६
२२	मनोरथ सिद्धि के लिए	५७
२३	शत्रु का सामना करने को	५७
२४	मुकदमा जीतने के लिए	५७
२५	परीक्षा में उत्तीर्ण होने को	५७
२६	आकर्षण (प्रेम) के लिए	५७
२७	शत्रु से मित्रता के लिए	५८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

संख्या	विषय	पृष्ठ
२८	विद्या प्राप्ति के लिए	५८
२९	सन्देह नाश के लिए	५८
३०	ईश्वर से अपराधों की क्षमा	५८
३१	विरक्ति के लिए	५८
३२	ज्ञान व भक्ति प्राप्ति के लिए	५८
३३	श्रीहनुमानजी की प्रसन्नता को	५९
३४	सीता के दर्शन के लिए	५९
३५	श्री रामजी को वश करने को	५९
३६	प्रेम बढ़ाने के लिए	५९
३७	कातर की रक्षा के लिए	५९
३८	विचार शुद्धि के लिए	५९
३९	सुख पूर्वक मरने के लिए	५९
४०	सब सुख प्राप्ति के लिए	६०
४१	कुशल क्षेम के लिए	६०
४२	ऋद्धि सिद्धि प्राप्ति को	६०
४३	मोहित करने के लिए	६०
४४	भय से बचने के लिए	६०
४५	अपवाद दूर करने को	६०
४६	कार्य सिद्ध करने के लिए	६०
४७	आभूषण प्राप्त करने को	६०
४८	अकाल मृत्यु निवारण को	६१
४९	वशीकरण के लिए	६१
५०	तिजारी ज्वर नाश करने को	६१
५१	वर्षा कराने के लिए	६१
५२	श्रीरामजी के प्रत्यक्ष दर्शन को	६१
५३	श्रीरामजी की पराभक्ति को	६१
५४	भक्ति की वृद्धि के लिए	६२
५५	प्रभुदर्शनों की व्याकुलता को	६२
५६	पापों के नाश के लिए	६२
५७	वैराग्य के लिए	६२
५८	गुप्त मनोरथ सिद्ध करने को	६२
५९	शंकर जी की प्रसन्नता को	६३
६०	मंगल व जीवन सुधार के लिए	६३
६१	तिजारी बुखार के लिए	६३
६२	पुत्र प्राप्ति की दूसरी विधि	६३
६६	गिरिजा की प्रसन्नता को	६३
६४	स्नान व उत्सव फल के लिए	६४
६५	श्रीगंगाजी की प्रसन्नता को	६४
६६	कृपा दृष्टि के लिए	६४
६७	विवाह की दूसरी रीति	६४
६८	कामवासना नाश के लिए	६४
६९	भवभीर नाश के लिए	६४
७०	सुन्दर काण्ड की पाठ विधि	६५
७१	ऋण (कर्ज) से छूटने को	६५
७२	रक्षा रेखा मंत्र	६५
७३	शत्रु नाश के लिये	६६
७४	मोह नाश व रोग नाशके लिए	६६
७५	कथामें श्रद्धा बढ़ाने को	६६
७६	यात्रा सिद्धि के लिए	६६
७७	रामचरित मानस सिद्धि को	६६
७८	दुर्भाग्य दूर करने को	६६
७९	मोक्ष प्राप्ति के लिए	६६
८०	पुत्र प्राप्ति की सरल विधि	६६
८१	विवाह व सर्विस के लिए	६७
८२	सौभाग्य व सुख के लिए	६८
८३	कन्या को वर प्राप्ति के लिए	६८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संख्या	विषय	पृष्ठ
८४	सन्तान नष्ट न होने को	६९
८५	गर्भ में न मरने का उपाय	७०
८६	अकाल मृत्यु रोकने को	७०
८७	शोक दूर करने के लिए	७०
८८	दु;ख दूर करने के लिए	७०
८९	रोग नाश की उत्तम विधि	७०
९०	रामायण श्री रामतनु	७०
९१	श्री रामायणजी की आरती	७२
	श्री गीताजी की महिमा	७३
१	सब धर्म लौकिक त्यागकर	७४
२	स्वर्ग जिमि लोकन में	७५
३	कैसा अपकर्ष पा रहा है	७६
४	कार्पण्य दोषोपहत: की पद्य	७६
५	कृतकृत्य हुए वे लोग जिन्हें	७६
६	उज्जवल नव पंखों पर	७७
७	होता जो न युद्ध महाभारत	७७
८	पारथ की मानस बसुन्धरा को	७८
९	पाके दिव्य दृष्टि देखा अर्जुन	७८
१०	मोह को मिटाती	७९
११	गीता का प्रचार यदि देश में	७९
१२	मर्म जिसमें है कर्मयोगी	७९
१३	कलिकाल कलेशन काटि	८०
१४	छन्द गीता हृदय भगवान का	८०
१५	गीता जी के पाठ से सिद्धि	८१
१६	सर्व कामना सिद्धि की विधि	८१
१७	मोक्ष प्राप्ति के लिए	८२
१८	लक्ष्मी प्राप्ति के लिए	८३
१९	विवाह व सन्तान के लिए	८४
२०	सभी बाधा निवारण को	८४
२१	अन्नपूर्णा सिधि के लिए	८५
२२	भय व भूत नाशक मन्त्र	८५
२३	श्री गीता जी की आरती	८६
	नित्योपयोगी मन्त्र	
	प्रात: काल की दैनिक प्रार्थना	८७
१	मनसा ध्यायतेऽति मन्त्र	८८
२	विशेष चमत्कारी ,,	८८
३	दिव्य दृष्टि का मंत्र	८९
४	दिव्य दृष्टि काजल विधि	९०
५	गायत्री शाप मोचन प्रार्थना	९०
६	प्रात: कर दर्शन मन्त्र	९१
७	पृथ्वी पर पैर रखने का मंत्र	९१
८	शौच जाने का मन्त्र	९२
९	दाँतुन का मन्त्र	९२
१०	बाल बनाने,तेल मर्दनकेनियम	९२
११	स्नान मन्त्र	९२
१२	सूर्य अर्घ्य मन्त्र	९२
१३	आसन शुद्धि मन्त्र	९२
१४	चरणामृत मंत्र	९२
१५	चन्द्रमा को अर्घ्य का मन्त्र	९३
१६	मन्त्र तिलक करने का	९३
१७	मन्त्र माला सिद्धि का	९३
१८	मन्त्र सूर्य दर्शन	९३
१९	मन्त्र यज्ञोपवीत धारण का	९३
२०	मन्त्र यज्ञोपवीत त्याग का	९३
२१	प्रात: ब्रह्म चिन्तन	९३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
२२	गायत्री मंत्र	९४
२३	वेद मन्त्र	९५
२४	भजन व तुलसीस्तुतिकरने के	९९
२५	मन्त्र तुलसी तोड़ने का	९९
२६	मन्त्र शंख पूजन व प्रदक्षिणा	९९
२७	मन्त्र नवग्रह शान्ति का	१००
२८	मन्त्र महामृत्युन्जय	१००
२९	मन्त्र गणेश वंदना	१००
३०	मन्त्र गुरु स्तुति	१००
३१	मन्त्र कमण्डल शुद्धि का	१००
३२	मन्त्रशान्ति वस्वस्ति वाचन	१००
३३	मन्त्र बुद्धि वर्धक	१०१
३४	मन्त्र अन्नपूर्णा सिद्धि	१०१
३५	मन्त्र भोग लगाने का	१०१
३६	मन्त्र अग्नि जिमाने का	१०१
३७	मन्त्र शिखा बाँधने का	१०१
३८	मन्त्र भोजन से पूर्व का	१०१
३९	मन्त्र पाचन शक्ति का	१०२
४०	मन्त्र सायं दीप स्तुति	१०२
४१	मन्त्र क्षमा प्रार्थना का	१०२
४२	मन्त्र पीपल सम्बन्धी	१०२
४३	मन्त्र पीपल पूजन का	१०३
४४	,, शयन का	१०३
४५	स्वप्न रोकने का मन्त्र	१०३
४६	हिंसा के पाँच स्थान	१०३
४७	हिंसा निवृति के पंच यज्ञ	१०३
४८	गंगा जी की व वेद स्तुति	१०४
४९	वैदिक शांति पाठ	१०४
५०	ऋग्वेद मंत्र का प्रमाण	१०८
५१	मन्त्र काम जीतने का	१०९
५२	,, निद्रा जीतने का	१०९
५३	मन्त्र सरस्वती सिद्धि का	१०९
५४	,, दुर्गा गायत्री	१०९
५५	,, कान की पीर का	१०९
५६	,, संपुटित महा मृत्युन्जय	११०
५७	,, सप्तर्षि व उनकी पत्नियाँ	१११
५८	श्री गणेश कवच	१११
५९	काली कवचम्	११३
६०	काली स्तुति, शीतला स्तुति	११५
६१	चामुण्डा मंत्र, दुर्गा कवचम्	११५
६२	सरस्वती कवचम्	११७
६३	नाद ध्वनि खोलने का मन्त्र	११९
६४	संतान के लिए गोपाल मंत्र	१२०
६५	नेत्र ज्योति मन्त्र	१२०
६६	विद्या बुद्धि के लिए	१२०
६७	महामन्त्र भगवती	१२१
६८	घण्टा कर्ण का मन्त्र	१२१
६९	चाक्षुसी विद्या	१२१
७०	कनक धारा स्त्रोत	१२२
७१	आवश्यक सूचना	१२९
७२	संकल्प व पूजन विधि	१२९
७३	महालक्ष्मी कवचम्	१३१
७४	महालक्ष्मी सिद्धि मन्त्र	१३३
७५	गुरुं प्रकाशयेत्	१३३
७६	गायत्री उपासना	१३४
७७	देवताओं की गायत्री	१३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
८	लक्ष्मी जी की आरती	१३७
	औषधि भाग	१३९
१	सर्प का इलाज	१३९
२	औषधि कृमि योग	१४१
४	,, बाल उगाना	१४१
३	,, मधुमेह (डाय०)	१४१
५	,, तिजारी (ठंड) ज्वर	१४१
६	,, आंख में पानी की	१४१
७	,, चम्बल व नीम के गुण	१४२
८	,, खाँसी की	१४२
९	औषधि सूखा रोग, दस्त गैस	१४३
०	,, पुत्र उत्पत्ति की	१४३
१	,, कठिन सर्दी की	१४४
२	,, पायेरिया व आँखों की	१४४
३	,, बिच्छू की	१४४
४	,, श्वेत कुष्ट की	१४५
५	,, खारिश व प्रमेह	१४५
६	,, मधुमेह, दाँत चमकाना	१४६
७	,, नजले की	१४६
८	,, पागल कुत्ते काटे की	१४६
९	,, तपेदिक टी० वीं०	१४७
०	,, अण्डकोष की वृद्धि	१४७
१	,, पेशाब लाने की	१४७
२	,, विधि बादाम प्रयोग	१४७
३	,, मृगी रोग की	१४७
४	औषधि खाँसी, ज्वर, सिरदर्द	१४८
५	,, प्रदर, चौथिया, मस्सों	१४८
६	,, पसली दर्द, पथरी	१४८

सं०	विषय	पृष्ठ
२७	,, नींद लाने, आधा शीशी	१४८
२८	,, खूनी दस्त, सर्दी जुकाम	१४९
२९	,, नेत्र ज्योति, पीलिया	१४९
३०	,, लू न लगे, जुकाम बुखार	१४९
३१	,, रतौंधी, आँख दर्द	१५०
३२	,, जाला मोतिया की	१५०
३३	,, ज्वर, अफीम के विष	१५०
३४	,, श्वेत कुष्ट, बहरापन	१५०
३५	,, कान के रोग व गठिया	१५१
३६	,, कण्ठमाला की	१५२
३७	,, ब्लड प्रेशर, अशुद्ध रक्त	१५२
३८	,, स्वर भंग, पाण्डू रोग	१५२
३९	,, खून खराबी, चर्म रोग	१५२
४०	,, मस्तिष्क शक्ति, ब्रह्मी	१५३
४१	,, हृदय की अभ्रक, भस्म	१५३
४२	,, प्रमेह की	१५३
४३	,, सोते में पेशाब	१५४
४४	,, होठ फटना, एड़ी फटना	१५४
४५	,, नाभि से खून बहना	१५४
४६	,, खूनी दस्तों की	१५४
४७	,, बच्चों के बाल उगना	१५४
४८	,, पथरी रोग पेशाब रुकने	१५४
४९	,, बहुमूत्र की, खुजली की	१५५
५०	औषधि हिचकी, बहुत रोने	१५५
५१	,, दूध फेंकने की दूध न पीने	१५५
५२	,, पेट बढ़ने, खांसी-जुकाम	१५५
५३	,, सिर पर फोड़े, पसली दर्द	१५६
५४	,, स्त्रियोंके अधिक रज स्राव	१५६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
५५	,, थनैला (स्तन गाँठ)	१५६
५६	,, श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर	१५६
५७	,, प्रसव के बाद छाती दर्द	१५६
५८	,, प्रदर, मासिक धर्म	१५६
५९	,, बांझपन, गर्भ रोकना	१५७
६०	,, बालक मरने को रोकना	१५७
६१	,- केवल कन्या प्रसव रोकना	१५७
६२	,, खांसी, दमा, स्वास	१५८
६३	,, विच्छू काटे की	१५९
६४	,, बुद्धि बढ़ाने की	१५९
६५	,, सर्दी बुखार	१६०
६६	,, कृमि रोग की	१६०
६७	,, शौच में कीड़े, पेट दर्द	१६०
६८	,, पेट फूलने, मन्दाग्नि	१६०
६९	,, आँव के दस्त	१६१
७०	,, सर्दी, रक्त श्वेत, प्रदर	१६२
७१	,, मासिक धर्म वन्द की	१६२
७२	,, मासिक धर्म खोलना	१६२
७३	,, पुत्र उत्पन्न होने की	१६२
७४	,, प्रदर, बहुत रजरोकना	१६३
७५	,, प्रमेह की, नहरुआ की	१६३
७६	,, खूनी बवासीर	१६४
७७	,, औषधि दाद खाज की	१६५
७८	,, फोड़े की, कटने पर	१६५
७९	,, मृगी रोग, सिर दर्द	१६६
८०	,, गठिया, कण्ठ की जलन	१६६
८१	,, बहुमूत्र की	१६६
८२	,, आंखों की	१६७
८३	,, जुकाम, खुजली, फुन्सी	१
८४	,, मृगी रोग की औषधि	१
८५	,, स्मरण शक्ति, सोते में डरना	१
८६	,,लकवा,कण्ठमाला,जलन्धर	१
८७	,, पीलिया,तिल्ली,पेट-कीड़े	१
८८	,, संग्रहणी की औषधि	१
८९	,, दिल की औषधि	१
९०	,, मधुर कण्ठ, नेत्र ज्योति	१
९१	,, विच्छू काटना	१
९२	,, स्त्री का दूध बढ़ाने की	१
९३	,, पसली की दर्द, मुहासे	१७
९४	,, फोते का बढ़ना	१७
९५	,, बिच्छू की दवा	१७
९६	,, मुंह के छालों की दवा	१७
९७	,, दाद खाजन छाजन	१७
९८	,, प्लेग की औषधि	१७
९९	,, नाभी का हट जाना	१७
१००	,, पथरी और दर्द गुर्दा	१७
१०१	,, बहुमूत्र, पेशाबवन्द होना	१७
१०२	,; जरियान,प्रमेह, अण्डवृद्धि	१७
१०३	,,बांझपन, मुश्किल से बच्चा	१७
१०४	,, मासिकधर्म ज्यादा आना	१७
१०५	,, प्रदर और प्रसूत रोग	१७
१०६	,, काग गिरना	१७
१०७	,, चेचकरोग बच्चों कोसूखा	१७
१०८	,, संग्रहणी,पेचिस,बवासीर	१७
१०९	,, बाल बढ़ाने के लिए	१७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
११०	,, गंज, सफेद दाग	१७६
१११	,, नहरवा, दाद, पित्ति	१७७
११२	,, मुहासे, फोड़े फुन्सी	१७७
११३	,, भगन्दर, छाजन, जाड़ा	१७७
११४	,, पुराना बुखार	१७८
११५	,, बालतोड़, जख्म नासूर	१७८
११६	,, आग से जलना	१७६
११७	,, जूं की अधिकता	१७९
११८	,, खटमल, गुहेरी	१७९
११९	,, पुत्र दाता औषधि	१७९
१२०	,, बाल उगाने की औषधि	१८१
१२१	,, बाल काले होने की	१८१
१२२	,, पैर की सूजन	१८२
१२३	,, गर्भ ठहरने की औषधि	१८२
	अनौषधी व संयम भाग	१८२
१	खाँसी का संयम	१८३
२	खड़ाऊं का चमत्कार	१८३
३	आँतों का संयम	१८४
४	जुकाम का संयम	१८४
५	खुश्की का संयम	१८४
६	मस्तिष्क की दुर्बलता	१८४
७	आसन भोजनोंपरान्त	१८५
८	दांतों के रोगों का संयम	१८५
९	दर्द गुर्दे का संयम	१८६
१०	भगन्दर, जगर का संयम	१८६
११	नासिका से जलपान	१८६
१२	नेत्रों का संयम	१८७
१३	बात, पित्त, कफ, ज्वर	१८७
१४	सौ वर्ष जीने का संयम	१८८
१५	नासिका से जलपान	१८८
१६	खेचरी मुद्रा	१८८
१२	उड्डयान बन्ध	१८९
१८	प्राचीन वैद्यों का कथन	१८९
१९	१ वर्ष पूर्व मृत्यु का ज्ञान	१८९
२०	बिच्छू नहीं काटेगा	१९०
२१	अजीर्ण, मलेरिया, दमा	१९०
२२	कान रोग का संयम	१९१
२३	स्वप्न दोष का संयम	१९१
२४	मिट्टी प्रयोग विधि	१९१
२५	ज्वर, नेत्रों, श्वेत कुष्ट का	१९१
२६	एकान्तरा (जूड़ो ताप का)	१९२
२७	पीपल पूजा क्यों है ?	१९२
२८	बिच्छू का यन्त्र	१९३
२९	संख प्रच्छालिनी क्रिया	१९३
३०	अमोघ आसन सीखें	१९६
३१	ध्यान लगाना सीखिये	१९७
३२	स्वास्थ्य के १६ नियम	१९८
३३	१६ प्रश्न जीवन-मृत्यु के	१९९
३४	विश्वगुरु प्रार्थना	२००
	पद्य भाग	
१	हो जाओ तैयार ट्रेन	२०१
२	क्षण भंगुर जींवन कलिका	२०१
३	क्षण भंगुर जीवन है	२०२
४	कुन्द इन्दु के समान	२०२
५	दुर्गन्ध वाला घर व्याधियोंका	२०२
६	शीश पगा न झगा	२०३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
७	कैसे बेहाल विवाइन सों	२०३
८	क्यों रस में विष वाम कियो	२०३
९	एक मास दो हौति हैं	२०३
१०	नादान कीन्हां नहीं ध्यान	२०४
११	वैठ अकेला दो घड़ी	२०४
१२	सन्त सदा उपदेश	२०५
१३	पुत्र कलत्र सुमित्र चरित्र	२०५
१४	सुतनारि धराधन के	२०५
१५	तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई	२०५
१६	लोग सोचते हैं राजा सम	२०७
१८	विन धर्म मनुष्य की जाति	२०७
१९	तम्बाकू तेरे अवगुन	२०८
२०	सो लीला तेरो अजव	२०९
२१	फक्र बकरे ने किया	२११
२२	यशोदा तेरे लाल ने	२१२
२३	आग लगी इस पेड़ में	२१३
२४	फल खाये इस पेड़ से	२१४
२५	चढे पालकी जात हैं	२१४
२६	तीर्थ दान बहुधा किये	२१४
२७	चम्पा तुझ में तीन गुण	२१४
२८	चम्पक वरणी राधिका	२१४
२९	रत्न जटित मंदिर तजे	२१४
३०	पद कमला विमला	२१४
३१	फैला भ्रष्टाचार हमारे भारत	२१८
३२	है जगदीश दुनियाँ में	२१९
३३	पूरब की कमाई तूने	२१९
३४	मत इनमें फंसना	२१९
३५	जव तेरी डोली निकाली	२२०
३५	हरिनाम सुमिर सुखधाम	२२१
३७	है चन्द मिनट विश्राम रे	२२१
३८	वा अनहद के मैदान में	२२२
३९	यही एक मंत्र है प्यारा	२२२
४०	अरे नर मूढ़ तेरी	२२४
४१	रे मन मुसाफिर निकलना	२२५
४२	हरिः ॐ तत्सम् इसी के	२२६
४३	भजमन सीताराम	२२७
४४	मुसाफिर करले तैयारी	२२७
४५	मेरे स्वामी सद्गुरु देव	२२८
४६	सच्चिदानन्द घन	२२९
४७	भजन कर बीतो जात घड़ी	२२९
४१	करनी सो करले आज	२३०
४९	करो रे मन उस दिन	२३०
५०	मूरख छांड़ि वृथा अभिमान	२३१
५१	भजन श्याम सुन्दर का	२३२
५२	सव कुछ जीवन को व्यवहार	२३२
५३	राम सुमिर राम सुमिर	२३२
५४	काहे रे बन खोजन जाई	२३३
५५	सिकन्दर से कहा सुकरातने	२३३
५६	सनातन धर्म का महत्व	२३३
५७	वही मनुष्य है कि जो	२३४
३८	जागो सज्जन वृन्द हमारे	२३५
५९	हरि बोल मेरी रसना	२३७
६०	बोले तो बोले जा	२३७
६१	राम चरण सुखदाई	२३८
६२	तेरी पल-पल बीती जाय	२३८
६३	कृष्ण गोबिन्द गोपाल गाते	२३८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
६४	प्रेम से बोलो रे जय जय	२३९
६५	कछुक देर धीरज उर धरिए	२४०
६६	मंगल मनाया धूल जंगल की	२४१
६७	साका वीर वंश की विभा	२४१
६८	ऐराथत पूजन	२४२
६९	इन्द्रियजीत अर्जुन	२४९
७०	शुक रम्भा संवाद	२५०
७१	गौतम जावालि व्यास	२५१
७२	अपने सहायक आपहिं होंगे	२५२
८३	हे पाठकों फिर पूर्वजों के	२५२
७४	कितना ही संकट आ जाये	२५२
७५	है प्रेम जगत में सार	२५३
७६	जो न जिय में प्रेम तव	२५४
७७	श्याम तन श्याम मन	२५५
७८	कानन दूसरो नाम सुने	२५५
७९	सुनि गोपिन को प्रेम	२५५
७२	हिन्दुआनी हो रहूंगी	२५६
८१	कोऊ कहो कुलटा	२५६
८२	मेरी ये प्रेम व्यथा	२५७
८३	वरुणी वघम्बर में	,,
८३	मुकट की चटक लटक	,,
८४	गुच्छनि के अवतंस लसें	२५८
८५	यमुन के हिलोर की	,,
८६	शेष महेश गनेश	,,
८७	ये दुनिया पागलखाना	,,
८८	अरे विश्व तू मुझे	२५९
८९	मानुष हों तो	,,
९०	तौक पहिरावो पावबेड़ी	,,
९१	गर्भ चढ़ अरु सूपचढ़े	२६०
९२	छूटे यह मन्दिर	२६०
९३	भोज की मुंज के प्रति	,,
९४	जो कुम पुत्र त्रिया	२६१
९५	देह को गर्व करे क्यों	,,
९६	तात मिले पुनि माता	,,
९७	कोउक निन्दत	,,
९८	तेरो कह्यो सिगरो	२६२
९९	तारिहो न शम्भो	,,
१००	आपको वाहन	,,
१०१	दुःख भूरि भरे	,,
१०२	जगमें जन मे जव	२६३
१०३	बुद्धि वड़ी चतुराई	,,
१०४	एक दिना हरि को	,,
१०५	कच्छप नृसिंह, मत्स्य	२६३
१०६	गिरि से गिराया	२६४
१०७	दीन दयाल कहाय के	,,
१०८	नाम अजामिल से खल	२६४
१०९	एहि घाट से थोरिक	२६५
११०	जाति पाँति न्यारी	,,
१११	करेंगेदया दयालु	,,
११२	दीन मलीन अधीन	२६६
११३	एरे अभिमानी तोहि	,,
११४	किसी न किसी भी भाँति	,,
११५	पायो है मनुष्य देह	२६७
११६	हाथिन के दाँत के	,,
११७	न बचो कोई वेद	,,
११८	बड़े बड़े पंड़ित पढ़ने	२६८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
११९	हाड़ मांस मज्जा	२६८
१२०	धन धरा के बीच ही	,,
१२१	पेट में लेटे व लेटे मही	२६९
१२२	भक्त रसखान सवैया	,,
१२३	जा दिन गर्भ सयोंग	२७०
१२४	वादिन की सुधि भूलि गए	,,
१२५	गुरुगोविन्द सिंह (कवित्त)	,,
१२६	जिन्होंने बनाया घट घट में	२७१
१२७	भूपति भिखारी होत	,,
१२८	दीन कहे धनवन्त सुखी	,,
१२९	खाने से बल हो	,,
१३०	दो बार जाय द्वारिका	२७२
१३१	अल्प तो अवधि जामे	,,
१३१	एक दिन जगत वनि	,,
१३२	कर्म प्रताप तुरंग नचावत	२७३
१६३	कर्मानुसार सभी	,,
१३४	वारिद तात हते	,,
१३५	भरिके गन्डूक में	२७४
१३६	जबते जनम लेत	,,
१३७	पाप करे नहिं नेक डरे	,,
१३८	तिनके खर सूकर	२७५
१३९	सो सुकृति सुचिमन्त	,,
१४०	काम से अन्ध अरु	,,
१४१	काम नसै हरि भक्त किये	,,
१४२	कहा नल नील ने	,,
१४३	वृन्दावन यमुना तट	२७६
१४४	संत और बिच्छू	२७८
१४५	हृदय प्रार्थना तुझ मे	२८०
१४६	जिसे समझते हो तुम	२८३
१४७	अरे हाय योंही चली	२८५
१४८	बने ईश पूजा कहो	२८७
१४९	रे हाय हाय गति	२८८
१५०	उठो उठो आंख खोलो	२९०
१५१	एक दिन उड़े ताल से	,,
१५२	तू कर उस दिन की	२९१
१५३	लकड़ी की लीला	,,
१५४	पड़े रहे सब बंगले रंगले	२९२
१५५	पद्य व शेरे	२९३
१५६	चौबीस अवतार	२९७
१५७	द्वादशज्योर्तिलिंग	,,
१५८	शिव प्रार्थना	२९८
१५९	भक्त प्रार्थना	२९९
१६०	गोविन्द प्रार्थना	३००
१६१	ईश्वर प्रार्थना सामूहिक	,,
१६२	हे दीनानाथ दयाल	३०१
१६३	काहे रोवे मनुवा	,,
१६४	कण कण में है झांकी	,,
१६५	लाठी से जब पड़ेगा पाला	३०३
१६६	पन्द्रह पुष्प	,,
१६७	एक बात तो बता दे	३०४
१६८	दिन चढ़ आया खुली	,,
१६९	कोई है कटाता और	३०५
१७०	तुम जलाती रहो	,,
१७१	कोई हाल मस्त	३०६
१७२	क्या रक्त बहाऊं	३०७
१७३	उठ शस्त्र उठा कुन्तीनंदन	,,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
१७४	महाभारत की एक घटना	३०७
१७५	विन्धय के वासी उदासी	३०९
१७६	दर्शन दो घनश्याम	,,
१७७	कर्माबाई भजन	३१०
१७८	हे नाथ अब तो ऐसी दया	,,
१७९	मानव सोचो जगके	३११
१८०	ओ आने वालो इतना	,,
१८१	फिर मत कहना कुछ	३१२
१८२	भज गोविन्दं भज गोविन्दं	,,
१८३	भूल न जाना भारतवासी	३१५
१८४	रे मन ये दो दिन का	३१६
१८५	हरी नाम के हीरे मोती	३१९
१८६	हरी नाम की लूट	३१८
१८७	दाता मेरा राम	३१८
१८८	तेरा राम जी करेंगे	३१९
१८९	मेरा बेड़ा पार करो	३१९
१९०	वृज बन की लताओं में	३२०
१९१	ब्रह्मा मेरे साथ हैं	३२०
१९२	मेरा सत् चित् आनन्द रुप	,,
१९३	मनुष्यता के लक्षण	३२२
१९४	योग विना जीवन क्या	३२३
१९५	जमति ऊँ ध्वज व्योम	,,
१९६	सतगुरु देव की आरती	३२४
१९७	श्री आरती	३२५
१९८	अथ चरित्र निर्माण	३२७
१९९	श्री जगदीश्वर की आरती	३२८
२००	मदालसा की पुत्र को सीख	३२९
२०१	वेद राखे विदित पुराण	३३४
२०२	कुमति से यश जाय	३३५
२०३	तीसरी किलास में	,,
२०४	काया से आम जाय	३३६
२०५	पढ़तीं अखबार और	,,
२०६	स्वच्छ रखतीं हैं घर	३३७
२०७	मातृ देवो मा पितृ देनो	३३७
२०८	पाठ ईश्वर प्रेम का	३४२
२०९	सतगुरु की आवश्यकता	३४४
२१०	शिव पार्वती सम्वाद	,,
२११	ज्ञान नहिं गुरु बिन	३४८
२१२	गुरु महिमा	३५०
२१३	सद्गुरु के आने पर	३५२
२१४	सत्संग की महिमा	३५३
२१५	सन्तों से प्राप्त	,,
२१६	तिनिभा की शक्ति कहाँ से	३५४
२१७	धन्य प्यारे जन्म	३५५
२१८	परोपकार की महिमा	३५६
२१९	द्रष्टान्त दान की महिमा	३५७
२२०	गोमाता की पुकार	३५८
२२०	कृष्ण की १६ कलायें	३५९
२२१	श्री १०८ क्यों	३६०
२२२	चारों धाम	३६२
२२३	चारों महावाक्य	३६३
२२४	परमात्मा की अनेक रूपता	३६४
२२५	सिद्धान्त	,,
२२६	ऋषियों की दिव्य रचना	३६६
२२७	१८ पुराणों के नाम	३६७
२२८	यन्त्रों के चमत्कार	३६८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
२२९	मन्त्र विचार	३७१
२३०	शत्तरिशय यन्त्र	३७२
२३१	६४ योगिनी यंत्र ३	७३
२३२	योगिनियों के नाम	३७५
२३३	दिशाशूल विचार	३७६
२३४	लक्ष्मी प्रदायक यंत्र	३७७
२३५	सन्तांनोत्पति यंत्र	,,
२३६	घंटाकरण यंत्र	३७८
२३७	मंगल यंत्र मन्त्र	३७९
२३८	श्रेष्ठ योग	३८०
२३९	सर्व कार्य साधक मन्त्र	३८१
२४०	तिथि भेद	,,
२४३	शाँति कारक मन्त्र	३८२
२४१	मन वांछित फलकारक मंत्र	,,
२४४	माला विधान	,,
२४५	सरस्वती मन्त्र	३८२
२४६	सर्प कीलने का मन्त्र	,,
२४७	सर्वं विघ्न नाशक मन्त्र	३८३
२४८	आवाहन मन्त्र	,,
२४९	मूठ निवारक मन्त्र	,,
२५०	भूत भय नाशक मन्त्र	,,
२५१	प्रेत बाधा नाशक	३८४
२५२	गर्भ रक्षक मन्त्र	,,
	योगासन भाग	३८५
	योग की देन(जीवन विज्ञान)	३८६
१	सिद्धासन	३९२
२	पद्मासन	३९३
३	वद्ध पद्मासन	३९
४	गर्भासन	३९
५	पादांगुष्ठासन	३९
६	पश्चिमोत्तानासन	,,
७	उत्तानपादासन	३९
८	हलासन, सर्पासन	३९
९	धनुरासन	३९
१०	मत्स्येन्द्रासन	४०
११	मयूरासन	४०
१२	पवनमुक्तासन	४०
१३	शीर्षासन	४०
१४	साधन सीखने का पता	४०
१	उपासना एवं मनोयोग	४०
२	प्रार्थना का अर्थ	४०
३	ओंकार की उपासना	,,
४	ॐकार वृहद व्याख्या	४०
५	कुण्डलिनी योग	४०
६	षट्चक्रो का वेधन	४१
७	षट् चक्रचित्र	४१
८	षट् चक्रों के नाम व स्थान	४१
९	षट्चक्रों के ध्यान का फल	४१
१०	चक्रों का वेधन	४१
११	चक्र वेधन विधि	४२
	ध्यान एवं मनोयोग	
१	योगश्चित वृत्ति निरोध	४२
२	विपरीत मन की दशा	४२
३	विषय साधु की तुच्छता	४२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
४	मतो निग्रह के साधन	४२९
५	जप का अर्थ व विधि	,,
६	उपासना का अर्थ	,,
७	भवित के वाधक कवित	४३२
८	मन का प्रकारण (छन्द)	४३३
९	चित्त की ५ अवस्थायें	४३८
१०	मन के वश का उपाय	४३९
११	ऊन का आसन क्यों	,,
१२	दोनों हाथ क्यों जोड़ें	,,
१३	पहाड़ों में अभ्यास क्यों	४४०
१४	जल के किनारे ध्यान क्यों	,,
१५	मौनाववम्बन क्यों ?	४४१
१६	कंठ व योग मुद्रा की विधि	,,
१७	ध्यान की अन्य सरल वि०	४४६
१८	ध्यान में नेत्र स्थित	४४७
१९	हे कृष्ण मन चंचल हठी	४४८

अभ्यास वैराग्यवभ्यान्तन्निरोध

१	प्राणायाम	४४९

ध्यान कुंडलिनी जागरण ४५८

१	साधना के १३ नियम	४६४

अथ वेदान्त सन्देश ४६५

१	वेदान्त क्या सिखाता है	४६६
२	श्रुति माता की चेतावनी	,,
३	अथातो ब्रह्म जिज्ञासा	,,
४	गोल्डस्टकर का कथन	४६८
५	शोपेनहर का कथन	४६९

सं०	विषय	पृष्ठ
६	जिन आत्म ज्ञान जाना है	४६९
७	कुछ भी नहीं तुमने किया	,,
८	येहिं शान्ति अविचल पाइये	४७१
१०	उसको परम पद सैकड़ों	४७३
११	बिना ज्ञान मुक्ति कभी भी	४७५
१२	हितोपदेश:हरिगीत छन्द	४७७
१३	जीवन धन्य है : छन्द	४८०
१४	मुमुक्षु की चिन्ता : छन्द	४८२
१५	वैराग्य प्रकरण ,,	४८३
१६	संसार की अनित्यता ,,	४८५
१७	मल्लाहे का कथन ,,	४८६
१८	विज्ञान नौका पर बैठियेगा	,,
१९	मल्लाह की टेर ,,	४८७
२०	संसार की असारता ,,	४८९
२१	कर्त्तव्य व सहकार ,,	४९०
२२	सद्गुरुदेव का कथन ,,	४९२
२३	सदगुरु की शरण ,,	४९३
२४	अथ साधन चातुष्य	४९४
२५	अन्तरंग अष्ट साधन	४९६
२६	अधिकारी निरूपण	४९७
२७	गुरुजी से प्रश्न विधि	४९७
२८	स्थूल शरीर की रचना	४९९
२९	पुर्यटक (सूक्ष्म शरीर)	,,
३०	कारण शरीर वर्णन	,,
३१	माया निरूपण	,,
३२	प्राण के धर्म	५००
३३	रजोगुण वर्णन	,,
३४	तमोगुण सत्वगुण वर्णन	५०१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं०	विषय	पृष्ठ
३५	अन्तः करण कीत्रिपुटि	५०१
३६	कोष प्राण आदि का चित्र	५०२
३७	अनिष्ठान निरूपण	५०३
३८	अपवर्ग का अर्थ	"
३९	समुच्चय निरूपण	५०४
४०	प्राण उतारने की विधि	५०६
४१	षट दर्शन सार चित्र	५०७
४२	चारों वेदों का सार वर्णन	५०८
४३	सिंह का दृष्टान्त	"
४४	आत्मा का स्वरूप वर्णन	५०९
४५	आत्म निरूपण	५१०
४६	महावाक्य विचार	"
४७	दस यात्रियों का दृष्टान्त	५११
४८	अहं ब्रह्मास्मि	५१२
४९	ज्ञान समाधि	५१४
५०	मन की ब्रह्म सरूपता	५१५
५१	ज्ञान की सात भूमिकायें	५१५
५२	परब्रह्म बोधक श्रुतियाँ	५१६
५३	सोहं ध्यान वर्णन	५१८
५४	मोक्ष में प्रधान आत्म बोध	"
५५	नानात्व निषध	५१९
५६	निज स्वरूप प्रदर्शन	"
५७	आनन्द सिन्धु (सवैया)	"
५८	ज्ञानी की अचाहता	५२०
५९	ज्ञानी निज को कर्ता नही मानता	५२०
६०	ज्ञानी का अकर्त्तापन	५२१
६१	अथलक्षणा वर्णन	"
६२	अक्तमानुभव का उपदेश	५२२
६३	अथ बोधोपलब्धि	"
६४	षट् ऊर्मी वर्णन	५२३
६५	आत्म स्तोत्राम्	"
६६	पद्यानुवाद आत्म स्त्रोत	५२०
६७	ब्रह्मनिष्ठा का फल	५२६
६८	ज्ञानी का व्यवहार निरूपण	"
६९	ज्ञानी की रहनि (छन्द)	५२८
७०	ज्ञानी (पद्य)	५२९
७१	उपनिषद् सिद्धान्त शिष्य विदा	"
७२	अभिनन्दन पत्र	५३१
७३	शुभ२ कामना "	५३३
७४	ऋषि के प्रति प्रेम	५३४
७५	विश्वगुरु हो तो ऐसा हो	५३५
७६	कुण्डलियां	५३६
७७	अभिनन्दन-भजन	५३७
७८	विश्वगुरु उपदेशसूत्र	५३८
७९	विश्वगुरु की वेद आज्ञा	५३९
८०	विश्व कल्याण योजना	५४०
८१	ग्रन्थ मंगवाने के नियम	५५२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ ॐ ॥

श्री गुरु परमात्मने नमः

प्रस्तावना [भूमिका]

प्रिय आत्माओ !

ईश्वर की ओर बढ़ो चाहे भले ही अर्थार्थी आर्त भाव से ही भक्त ध्रुवजी की भाँति—

तेरी सूरत के जो आशिक हैं, वे समझाये नहीं जाते ।
जो तेरी ओर बढ़ते हैं, वे लौटाये नहीं जाते ॥

प्रथम भाग में कर्मकाण्ड है यदि आप ऋण से मुक्ति चाहते हैं, भयंकर रोग से छुटकारा चाहते हैं, परीक्षा में उत्तीर्ण होना चाहते हैं, नौकरी खोज रहे हैं पर मिलती नहीं, मुकद्दमा से परेशान हैं, संकट पूर्ण स्थिति को पार करना चाहते हैं, पुत्र, पुत्री के विवाह करना चाहते हैं, अथवा अन्य प्रकार की सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति करना चाहते हैं तो "विश्वगुरु कृत कल्पतरू" के नित्योपयोगी मंत्र भाग में बतलाये हुए महालक्ष्मी कवच, महालक्ष्मी सिद्धयर्थ महामंत्र, कनकधारा स्तोत्र तथा सरस्वती कवच आदि अनेक सिद्ध गुप्त मँत्र हैं । श्री राम चरित मानस की पाठ विधि श्री गीताजी की पाठ-विधि पढ़कर, उसमें बताई हुई विधि से श्रद्धा और विश्वास के साथ अनुष्ठान (पाठ) कीजिये । (No Relief Without belief) क्योंकि बिना विश्वास के विश्राम [आराम] नहीं मिलता, कहा भी है कि—

दोहा—बिना विश्वास भक्ति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम ।
राम कृपा बिन जीव कहं, सपने कि लह विश्राम ॥

इस पुस्तक में बहुत से मन्त्र दिये हैं उनकी विधि भी दी गयी है उसी के अनुसार श्री गीताजी और रामायणजी का पाठ करें सफलता अवश्य होगी । कहा भी है कि—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पद्य—मनुष्य चाकरी किये अवश्य दाम देय हैं।
मजूरी के दिये बिना न कोई काम लेय है ॥
मनुष्य देय दाम तो महेश क्यों न देयगा।
अवश्य देयगा सही न मुफ्त काम लेयगा ॥

अटल विश्वास के साथ कार्य कीजिये ध्रुवजी की भाँति सभी वस्तु प्राप्त हो जायगी।

✱ यदि आप सुन्दर, वैराग्य और भक्ति रस पूर्ण कविताओं के प्रेमी हैं तो पद्य संग्रह भाग को पढ़िये।

◈ रोग निवारण के लिये औषधि व संयम भाग पढ़िये।

द्वितीय भाग में

१०० वर्ष सुखपूर्वक जीने के लिये स्वास्थ्य वर्धक आसन, प्राणायाम, कुण्डलिनी योग तथा षट् चक्र वेधन की अनुपम विधि दी गई है।

◈ व्यवहारिक जीवन के लिये चरित्र निर्माण भाग पढ़िये।

◈ उपासना एवं मनोयोग—यदि आप कर्मकाण्ड से ऊपर उठकर उपासना में अग्रसर हो रहे हैं, और उपासना [ध्यान] में मन नहीं लग रहा है तो (Mind control) मन को काबू में कैसे करें इसका साधन इस पुस्तक के मनोयोग नामक लेख में देखें। 'मन एवं मनुष्याणां कारण बंध मोक्षयोः' मन ही मनुष्य के बन्धन और मुक्ति का कारण है, ध्यानं निर्विषय मनः अर्थात् मन का निर्विषय होना ही पूर्ण ध्यान है। इसमें ध्यान की विधि, आदि सभी उपासना की रीति दी गई है।

◈ वेदान्त सन्देश-ज्ञान काण्ड—यदि आप वेदान्त के अनुसार निज लक्ष्य की प्राप्ति करना चाहतें हैं तो इसी ग्रन्थ का वेदान्त भाग देखिये, क्योंकि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

The Vedant is the sublimest machinery set into motion by oriental thought' वेदान्त सबसे ऊँचे दर्जे का यन्त्र है जिसे पूर्वीय विचारधारा ने प्रवृत्त किया है। विषय की दृष्टि से वेदों के तीन भाग हैं १ कर्म काण्ड, २ उपासना काण्ड, ३ ज्ञान काण्ड। ८० हजार श्रुतियां कर्म काण्ड का प्रतिपादन करती हैं, १६ हजार श्रुतियाँ उपासना काण्ड की हैं। तथा केवल ३ हजार श्रुतियाँ ज्ञान काण्ड बता रही हैं। उन वेदों के ज्ञान काण्ड को ही वेदान्त कहते हैं और उन ४ हजार में भी मुख्य महाकाव्य तो ४ ही हैं। महाकाव्य के नाम (१) अंह ब्रह्मास्मि (यजुर्वेद) (२)तत्त्वमसि (सामवेद) (३) अतमात्माब्रह्म (अथर्ववेद) (४) प्रज्ञान ब्रह्म (ऋग्वेद) ये चारों वेदों के चार महाकाव्य हैं। जिस जिसने इस वेदान्त रसामृत का पान किया है वह निहाल हो गया, उसे न कुछ कर्त्तव्य और न कुछ प्राप्तव्य। ब्रह्माकारवृत्ति का कितना महत्त्व है इसका वर्णन करते हुए "वेदान्त सिद्धान्त मुक्तावला कार" उद्घृत करते हैं :—

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।
अपार सच्चित्सुख सागरेऽस्मिन्लीलं पर ब्रह्मणि यस्य चेतः ।।

अर्थात् 'जिसका मन उस अपार सच्चिदानन्द समुद्र परब्रह्म में लीन हो गया है उसका कुल पवित्र हो जाता है, माता कृत-कृत्य हो जाती है और उसके कारण पृथ्वी भी पुण्यवती हो जाती है। अब ब्रह्म वेत्ता की स्थिति वर्णन करते हैं ब्रह्म वेत्ता की दृष्टि में सारा संसार सच्चिदानन्द स्वरूप हो जाता है, असत् जड़ और दुख रूप उसे प्रतीत ही नहीं होता। उसकी दृष्टि में तो द्रष्टा, दर्शन और दृश्य का भी. भेद नहीं रहता वह तो एक निश्चल, निर्बाध और निष्कल चिदानन्द घन सत्ता मात्र रह जाता है।

उसके द्वारा जो कुछ कार्य होते हैं वह दूसरों की दृष्टि में होते हैं, उसकी दृष्टि में तो न कोई कार्य है और न करने वाला ही। सुवर्ण के आभूषणादि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भेद वहिर्मुख पुरुषों की दृष्टि में होते हैं, सुवर्ण के तात्त्विक रूप को देखने वाला उन्हें कभी नहीं देखता। उनकी दशा तो ऐसी हो जाती है कि वह खुद ही खोजता है।

शेर—ढूंढता ढूंडता खुद खो गया।
जिसे ढूंडता था वही खो गया॥

पद्य—जब पता पाने चला, पाया पता तेरा नहीं।
जब पता तेरा लगा तो फिर पता मेरा नहीं॥
यह दशा हो जाती है

—◈◈◈—

पाठको !

मृत्युशील संसार में अमर कौन है ? चर और अचर सभी तो जन्म मृत्यु जरा व्याधि के चंगुल में फंसे हैं। सुन्दर मकान बना, उसका जन्म हुआ, कुछ दिन बाद वह टूटने फूटने लगा, व्याधयों से घिरा, मरम्मत कराई गई, इलाज हुआ, अच्छा हो गया, ऐसा होते-होते ही वह जीर्ण हो गया, अब मरम्मत से भी काम नहीं चलता, दीवारें गिरने लगीं, छत जमीन में बैठने को तैयार हो गई, एक दिन ऐसा आया कि मकान गिर पड़ा, उसकी मृत्यु हो गई, बस यही हाल सबका है, क्योंकि—

पद्य—आदमी का जिस्म क्या है जिसपे शैदा है जहां।
एक मिट्टी की इमारत एक मिट्टी का मकां॥
खून का गारा बनाया ईंट जिसमें हड्डियां।
चन्द श्वासों पर डटा है ये ख्याले आसमां॥
मौत की पुरजोर आंधी जब इसे ठुकरायगी।
टूट करके ये इमारत खाक में मिल जायगी॥

परंतु इस बात को न सोचता हुआ मनुष्य चाहता है कि मुझे अमुक काम पूरा कर लेना है, वह उसे पूरा कर लेने की चेष्टा में लगता है। काम पूरा होता है, परन्तु उसमें कुछ कमी मालूम होती है, वह उस कमी को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूरा करने का प्रयत्न करता है। कमी पूरी होती है, परन्तु साथ ही दूसरी कमी आगे तैयार मिलती है। सारांश यह है कि मनुष्य इस संसार में चाहे जितनी ऊँची से ऊँची सांसारिक स्थिति को प्राप्त कर ले, कुछ न कुछ कमा तो रह ही जायगी। संसार में कोई ऐसी वस्तु या स्थिति नहीं है जो पूर्ण हो सभी कुछ अपूर्ण है। अपूर्ण से पूर्णता कैसे मिल सकती है, अपूर्ण को पाकर मनुष्य पूर्ण-काम कैसे हो सकता है? परन्तु वह इस तत्त्व को समझता नहीं। अपूर्ण से ही पूर्णता प्राप्त करना चाहता है, इसी से बार-बार अभाव का अनुभव करता है और दुखी होता है। इसी भांति किसी न किसी कमी को पूरा करने की चेष्टा में लगे हुए मनुष्य का अशांत जीवन कमी की हालत में ही नष्ट हो जाता हैं। कमी तो पूरी होती ही नहीं, हां उसको पूरी करने के प्रयत्न में जीवन भर अशान्ति रूपी अग्नि की भयावनी लपटों में जलना और कामना की परवशता में भांति-भांति के पापों का भार संग्रह करना जरूर होता है, यहां जीवन भर जले और अगले जीवन में जलने के लिए पाप का भारी ईंधन जमा कर लिया। बस आज के हम मनुष्यों की जीवन धारा का यही स्वरूप है। पर क्या यही वांच्छनीय है? क्या बार-बार मृत्यु के मुख का ग्रास बनना ही हमें अभीष्ट है यदि नहीं, तो हम लोगों को शीघ्र सावधान होकर ऐसा प्रयत्न करना चाहिये जिससे हम पूर्ण होकर मृत्यु के पन्जे से छूट जांय हम अमर हो जांय। इस अमर होने का उपाय नित्य सत्य सर्वगत पूर्ण सच्चिदानन्द धन परमात्मा को प्राप्त कर लेना है। शास्त्रों की सम्मति और सन्तों के अनुभव युक्त वचनों के अनुसार परमात्मा हमें नित्य प्राप्त है, परन्तु इस नित्य वस्तु में भी हमें जो अप्राप्ति का भ्रम हो रहा है, उसे तो दूर करना ही होगा। उसे दूर करने के लिये इस ग्रन्थ में विविध उपाय बतलाये गये हैं। यह ग्रन्थ १–अर्थार्थी, २–आर्थ, ३–जिज्ञासु, और ४–ज्ञानी सभी प्रकार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। यद्यपि मैं किसी प्रकार भी इस कार्य को हाथ में लेने की योग्यता नहीं रखता तो भी जिसकी इच्छा से सम्पूर्ण प्राणी अहर्निश भिन्न २ कार्यों में लगे रहते हैं; उस सर्वान्तिर्यामी जगन्नाटयू सूत्रधार ने ही मुझे भी इसमें जोड़ दिया है। मेरी इस चपलता से यदि कुछ महानुभावों का मनोरंजन हो सका तो मैं इस प्रयास को सफल समझूंगा।

यद्यपि इसमें क्रम भंग, मात्रा आदि गलत छप जाने से अनेक दोष दिखाई देंगे, तदापि विद्वद्वर्ग शोध कर पढ़ेंगे। इससे किसी को लाभ होगा, ये प्रभु ही जानें।

मैंने तो पूज्य गुरुदेव श्री मुनीशानन्द सरस्वतीजी महाराज का ज्ञान रूपी प्रसाद जो कि बाल्यकाल ही से संग्रह हो रहा था; उन्हीं की वस्तु उन्हीं की कृपा से आप लोगों के समक्ष रखने का तुच्छ प्रयास किया है। अतः पूज्य गुरुदेवजी से साधना सम्वन्धी अपूर्व लाभ उठाइये। तथा अन्यान्य गुप्त मंत्र वेदान्त आदि सभी साधन सीखकर जीवन को उन्नत बनाकर जीवन का शीघ्र ही वास्तविक लाभ उठाइये। कहा भी है कि––

श्लोक––प्रथमेनार्जिता विद्या द्वितियेनार्जितं धनम्।
तृतीयेनार्जितं ज्ञान चतुर्थे किं करिष्यसि॥

आयु के प्रथम भाग यानी २५ वर्ष तक विद्याध्ययन करो, द्वितीय भाग में ५० वर्ष तक धनोपार्जन तथा तृतीय ५०से ७५ वर्ष तक ज्ञानोपार्जन करो पुनः चतुर्थावस्था आने पर क्या करोगे।

भवदीय

विश्वगुरु महामण्डलेश्वर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—:० शुभाशीर्वाद ०:—

मंगल दायक वर्ष हों, सुखदायक तिथि वार।
धन वैभव बढ़ता रहे, बढ़ै प्रेम अपार ॥
नारायण मंगल करें, लक्ष्मी रहें सहाय।
शोक मोह संकट हटें, सुख सम्पत्ति अधिकाय ॥

यद्यपि इस ग्रन्थ के इस रूप में पुनः प्रकाशन की मेरी लेश मात्र भी इच्छा नहीं थी। किन्तु फिर भी धर्म प्रकाश एवं लक्ष्मी देवी के प्रबल प्रयास के फलस्वरूप यह ग्रन्थ आपके समक्ष उपस्थित हो रहा है। इस में प्रभु की इच्छा के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में वहुत से व्यक्तियों ने आर्थिक व बौद्धिक सहयोग दिया है। तथा उन सभी की सद्‌भावना के फल स्वरूप यह ग्रन्थ जनता जनार्दन के समक्ष उपस्थित हो रहा है।

आज के उच्छंखल व विलासी युग में ऐसे व्यक्तियों की महान आवश्यकता है, जो कि ऐसे प्रकाशनों द्वारा सुन्दर चरित्र निर्माण करके राष्ट्र एवं समस्त विश्व का गौरव बढ़ाने में समर्थ हों। मैं आशीर्वाद स्वरूप भगवान से प्रार्थना करता हूं कि भगवान उन्हें इसी प्रकार सद्‌बुद्धि प्रदान करें. जिससे कि उनकी भावना इसी भांति धार्मिक सहयोगों में उत्तरोत्तर उत्साह पूर्वक बढ़ती रहे।

सर्वे कुशलिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

शुभाकांक्षी

विश्वगुरुजी महाराज महामण्डलेश्वर

विश्वगुरु वेद योग संस्थान वेदनिकेतन धाम विश्वगुरु नगर,
पोस्ट स्वर्गाश्रम
ऋषिकेश (हिमालय) फोन :—२७९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस ग्रन्थ में क्या है ?

इस ग्रन्थ में पूज्य पाद गुरुदेव श्री-विश्वगुरु जी महाराज महामण्डलेश्वर के बाल्य काल के संग्रहीत लेख; कवितायें तथा इस समय जो भक्तों को उपदेश तथा साधना में जो बतलाते हैं उसका कुछ भाग, तथा अन्यान्य ग्रन्थों तथा सभी महात्मा महापुरुषों की वाणी का प्रसाद है।

१—इस में विद्योपार्जन के निमित्त—मस्तिष्क शक्ति बढ़ाने के लिए आसन, औषधियां तथा साधन व **सरस्वती कवच** और सरस्वती महा-मंत्र आदि अनेक साधन हैं।

२—धनोपार्जन के लिए **श्री महालक्ष्मी कवच** महा मंत्र तथा भगवान शंकराचार्य ने जिससे स्वर्ण वर्षा कराई थी, विधि-पूर्वक यह **कनकधारा स्तोत्र** तथा अन्यान्य साधन है।

३—ज्ञान प्राप्ति के लिए वेदान्त का सिद्धान्त, उपासना, भक्तियोग, हठयोग, राजयोग, लययोग, गुप्त मंत्र, यन्त्र आदि अनेक साधन दिये हैं।

४—प्राणायाम, ध्यान की विधि, कुण्डलिनी जागरण, षट्चक्र वेधन, तथा अनेकानेक सन्तों व कवियों की प्रसाद स्वरूप मनोहारिणी ३०१ कवितायें ग्रन्थ की और भी शोभा बढ़ा रही हैं। नित्योपयोगी प्रातः से सायंकाल तक सभी ९८ मन्त्र संकल्पविधि १५२ औषधियां तथा सभी प्रकार के गुप्त मन्त्र भी हैं।

५—श्री गीता जी के पाठ की विधि, श्री राम चरित मानस की पाठ विधि तथा चरित्र निर्माण के साधन दृष्टान्त आदि सागर को गागर रूप इस छोटे से ग्रंथ में भरने का प्रयास किया गया है। इसीलिए तो इस का नाम कल्पतरु (कल्प वृक्ष) है। कृपया इस ग्रन्थ का प्रसाद स्वयं पाइये तथा औरों को भी बांटिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

★ विश्व के प्रति सद्भावना ★

भावना दिन रात मेरी सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का हर एक घर में वास हो ॥
धर्म का सुप्रचार हो अरु देश का उद्धार हो।
और यह उजड़ा हुआ भारत चमन गुलजार हो ॥
देश अति प्यारा हमारा बन्धनों से मुक्त हो।
ज्ञान के अभ्यास से परिपूर्ण साधन युक्त हो ॥
दया रूपी खड्ग से हिंसा का सर्वंस नाश हो।
शान्ति अरु आनन्द का हर एक घर में वास हो ॥
सन्त वाणी में सभी संसार का विश्वास हो,
सत्संग से कल्याण होवे, ज्ञान का सुविकास हो ॥
रोग भय अरु शोक होवें दूर, सब परमात्मा।
मुक्त कर भव बन्धनों से हम हैं तेरी आत्मा ॥

श्लोकः—दुर्जनः सज्जनोभूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्
शान्तो मच्येत् बन्धेभ्यो, मुक्तश्चान्यान्विमोचयेत् ॥

भावार्थ :——सभी दुर्जन सज्जन हो जांय, सज्जन मनुष्य शांति प्राप्त करें, शान्त पुरुष बन्धन से मुक्त हों तथा मुक्त पुरुष अन्य जीवों को मुक्त करें।

—◈◈◈—

★ सकल चराचरानुचर ★

विश्वगुरु जी महाराज महामण्डलेश्वर

विश्वगुरू वेद योग संस्थान, वेद निकेतक धाम विश्वगुरु नगर

पोस्ट स्वर्गाश्रम

ऋषिकेश (हिमालय) फोनः २७६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

* विशेष सूचना *

॥ विद्या दानं महा दानम् ॥

पद्य-पुण्य है शृंगार मानव का चमकता नूर है।
पुण्य धन को प्राप्त करता वही सच्चा शूर है॥
पुण्य पथ का बन पथिक तू विश्व का उपकार कर।
धर्म की जय बोलकर सबसे सरल व्यवहार कर॥

१—यह ग्रन्थ धनहीन पूर्ण अधिकारियों को स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में बिना मूल्य भी बितरित किया जाता है। अतः जो सज्जन वितरण के लिए छपवाना चाहें या छपा हुआ मंगाना चाहें वे नीचे लिखे पते पर लिखें या मिलें।

२—जो पुरुष तथा मातायें अपने स्वर्गीय पिता, माता, पुत्र, पति—देव आदि की स्मृति में, जन्म दिवस, विवाहोत्सव आदि किसी भी स्मृति के लिए छपाना चाहें तो उनका पूरा नाम तथा फोटो भी लगाया जा सकता है।

३—थोड़ा छपाने व सहायता वाले छपा हुआ भी भेंट या विवरण करने के लिए आवश्यकता अनुसार मंगा सकते हैं।

४—ग्रन्थ का मूल्य क्रय-विक्रय की दृष्टि से नहीं रखा गया है, वरन् जिन महानुभावों ने दान दिया है, वह अमर हो गया है। उसी से ग्रन्थ छपता रहेगा तथा बार बार जनता लाभ उठाती रहेगी।

५—जो महानुभाव किसी भी प्रकार की सेवा सहायता करना चाहें वे निम्न पते पर मनीआर्डर करें अथवा मिलें।

पत्र व्यवहार का पता—

योगेश्वर विश्वगुरु जी महाराज, विश्वगुरु वेदयोग संस्थान
वेदनिकेतन धाम, विश्वगुरु नगर, पो० स्वर्गाश्रम
ऋषिकेश (हिमालय) फोन ; २७९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनन्त श्री विभूषित

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ

विश्वगुरु जी महाराज महामण्डलेश्वर के

।। जीवन की संक्षिप्त झांकी ।।

प्रेमी सज्जनों मुझे सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि महाराज श्री का लोक कल्याण हेतु जन्म उत्तर प्रदेशीय पैराई नामक ग्राम के भूमि पति राजवंशीय सम्पन्न परिवार में पुण्य पर्व दीपमालिका के दिन हुआ था।

"आ दिव्य दीवाली जगत भर में उजाला कर रही"

जैसे दीपावली संसार को नवज्योति प्रदान करती है, ऐसे ही महाराज श्री के कलेवर से संसार को लाभ पहुंच रहा है।

आपकी लगन बाल्यकाल से ही उत्तम थी, सुन्दर लेखों का लिखना, बालसभा तथा अन्यान्य सभाओं, स्कूलों तथा संस्कृत विद्यालयों में भाषण देना आदि कार्य आपको प्रिय थे। पूज्य श्री १०८ श्री स्वामी ब्रह्मानन्द गिरि जी महाराज से बाल्यकाल ही मेंविचार चन्द्रोदय, विचार सागर आदि वेदान्त ग्रन्थों का अध्ययन किया था। आपके पिता यद्यपि अलीगढ़ में वकील रह चुके थे उन्होंने भी थोड़े दिन में ही वकालत छोड़ दी तथा सन्तों का संग ही विशेष रूप से करते रहे। महाराज श्री भी साथ ही जाया करते थे, अतः आपकी विचार धारा भी वदल गई फलस्वरूप आपने संस्कृत विद्यालय में पर्याप्त अध्ययन किया। अपने ग्राम में ही कुटिया बना कर रहे तथा ग्राम में जाना ही छोड़ दिया था, पुनः गृहस्थ आश्रम का पूर्ण परित्याग करके ब्रह्मलीन श्री १००८ श्री स्वामी हीरानन्द सरस्वती जी महाराज के आदेशानुसार आप उत्तराखण्ड हिमालय ऋषिकेश की कन्दराओं में पधारे, वहाँ कुछ काल निवास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

किया तथा दीर्घकाल तक ऋषिकेश में गंगा किनारे के पाषाणों तथा इतस्तत: अज्ञात रूप में निवास करते रहे। भक्तों के विशेष आग्रह पर कुछ काल लक्ष्मण झूला भी आश्रम में निवास किया, पुनः प्रपंच समझ कर उसका भी परित्याग कर दिया।

"गुरु कीजे जानकर पानी पीजे छानकर"

के आधार पर आपके पूर्ण परीक्षण रूपी वैराग्य व उत्तम निष्ठा से प्रभावित होकर अपने कल्याण के लिए मैंने वेद निकेतन धाम में विधिवत ब्रह्मचर्य दीक्षा ग्रहण की। महाराज श्री की त्याग तपस्या व ब्रह्मनिष्ठा से प्रभावित हो कर भक्तों ने लोक कल्याण हेतु भ्रमण की प्रार्थना की तो आपने थोड़े ही से समय में सर्व प्रथम (अजमेर) व यत्र तत्र राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार गुजरात, मध्य प्रदेश, उड़ीसा तथा पंजाब आदि विविध प्रान्तों में अपने ओजस्वी प्रवचनों द्वारा लाखों ही नर नारियों का कल्याण किया तथा आज भी कर रहे हैं।

आपका योगासन, समाधि, ज्ञान तथा प्राणायाम आदि के विषय में अच्छा अनुभव है। जीवन में चारों धामों की यात्रा ७५ भक्तों के साथ में की, कई बार बद्रीनारायण भी पधारे तथा उत्तर काशी में भी निवास किया है। सिले हुए वस्त्र तथा जूता आदि अभी भी नहीं पहनते हैं। जीवों के कल्याण के लिए वेदनिकेतन धाम की स्थापना की है।

"धन्य है आपकी ब्रह्मनिष्ठा व त्याग वृत्ति"

पूज्य गुरुदेवजी का कृपापात्र
रामजी ब्रह्मचारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ॐ

प्रार्थना

हे पूरण परमात्मा पावन हों जीवात्मा ।
विश्व बने धर्मात्मा सुखी रहें सब आत्मा ।।

अनन्त श्री विभूषित महामण्डलेश्वर

श्री विश्वगुरु जी महाराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वगुरु जीवन-चरित्र

अनन्त श्री विभूषित

विश्वगुरु जी महाराज महामण्डलेश्वर

का संक्षिप्त जीवन चरित्र

सुनो सुनो, ओ दुनिया वालो विश्वगुरु की अमर कहानी।
अतिशय विमल पुनीत मनोरम जैसे गंगा जी का पानी॥

पैराई शुभ ग्राम अलीगढ़ जिला मध्य सरसाता है।
प्रकृति प्रभा से सज्जित सुन्दर संतत शोभा पाता है॥

नर नारी सब साधु सन्त सम सदाचार रत रहते है।
भक्ति भाव में तन्मय होकर राह प्रेम का गहते है॥

इसी ग्राम के राजवंश में विश्वगुरु ने अवतार लिया।
दीपावली की ज्योति पुन्ज को सत्य और साकार किया॥

फैल रही है दिग् दिगन्त में जिनकी अक्षय कीर्ति सुहानी।
सुनो सुनो ओ दुनिया वालों विश्वगुरु की अमर कहानी॥

इनके पूज्य पिता वकील थे किन्तु वकालत छोड़ी थी।
मिथ्या सब जग जाल जान कर प्रीति राम से जोड़ी थी॥

बचपन से ही विश्वगुरु वर को वे यह पाठ पढ़ाते थे।
ईश्वर सत्य जगत है मिथ्या यही सदा सिखलाते थे॥

पाकर यों तत्त्वज्ञान पिता से विश्वगुरु जब तरुण हुए।
देख प्रबल वैराग्य विलक्षण, बान्धव गण सब करुण हुए॥

दिल में बस जाती है बरबस विश्वगुरु की अमृत बानी।
सुनो सुनो, ओ दुनिया वालो, विश्वगुरु की अमर कहानी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

✧ विश्वगुरु जीवन चरित्र ✧

आया जब प्रस्ताव विवाह का विश्वगुरु ने ठुकराया ।
किन्तु दुखी लख निज स्वजनों को मजबूरी बस अपनाया ।।

होकर के ग्रहस्थ भी निशि दिन वे विरक्त से रहते थे ।
पर उपकार निरत रह कर नित कष्ट अनेकों सहते थे ।।

एक बार भगवद्गीता पर मन में गहन विचार किया ।
वीतराग हो गये पूर्णतम, भगवत का आधार लिया ।।

अथक साधना लीन हुए तब ब्रह्म तत्त्व के पूरण ज्ञानी ।
सुनो सुनो ओ दुनियां वालो विश्वगुरु की अमर कहानी ।।

हुई प्रथम सन्तान सलोनी छोंड़ सदन आवास दिया ।
सद्गुरु हीरानन्द यती से सविधि सद्य सन्यास लिया ।।

छोड़ा सुन्दर सुवन गेह में छोड़ी पतिव्रता नारी ।
छोड़ा कुटुम्ब कबीला सारा छोड़ दई सम्पत्ति सारी ।।

भव्य हिमालय की कन्दरा में बारह वर्ष निवास किया ।
कन्दमूल फल खाकर सन्तत सब भव भय का नाश किया ।।

हुआ ज्ञान सब सृष्टि ब्रह्म मय सुन्दर राह बनी कल्यानी ।
सुनो सुनो ओ दुनियां वालो विश्वगुरु की अमर कहानी ।।

मिली साधना शक्ति जभी, तब वैदिक धर्म ध्वजा फहराई ।
ऋषिकेश में वेद निकेतन आश्रम की शोभा सरसाई ।।

कोटि-कोटि जन समय समय पर सुनो यहां पर आते हैं ।
होती उनकी भ्रांति नष्ट सब शान्ति अनोखी पाते हैं ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

★ विश्वगुरु जीवन-चरित्र ★

दरसन करते ही नास्तिक गण आत्म समर्पण करते हैं।
भोगवाद को छोड़ सद्य ही योगवाद अनुसरते हैं ॥

फूट पड़ीं है सुनों चतुर्दिक ज्ञान सूर्य की किरणें सुहानी।
सुनो सुनो ओ दुनियाँ वालो विश्वगुरु कीं अमर कहानी ॥

ग्राम ग्राम में नगर नगर में जाकर सदा सुनाते हैं।
मोह निशा में पड़े हुओं को संतत सुनो जगाते हैं ॥

है पूरण परमात्मा जिनका, अर्चन वन्दन प्यारा है।
पावन हों जीवात्मा जिनका भाव हृदय में सारा है ॥

विश्व बने धर्मात्मा सारा सुन्दर जिनका नारा है।
सुखी रहें सब आत्मा जिनका, अटल वृत्त अविकारा है ॥

हो जाते हैं भक्त नराधम सुन कर जिनकी मंजुल बानी।
सुनो सुनो ओ दुनियां वालो विश्वगुरु कीं अमर कहानी ॥

देते रहते द्रव्य निरन्तर ऐसे अक्षय दानी हैं।
करते कभी न मान स्वप्न में ऐसे सरल अमानी हैं ॥

देख सिद्धियों का प्रभाव आश्चर्य चकित जग सारा है।
किन्तु विश्वगुरु को न तनिक भी संसृति वैभव प्यारा है ॥

आते हैं जो दुखी शरण में तज कर मान कगारों को।
पाते हैं वे मुक्ति-भक्ति सब सद्य शान्ति आगारों को ॥

देखे नहीं "मधुप" हमने तो जगत मध्य ऐसे वरदानी।
सुनो सुनो ओ दुनियां वालो विश्वगुरु की अमर कहानी ॥

विश्वगुरु जी महाराज महामण्लेश्वर का
जीवन चरित्र समाप्त

रचयिता—हरीप्रकाश 'व्यास' जोधपुर (राजस्थान)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

✧ गुरु स्तुतिः ✧

गुरुर्ब्रह्मा गुर्रुविष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात्परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥

ध्यान मूलं गुरोः मूर्ति, पूजा मूलं गुरोः पदम् ।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरोः कृपा ॥ २ ॥

चैतन्य शाश्वतं शान्तं, व्योमातीतं निरंजनम् ।
नाद बिन्दु कलातीतं, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ३ ॥

अखण्ड मण्डला कारं, व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शित येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ४ ॥

अज्ञान तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन शलाकयाः ।
चक्षु हन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ ५ ॥

वन्दे बोध मयं नित्यं, गुरुं शंकर रूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वकोऽपि, चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ६ ॥

अखण्डानन्द बोधाय, शिष्य सन्ताप हारिणे ।
सच्चिदानन्द रूपाय, रामाय गुरवे नमः ॥ ७ ॥

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं, केवलं ज्ञान मूर्त्तिम् ।
द्वन्दातीतं गगन सदृशं तत्त्व मस्यादि लक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमल मचलं, सर्वधी साक्षि भूतम्, ।
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरुं तन्नमामि ॥ ८ ॥

अज्ञान मूल हरणं, जन्म कर्म निवारणम् ।
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थं, गुरोर्पादादकं पिवेत, ॥ ९ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

॥ श्री विश्वगुरु परमात्मने नमः ॥

अथ विश्वगुरु कृत कल्पतरु

* द्वादश भाग (१२) *

मंगलाचरण सरस्वती पूजनम्

ॐ शुक्लाँ ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्तेस्फाटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ १ ॥
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ॥२॥
नमस्ते शारदे देवि काशमीरपुरवासिनि ।
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादान च देहि मे ॥ ३ ॥
कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरणभूषिता ।
महासरस्वतीदेवी जिह्वाग्रे सन्निविश्यताम् ॥ ४ ॥
श्रीगणनायक शारदा गुरु चरणन चितलाय ।
विश्वगुरु कृत कल्पतरु, वरणहुं विश्व हिताय ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विश्वगुरु कृत स्तुति

रामन्नमामि शंकरं गजाननञ्च नौम्यहम् ।
अनादि ब्रह्म शान्तये अनन्तज्योतिरुत्तमम् ।। १ ।।
योगभिर्ध्यान गम्यसच्चिदानन्दघन
निर्विकार निर्विकल्प ब्रह्मणे नमाम्यहम् ।
नमामि लक्ष्मीपतिञ्च कृष्ण पाद पंकजम्
करोमि पाद पंकजे गुरोर्प्रणाममहम् ।। २ ।।

प्रेमियों ! संसार आधि व्याधि रूप ही है इसमें किंचित भी संदेह नहीं है, नई नित्य आपत्तियाँ लगी हुई रहतीहैं। कहाभी है कि—

हुआ आज बीमार मैं कल्ल नारी,
कभी पुत्र बीमार पुत्री दुखारी।
नई नित्य आपत्ति है जी दुखाती,
अरे हाय यों ही चली आयु जाती ।। १ ।।
यहाँ दौड़ता हूं वहां भागता हूं,
कमाते कमाते हुआ बावला हूं।
मरना चाहता नहीं मौत आती,
अरे हाय यों ही चली आयु जाती ।। २ ।।

किन्तु आपत्तियों के निवारण का उपाय भी है, वह है एकमात्र प्रभु की शरण ग्रहण करना। प्रभु बड़े ही दयालु हैं, भक्त-वत्सल हैं गरीब-निवाज हैं, सबकी सुधि लेते हैं कहा है—

दोहा—अमरबेल बिन मूल की प्रतिपालत है ताहि ।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं, तजि खोजत फिरिये काहि ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थात प्रभु की शरणागति से सभी पाप ताप मिट जाते हैं। सुनी नहीं उनकी दिव्य घोषणा! पड़ जाओ प्रभु के पाद प्रांत में, सारा बोझा उतार डालो उनके सुरसरि-जनक चरण नखों में, पूर्व के पापों के लिये मत घबराओ उनको वे स्वयं काट देंगे। कहा है कि—

पद्य—प्रभु की प्रेम दृष्टि से बदल जाती हैं तकदीरें।
अगर विश्वास सच्चा हो तो कट जाती हैं जंजीरें।।

अर्थात—प्रभु प्रेम की प्रबलता में तो नियम भी बदल देते हैं।

भजन

बल प्रेम के पाले पड़कर, प्रभु को नियम बदलते देखा।
उनका मान भले टल जाये, प्रभु का मान न टलते देखा ।।टेक।।
जिनकी केवल कृपा दृष्टि से, सकल सृष्टि को पलते देखा।
उनको गोकुल के गोरस पर, सौ-सौ बार मचलते देखा ।।१।।प्र०
जिनके चरण कमल कमला के, करतल से न निकलते देखा।
उनको बृज करील कुंजों में, कंटक पथ पर चलते देखा ।।२।।प्र०
जिनका ध्यान विरंचि शम्भु, सनकादिक से न सम्भलते देखा।
उनको ग्वाल सखा मण्डल में, लेकर गेंद उछलते देखा ।।३।।प्र०
जिनकी बंक भृकुटिं के भय से, सागर सप्त उछलते देखा।
उनको ही यशोदा के भय से, अश्रु बिंदु दृग ढलते देखा ।।४।।प्र०

लेकिन होना चाहिये सच्चा प्रेम!

Love is the God and God is the Love.

प्रेम ही परमात्मा है परमात्मा ही प्रेम है सच्चे प्रेम में अपने को मिटाना पड़ता है। जैसे कि कहा है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मिटादे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मर्तबा चाहे,
कि दाना खाक में मिलकर, गुले गुलजार होता है।
(स्वामी रामतीर्थ

पद्य—जब मैं था तब तू नहीं, जब तू है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी जामे दो न समाहिं ॥

अतः अनन्याश्चिन्तयन्तो माम् के आधार पर प्रभू प्रेम के स अपने आपको समर्पित कर देना चाहते हैं जैसा लिखा है कि—

प्रेम के भूखे प्रभु

प्रेम का भूखा हूं मैं और प्रेम ही एक सार है।
प्रेम से मुझको भजे तो भव से बेड़ा पार है॥
प्रेम बिन सब कुछ भी दे डाले तो मैं लेता नहीं।
प्रेम से एक फूल तुलसी दे मुझे स्वीकार है॥
अन्न धन और वस्त्र भूषण कुछ न मुझको चाहिये।
आप हो जावे मेरा बस पूर्ण यह सत्कार है॥
प्रेम बिन सूनी पुकारों को कभी सुनता नहीं।
प्रेम पूरित टेर ही करती मुझे लाचार है॥
जो मुझी में प्रेम रखकर मुझको भजते हैं सदा।
उनके और मेरे हृदय का एक रहता तार है॥
बांध लेते हैं मुझे यों भक्त दृढ़ जंजीर में।
इसलिये इस भूमि पर होता मेरा अवतार है॥
इस अधम नर देह का हरिनाम ही आधार है।
प्रेम के भूखे हैं प्रभु "साबिर" की यह गुफ्तार है॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु प्रेम और भक्ति बिना विश्वास के नहीं होती, पूर्ण विश्वास सफलता की कुञ्जी है।

सूत्र—विश्वासो फलदायकः

दोहा—बिन विश्वास भक्ति नहीं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
राम कृपा बिन सपनेहु जीव न लह विश्राम।

अर्थात्—अंग्रेजी में भी कहा है "No relief without belief"

नो रिलीफ विदाउट बिलीफ—यानी बिना विश्वास के पूर्ण विश्राम नहीं मिलता।

श्लोक—भवानी शंकरौ बन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ।
याभ्यां बिना न पश्यन्ति, सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम् ॥

भावार्थ—हम माता पार्वती जो कि श्रद्धा का स्वरूप हैं और भगवान शंकर जो कि विश्वास का स्वरूप है उनकी वन्दना करते हैं क्योंकि बिना श्रद्धा और विश्वास के सिद्ध भी हृदयस्थ ईश्वर को नहीं देख सकते अतः श्रद्धा और विश्वास के साथ श्री रामचरित मानस पाठ प्रारम्भ कीजिएगा।

—◈◈◈—

श्री रामचरित मानस की महिमा

"श्री रामचरित मानस (तुलसी कृत रामायण) पुस्तक मात्र नहीं बल्कि हमारे हिन्दू-धर्म का प्राण है। इसका सिद्धान्त त्रिकाल सत्य है। सब काल, सर्व देश, सब प्रकार के मनुष्य के लिये इसका उपदेश उपयोगी है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

"वास्तव में देखा जाय तो यह केवल हिन्दुओं का ही ग्रन्थ नहीं, किन्तु समस्त संसार की मानव जाति के लिए परमोपयोगी है। विश्व के सभी भागों के विद्वान इससे प्रभावित होकर इसका आदर करने लगे हैं। अभी रूस के महानुभावों ने इस तुलसी कृत रामायणजी के दोहे व चौपाईयों के आधार पर, साढ़े तीन करोड़ पौण्ड रुपया तथा (Time is money) वेष कीमती समय के दस वर्ष खर्च करके रूसी भाषा में (Translation) अनुवाद कराया है क्योंकि इसमें दिये गये उपदेश सारे जगत् के कल्याण के लिये हैं। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि यह सबके लिये सरल और सुलभ है। इससे (१) धर्म (२) अर्थ (३) काम (४) मोक्ष चारों वस्तुओं की प्राप्ति होती है। जो इसके पास जाता है वह प्यासा नहीं लौटता तृप्त होकर ही लौटता है। इसकी प्रत्येक चौपाई मन्त्र है। जो पूरा पाठ किसी भी कारण से नहीं कर सकते वह एक ही चौपाई या दोहे के पाठ करने से लाभ उठा सकते हैं। इस ग्रन्थ से लोक परलोक दोनों सुधर जाते हैं, सकामी की कामना पूर्ण होती है और निष्कामी परम पद को प्राप्त होता है। सकामी भी गिरता नही वह भी निष्काम होकर अविनाशी पद को प्राप्त कर लेता है।"

यह रामायण कामधेनु के समान फलदायिनी है।

कवित्त

—वेदमत शोधि शोधि शोधि के पुराण सब,
सन्त औ असन्तन के भेद को बतावतो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कपटी कुराही क्रूर कलिके कुचाली जीव,
कौन राम नामहू की चरचा चलावतो ।।
बर्णी कवि कहैं मानौ मानौ हो प्रतीत यह,
पाहन हिये में कौन प्रेम सरसावतो ।
भारी भवसागर उतारतो कवन पार,
जो पै यह रामायण तुलसी न गावतो ।।

"यह तुलसी कृत रामायण साक्षात् कल्पवृक्ष है, जो दीनों के लिये कामधेनु, रोगियो के लिये धन्वन्तरि, निराशों के लिए आशा, भक्तों के लिए भगवतस्वरूप तथा मुमुक्षुओं के लिए प्रत्यक्ष मोक्ष स्वरूप है। घरों में, झोपड़ियों, में, राजमहलों में तथा साधु सन्यासियों की कुटियों में सर्वत्र ही इसका आदर है।" कहा भी है :—

चौ०—रामायण सुर धेनु समाना । दायक अभिमत फल कल्याना ।।
मन कामना सिद्धि नर पावा । जो यह कथा कपट तजि गावा ।
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहि । सुख सम्पति नाना विधि पावहिं ।
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं । अन्त काल रघुपति पुर जाहिं ।।

"कल्याण" के किसी-किसी अङ्क में ऐसे लेख भी निकल चुके हैं जिनसे पाठकों को मालूम हो गया होगा कि किस तरह से अनेक लोगों ने इस रामायण जी के पाठ से लाभ उठाया है।मुझे विश्वास है कि कल्याण में लोग मिथ्या नहीं लिखते होंगे। पाठकों को चाहिए कि वे इन बातों पर विश्वास करके स्वयं खोज करें तथा लाभ उठावें, क्योंकि—

'जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ ।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

यद्यपि सांसारिक विषयों के लिए इस राम चरित मानस की शरण लेना अनुचित ही है, क्योंकि गोस्वामी जी का वचन है —

नर तनु पाय विषय मन देहीं। पलटि सुधा ते शठ विष लेहीं।
ताहि कबहुं भल कहै न कोई। गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥
एहि तनु कर फल विषय न भाई। स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥

श्लोक—ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥
(अ० ५-२२)

भावार्थ——संस्पर्श से उत्पन्न होने वाले जितने भी भोग हैं सभी दुःखदाई तथा नाशवान् हैं। बुद्धिमान उनमें रमण न करे। और भी कहा है—

(१)

विषय भोग सब नाशवन्त हैं, आते हैं फिर जाते।
धिक्-धिक उनका जीवन है, जो उनमें चित्त लगाते ॥

(२)

हे रे चंचल चित्त समझले, सुख नाहीं जग माँहीं।
चाहे जितना दौड़ जगत में, सुख पावेगा नाहीं ॥

अतः श्री राम चरित मानस का सेवन केवल भगवत्प्राप्ति तथा भगवत्प्रीति के निमित्त ही करना चाहिए, मानव जीवन का यही सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य है। इसको छोड़कर भोगों में मन को भटकाना तथा उसके लिए भगवान का, भक्ति का, श्री रामायण जी का राम नाम का सहारा लेना मूर्खता ही है। पर इससे अधिक मूर्ख तथा क्रूर वह है जो अपने को बुद्धिमान मानते हुए तथा समाज में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिष्ठा रखते हुए भी नाना प्रकार के छल छद्म, चोरी, डकैती हिंसा, प्रतिहिंसा, असत्य, बेईमानी, काला बाजारी, घूसखोरी करके भोगों को प्राप्त करना और भोगना चाहता है, यह वस्तुतः महा पाप है।"

"इससे अच्छा तो शुद्ध भाव से नेक कमाई करना है, पर यदि उसमें सिद्धि न मिले तथा मन पूर्णतया निष्काम न हो सके तो 'सकल अभिमत दातार' परम उदार भगवान से याचना करने में ही बुद्धिमानी है। इससे वह वस्तु यदि नहीं भी मिलती तो भगवान की कृपा से कामना का नाश होकर भगवत्प्राप्ति तो हो ही जाती है। इससे सिद्ध होता है कि भगवान से याचना करने वाला भी अच्छा ही है, क्योंकि अबोध बच्चा किसी वस्तु के लिये अपने मां-बाप से ही कहता है, इसीलिये तो श्रीमद्भगवद्गीता में आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु, भक्तों को भी 'उदाराः सर्वएवैते' कहा है तथा श्रीरामायणजी में भी "सुकृति चारिउ अनघ उदारा" ऐसा वचन हैं। भगवान से सकाम भाव रखने वाले को भी भगवत्प्राति होती है। गीता में श्री भगवान ने कहा है।

(१) 'यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥"

(२) "मद्भक्ताः यान्ति मामपि ॥'

इन कारणों से यदि कोई सकाम भाव से भी मानस का पारायण (रामायण जी का पाठ) करता है वह भी श्रेष्ठ ही है। "अब आगे कुछ सच्ची घटनायें जो अभी घटित हुई हैं दी जाती हैं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्री रामायणजी के पाठ का अदभुत चमत्कार

१—पुत्र प्राप्ति की सच्ची घटना

मैं अभी श्रीगीता जयन्ती के सुअवसर पर स्थान जावरा जो कि मध्यप्रदेश (मालवा) में है गया था वहां पर मुझे शुगर मिल में डाक्टर रतीलाल जी प्रवचन के लिये ले गये थे। वहां पर एक पं० श्री दीनानाथ जी द्विवेदी चीफ इन्जीनियर हैं। उन्होंने श्री रामायण जी के पाठ की बड़ी महिमा वर्णन करते हुए कहा कि मैंने भी पुत्र प्राप्ति की इच्छा से पाठ किया था जिससे यह लड़का उत्पन्न हुआ, लड़के का नाम है वीरेन्द्र नाथ द्विवेदी। वह भी इन्जीनियरिंग का कोर्स पास कर चुका है। पाठ की विधि आगे लिखी जायेगी।

२- रोग शान्ति

एक सज्जन ने मुझे स्थान कांधला जो कि जिला मुजफ्फर-नगर में है, बताया उनके सिर के पीछे दिमाग के स्थान पर बड़ी भारी रसौली थी। परेशान होकर आपरेशन के लिए डाक्टरों को दिखाया; डाक्टरों ने कहा कि विलायत ले जाओ दिमाग का आपरेशन बड़ा खतरनाक है हमसे नहीं होता अस्तु विलायत गये वहां भी निराश ही रहे अब चारों ओर अन्धेरा ही था। ईश्वर का विश्वास करके श्रीरामायणजी का पाठ प्रारम्भ किया। नवाह्न ९ पाठ करने पर बिल्कुल ठीक हो गये, यह है—पाठ की महिमा।

३- घटना जीविका प्राप्ति

"फिरोजाबाद के निकट एक गांव में एक बी०ए० पास नव-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युवक छः वर्षों तक बेकार बैठा रहा। कहीं नौकरी नहीं मिली पर मानस मन्त्र की कृपा से वे आजकल राजस्थान में पुलिस विभाग के आफिसर हैं।"

४- कन्या विवाह

"एक कन्या की अवस्था २६ वर्ष की हो गयी थी। रुपये के अभाव के कारण विवाह नहीं हो रहा था। रामचरित मानस के ३ ही पाठ किये कि फलस्वरूप में उसका विवाह एक अच्छे घराने के नवयुवक के साथ हो गया।" विधि आगे है।

"मनुष्य मजूरी देत हैं तो क्यों राखेंगे राम।"

५- परीक्षा में सफलता

मानस चौपाई का चमत्कार (कल्याण वर्ष ३४, संख्या ११)

गत वर्ष मैंने बी० एस-सी० की परीक्षा पास की थी। घर के सभी लोगों का आग्रह था कि मैं इञ्जीनियरिंग में जाऊँ। आखिर अच्छे नम्बर आने के कारण मेरा दाखिला मैकेनिकल इञ्जीनियरिंग में भी हो गया। किन्तु दुर्भाग्यवश नेत्रों की कमजोरी और शारीरिक दुर्बलता के कारण मैं उसमें चल नहीं सका और अन्त में हताश होकर डेढ़ महीने के बाद सितम्बर में इञ्जीनियरिंग कालेज छोड़ना पड़ा। अब मेरे लिये चारों ओर अन्धकार था। एम० एस० सी० के (Admission) दाखिला सब विद्यालयों में बन्द हो चुके थे। किन्तु ईश्वर की कृपा से मेरा दाखिला उदयपुर कालेज में एम० एस० सी० गणित में हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

चूंकि कालेज में बहुत विलम्ब के बाद प्रविष्ठ हुआ था, इसलिये अध्ययन में काफी कठिनाई पड़ी। काफी मात्रा में कोर्स पढ़ाया जा चुका था। आखिर मैंने अब भगवान का ही सहारा लिया और 'कल्याण' में प्रकाशित एक चौपाई का मानसिक जप करना शुरू कर दिया। कल्याण में तो जप की बहुत विधि लिखीं थी, "कल्याण" में यह भी छपा था कि यह चौपाई परीक्षा में पास होने का मन्त्र है अस्तु परीक्षा के दिन आ गये मैंने यथासाध्य अध्ययन भी खूब किया। एम० एस० सी० में चार प्रश्न-पत्र होते हैं। दूसरे नम्बर का प्रश्न-पत्र जो गणित की एक शाखा (calculus) का होता है, इतना कठिन था कि बहुत से विद्यार्थियों ने तो श्रेणी बिगड़ने की आशंका से आगे परीक्षा ही नहीं दी। वैसे भी एम० एस० सी० (गणित) बड़ा कठिन विषय है। इस कारण विद्यार्थी एक श्रेणी में दो वर्ष लगाते हैं। मैंने अब ईश्वर को ही एकमात्र सहारा माना और चौपाई का जप करके दोनों अन्तिम प्रश्न-पत्रों को भी दे डाला। वे दोनों काफी अच्छे हुए।

जब परिणाम घोषित हुआ तब विश्व विद्यालय में सिर्फ करीब ४९% प्रतिशत परिणाम रहा और मेरे नम्बर प्रथम श्रेणी में थे। मैं तो अपने को प्रथम श्रेणी का आना इस मन्त्र का ही चमत्कार समझता हूँ। अतः इस अनुभव के आधार पर मेरा विद्यार्थी वर्ग से निवेदन है कि वे पूरा अध्ययन तो अवश्य करें पर परीक्षा में कभी हताश न होवें और दृढ़ निश्चय के साथ चौपाई का जप करके परीक्षा में बैठें। ईश्वर उन्हें अवश्य सफलता देगा। चौपाई आगे लिखी है।

लेखक—श्याम मनोहर व्यास (बी० एस० सी०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(६) रोग शान्ति की सच्ची घटना

"एक साध्वी स्त्री भयंकर रोग से पीड़ित होकर सात वर्षों तक एक ही करवट (पासे) से लेटी रही। बड़े-बड़े डाक्टर चिकित्सा करने में असफल रहे। अन्त में "श्रीरामचरित मानस" के पाठ करने से वह पूर्णतया स्वस्थ हो गयी–विधि आगे है।

(यह राजस्थान की घटना है)

(७) पति द्वारा त्यक्त पत्नी का पुनर्ग्रहण

राजस्थान में एक नवयुवती को उसके पति ने विवाह के पश्चात् ही रूठ करके छोड़ दिया था, बुलाता ही नहीं था। उस लड़की ने रामायण के मन्त्र का अनुष्ठान किया जिससे उसका स्वामी अपने आप आकर उसको घर ले गया।

(८) खोया हुआ पुत्र लौट आया

टाटानगर में एक अध्यापक का लड़का रुष्ट होकर चला गया था बहुत समय तक पता नहीं चला जब सम्पुट सहित पाठ किया तब लड़का स्वयं ही आ गया। यह गुरुदेव विश्वगुरुजी की आंखों देखी घटना है।

(९) खोई हुई गौ स्वयं ही आ गई

मेरी एक गौ खो गयी थी मैं उसे खोज रहा था। मुझे गुरुदेव श्री स्वामी मुनीशानन्द सरस्वतीजी महाराज मिल गये। उन्होंने कहा आप खोजना बन्द करके श्री रामचरित मानस की चौपाई का जप करें। खोजना बन्द कर दें गौ स्वयंमेव आ जायेगी। किन्तु मैं और मेरा पुत्रादि खोजते भी रहे और जप भी करते रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

किन्तु गौ नहीं आई । जब हम सभी पहाड़ कान्जीहौद आदि सभी में खोजकर थक गये और भगवान को एक मात्र सहारा मानकर—

'गई बहोरि गरीब निवाजू । सरल सबल साहिब रघुराजू ।।'
बालकाण्ड——१२।।

इसका जप करना निष्ठा के साथ प्रारम्भ किया तो गौ स्वयं ही घर पर आ गई । यह घटना दिनाँक २२-१०-६४ कार्तिक कृष्ण १ गुरुवार स० २०२१ की है ।

प्रेषक——पं० गोविन्द सहाय बगरहट्टा रेलवे कालोनी अजमेर

ऐसे अनेकों उदाहरण हैं कहां तक लिखें ।

"धन्य है मानस की महिमा"

मानस-मंत्र सिद्ध करने की विधि

श्रीरामायणजी की वहुत सी चौपाइयां तथा दोहे सन्त पुरुषों द्वारा मंत्र माने गये हैं और वात है भी सच्ची । इन मंत्रों को सिद्ध कर लेने पर यदि रामायण का पूरा पाठ न भी करे केवल मंत्रों का नियमानुसार जप ही करले तो भी इच्छित फल की प्राप्ति हो जाती है । सन्त पुरुषों से सुन कर तथा कल्याण के लेखों को तथा कलियुग का कल्पवृक्ष पुस्तक को आधार बनाकर जो कुछ समझ में आया है लिखा जाता है। मानस प्रेमी स्वयं अनुभव कर के देख लें ।

मानस मंत्र सिद्ध करने के लिए १ दिन हवन करना पड़ता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि दो मंत्र सिद्ध करें तो १ दिन, तीन सिद्ध करें तो भी १ दिन। हवन में १२ वस्तुएँ चाहिएँ। नाम ये हैं :—

हवन सामग्री

(१) चन्दन का बुरादा एक पाव (२) सफेद तिल आधा पाव (३) शुद्ध खांड आधा पाव (४) चावल आधा पाव (५) जौ आधा पाव (६) शुद घी ढाई पाव (७) अगर एक तोला (८) तगर एक तोला (९) कपूर आधा तोला (१०) केसर एक रत्ती (११) नागरमोथा एक तोला (१२) पंचमेवा एक पाव।

पंचमेवा में निम्नलिखित वस्तुएँ होनी चाहिए :—

मिस्री, छुआरा, नारियल की गिरी, चिरौंजी और किशमिश।

इन सब वस्तुओं की गिरी ही बराबर-बराबर मात्रा में लेवें। यह सभी वस्तुएँ कूटकर आधा पाव घी मिला लें। आधा सेर आहुति के लिए रखें।

अन्य आवश्यकीय बातें :—

१—हवन रात्रि के दस बजे के बाद ही करना चाहिए।

२—काशीजी की ही ओर मुख करके बैठें और काशीपति यानी भगवान शंकर को साक्षी बनावें, क्योंकि काशीजी के अन्दर भगवान शंकर ने रामायणजी के दोहा, चौपाई, छन्द व सोरठाओं को मन्त्रों की पूर्ण शक्ति प्रदान की है। काशी मध्य-प्रदेश व राजस्थान के पूर्व दिशा में है अतः पूर्व की ओर मुख करें। अन्य देश वाले दिशा का ज्ञान करलें। एक कलश में जल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ऊपर नारियल रखें। बाद में जल सूर्य को अर्घ्य दें कलश दान कर दें।

३—आसन ऊन या कुश का ही होना चाहिए, घी का दीपक रखें।

४—समिधा (काष्ठ), पीपल, आम या शमीवृक्ष यानी (छोंकर) पलाश यानी ढाक आदि इनमें से किसी की भी हों।

५—श्रद्धा और विश्वास पूर्वक ही हवन करें, क्योंकि

Without Shraddha and the belief the worship loses its significance.

विदाउट श्रद्धा एन्ड दी बिलीफ दी वर्शिप लूजेज इटस सिग्नीफिकेन्स, यानी बिना श्रद्धा विश्वास के पूज़ा का महत्व कम हो जाता है।

६—इन सब बातों को गुप्त ही रखें न किसी को देखने दें और न किसी को सुनावें।

७—आहुति पौन तोला सामग्री की हो किसी चमची से अन्दाजा कर लेवें।

८—नवीन अथवा धुला हुआ वस्त्र पहन कर हवन करें, वस्त्र सिला हुआ न हो जैसे कमीज बनियान आदि केवल धोती ही पहनें। सरदी आदि में ऊपर चद्दर या शाल या कम्बल ओढ़ लेवें, वस्त्र फटा हुआ भी न हो साफ शुद्ध हो।

९—कमरे या ऊपर की मंजिल पर भी हवन कर सकते हैं। कुण्ड बनाने की आवश्यकता नहीं साधारण मिट्टी की वेदी बनाकर गौ के गोबर से लीप लेवें, गुलाल या आटे से चौक पूर कर सजा लें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०—हवन करते समय उच्चारण बोलकर या मन ही मन भी बोल सकते हैं।

११—स्त्रियां भी हवन करके मन्त्र सिद्ध कर सकती हैं। रजस्वला तथा सूतक के समय नहीं। (सन्तान पैदा होने के बाद कुछ दिन का समय सूतक माना जाना है)

१२—रक्षा चौपाई भी लंका काण्ड की है किन्तु यह कभी भी सिद्ध की जा सकती है। शेष लंका काण्ड के मंत्रों को शनिवार के दिन ही सिद्ध कर सकते हो।

१३—एक मंत्र को सिद्ध करने के लिए हवन केवल एक ही दिन करना पड़ता है फिर रामायण जी का सम्पुटित पाठ करे, दूसरे मंत्र के लिये दूसरे दिन हवन करना होगा किन्तु सम्पुट तो सभी मंत्रों के एक साथ भी पाठ करने के समय लगाये जा सकते हैं। चाहे कितने भी हों।

१४—दिन भर व्रत करने की आवश्यकता नहीं, एक बार भोजन या फलाहार ले लेवें।

सर्व प्रथम यह चौपाई बोलें—

यह रक्षा मन्त्र है।

मामभिरक्षय रघुकुल नायक
धृत वर चाप रुचिर कर सायक॥ (लंका दो० ११४ख)

स्वाहा बोलकर एक आहुति घी की डालदें और एक बार आहुति सामग्री की डाल देवें, पुनः चौपाई बोलकर घृत सामग्री की आहुति डालें इस प्रकार १०८ आहुतियाँ देवें गिनती के लिये १०८ दाने चावल या जौ के रख लेवें १०८ वीं बार पूर्ण आहुति में सभी शेष घी और सामग्री डाल देवें बस यह मंत्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सिद्ध हो गया क्योंकि एक दिन सिद्ध कर लेने से सदा के लिये सिद्ध हो जाता है। फिर जहाँ कहीं भी संकटपूर्ण स्थान में रहना पड़े वहाँ संकट और भय से बचने के लिये इस रक्षा मंत्र की चौपाई को बोलकर अपने चारों ओर चौकोर रेखा खींच ले, कोई भी भय नहीं रहेगा।

सीता जी की रक्षा के लिये लक्ष्मणजी ने जो रेखा खींची थी यह उसी के आधार पर है।

फिर भी रामायण जी के किसी भी मंत्र को सिद्ध करने के लिये हवन करो या पाठ करो तो, प्रथम रक्षा रेखा मंत्र की चौपाई बोलकर चारों ओर रेखा खींच लिया करना ताकि आसन सुरक्षित हो जाय। क्योंकि 'श्रेयांसि बहु विघ्नानि।'

(१) अतः पुत्र, धन, विद्या, ज्ञान प्राप्ति आदि किसी भी वस्तु की प्राप्ति के लिये हवन करें तो हवन सामग्री पहले बराबर ही ले लेवे, उसी प्रकार वस्त्र, आसन आदि रखें। रक्षा मंत्र बोलकर रक्षा-रेखा खींच लें पुनः अपनी कामना के अनुसार मंत्र चुनलें उसे बोलकर १०८ आहुति देवें। गिनती के लिये १०८ दाने रख लेवें।

(२) पुनः हवन करने के बाद श्री तुलसी कृत रामायण जी को नवाह्न (यानी ९ दिन में) अथवा (मास पारायण) यानी १ महीने में सम्पूर्ण पढ़ लेवें, सम्पुट वल्ली सहित।

(३) सम्पुट उसे कहते हैं जो इच्छित चौपाई जैसे—

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी॥

यह प्रत्येक दोहा, छन्द, सोरठा के पीछे बोली जायगी। इस का नाम सम्पुट लगाना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(४) और सम्पुट वल्ली उसे कहते हैं कि वही सम्पुट वाली चौपाई हरएक दोहा, छन्द सोरठा के पहले भी बोली जायगी और फिर दोहा, छन्द, सोरठा बोल कर बाद में भी बोली जायगी। इस प्रकार पाठ करना सम्पुट वल्ली है। पाठ सम्पुट वल्ली से करना अधिक लाभदायक है।

(५) इस भांति रामायणजी के ३ पाठ करें यदि कामना पूरी न होवे तब हवन तो एक ही बार पाठ से पहले होता है फिर नहीं किन्तु पाठ ५ बार या ९ बार करें।

(६) पाठ करने से पहले १ माला राम नाम की और १माला सम्पुट वाले मन्त्र को जपलें तथा श्री राम दरबार के चित्र का, गोस्वामी तुलसीदासजी, बाल्मीकिजी, श्रीगणेशजी के चित्र का षोडशोपचार पूजन कर लेवें, पाठ दिन या रात में चाहे कभी करें।

पालनीय नियम

यदि श्री रामचरित मानस (तुलसीकृत रामायण) का अनुष्ठान करने वाले यथाशक्ति इन नियमों का पालन करें तो लाभ और भी शीघ्र होगा।

१—भूमि पर या लकड़ी के तख्त पर सोयें चारपाई या पलंग पर नहीं।

२—सूर्योदय से पहले उठिये और कुल्ला एवम् यथा संभव स्नान करके साफ शुद्ध हो जाइये।

३—भोजन सादा और सात्विक कीजिये। यदि हो सके तो एक बार, नहीं तो हल्का-हल्का दो बार कर लेवें।

४—सत्य बोलिये, यथाशक्ति मौन रहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

५—पाठ करते समय बीच में मत बोलिये, इधर-उधर म देखिये भगवान का ध्यान करते रहिये, शान्त रहिये।

६—पाठ करते समय लघुशंका के लिये जाना पड़े तो ज से लिंग को शुद्ध कीजिए, कुल्ला कीजिये और पांव धो लीजि तब पाठ पर बैठिये। यदि शौच जाना पड़े तो स्नान करि और वस्त्र बदलकर बैठिये।

७—पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें, अष्टांग मैथुन से बचें

श्लोक—स्मरणं कीर्तनं केलिं प्रेक्षणं गुह्य भाषणम्।
संकल्पोऽथ प्रयत्नश्च क्रिया निष्पतिरेव च॥

(१) देखी हुई स्त्री का यदि स्त्री हो तो देखे हुए पुरुष क बुरी भावना से स्मरण न करे। (२) उसका कथन भी न करे। (३) केलि यानी क्रीड़ा न करे। (४) बुरी दृष्टि से न देखे (५) गुप्त भाषण न करे। (६) बुरा संकल्प उत्पन्न न करे।

७—उसकी प्राप्ति का प्रयत्न न करे। दूषित क्रिया न करे इस प्रकार दोषों से प्रत्येक स्त्री पुरुष को बचकर रहना चाहिए वही पूर्ण ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी है।

८—पाठ करने के लिये रामायण अपनी खास ही होनी चाहिए, पवित्र स्थान पर पुस्तक को रखें। पाठ के समय पुस्त का आसन अपने आसन से ऊँचा होना चाहिये। प्रतिदिन ग्रन् को प्रणाम करके पाठ आरम्भ करें, श्री रामचरित मानस श्री रामचन्द्र जी का अंग ही है इसमें सन्देह नहीं, अंग कैसे हैं य आगे लिखेंगे।

९—मन्त्र की एक माला जप लिया करें तथा चलते फिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उठते-बैठते भी करते रहें। दृढ़ विश्वास रखें कि श्रीसीताराम जी की कृपा से लाभ हो रहा है, सफलता होगी ही।

१०——जो निर्धनता के कारण या अन्य किसी रुकावट से हवन करके मन्त्र सिद्ध न कर सकें वे सम्पुट सहित तुलसी कृत रामायण का नवाह्न अथवा मास पारायण का पाठ करें और जबतक लाभ न हो तबतक करते रहें। प्रथम सम्पुट की एक माला जप कर पाठ प्रारम्भ करें।

११—जो कोई सज्जन या साध्वी पठित न होने के कारण या अन्य रोग आदि की असमर्थता के कारण पाठ न कर सके तो उसको चाहिए कि अपनी कामना के अनुकूल मन्त्र चुनलें, यदि पढ़े हुए न हों तो किसी से भी पूछ कर याद करलें। फिर आर्त होकर उस मन्त्र को बैठकर अथवा चलते-फिरते अधिक से अधिक संख्या में जपें या गायन करते रहें। ऐसा करके बहुतों को लाभ उठाते देखा गया है। बस श्रद्धा और विश्वास चाहिए।

११——पाठ या जप आवश्यकता होने पर विश्वास पूर्वक करना चाहिये, मन में शंका सन्देह रखकर या केवल परीक्षा करने के लिये नहीं करना चाहिए। सम्पुट की १ माला नित्य जप लिया करें। यह सभी कल्याण अंक १०/१९५५ गीता प्रेस, 'कलियुग का कल्प वृक्ष' रामायण शक्ति, रामायण सन्देह तथा गुरुदेव के निजी अनुभवके आधार पर लिखा गया है।

अब कुछ मन्त्र दिये जाते हैं

१—विपत्ति नाश के लिये

राजिवनयन धरे धनु सायक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भगत विपति भजन सुखदायक ।। बालकाण्ड १७

२—कठिन कलेश को दूर करने के लिये

हरन कठिन कलि कलुष कलेसू ।
महामोह निसि दलन दिनेसू ।। अयोध्याकाण्ड ३:

३—विघ्न नाश के लिये

सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही ।
राम सुकृपा बिलोकहिं जेही ।। बालकाण्ड ३८

४—खेद नाश के लिये

जब ते राम ब्याहि घर आये ।
नित नव मंगल मोद बधाये ।। अयोध्याकाण्ड १

५—महामारी हैजा आदि के लिये

जय रघुबंस बनज बन भानू ।
गहन दनुज कुल दहन कृसानू ।। बालकाण्ड २:

६—उपद्रवों तथा रोगों की शान्ति के लिये

दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
राम राज नहि काहुहि व्यापा ।। उत्तरकाण्ड

७—संकट नाश के लिये

जौं प्रभु दीन दयालु कहावा ।
आरति हरन वेद जसु गावा ।। बालकाण्ड
जपहिं नाम जन आरत भारी ।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ।। बालकाण्ड
दीन दयाल विरदु सम्भारी ।
हरहु नाथ मम संकट भारी ।। सुन्दरकाण्ड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८—विष नाश के लिये

नाम प्रभाव जान सिव नीको ।
कालकूट फल दीन्ह अमी को ।। बालकाण्ड १८

९—मस्तिष्क की पीड़ा (सिर दर्द) दूर करने के लिये

हनूमान अंगद रन गाजे ।
हांक सुनत रजनीचर भाजे ।। लंका कांड ४६

कोई दुश्मन चोर या डाकू मारने के लिये अथवा लूटने के लिये आता हो तो इस मन्त्र के जप से रक्षा होतीहै ।

१०—भूत को भगाने के लिए

प्रनवउँ पवन कुमार खल बन पावक ग्यान घन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ।। बालकाण्ड १७

११—नजर झाड़ने के लिए

स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी ।
निरखहिं छबि जननी तृन तोरी ।। बालकाण्ड १९७

१२—खोई हुई वस्तु को प्राप्त करने के लिये

गई बहोरि गरीब नेवाजू ।
सरल सबल साहिब रघुराजू ।। बालकाण्ड १२

१३—जीविका प्राप्त करने के लिये

बिस्व भरन पोषण कर जोई ।
ताकर नाम भरत अस होई ।। बालकाण्ड १९६

१४—दारिद्रय को दूर करने के लिये

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के ।
कामद घन दारिद दवारि के ।। बालकाण्ड ३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

१५–सुख सम्पत्ति के लिये

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं ।
जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमि सुख सम्पत्ति बिनहि बोलाएँ ।
धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ ॥ बालकाण्ड २९३

लक्ष्मी व सुख प्राप्ति के लिये मन्त्र

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं ।
सुख सम्पति नाना विधि पावहिं ॥ उत्तरकाण्ड १३

१६–पुत्र प्राप्त करने के लिये

प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान ।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान ॥ बालकाण्ड दो० २००

१७–विवाह के लिये

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साजि सँवारि के ।
मांडवी श्रुतिकीरति उरमिला कुंअरि लईं हँकारि के ॥बालकाण्ड ३२४

१८–शत्रुता नाश के लिये

बयरु न कर काहू सन कोई ।
राम प्रताप विषमता खोई ॥ उत्तरकाण्ड १९ (ग)

१९–शास्त्रार्थ में विजय पाने के लिये

तेही अवसर सुनि सिव धनु भंगा ।
आयउ भृगुकुल कमल पतंगा ॥ बालकाण्ड २६७

२०–यात्रा की सफलता के लिये (चलते समय)

चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई ।
चले हृदय अवधहि सिरु नाई ॥ अयोध्याकाण्ड ८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथवा

जामवंत के बचन सुहाए।
सुनि हनुमन्त हृदय अति भाए ।। सुन्दरकाण्ड १

२१–यात्रा तथा उद्योग की सफलता के लिये (प्रवेश करते हुय)।

प्रविशि नगर कीजे सब काजा।
हृदयँ राखि कौसलपुर राजा ।। सुन्दरकाड ४

२२–मनोरथ सिद्धि के लिये

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ त्रिसिरारि ।।
किष्किन्धाकाण्ड ३० (क)

यह पढ़कर गाय को गुड़ खिला दे तब यात्रा करे तो मुकदमा में विजय होती है।

२३–शत्रु का सामना करने के लिये

कर सारंग साजि कटि भाथा।
अअरि दल दलन चले रघुनाथा ।। लंकाकाण्ड ६७

२४–मुकदमा जीतने के लिये

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक विग्यान निधाना ।। किष्किन्धाकाण्ड २९

परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी ।।
बालकाण्ड १२४

मोरि सुधारहि सो सब भांती। जासु कृपा नहि कृपा अघाती ।।
बालकाण्ड २७

आकर्षण के लिये

जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलइ न कछु सन्देहू ।। बालकाण्ड २५८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

२७–शत्रु से मित्रता के लिये

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई ।
गोपद सिन्धु अनल सितलाई ।। सुन्दरकाण्ड ४

२८–विद्या प्राप्ति के लिए

गुरूगृह गये पढ़न रघुराई ।
अल्पकाल विद्या सब आई ।। बालकाण्ड २०

२९–सन्देह नाश के लिये

राम कथा सुन्दर कर तारी ।
संसय विहग उड़ावनिहारी ।। बालकाण्ड ११३

३०–ईश्वर से आपराध क्षमा कराने के लिये

अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता ।
छमहु धमामंदिर दोउ भ्राता ।। बालकाण्ड २८

३१–विरक्ति के लिये

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं ।
सीय राम पद पेमु अवसि होई भव रस विरति ।।
अयोध्याकाण्ड ३२

३२–ज्ञान प्राप्ति के लिये

छिति जल पावक गगन समीरा ।
पंच रचित अति अधम सरीरा ।। किष्किन्धाकाण्ड १

३३–भक्ति प्राप्ति के लिये

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिन्धु सुख धाम ।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ।।
उत्तर काण्ड ८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३४—श्री हनुमानजी को प्रसन्न करने के लिये

सुमरि पवन सुत पावन नामू ।
अपने बस करि राखे रामू ।। बालकाण्ड २५

३५—श्री सीतारामजी के दर्शन के लिये

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम ।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ।। बालकाण्ड १४६

३६—सीताजी के दर्शन के लिये

जनक सुता जग जननि जानकी ।
अतिसय प्रिय करुना निधान की ।। बालकाण्ड दोहा १७

३७—श्री रामजी को वश में करने के लिये

केहरी कटि पट पीतधर सुषमा सील निधान ।
देखि भानु कुल भूषनहिं बिसरा सखिन्ह अपान ।।
बालकाण्ड २३३

३८—प्रेम बढ़ने के लिये

सब नर करहिं परस्पर प्रीती ।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ।। उत्तरकाण्ड २०

३९—कातर की रक्षा के लिये

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ ।
एहि अवसर सहाय सोइ होऊ ।। बालकाण्ड १३१

४०—विचार शुद्धि के लिये

ताके जुग पद कमल मनावउँ ।
जासु कृपा निरमल मति पावउँ ।। बालकाण्ड १७

४१—भगवच्चिन्तन पूर्वक आराम से मरने के लिये

रामचरन दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग ।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग ।।
किष्किन्धाकाण्ड दोहा १०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

४२—सब सुख प्राप्ति के लिये

सुनहि विमुक्त विरत अरु विषई ।
लहहिं भगति गति संपति नई ॥ उत्तरकाण्ड १४

४३—कुशल क्षेम के लिये

भुवन चारि दस भरा उछाहू ।
जनक सुता रघुवीर बिबाहू । बालकाण्ड २९५

४४—ऋद्धि सिद्धि प्राप्त करने के लिए

साधक नाम जपहि लय लाएँ ।
होहिं सिद्ध अनिमादिक पाए ॥ बालकाण्ड २१

४५—मोहित करने के लिए

करतल वान धनुष अति सोहा ।
देखत रूप चराचर मोहा ॥ वालकाण्ड २०३

४६—भय से बचने के लिए

पाहि पाहि रघुवीर गुसाईं ।
यह खल खाइ काल की नाईं ॥ लंकाकाण्ड ८१

४७—अपवाद को दूर करने के लिए

राम कृपा अवरेब सुधारी ।
बिबुध धार भई गुनद गुहारी ॥ अयोध्याकाण्ड ३१६

४८—कार्य सिद्धि के लिये

दोहा/ स्वयं सिद्ध सब काज नाथ मोहिं आदरु दियउ ।
अस बिचारि जुबराज तन पुलकित हरषित हियउ । लङ्काकाण्ड १७

४९—आभूषण प्राप्त करने के लिये

रामचरित चितामनि चारू ।
संत सुमति तिय सुभग सिगारू ॥ वालकाण्ड ३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५०–अकाल मृत्यु निवारण के लिये

नाम पाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट ॥ सुन्दरकाण्ड ३०

५१–वशीकरण के लिये

जन मन मंजु मुकुर मल हरनी।
किएँ तिलक गुन गन बस करनी ॥ बालकाण्ड १ दोहा से पूर्व

५२–तिजारी ज्वरादि के नाश के लिये

त्रिविध दोष दुख दारिद दावन।
कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन ॥ बालकांड ३४

५३–वर्षा के लिये

होइ जल अनल अनिल संघाता।
सोइ जलद जग जीवन दाता ॥ बालकाण्ड ६

५४–श्रीरामजी के प्रत्यक्ष दर्शन के लिये

जो अनाथ हित हम पर नेहू। तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू ॥
जो सरूप बस सिव मन माहीं। जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥
जो भुसुंड मन मानस हंसा। सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रनतारित मोचन ॥

इन चौपाइयों को पाठ के प्रारम्भ और अंत में तथा बीच-बीच में प्रेमपूर्वक पढ़ें। श्रद्धा, विश्वास, संयम, ब्रह्मचर्य और चित्त की शुद्धि की बड़ी आवश्यकता है। सात्त्विक आहार अवश्य होना चाहिए। इस तरह से रहकर १०५ पाठ करना चाहिए।

५५–श्रीरामजी की पराभक्ति के लिए

धरि धीरज एक आलि सयानी।
सीता सन बोली गहि पानी ॥ बालकांड २३३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इस चौपाई से पाठ प्रारम्भ करके उत्तरकांड तक और बालकांड से प्रारम्भ करके निम्नलिखित दोहे तक पाठ करके समाप्त करें—

केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान
देखि भानुकूल भूषनहिं बिसरा सखिन्ह अपान ।। बालकाण्ड २३३

५६—भक्ति की वृद्धि के लिए

सीता राम चरन रति मोरे ।
अनुदिन बढऊ अनुग्रह तोरे ।। अयोध्याकाण्ड २०४

५७—भगवद्दर्शन को व्याकुलता के लिए

अगुन अखण्ड अनन्त अनादी । जेहि चिंतहिं परमारथ वादी ॥
उर अभिलाष निरंतर होई ।
देखिअ नयन परम प्रभु सोइ ।। बालकाण्ड १४३

५८—पाप नाश के लिए

राम राम कहि जे जमुहाहीं ।
तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं ।। अयोध्याकाण्ड १९३

५९—वैराग्य के लिए

मन करि विषय अनल वन जरई ।
होई सुखी जो एहि सर परई ।। बालकाण्ड ३४

६०—गुप्त मनोरथ सिद्धि के लिए

सुनहु देव सचराचर स्वामी ।
प्रनत पाल उर अन्तर जामी ।। सुन्दर० ४८
मोर मनोरथ जानहु नीके ।
बसहु सदा उर पुर सब ही के ।। बाल० २३५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६१—शंकर जी की प्रसन्नता के लिए

आसुतोष तुम अवढर दानी ।
आरति हरहु दीन जनु जानी ।। अयोध्याकाण्ड ४३

६२—मङ्गल के लिए

मङ्गल भवन अमङ्गल हारी ।
द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी ।। बालकाण्ड १११

६३—जीवन सुधार हेतु

मोर सुधारिहि सो सब भाँती ।
जासु कृपा नहिं कृपां अघाती ।। बालकाण्ड २७

६४—तिजारी बुखार को दूर करने के लिए

सुनु खगपति यह कथा पावनी ।
त्रिविध ताप भव भय दावनी ।। उत्तरकाण्ड १४

६५—पुत्र प्राप्ति के लिए दूसरी रीति

'मातु दुलारई' कहि प्रिय ललना, से प्रारम्भ करके उल्टा पाठ करें ।

यह चौपाई बाल कांड दोहा १९८ से पूर्व है और

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहेउँ सतिभाउ ।
चाहउँ तुमहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ ।। बालकाण्ड दोहा १४९
—पर समाप्त करें

६६—श्री गिरिजा की प्रसन्नता के लिए

जय जय गिरिवर राज किसोरी ।
जय महेश मुख चंद चकोरी ।। बालकाण्ड २३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

६७—स्नान फल के लिए

सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारिफल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥बालकांड दोहा

६८—उत्सव के लिये

सिय रघुबीर बिबाहु, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।
तिन्ह कहुं सदा उछाहु, मंगलायतन राम जसु ॥ बालकांड ३६१

६९—गङ्गाजी को प्रसन्न करने के लिए

गङ्ग सकल मुद मङ्गल मूला ।
सब सुख करनि हरनि सब सूला ॥ अयोध्याकांड ८६

७०—कृपा दृष्टि के लिए

मामवलोकय पंकज लोचन ।
कृपा बिलोकनि सोच विमोचन ॥ उत्तरकांड ५०

७१—विवाह के लिये दूसरी रीति

तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज संवारि कै।
बालकांड ३२४ छन्द २

इस छन्द से प्रारम्भ कर उल्टा पाठ करें
भरि भुवन रहा उछाहु राम विबाहु भा सबहीं कहा।
पर समाप्त करें । बालकांड ३२४ छन्द ४

७२—काम वासना नाश के लिये

जय सच्चिदानन्द जगपावक ।
अस कहि चलेउ मनोज नसावन ॥ बालकांड ५०

७३—भव-भीर नाश के लिए

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुबंस मनि, हरहु विषम भव भीर ॥ उत्तरकाण्ड १३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुन्दर काण्ड पाठ विधि

७४—सब प्रकार की विपत्तियों को दूर करने के लिये तथा प्रत्येक कामना की पूर्ति के लिये—

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना।
का चुप साधि रहेउ बलवाना ॥ किष्किन्धा० २९
पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक विग्यान निधाना ॥ किष्किन्धा० २९
कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जौ नहिं होइ तात तुम पाहीं ॥ किष्किन्धा० २९

"इनका जप पहले करके सुन्दर कांड का पाठ करे। अन्त में फिर इनका जप करे। पाठ के पहले श्री महावीरजी की पूजा लाल सिन्दूर, लाल फल और लाल फूल से करे। प्रीतिदिन एक ही प्रकार का फल-फूल होना चाहिये तथा नियत समय पर ही रोज पाठ करे। ४० दिनों का अनुष्ठान है।"

७५—ऋण मोचन मन्त्र—कर्ज से छुटकारा पाने के लिये

महावीर विनवउँ हनुमाना।
राम जासु जस आप बखाना ॥ बालकाण्ड १७
पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि बिबेक बिग्यान निधाना ॥ किष्किन्धा २९
कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहिं होय तात तुम पाहीं ॥ किष्किन्धा ० २९

७६—रक्षारेखा मंत्र.

मामभि रक्षय रघुकुल नायक। धृत वर चाप रुचिर कर सायक ॥
लंका काण्ड दो० ११४ (ख)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

७७—शत्रु नाश के लिये

जाके सुमिरन ते रिपु नाशा। नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा

७८—मोह नाश के लिये

होय विवेक मोह भ्रम भागा। तब रघुनाथ चरण अनुरागा

७९—रोग नाश के लिये

राम कृपा नासहिं सब रोगा। जो यहि भांति बने संयोगा

८०—कथा में श्रद्धा बढ़ाने के लिए

हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबर की

८१—यात्रा सिद्धि के लिए

राम लखन कौशिक सहित, सुमिरहि करहुं पयान।
लक्ष्मी लाभ ले जगत यश, मङ्गल सगुन प्रमान ॥

८२—श्री राम चरित मानस की सिद्धि के लिये

श्री राम चरित मानस के लगातार १०८ पाठ करने से म
सिद्ध हो जाता है और अपूर्व लाभ होता है।

८३—दुर्भाग्य को दूर करने के लिये

मन्त्र महामनि विषय ब्याल के।
मेटत कठिन कुअङ्क भाल के ॥ लंका काण्ड ३

८४—मोक्ष प्राप्ति के लिये

सत्य संध छांड़े सर लच्छा।
काल सर्प जनु चले सपच्छा ॥ बाल० ६

८५—संतान पुत्र के लिये

११ पाठ नित्य करे

मङ्गल मूरति मारुतिनन्दन। सकल अमङ्गल मूल निकन्दन ॥
कवन सो काज कठिन जगमाहीं। जो नहीं होय तात तुम पाहीं ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहा रीछपति सुन हनुमाना । का चुप साध रहा बलवाना ॥
पवन तनय बल पवन समाना । बुधि विवेक विज्ञान विधाना ॥
कोलल चित कृपालु रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
जो प्रसन्न मो पर मुनिराई । पुत्र देहु बल में अधिकाई ॥
जबहिं पवन सुत यह सुधि पाई । चले हृदय सुमिरत रघुराई ॥
राम कीन्ह चाहहिं सोई होई । करै अन्यथा अस नहीं कोई ॥
पुरवहु मैं अभिलाष तुम्हारा । सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा ॥
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई । करुणा सागर कीजै सोई ॥
चरण कमल बदौं तिन केरे । पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥
देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । एवमस्तु करुणानिधि बोले ॥
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना । मांनहु ब्रह्मानन्द समाना ॥
जाकर नाम सुनत शुभ होई । मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
प्रभु की कृपा भयऊ सब काजू । जन्म हमार सुफल भा आजू ॥

८६—विवाह तथा नौकरी धन्धा के लिए

विश्व भरण पोषण कर जोई । ताकर नाम भरत अस होई ॥
जिमि सरिता सागर मँह जाहीं । जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमि सुख सम्पति बिनहिं बुलाये । धर्मशील पहँ जाहि सुभाये ॥
जिनकर नाम लेत जग माहीं । सकल अमङ्गल मूल नसांही ॥
करतल होहिं पदारथ चारी । तेहि सिय राम कहेऊ कामारी ॥
जाकर जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलहिं न कछु सन्देहू ॥
सो तुम जानहु अन्तरयामी । पुरबहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सफल मनोरथ होहिं तुम्हारे । राम लखन सुन भये सुखारे ॥
जवते राम ब्याहि घर आये । नित नव मङ्गल मोद बधाये ॥
मङ्गल भवन अमङ्गल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

८७—सौभाग्य तथा सुख प्राप्ति के लिए

भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्हकर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि॥
क्षेमकरी कर क्षेम विशेषी। श्यामा वाम सुतरु पर देखी।
पुत्रवती युवती जग सोई। रघुपति भक्त जासु सुत होई।
अचल होय अहिबात तुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जल धारा॥
बारहि बार लाइ उर लीन्ही। धरि धीरज सिख आशिश दीन्ही॥
जो रघुपति चरनन चित लावै। तेहि सम धन्य न आन कहावै॥
यह भाँति गौरि अशीश सुन, सिय सहित हिय हर्षित अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पूनि मुदित मन मन्दिर चली।

८८—कन्या को वर मिलने के लिए

११ पाठ नित्य करें

कन्या को १६ वर्ष की आयु से प्रातः काल पाठ करना अ
उत्तम होगा। ११ पाठ नित्य करें ?

सिय रघुबीर विवाह, जो सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कर सदा उछाहु, मङ्गलायतनु राम जसु॥
कोमल चित्त अति दीन दयाला। कारण विनु रघुनाथ कृपाला।
जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता। शिव स्वरूप सो श्री भगवन्ता।
जो रघुपति चरणन चित लावै। तेहि सम धन्य न आन कहावै।
राम कथा सुन्दर करतारी। संशय विहंग उड़ावन हारी।
उमा रमा ब्रह्माणि बन्दिता। जगदम्बा संतत अनन्दिता।
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग वर माँगा।
सादर सिय प्रसाद उर धरेउ। बोली गौरि हर्ष उर भरेऊ।
जाको जापर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलहिं न कछु सन्देहू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनि सिय सत्य अशीश हमारी। पूर्जाहिं मन कामना तुम्हारी ॥
पति अनुकूल सदा रह सीता। शोभा खान सुशील विनीता ॥
रंग भूमि जब सिय पगधारी। देखि रूप मोहे नर नारी ॥
भुवन चारु दश भरेऊ उछाहू। जनक सुता रघुवीर बिवाहू ॥
शकुन विचार धरी मन धीरा। अब मिलिहहिं कृपालु रघुवीरा ॥
जौ जानकिहिं मिलिहिं वर एहू। नाहिद आलि यहां सन्देहू ॥
सो तुम जानहु अन्तरयामी। पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
मंत्र महामनि विषय ब्याल के। मेटत कठिन कुअङ्क भाल के ॥
अशरण शरण विरद संम्भारी। मोहि जनि तजहु भक्त हितकारी ॥
मन जाहि राचेउ मिलहि। सो वर सहज सुन्दर सांवरो ॥
करुणानिधान सुजान। शील सनेहु जानत रावरो ॥

८९—सन्तान नष्ट न होने का उपाय

जिनके सन्तान पुत्र या पुत्री उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती हैं उन्हें चाहिए कि १ दिन रात्रि के दस बजे रक्षा रेखा मंत्र की १०८ आहुति देकर सिद्ध करलें विधि पीछे लिखी गई है मन्त्र यह है :–

मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृत वर चाप रुचिर कर सायक ॥

पुनः यह मंत्र बोलकर गेरू से गोल रेखा खींचे साव गज लम्बी चौड़ी, उसमें नवजात शिशु को साफ शुद्ध करके रखे जमीन पर वस्त्र बिछा सकते हैं। पुनः अनार की लकड़ी की कलम बना कर तथा केसर घोल कर उसकी जीभ पर श्रीराम लिखदें और रक्षा रेखा वाला मंत्र भोज पत्र के कागज पर लिखकह केसर से ताजीब में भर कर गले में बाँध दें प्रभु उसकी रक्षा करेगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

९०—गर्भ में ही अकाल मृत्यु का उपाय

गर्भिणी को चाहिए कि रक्षा रेखा मंत्र बोलकर ११ ब
पुनः उस जल से स्नान किया करे तथा—

अकाल मृत्यु निवार्णार्थ दोहा

नाम पाहरु दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट ।
लोचन निज पद जंत्रित, जाहिं प्रान केहि बाट ॥

इस मंत्र की नित्य एक माला का जाप किया करें ।

९१—शोक दूर करने के लिए ।

राम राज्य बैठे त्रय लोका । हर्षित भये गये सब शोका ॥

९२—दुःख दूर करने के लिए ।

रामायण सुरतरु की छाया । दुःख भये दूर निकट जो आया ॥

९३—रोग नाश के लिए काजल

किसी प्रकार का रोग क्यों न हो आप सांयकाल में यथ शक्ति शोच स्नान करके पवित्र हो जाइये । सामने घी का दीप जलाकर रख लीजिए । शुद्ध पात्र में जल भर कर रख लीजिए तुलसी माला पर निम्नलिखित मन्त्र का १०८ बार जाप कीजिये-

राम कृपा नाशहि सब रोगा । जो यहि भाँति बनै संयोगा ॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहिं काहुहि व्यापा ॥

पश्चात् दीपक से कज्जल (काजल) बना लीजिए । जल पात्र का जल रोगी को बार-बार पिलाते रहिये और काज कपाल में प्रतिदिन लगाइये । रोगों का नाश होता है ।

रामायण श्री राम तनु

बाल काण्ड प्रभु पाय, अयोध्या कटि मन मोहे ।
उदर बन्यो आरण्य, हृदय किष्किन्धा सोहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुन्दर ग्रीव मुखारविन्द लङ्का करि गायो ।
जिस मँह रावण आदि निशाचर सकल समायो ।।
उत्तर मस्तक जान यही विधि तुलसी दास भनु ।
आदि मध्य लों देखिये रामायण श्री रामतनु ।।

—◈◈◈—

प्रेमी सज्जनों ! श्री रामचरित मानस साक्षात् करुणा-वरुणा लय राघवेन्द्र सरकार श्री रामचन्द्र जी का शरीर ही है । अतः श्री रामचरित मानस का पाठ अवश्य करें, यदि पाठ भी न कर सकें तो इस ग्रन्थ में लिखी हुई सभी चौपाइयों का पाठ करें, अपूर्व लाभ होता है, पश्चात श्री रामायण जी की आरती अवश्य करें । और भी मन्त्र हैं विस्तार भय से नहीं दिये हैं । विशेष जानकारी के लिए पाठक गण पत्र व्यवहार करलें ।

पत्र व्यवहार का स्थायी पता—
महाराज विश्वगुरु जी
विश्वगुरू योग संस्थान
श्री वेदनिकेतन धाम, पोस्ट-स्वर्गाश्रम ऋषिकेश (हिमालय)
फोन २७९

:०: इति श्री रामचरित मानस पाठ विधि समाप्त :०:

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

श्री रामायण जी की आरती

आरति श्रीरामायणजी की
कीरति कलित ललित सिय पी की ॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद ।
बालमीक बिग्यान बिशारद ॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद ।
बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥ १ आरति ॥

गावत वेद पुरान अष्टदस ।
छओ शास्त्र सब ग्रन्थन को रस ।
मुनि जन धन संतन को सरबस ।
सार अंस संमत सबही की ॥ २ आरति ॥
गावत संतत संभु भवानी ।
अरु घट संभव मुनि बिग्यानी ।
व्यास आदि कबिबर्ज बखानी ।
कागभुसुंडि गरुड के ही की ॥ ३ आरति ॥
कलि मल हरन विषय रस फीकी ।
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ।
दलन रोग भव मूरि अमी की ।
तात मात सब बिधि तुलसी की ॥४ आरति ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्री गीताजी की महिमा

गीता हृदय भगवान का, सब ज्ञान का शुभसार है ।
इस शुद्ध गीता ज्ञान से ही चल रहा संसार है ॥
गीता परम विद्या सनातन, सर्व शास्त्र प्रधान है ।
परब्रह्म रूपी मोक्षकारी, नित्य गीता ज्ञान है ॥
यह मोह माया कष्टमय, तरना जिसे संसार हो ।
वह बैठ गीता नाव में सुख से सहज में पार हो ॥
संसार के सब ज्ञान का, यह ज्ञान मय भण्डार है ।
श्रुति उपनिषद् वेदान्त, ग्रंन्थों का महा यह शुभ सार है ॥
गाते जहां जन गीत गीता, नित निरन्तर प्रेम से ।
रहते वहीं सुखकन्द नटवर, नन्द-नन्दन प्रेम से ॥
गाते जहाँ जन गीत गाता, प्रेम से धर ध्यान है ।
तीरथ वहीं भव के सभी, शुभ शुद्ध और महान हैं ॥
धरते हुए जो ध्यान गीता, ज्ञान का तन छोड़ते ।
लेने उन्हें माधव मुरारी आप ही उठ दौड़ते ॥
सुनते सुनाते नित्य जो लाते इसे व्यवहार में ।
पाते परम पद, ठोकरें खाते नहीं संसार में ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(ब्रह्माण्ड पुराण से)

* नित्य प्रार्थना *

हे पूरण परमात्मा, पावन हों जीवात्मा ।
विश्व बने धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ।।

* श्री कृष्ण का उपदेश *

सब धर्म लौकिक त्याग कर,
मेरी शरण ले लीलिए ।
निष्पाप कर दूँगा तुम्हें,
चिन्ता न किञ्चत् कीजिए ।।
मम भक्त मत्पर का तुरत,
कट जाय पाप अशेष है ।
निष्पाप मुझको पाय है,
यह कृष्ण का उपदेश है ।।

श्री गीता जी की महिमा

गीता सुगीताकर्त्तव्या, किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य, मुख पद्माद्विनिःसृता ।।

भावार्थः—गीता जी का भली भाँति अध्ययन कर लेने के पश्चात् और शास्त्रों के विस्तार से लाभ ही क्या ? गीता समस्त शास्त्रों का सार है ।।

प्रश्न—संसार भर में आकार में सबसे छोटी पुस्तक और जिसमें सबसे ऊँचा ज्ञान हो वह क्या है ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर—गीता! क्योंकि केवल ७०० श्लोकों के इस छोटे से ग्रन्थमें भगवान् ने सारे संसार का अगाध ज्ञान भर दिया है। अध्यात्म-शास्त्र (Metaphysics) आचार-शास्त्र (Ethics) समाज-शास्त्र (Sociology) धर्म-शास्त्र (Theology) मनो विज्ञान (Psychology) विज्ञान (Science) आदि सभी का इसमें नाम मात्र को ही नहीं, अपितु संक्षिप्त में पूरा पूरा विवेचन है, जिसके आगे मानव ज्ञान की गति न पहुंची है न पहुंचेगी। वेद प्रतिपादित कर्म, उपासना और ज्ञान काण्डों का रहस्य इसमें विशद रूप से दिखलाया गया है। गीता में संसार को छोड़ देने का उपदेश नहीं वरन् कमलवत् संसार में रह कर सब कुछ करते हुए भी निर्लिप्त रहने का उच्च आदर्श है। अतः यही कारण हैं कि विश्व के सभी मतों के व्यक्ति श्री गीता जी को प्रचुर मात्रा में अपना रहे हैं।

गीता गौरव : कवित्त स्वर्ग जिमि

स्वर्ग जिमि लोकन में, सरिता में सुरसरी
सत्यवृत धारन में हरिश्चन्द्र भूप हैं।
ऋषिन में नारद ज्यों, सारद सुपण्डितों में
बाल ब्रह्मचारिन में भीष्म भव्य रूप हैं
भाईन में भरत ज्यों मारुति कपिन महँ,
लखन सुवीरन में आदर्श स्वरूप हैं।
सागर में क्षीर, धनुर्धारियों में पार्थ त्यों ही,
सर्वोपनिषद में गीता हीं अनूप है॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

० कवित्त कैसा अपकर्ष ०

कैसा अपकर्ष पा रहा है गुरुवरधाम,
शङ्कर कर यत्न इस विश्व को बतादो फि
देकर उत्साह पूर्ण उचित सदुपदेश,
नवस्फूर्ति फूँक ज्योति जीवन जगादो फिर
सोये हुये भाव सभी जाग्रत हो उठें आप,
कर्मवीर उठो कर्म करके दिखादो फिर
सूखी हुई बल्लरी में प्रेम सुधा सींच सींच,
गीता ज्ञान गौरव सर्वत्र सरसादो फिर

—० कार्पण्य दोषोपहत श्लोक का पद्यानुवाद ०—

काय रपने से हो गया सब नष्ट छात्र स्वभाव है।
मोहित हुई मति ने भुलाया धर्म विषयक भाव है
आया शरण हूँ आपकी मैं शिष्य शिक्षा दीजिये।
निश्चित कहो कल्याणकारी कर्म क्या मेरे लिये

श्री गीताजी की महिमा

कृत कृत्य हुए वे लोग जिन्हें श्री भगवत गीता प्यारी है
है मानव जन्म सफल उनका वे मुक्ति के अधिकारी हैं ।। टेक
षट् शास्त्र समस्त पुराण उपनिषदों का है सार भरा इसमें
जो गीता तत्व विचार करें वे जग में परम सुखारी हैं
।। कृत कृत्य ।। १
कर्मोपासना अरु ज्ञान काण्ड का सूक्ष्य मार्ग दर्शाया है
गीता है प्राण समान उन्हें जो सज्जन तत्त्व विचारी हैं
।। कृत कृत्य ।। २

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री भगवत मुख की वाणी है दुख चिन्ता हरने वाली हैं ।
गीता की शरण ली है जिसने उसके रक्षक गिरधारी हैं ॥
॥ कृत कृत्य ॥ ३ ॥
'गीतानन्द' ऐसी गीताकी भगवत् बिन उपमा कौन करे ।
जो रचने वाले आप स्वयं श्री कृष्णचन्द्र बनवारी हैं ॥
॥ कृत कृत्त ॥ ४ ॥

प्रबोध

:o: उज्जवल नख पङ्खों पर :o:

उज्जवल नख पंखों पर उड़कर कोन बजाता बंशी ।
स्वप्न मतिभ्रम माया है यह अथवा हैं यदु वंशी ।
क्या सुनता हूं छोड़ सभी धर्मों को आओ प्यारे ।
चिन्तित मत हो मुक्त करूँगा पापों से मैं सारे ॥
जीवन तन्द्रा भङ्ग हुई हरि के नाम सलोने,
हृदय श्रोत्र की हर्ष बीचिका चली पद्म पद धोने ॥

श्लोक

सर्वं धर्मान्परित्यज्य, मामेकं शरणं वृज ।
अहं त्वा सर्वं पापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि माशुचः ॥
(गीता अ० १८-६६ के आधार पर)

* गीता जो न होती :: कवित्त *

होता जो न युद्ध महा भारत का भीषण तो,
भारत के गौरव को गर्त में गिराता कौन ।
रसिकेन्द्र होता जो न पापों का प्रचार पूर्ण,
भूमि पर चक्रधर हरि को बुलाता कौन ॥
मोह जो न होता रणभूमि में धनंजय को,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वीरता का पाठ पढ़ा विजय दिलाता कौन।
कृष्ण जो न होते तो सुनाता कौन गाथा गूढ़,
गीता जो न होती ज्ञान भानु चमकाता कौन॥

—◈◈◈—

पारथ की मानस :: कवित्त

पारथ की मानस वसुन्धरा को सींचते ही,
कर्म ज्ञान भक्ति तीनों अंकुर उधरिगे।
पायो कनहार जो अपार करुण को सिन्धु,
तरनि मिली तो मोह सिन्धु पार करिगे॥
शान्ति पाठ पढ़के अशान्त रण भूमि बीच,
भूरि भगवान के अभूत भाव भरिगे।
देख नटनागर उजागर कृपा के धाम,
सागर सुधा को गीता गागर में भरिगे॥

—◈◈◈—

* पाके दिव्य दृष्टि *

—: कवित्त :—

पाके दिव्य दृष्टि देखा अर्जुन ने दृश्य तब,
मोह मदिरा का नशा दूर हुआ पल में।
कर्म योग करने की दीक्षा गुरू गीता ने दी,
रसिकेन्द्र बैठी महा शक्ति बाहु बल में॥
जोड़कर हाथ यदुनाथ को झुकाया माथ,
धनुष उठाया जो पड़ा था भूमितल में।
उथल पुथल तलातल में प्रबल हुई,
प्रलय की हलचल मची कुरुदल में॥

—◈◈◈—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—० गीता क्या करती है ०—

।। कवित्त—मोहे को मिटाती ।।

मोह को मिटाती प्रगटाती आत्म बोध शुद्ध,
भीरुता भगाती युद्ध बीरता जगाती हैं ।
क्षण में छुड़ाती अकर्मण्यता से निष्क्रिय को,
कौन तू है विश्व क्या है, तथ्य समझाती है ।।
जीवन में विश्व विजयी का है पढ़ाती पाठ,
मरणोपरान्त मोक्ष द्वार दिखलाती है ।
प्यारी योगियों की और वियोगियों की, भोगियों की,
शान्ति सुखदात्री एक गीता कहलाती है ।।

—◈◈◈—

।। कवित्त—गीता का प्रचार ।।

गीता का प्रचार यदि देश में करोगे आप,
उन्नति शिखर पै अवश्य चढ़ि जाओगे ।
गीता की सुशिक्षा यदि मानोगे न आप तो,
स्वराज्य की चलावे कौन भिक्षा भी न पाओगे ।
गीता हिन्दुओं की संस्कृति की पूर्ण द्योतक है,
गीता को भुलाओगे तो गोता आप खाओगे ।
गीता के सिवा कहीं न आपको मिलेगी शान्ति,
गीता से ही विष्णु कवि ऋद्धि-सिद्धि पाओगे ।।

—◈◈◈—

।। कवित्त—मर्म जिसमें है ।।

मर्म जिसमें है कर्म योगी की प्रधानता की,
भीरुता की भावना का जिसमें फजीता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मानकर प्रमुख प्रमाण पाँचों पाण्डवों ने,
प्रबल प्रतापी पापी कौरवों को जीता है।
रसिकेन्द्र भूलने से जिसका पवित्र ध्येय,
भारत का भाग्य कोष आज पड़ा रीता है।
भक्ति भरो आओ भारतीयों अपनाओ,
फिर वीरो के लिए तो बस सच्चा गुरुगीता है।

—◈◈◈—

॥ दोहा ॥ धर्म धनुष से छोड़ कर कर्म योग के बाण।
गीता का गौरव करे भारत का कल्याण ॥

—पद्य कलिकाल कलेशन—

कलिकाल कलेशन काटि सबै, भव संकट मेंटि करें मनचीता ॥
नित नूतन भाव भरे उर में, करती मन को सुप्रसन्न पुनीता ॥
सुनि कान पड़ै जिनके जिनके, तिनके सब पाप में देति पलीता ।
सुखकन्द सदा दुःख द्वन्द हरै, मुरलीधर की सुमनोहर गीता ॥

॥ छन्द ॥

गीता हृदय भगवान का है, ज्ञान का भण्डार है।
श्रुति उपनिषद् वेदान्त ग्रन्थों, का महा शुभ सार है ॥
पढ़ते पढ़ाते रात दिन, लाते इसे व्यवहार में।
पाते परम पद, ठोकरें खाते नहीं संसार में ॥

॥ छन्द ॥

सुत दार बन्धन हेतु हैं, भक्तों न ऐसा मानिये।
यह विश्व मेरी वाटिका है, सैर करने के लिये ॥
मेरे बनाये बाग में, होता तुझे क्यों क्लेश है।
सब रूप मेरा मानिये, यह कृष्ण का उपदेश है ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ छन्द ॥

कामसक्ति ममत्व त्याग दे, तजदे अहंकार भी पार्थ ।
सावधान हो धर्म युद्ध से, पूजो मुझे वीर निःस्वार्थ ॥

॥ श्लोक ॥

गीता गंगा च गायत्री, गोबिन्देति चतुष्टयम् ।
चतुर्गकार संयुक्ते, पुनर्जन्म न विद्यते ॥

श्री गीता जी के पाठ से महान सिद्धि

यह श्री मद्भगवद् गीता के पाठ की विधि हस्त लिखित ब्रह्माण्ड पुराण के आधार पर है।

सर्व कामत्व सिद्धि की विधि

यदि आप श्री गीताजी को सिद्धि करना चाहें तो उसके लिए भी श्री रामायण जी की भांति पहले रामायण की लिखी गई सामग्री लेकर एक दिन हवन करलें। निम्न श्लोक पढ़ कर १०८ आहुति घी व सामग्री को अग्नि में डाल देवें।

श्लोक—कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वा धर्मसम्मूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे,
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ अध्याय २।७

स्वाहा बोल कर १०८ आहुति दे दें गिनती के लिये जौ या चावल के १०८ दाने रख लेवें। हवन टाइम रात के दस बजे बाद। हवन की सभी विधि रामायण के अनुष्ठान से मिलती है। मुख पूर्व दिशा में रखें। भगवान श्रीकृष्ण को साक्षी बनावें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पुनः श्री गीताजी का पाठ प्रारम्भ करो। पाठ किसी भी सम
किया जा सकता है। प्रत्येक श्लोक के बाद यह सम्पुट का श्लो
बोलें "कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः..............." प्रथम अध्याय से पा
प्रारम्भ कर १८ आध्याय तक करें। पाठ १ या २ अध्याय का
सम्पूर्ण गीता का जैसा निभा सकें। पाठ करने से पहले इस श्लो
की एक माला जप लिया करें। १०८ पाठ करने से सर्व कामन
सिद्धि प्राप्त होती है।

द्वितीय विधि

निम्न श्लोक गीता के १८ वें अध्याय का ७८ वां है।

श्लोक—यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ अ० १८।७

इस श्लोक से पहले लिखी भाँति १ दिन हवन करे। १०
आहुति यह मंत्र बोलकर देवे। फिर इसका सम्पुट लगाकर आगे लि
विधि के अनुसार पाठ करे। अवश्यमेव लाभ होता है। पूर्ण श्र
और विश्वास सफलता की कुँजी है।

मोक्ष प्राप्ति के लिए

संस्कृत—बन्ध मोक्षश्चत्वारिंशद्दिन पर्यन्त प्रत्यहं प्रत्यहं।
संहार क्रमेण पाठ त्रयं कुर्यात् बन्ध मोक्षो भवति॥
यतीनां संहार क्रमः श्रेष्ठः॥ भावार्थ—संहार क्रम से ४
दिन तक ३ पाठ नित्य करने से मोक्ष हो जाता हैं। प्रत्येक श्लो
पर अध्याय १८ के ७८ वें श्लोक का सम्पुट लगावें, सन्यासियों
लिए संहार क्रम श्रेष्ठ है।

पद्य—संसार बन्धन मोक्ष की जो कामना योगी करे।
तो नित्य ही संहार क्रम से तीन पाठों को करे

श्री गीता जी के पाठ से महान सिद्धि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चालीस दिन तक पाठ कर जब चित्त हो गोपाल में,
तो फिर नहीं वह पड़ सके संसार सागर जाल में ।।

संहार क्रम से पाठ करने की विधि यह है कि गीताजी के अध्यायों का उल्टा पाठ करे यानी पहले आठरहवां अध्याय पढ़े फिर (१७) सत्तरहवाँ फिर (१६) फिर (१५) फिर (१४) पुनः (१३) पुनः (१२) पुनः (११) पुनः (१०) पुनः (९) फिर (८), (७) (६), (५), (४), (३), (२) सबसे अन्त में (१) पहला अध्याय इस प्रकार से पाठ करना संहार क्रम है। प्रतिदिन ३ पाठ करे ४० दिन तक मोक्ष के लिए।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

संस्कृत–श्री कामः स्थिति क्रमेण पठेत धन प्राप्तिर्भवेत् ।।
गृहस्थानां स्थिति क्रम श्रेष्ठः।

भावार्थ–लक्ष्मी की कामना से, स्थिति-क्रम से, एक पाठ नित्य करने से लक्ष्मी प्राप्ति होती है। अध्याय १८ के ७८ वें श्लोक का सम्पुट लगावें। गृहस्थियों के लिये स्थिति-क्रम श्रेष्ठ है।

पद्य–श्री कामना से पाठ करना यदि किसी को इष्ट हो।
स्थिति क्रम नियम धारण करे तो सकल दूर अनिष्ट हो ।।
सब सौख्य उसको नित मिलें धन-धान्य की अति वद्धि हो।
नित पाठ करने से सदा कल्याण सुख समृद्धि हो ।।

स्थिति क्रम से पाठ करने की विधि यह है। पहले गीताजी को खोलकर पांचवे अध्याय का पाठ करे (५) फिर ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, पुनः अठारहवें के उपरान्त चौथे अध्याय का पाठ करें फिर ३ का, २ का, इस रीति से पाठ करने को स्थिति-क्रम कहते हैं प्रतिदिन १ पाठ करने से लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विवाह व सन्तान-प्राप्ति की विधि

संस्कृत—विवाह कामः सृष्टि क्रमेण पठेत ।
ब्रह्मचारिणां सृष्टि क्रमः श्रेष्ठः ॥

भावार्थ—विवाह की कामना वाला सृष्टि क्रम से पाठ करे प्रत्येक श्लोक पर अध्याय १८ के ७८ वें श्लोक का सम्पूट लगावे ब्रह्मचारियों के लिए सृष्टि क्रम श्रेष्ठ है ।

पद्य—ब्रह्मचारी धर्म निज पालन करे जो क्षेम से,
उपरान्त धर्म गृहस्थ जब स्वीकार करता प्रेम से
तो प्राप्त करता वही नर श्री, रूप, नारी, लोक में,
फिर सृष्टि क्रम से पाठ कर होता कभी नहिं शोक में

सृष्टि-क्रम से पाठ करने की विधि—प्रथम श्री गीताजी खोलकर प्रथम अध्याय से लेकर सीधा पाठ करे यानी पहला १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, इस प्रकार पाठ करने को सृष्टि-क्रम कहते हैं । प्रतिदिन १ पाठ करने से गृहस्थी में सर्व सुख रहते हैं ।

दूसरी, तीसरी, चौथी विधि का सम्पुट वाला निम्न श्लोक है गीता अध्याय १८ श्लोक ७८ ।

श्लोक—यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

सभी बाधा निवारण के लिए

संस्कृत—सर्व बाधा निवृत्यर्थं दशमाध्यायमारभ्य संपुटितं पठेत् ।

अर्थ सभी बाधाओं की निवृत्ति के लिये दशवें अध्याय से लेकर सम्पुट लगाकर पाठ करें । प्रयेक श्लोक पर यह सम्पुट लगावे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पुट श्लोक—यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ १८-७८

विधि—उपरोक्त सम्पुट हर एक श्लोक पर लगाता हुआ पहले गीता जी का दसवां (१०) अध्याय पढ़े फिर ११ वां पुनः १२, १३ १४, १५, १६, १७, १८, फिर ९, ८, ७, ६, ५, ४, ३, २, १। इस प्रकार प्रति दिन एक पाठ करे। १०० पाठ करने पर लाभ होता है।

अन्न पूर्णा सिद्धि के लिए

प्रतिदिन श्री गीताजी के पन्द्रवें अध्याय का पाठ करने से कभी भी वस्त्र का अभाव नहीं रहता।

* इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे गीता पाठ विधि समाप्त *

--◈◈◈--

भय से बचने के लिये भूत प्रेत नाशक मंत्र

ॐ नमो नारायणाम।

श्लोक—स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या, जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षाँसि भीतानि दिशो द्रवन्ति,
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसघाः॥ गीता अ० ११-३६

ॐ नर सिहाय नमः, ॐप्रचक्राय स्वाहा, ॐविचक्राय स्वाहा, ॐसुचक्राय-स्वाहा, ॐ ज्वाला चक्राय स्वाहा, ॐ असुरान्तक चक्राय स्वाहा, ॐ महासुदर्शन चक्राय स्वाहा।

इस श्लोक का इसीप्रकार १ लाख बार जप करने से प्रेत पीड़ा दूर होती है और कामना की सिद्धि होती है।

तथा निष्काम करने वाले को भगवान का दर्शन होता है।

* श्रेयस्कर मार्ग प्रभु बतलाते हैं *

जो गीता भी न पढ़ सकें, वे 'कार्पण्य दोषोपहतस्वभावः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गीता अध्याय दो के सातवें—इस श्लोक को किसी से याद कर पुनः नित्य रात को सोते समय हाथ मुख धोकर २१ बार, बोलें कृष्ण जी का ध्यान करते हुए सोवें, स्वप्न में प्रभु सभी क देंगे। और भी ऐसे अनेक उपाय हैं, विशेष जानकारी के पत्रव्यवहार करें।

पत्र व्यवहार का स्थायी पता—

श्री विश्वगुरु जी महाराज महामण्डलेश्वर

श्री वेदनिकेतन धाम, विश्वगुरु नगर पो० स्वर्गाश्रम ऋषिके

(हिमालय) फोन २७९

★ श्री गीता जी की आरती ★

ॐ जय भगवद्गीते मैया जय भगवद्गीते।
हरि हियकमल विहारिणि सुन्दर सुपुनीते ॥ ॐ जय
कर्म - सुमर्म - प्रकाशिनि कामासक्तिहर। मैय०
तत्वज्ञान विकाशिनि विद्या ब्रह्म परा। ॐ जय
निश्चल भक्ति विधायिनि निर्मल मल हारी। मैया०
शरण रहस्य प्रदायिनि सब विधि सुखकारी ॥ ॐ जय
राग द्वेष विदारिणि कारिणि मोद सदा। मैया०
भव भय हारिणि तारिणि परमानन्द प्रदा। ॐ जय
आसुरभाव विनाशिनि नाशिनि तम रजनी ॥ मैया०
दैवी सद्गुण दामिनि हरि रसिका सजनी ॥ ॐ जय
समता त्याग सिखावनि हरि मुख की बानी। मैया०
सकल शास्त्र की स्वामिनि श्रुतियों की रानी। ॐ जय
दया सुधा बरसावनि मातु !! कृपा कीजै। मैया०
हरि पद प्रेम दान कर अपनो कर लीजै। ॐ जय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

★ अथ नित्योपयोगी मंत्र ★

नित्य प्रार्थना

हे पूरण परमात्मा, पावन हों जीवात्मा ।
विश्व बने धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ॥

सनातन धर्म का महत्व

[१]

आदिज सकल सनकादि मुनि कपिलादि जे सर्वज्ञ थे,
मुनि व्यास आदि वशिष्ठ जे अद्वैय के मर्मज्ञ थे ।
इन सर्व से उपदष्टि जो श्रुति विहित निर्मल धर्म है,
वो ही अनादि अनन्त व्यापक यह सनातन धर्म है ॥

[२]

जिसका कि गीता में किया भगवान ने निर्देश है,
सुपुराण निगमागम सभी के तत्त्व का उपदेश है ।
जो सर्व प्राणी मात्र का कल्पाण कारक कर्म है,
वो ही अनादि अनन्त व्यापक यह सनातन धर्म है ॥

प्रातः काल की दैनिक प्रार्थना

कर प्रणाम तेरे चरणों में, लगता हूं मैं जग काज ।
पालन करने को आज्ञा तव, मैं नियुक्त होता हूं आज ॥
अन्तर में स्थित रहकर मेरे, बागडोर पकड़े रहना ।
निपट निरंकुश चंचल मन को, सावधान करते रहना ॥
अन्तर्यामी को अन्तः स्थित, देख सशंकित होवे मन ।
पाप वासना उठते ही हो, नाश लाज से वह जल भुन ॥
जीवों का कलरव जो दिनभर, सुनने में मेरे आवे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तेरा ही गुण ज्ञान जान मन प्रमुदित हो अति सुख पावे।
तू ही है सर्वत्र व्याप्त हरि ! तुझ में यह सारा संसार।
इसी भावना से अन्तर भर, मिलुं सभी में तुझे निहार।
प्रति पल निज इन्द्रिय समूह से कुछ भी आचार करूँ।
केवल तुझे रिझाने को बस, तेरा ही व्यवहार करूँ।

—◈◈◈—

मनसा त्रायतेऽति मन्त्र

(निरुक्ता मुनि भाष्कराचार्य

मन्त्र मन से ही उच्चारण करें ॥

वाचिक जप का फल १ गुणा तथा उपांशु जप का सौगुना मानस सगर्भ (यानि ध्यान सहित) जप का फल १ हजार गुणा होता है।

* विशेष चमत्कारी मन्त्र *

घोर संकट आदि के लिए

यह मन्त्र विच्छू के काटने पर, मृगी रोग पर, सिर दर्द पर नजर झाड़ने पर, कुसमय में रक्षा के लिए सभी सम्पदाओं की प्राप्ति के लिए काम आता है विधि पूर्वक सिद्ध कर लेना चाहिए।

मंत्र—(ॐ ह्लीं) आपदामपहर्त्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

विधि—इस मन्त्र की एक माला का नित्य बिना होठ हिलाए मानसिक जप करे तथा दीपावली के दिन सिद्ध करे। सिद्ध करने के लिए यह मन्त्र बोल कर ८६४ आटे की गोली बनाकर उसी दिन बड़ी दीपावली की शाम को मछलियों को चुगा देवे वहां से एक लोटा जल भर ले उसमें कुछ गंगा जल मिला लेवे उस जल को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकर भगवान श्रीरामजी के मन्दिर में जाकर चरणामृत लेकर पीवे और ऊपर छिड़के और मकान में छिड़कले। रात्रि को यह मन्त्र बोल कर बारह वस्तु वाली सामग्री जो पहले लिखी गई हैं उसी के अनुसार उसी रात्रि को १०८ आहुतियाँ देवे व रक्षा रेखा हवन के समय रक्षा रेखा मन्त्र (जो पहले दिया जा चुका है) बोल कर खींच लेवे। बस मन्त्र सिद्ध हो जाएगा संकट में काम आवेगा।

१—बिच्छू के काटे पर जहां दर्द हो उस स्थान को उसी से पकड़ वाले फिर मन्त्र बोलकर फूंक मार दे राख या कपड़े से झाड़ दे या नीम की टहनी से ३ बार या ५ बार या ७ बार झाड़ दे विष उतर जायेगा।

२—मृगी रोग वाले को २१ बार बोलकर मोर के पंख से भाड़ा देवे काली स्याही से कागज पर लिखकर ताबीज गले में बांधे मृगी रोग दूर हो जाता है। हिस्ट्रिया के दौरे पर भी यही विधि है।

३—सिर आदि की पीड़ा के दर्द के लिए पढ़ कर फूंक मार दे तथा अंगूठा और बीच की उँगली माथे के दोनों ओर फैला कर रखे फिर रगड़ता हुआ बीच में लाकर जहां अंगूठा और उँगली मिल जाय हाथ उठाले। इस तरह ३,५ या ७ बार करे सिर दर्द दूर हो जावेगा।

४—नजर झाड़ने के लिए मन्त्र पढ़ कर चाकू से झाड़ दे तथा फूँक मार दे ठीक हो जायेगा।

५—सकल सिद्धि या रक्षा के लिए इसका मानसिक जप चलते-फिरते तथा बैठ कर करे।

* दिव्य दृष्टि प्राप्ति के लिए मंत्र *

० हिमालय के योगियों का गुप्त मन्त्र ०

इस मन्त्र को सिद्ध कर लेने पर पृथ्वी का गुप्त धन दिखाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

देता है, चुराई हुई वस्तु कहां रखी हैं, कौन ले गया है, उसका क्या नाम है, कैसी सूरत है यह सब चमेली की लकड़ी जो कि जड़ की उसकी टिक्की पर शुद्ध चमेली का तेल लगाकर जला हुआ काग़ज लगाकर उसमें देखें।

काजल बनाने की विधि

शुद्ध चमेली के तेल के दीपक जलायें, मौर मन्त्र की पांच माला का जाप करें उतनी देर चमेली के दीपक के ऊपर कांसे के बर्तन पर काजल एकत्रित करें फिर दीपक बन्द कर दें इस प्रकार ९ या ११ दिन ५ माला जप कर काजल बना लें। चमेली की जड़ की लकड़ी की टिकिया पर चमेली का तेल लगा कर काजल लगा फिर देखने पर सब कुछ नजर आयेगा।

मन्त्र की जानकारी के लिए इसी पुस्तक में लिखे विश्वगुरु जी महाराज के पते पर बन्द जवाबी लिफाफा भेजें।

गायत्री विषये श्लोक

शाप युक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन।
शापादुत्तारिता सातु, भक्ति मुक्ति प्रदायिनी॥

अथ ब्रह्मगायत्री मन्त्र

५ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ सवः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं।
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥
ॐ आपो ज्योति रसोऽमृत ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

गायत्री शापमोचन प्रार्थना

ॐ अहो देवी महादेवी सन्ध्ये विद्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोऽस्तते॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्म शापाद्विमुक्ता भव। वशिष्ठ शापाद्विमुक्ता भव।।
विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव ।।

※ अथ नित्योपयोगी मन्त्र ※

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।

अर्थात् कर्म के द्वारा ही जनकादि ने सिद्धि पाई थी।

अर्थात्=वशिष्ठः कर्म कर्त्ता स्यात् । वशिष्ठजी कर्मकाँडी विशेष रहे। जैसे यात्रा पूरी होने से पहले टिकट नहीं छोड़ी जाती। बाबू टिकट स्वयं ले लेता है। इसी तरह शरीर रूपी यात्रा के बाद कर्म स्वयं या ज्ञान होने पर छूट जाते हैं, छोड़े नहीं जाते ।

दोहा—ब्रह्मज्ञान जाना नहीं, कर्म दिये छिटकाय ।
तुलसी ऐसी आत्मा, सहज नरक में जाय ।।

० आचारः प्रथमो धर्म ०

आचार सबसे पहला धर्म है, प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठे, क्योंकि
ब्रह्मे मुहूर्त या निद्रा सा आयुक्षयकारिणी

० प्रातः काल कर—दर्शन का मन्त्र ०

कराग्रे वसते लक्ष्मीः, करमध्ये सरस्वती ।
कर मूले स्थितो ब्रह्मा, प्रभाते कर दर्शनम ।।

भावार्थ—यह श्लोक पढ़कर हाथों का दर्शन करे, क्योंकि लक्ष्मी हाथों के आगे है, यानी उद्योग करो, सरस्वती हाथों के बीच में ही है यानी हाथों में पुस्तक लेकर पढ़ो, ब्रह्मा (विधाता) आपके हाथके नीचे है, यानी हाथों से अच्छे कार्य करो, अच्छा भाग्य बन जायेगा । अतः प्रातः हाथों का दर्शन करके सभी कार्य करे ।

० प्रातः पृथ्वी पर पैर रखने का मन्त्र ०

समुद्र वसने देवि ! पर्वठस्तन मण्डिते ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व माम् ॥

० (शौच) मल त्याग का मन्त्र ०

गच्छन्तु ऋषयोदेवाः पिशाचा येच गुह्यकाः ।
पितृभूतगणाः सर्वे करिष्ये मलमोचनम् ॥

० दन्तधावन मन्त्र ०

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजापशुवसूनि च ।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

० क्षौर कर्म नियम मन्त्र ०

अमावस चौदस पूर्णिमा संक्रांति व्यतिपात ।
श्राद्ध रवि मङ्गल शनि क्षौर न प्रातः सुहात ॥

० तेल मर्दन नियम ०

पूनम अमा एकादशी, द्वादशी षष्ठी होय ।
रवि गुरु मङ्गल शुक्र, तेल न लगाये कोय ॥

० स्नान मन्त्र ०

गंगे च यमुने चैव गौदावरि सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥

० सूर्य अर्घ्य मन्त्र ०

एहि सूर्य, सहस्रांशो, तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय माँ देव गृहणार्घ्यं दिवाकर ॥

० आसन व शरीर शुद्धि मन्त्र ०

ॐअपवित्रः पवित्रो या सर्वावस्थांगतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्ष स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

० चरणामृत मन्त्र ०

अकाल मृत्यु हरणं सर्वं व्याधि विनाशनम् ।
विष्णोः पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

° चन्द्र अर्घ्य मन्त्र °

क्षीरो-दार्णव सम्भूत, अत्रि गोत्रसनुद्भव ।
गृहणार्घ्यं शशांकेदं, रोहिण्या सहितो मम ।।

° तिलक करने का मन्त्र °

केशवानन्द गोविन्द बाराह पुरुषोत्तम ।
पुण्यं यशस्यमाध्यं, तिलकं मे प्रसीदतु ।।
कान्ति लक्ष्मीं धृतिं सौख्यं, सौभाग्यतुलंमम ।
ददातु चन्दनं नित्यं सततं धारयाम्यहम् ।।

° माला जपते समय का मन्त्र °

अविघ्नं कुरु माले त्वं गृहणामि दक्षिणे करे ।
जाप काले चसिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये ।।

° सूर्य दर्शन मन्त्र (फल) °

कनक वर्ण महातेजं, रत्नमाला विभूषितम् ।
प्रातः काले रवि दर्शनं, सर्व पाप विमोचनम् ।।

° यज्ञोपवीत धारण मन्त्र °

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्मग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः ।।

° जीर्ण यज्ञोपवीत त्याग करने का मन्त्र °

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्राह्मत्वं धारतिं मया ।
जीर्णत्वाञ्च परित्यागो गच्छ सूत्रतथा सुखम् ।।

प्रातः काले ब्रह्म चिन्तनम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्म तत्त्वं,
सच्चित् सुखं परम हंसगतिं तुरीयम् ।
यत् स्वप्न जाग्रत सुषुप्तिमवैत नित्यं,
तद् ब्रह्म निष्कलमहं न च भूत संघः ।। १ ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रातर्भजामि मनसा बचसामगम्यं,
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण ।
यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचम्,
तं देव-देव मजमच्युतमाहुरग्रयम् ॥ २ ॥

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्ण,
पूर्ण सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन्निदं जगद् शेषमशेष मूर्तौ,
रज्जवां भुजंगम इव प्रति भासितं वे ॥ ३ ॥

श्लोक त्रयमिदं पुण्यं लोकत्रय विभूषणम् ।
प्रातः काल पठेद्यस्तु सगच्छेत्परमं पदम् ॥ ४ ॥

अथ गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न
प्रचोदयात् ॥

गायत्री मन्त्र में १=ॐ, २=भू, ३=भुवः, ४=स्वः, ५=तत् ६=
सवितुः, ७=वरेण्यम्, ८=भर्गो, ९=देवस्य । इन नौ नामों से तो
भगवान की स्तुति की गई है। और १०='धीमहि' यह उपासना
है। तथा ११='धियो यो नः प्रचोदयात्' यह प्रार्थना है।

गायन्तं त्रायते तस्माद् गायत्रीतीहि प्रोच्यते ।

अर्थ—गायन करने वाले को संसार-सागर से तार देती है
इसलिए इसका नाम गायत्री है।

श्लोक—गायत्री वेद जननी, गायत्री पाप नाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह चपावनम् ॥

अर्थ—गायत्री वेद की माता है गायत्री पाप नष्ट करने वा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, गायत्री के अतिरिक्त भूलोक में तथा स्वर्ग लोक में पवित्र करने वाला और नहीं है।

गायत्री मन्त्र का अर्थ

ॐ=सर्व व्यापक, सबकी रक्षा करने वाले
भूः=सत्य स्वरूप (सत्)
भुंवः=चैतन्य स्वरूप (चित्)
स्वः=आनन्द स्वरूप (आनन्द)
तत्=उस=अनन्त परमात्मा
सवितुः=सविता (ब्रह्म+ विष्णु+ महेश) सबको उत्पन्न पालन, संहार करने वाले
देवस्य=देव के
वरेण्यं=श्रेष्ठतम् भजनीय
भर्गः=शुद्धचेतन ज्योति को
धीमहि=चिन्तन करते हैं
यः=वह परमात्मा
नः=हमारी
धियः=बुद्धियों को
प्रचोदयात्=धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में प्रेरणा करे तथा संसार से हटाकर, निष्काम कर्म व भक्ति योग द्वारा आत्म ज्ञान प्राप्त करने के लिए शुद्ध-बुद्धि प्रदान करे।

वेद-मन्त्र

० ईश्वर प्रार्थनोपासना रूप अष्ट वेद मन्त्राणि ०

१ मन्त्र—ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥ १ ॥ (यजुर्वेद अ० ३० म० ३)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अर्थ—हे सकल जगत के उत्पत्ति कर्त्ता समस्त ऐश्वर्य यु शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हम सम्पूर्ण, दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखों को दूर कीजिए। जो कल्या कारक गुण, कर्म स्वभाव वाले पादर्थ हैं वे सब हमको प्रा कराइये ॥ १ ॥

२ मन्त्र—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् सदाधारपृथिवीं द्यामुतेमाँ कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
(यजु० अ० १३ म: ०४)

अर्थ—जो स्व प्रकाश रूप है और जिसने प्रकाश करने वा सूर्य, चन्द्रमा आदि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, उत्पन्न हुए जगत का प्रसिद्ध स्वामी, एक ही चेतन था, जो सब ज के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, इस भूमि सूर्यादि को धारण रहा है; हम लोग उस सुख स्वरूप, शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रह करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें॥

३ मन्त्र—ॐ य आत्मदा बलदायस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः यस्यच्छाया मृतं यस्य मत्युः कस्मै देवायं हविषा विधेम
॥ ३ ॥ (य० अ० १३ मं० ५)

अर्थ—जो आत्म ज्ञान का दाता, शरीर आत्मा और समाज के ब का देने वाला, जिसको सब विद्वान लोग उपासना करते हैं और जिस प्रत्यक्ष सत्य स्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते जिसका आश्रय ही मोक्ष दायक है, जिसका न मानना अर्थात् भ न करना ही मृत्यु आदि दुख का हेतु है, हम लोग उस दुख स स्वरूप सकल ज्ञान के देने वाले परमात्मा की प्राप्ति के लिये आ और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने तत्पर रहें ॥ ३ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्त्र—ॐ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतोबभूव।
यईशेऽस्व द्विपिदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम
॥ ४ ॥ (यजु० अ० २३ मं० ३)।

अर्थ—जो प्राण वाले और अप्राणी रूप जगत का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है। जो मनुष्यादि और गोआदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम उस सुख स्वरूप सकल ऐश्वर्य के देने वाले परमात्मा के लिये अपनी सकल उत्तम सामग्री से विशेष भक्ति करें ॥ ४ ॥

मन्त्र—ॐ येन द्योरुग्रा पृथिवी च दृढा। येन स्वः स्तभितं येननाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम
॥ ५ ॥ (यजु० अ० ३२ मं० ६)।

अर्थ—जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया है, जो आकाश में सब सुख दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक लोकान्तरों को विशेष मान युक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं वैसे सब लोकों का निर्माण करता है और भ्रमण करता है। हम लोग उस सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें ॥ ५ ॥

मन्त्र—ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वाजातानिपरिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अन्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्
॥६॥ ऋ० मं० १०। सु० १२१। मं० १०)

अर्थ—हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन्! आपसे भिन्न दूसरा कोई इन सब उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों का तिरस्कार नहीं करता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले लोग आपका आश्रय लेवें और बांछा करें, उस-उस की ह कामना सिद्ध होवे जिससे हम लोग धन ऐश्वर्यों के स्वामी होवें।

७ मन्त्र—ॐ सनो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुव
विश्वा। यत्र देवा अमृतमानसानास्तृतीये धामन्न
यन्त ॥ ७ ॥ (यजु० अ० ३२ मं० १०)।

अर्थ—हे मनुष्यों! वह परमात्मा हम लोगों को भ्रात समान सुखदायक; सकल जगत का उत्पादक, सब कर्मों पूर्ण करने वाला लोक ओर उनके नाम स्थान तथा उत्पत्ति को जानता है। और जिस सांसारिक सुख दुख से रहित नित्या युक्त मोक्ष स्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को होके बिद्वान् स्वेच्छा पूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना है, आचार्य, राजा ओर न्यायाधीश है। हम लोग मिल कर उसकी भक्ति किया करें ॥ ७ ॥

८ मन्त्र—ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्सान् विश्वानि देव वयु
विद्वान् युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम
विधेम ॥ ८ ॥ (यजु० अ० ४० मं० १६)।

अर्थ—हे स्व प्रकाश ज्ञान स्वरूप सर्व जगत के प्रकाश वाले सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जैसे सम्पूर्ण विद्या हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान राज्यादि ऐश्वर्य की के लिए अच्छे धर्म युक्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और कर्म प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलता युक्त पाप रूप क दूर कीजिए। इन कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रूप नम्रता पूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें ॥ ८ ॥

※ भजन करने के मन्त्र ※

१—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
२—ॐ नमो नारायण
३—ॐ नमः शिवाय
४—ॐ रां रामाय नमः
५—हरिः ॐ तत्सत्
६—हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

० तुलसी स्तुति मन्त्र ०

देवित्वं निर्मितापूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः।
नमो नमस्ते तुलसि पापं हर हरिप्रिये ॥

० तुलसी तोड़ने का मंत्र ०

मातस्तुलसि गोविन्द, हृदयानन्द कारिणी।
नारायणस्य पूजार्थ, चिनोमि त्वाँ नमोस्तुते ॥

० तुलसी तोड़ने का मंत्र ०

क्यों कम्पौ क्यों थरथरो क्यों नहीं धीरज देऊ
हम भेजे श्रीकृष्ण ने, कुछ दल मांगे देऊ ॥

० शंख पूजन मंत्र ०

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विस्णुना विधुतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पान्चजन्य नमोऽस्तुते ॥

० प्रदक्षिणा मंत्र ०

यानी कानि च पापानिः जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति, प्रदिक्षणं पदे पदे ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

० नव ग्रह शन्ति मंत्र ०

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशिः भूमिसुतो बुधश्च
गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः, सर्वे ग्रहाः शान्तिकराः भवन्तु

० मृत्युंजय मंत्र ०

ॐत्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

० गणेश वन्दना मन्त्र ०

गजाननं भूतगणादिसेवितं, कपित्थजम्बूफल चारुभक्षणम्,
उमासुतं शोकविनाशकारकम्, नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्

० गुरु स्तुति ०

नित्यानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वं धीसाक्षिभूतम् ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

० कमण्डल या पात्र शुद्ध करने का मन्त्र ०

जलं दहतो पापानिः कमण्डल गतेनुयात् ।
गंगा जलं समं तोयं, जल पात्रञ्च शुद्धितः ।।

० शान्ति मंत्र ०

ॐ द्यौः शान्तिअन्तरिक्ष शान्ति,
पृथ्वी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः,
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः,
सर्व शांतिः शांतिरेव शांति सामा शांतिरेधि ।

० स्वस्तिं वाचनम् मन्त्र ०

ॐ गणानांत्वा गणपति ँ हवामहेप्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

निधिनां त्वा निधि पति ँहवामहे वसो मम। आपमजानामि गर्भधमा त्वमजिास गर्भधम्

* सरस्वती पूजन बुद्धि वर्द्धक मंत्र *

नमस्ते शारदे देवि काश्मीरपुरवासिनी।
त्वा महं प्रार्थये नित्यं निद्यादानं च देहि मे ॥
कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरणभूषिता।
मसा सरस्ती देवी जिह्वाग्रे सन्निविश्यताम् ॥

० अन्नपूर्णा मन्त्र ०

अन्नपूर्णे सदा पूर्णे शंकर प्राणवल्लभे ।
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥

० भोग लगाने का मन्त्र ०

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।
गृहाण सम्मुखो भूत्वा प्रसीद परमेश्वरः ॥

अग्नि जिमाने का मन्त्र ०

ॐ भूपतये स्वाहा, ॐ भुवनपतये स्वाहा, ॐ भूतानां पतये स्वाहा। कह कर तीन आहुतियां बने हुए भोजन की डालें या ॐ नमो नारायणाय कहकर नमक रहित अन्न की डालें ॥

० शिखा बांधने का मन्त्र ०

चिद्रूपिणि महामाये, दिव्य तेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजो बुद्धि कुरुस्व मे ॥

० भोजन प्रारम्भ से पूर्व बोलने का मन्त्र ०

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ गीता ४।२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

० भोजन के बाद का मन्त्र ०

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्न संभवः ।
यज्ञाद्भ वति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भ वः ॥ गीता अ०

० जठराग्नि (पाचन शक्ति) बढ़ाने का मन्त्र ०

अगस्त्यं कुम्भकरणं च शनिं च बडवानलम् ।
आहार पाचनार्थाय संस्मरामि वृकोदरम् ॥ १ ॥
अतापी भक्षितो येन वातपि च महाबलः ।
समुद्रः शोशतों येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ॥ २ ॥

० सायं दीप स्तुति मन्त्र ०

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीप नमोऽस्तुते ॥
शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुखसम्पदाम् ॥
मम बुद्धिप्रकाशं च दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥

० क्षमा प्रार्थना मन्त्र ०

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

० पीपल में जल देने का मन्त्र ०

कुलानामयुतं तेन तारितं नात्र संशयः ।
योऽश्वत्थ मूल मासिंचेत्तोयेन बहुना सदा ॥

० पीपल प्रदक्षिणा का मन्त्र ०

कुर्यात्प्रदक्षिणं तं तु सर्वं देव मयं ततः ।
अश्वत्थोऽतः सदा सेव्यो मंदवारे विशेषतः ॥ १ ॥
नित्यमश्वस्थ संस्पर्शात् पायं याति सदेत्रधा ।
दुग्धेन तर्पणं ये वै तिल मिश्रेण भक्तितः ॥ २ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सेचनं वा करिष्यन्ति तृप्तिस्तत्पूर्वजेषु च ।
पापरोग विनाशाय चातुर्मास्ये विशेषतः ॥ ३ ॥

० पीपल पूजन का मन्त्र ०

अश्वत्थाय वरेण्याय सर्वेश्वर्यं प्रदायिने ।
अनन्त शिवरूपाय वृक्षराजायते नमः ॥

० शयन का मन्त्र ०

जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः ।
अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः ॥

० स्वप्न न आने व गाढ़ निद्रा का मन्त्र ०

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति संहार कारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभः ॥

◈ नित्य हिंसा के पांच स्थान ◈

श्लोक :—कण्डनी पेषणी चुल्ली उदकुम्भी च मार्जनी ।
पंच सूँना गृहस्थस्य ताभिःस्वर्गं न विन्दति ॥ (मनुस्मृति)

भावार्थ—चक्की, चूला, ऊखली, झाड़, जलस्थान ।
पांचो हिंसा गृहस्थ को बन्धनकारी जान ॥

इन हिंसा के ५ स्थानों में नित्य हिंसा होती है वह गृहस्थ के लिये बन्धनकारी है ।

उपाय—इन पांचों हिंसाओं की निवत्ति के लिए नित्य पांच यज्ञ करे, पांच यज्ञ ये हैं ।

◈ हिंसा निवृत्ति के पांच यज्ञ ◈

श्लोक—अध्ययनं ब्रह्मयज्ञश्च, पितृयज्ञस्तुतर्पणम् ।
होमो दैवो बलि भूतो नृयज्ञमतिथि पूजनम ॥
(मनुस्मृति अ० ३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

★ पांच यज्ञ ★

१——ब्रह्मयज्ञ=यानी वेद उपनिषद स्मृति आदि धर्म ग्रन्थ व रामायण का नित्य पाठ करना ब्रह्मयज्ञ है।

२—पितृयज्ञ=यानी कुश व तिलों से पितरों का नित्य तर्पण क

३——देवयज्ञ=अग्निहोत्र करे, अथवा ॐ नमो नारायण कह पाँच ग्रास बने भोजन के अग्नि में डाल देवे।

४——भूत यज्ञ=यानी कुछ भोजन जल पर कौए आदि को डाले।

५—नृयज्ञ=यानी अतिथि को भोजन नित्य देवे जो वेद का ज्ञात श्रेष्ठ आचरण वाला हो या अत्यन्त भूखा कोई भी हो।

० श्री गङ्गा जी की स्तुति ०

गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणाच्युतम्।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापापारि पुनातु माम्॥

० वेद स्तुति ०

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मस्यकराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

(यजुर्वेद १६।४१)

◈ शेते असौ शिवः ◈

अर्थात् महा प्रलय में शान्त, निष्क्रिय रहने वाले केवल चे क्रिया विशिष्ट ब्रह्म को शिव कहते हैं।

◈ अथ वैदिक शान्ति पाठ ◈

१—ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।
ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः !!!

(अथर्व वेद-प्रश्न उपनिषद)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अर्थ—हे देवगण, हम कानों से कल्याणमय वचन सुनें, यज्ञ कर्म में समर्थ होकर नेत्रों से शुभ दर्शन करें; तथा स्थिर अङ्ग और शरीर से स्तुति करने वाले हम लोग देवताओं के लिए हितकर आयु का भोग करें त्रिविध ताप की शान्ति हो।

२—स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु

ॐशान्तिः शान्तिः शान्ति

(अथर्व वेद प्रश्न उपनिषद्)

अर्थ—महान कीर्तिमान इन्द्र हमारा कल्याण करें, परम ज्ञान वान पूषा हमारा कल्याण करें तथा बृहस्पति जी हमारा कल्याण करें। त्रिविध नाप की शान्ति हो।

—३ॐवाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्मएधि। वेवस्य म आणीस्थः श्रतं मे मा प्रहासीः। अनेनाधीतेनाहोरात्रान्सन्दधाम्यृतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतुमामवतुवक्तारमवतु वक्तारम्॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

(ऋग्वेद-एतरेय-उपनिषद्)

अर्थः—मेरी वागिन्द्रिय मन में स्थिर हो और मन वाणी में स्थिर हो अर्थात् मेरी वागिन्द्रिय और मन एक दूसरे के अनुकूल रहें। हे स्वप्रकाश परमात्मन्! तुम मेरे समक्ष आविर्भूत होओ। (हे वाक् और मन) तुम मेरे प्रति वेदों को लाओ, मेरा श्रवण किया हुआ मेरा परित्याग नहीं करें। अपने इस अध्ययन के द्वारा मैं रात और दिन एक कर दूँ। मैं ऋत (वाचिक सत्य) का भाषण करूँ और सत्य (मन में निश्चय किया हुआ) बोलूँ। वह ब्रह्म मेरी रक्षा करे, वह वक्ता की रक्षा करे, वह मेरी रक्षा करे। और वक्ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

की रक्षा करे, वक्ता की रक्षा करे। त्रिविध ताप की शान्ति हो
४—ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा। शं नो इन्द्रों बृहस्पतिः।
नो विष्णुरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्या
ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारवमतु अवतु मा
अवतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः! ॐ शान्तिः!! ॐ शान्ति!!!

(कृष्ण-यजुर्वेद-तैत्ति० १/१/

अर्थ—(प्राणवृति और दिन का अभिमानी देवता) मित्र (सू देव) हमारे लिए सुखकर हो। (अपानवृति और रात्रि का अ मानी देवता) वरुण हमारे लिए सुखावह हो। (नेत्र और सूर्य अभिमानी देवता) अर्यमा हमारे लिए सुखप्रद हो। बल का अ मानी इन्द्र तथा (वाक् और बुद्धि का अभिमानी देवता) बृहस हमारे लिए शान्तिदायक हो, थता जिसका पाद (विक्षेप ज बहुत विस्तृत है वह पादाभिमानी देवता (विष्णु) हमारे लि सुखदामक हो। ब्रह्म (रूपवायु) को नमस्कार है, हे वायो! तु नमस्कार है, तुम्ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हो अतः तुम्ही को मैं प्रत्यक्ष कहूंगा तुम्ही को ऋतु कहूंगा और (क्योंकि वाक् और शरीर सम्पन्न होने वाले कार्य भी तुम्हारे ही अधीन हैं) इसीलिए तु ही सत्य कहूंगा। अतः तुम (विद्यादान के द्वारा मेरी रक्षा क तथा ब्रह्म का निरूपण करने वाले—आचार्य की भी रक्षा करो मेरी रक्षा करो और वक्ता की रक्षा करो। आधि- भौति आध्यात्मिक एवं आधिदैविक तीनों तापों की निवृत्ति हो।

० यजुर्वेदीय सत्सङ्कल्प हेतु प्रार्थना ०

ॐ मज्जग्रतो दूर मुदैति दैवं ततु सुप्तस्य तथै वैति
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु

(यजुर्वेद अ० ३४ मंत्र

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अर्थ—हे प्रभो जो मेरा मन जाग्रत अवस्था में दूर दूर चला जाता है, वैसे ही वह स्वपनावस्था में भी दूर जाता है। वह दूर दूर जाने-वाला एवं ज्योतियों की ज्योति मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो। ॐ येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदयेषु धीराः। यद पूर्व यक्ष मन्त्र प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु ॥ २ ॥

(यजुर्वेद अ० ३४ मंत्र २)

अर्थ—हे प्रभो ! जिस मन से सत्य कर्म निष्ठा बुद्धि मान संयमी सज्जन, यज्ञों व युद्ध के अवसरों में कार्य करते हैं। प्रजाओं में अपूर्व पूज्यजो मेरा मन है, वह मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो।

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योति रन्तरमृतम्प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥

(यजुर्वेद अ० ३४ मंत्र ३)

अर्थ—हे प्रभो ! जो मन प्रज्ञा एवं चेतन शक्ति व धैर्य वाला है, जो मन प्रजाओं में प्रकाश एवं अमृत स्वरूप हैं और जिसके युक्त हुये बिना कोई भी कर्म करना सम्भव नहीं, ऐसा मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो।

ॐ येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीत ममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्त होता तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥

(यजुर्वेद अ० ३४ मंत्र ४)

अर्थः—हे प्रभो ! जिस अविनाशी मन से त्रिकाल, अर्थात् भूत, वर्तमान, भविष्यत् तीनों के विषय में सब कुछ ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, जिस (मन) से सप्त ऋत्विजों (होता) (अर्थात् दोनों चक्षु दोनों कर्ण, दोनों नासिका रंध्र एवं जिह्वा) द्वारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सम्पन्न होने वाले यज्ञों का विस्तार होता है, ऐसा मेरा मन कल्या
कारी संकल्प वाला हो।

ॐ यस्मिन्नृचः साम यजुःषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथना भा विवा
यस्मिश्चत्तँ सर्वं मोतं प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु
(यजुर्वेद अ० ३४ मंत्र

अर्थः—हे प्रभो ! जिस मन में ऋक्, यजु, साम अन्तर्गत
विद्यायें चारों वेद रथ की नाभि में आरों के समान प्रतिष्ठित
जिस मन में सर्व प्रजाओं का चित्त ओत प्रोत प्रोत हो रहा है,
मेरा मन कल्याणकारी संकल्प वाला हो।

ॐ सुषारथिरस्वा निव यन्मनुष्यान्ने नीयतेऽभिशुभिर्वाजिन इ
हत्प्रतिष्ठं यद जिरञ्ज विष्ठं तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु
(यजुर्वेद अ० ३४ मंत्र

अर्थ—हे प्रभो ! चतुर सारथि के समान जो मन मनुष्यों
घोड़ों की नाई इधर उधर ले जाता है, जो (मन) मनुष्य की इन्द्रि
रूपी घोड़ों को लगाम द्वारा चलाता है, जो हृदय में वास क
हुआ अजर एवं क्षिप्र गति वाला है, वह मेरा मन कल्याण क
संकल्प वाला हो।

० इति वैदिक शान्ति पाठः ०

* ऋग्वेद मंत्र साकार का प्रमाण *

इन्द्रो मायावी पुरुरूप ईयते ॥ (ऋग्वेद मण्डल ६ सूत्र ४८ मन्त्र १८

भावार्थः—सर्व श्रेष्ठ परमात्मा माया से अनेक रूप से प्र
होता है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हिमालय की अपूर्व देन

० कामदेव वशीकरण मन्त्र ०

निम्नलिखित मन्त्र को तीन काल सौ सौ बार एक मास तक जपकर सिद्ध कर ले। पुनः यह मन्त्र बोलने से कामवासना नष्ट हो जाती है।

मन्त्रः—ॐ नमः कामदेवाय सहस्त्र दल सहद्रस वस्त्र यम प्रदर्शन उत्कण्ठित करुदत दाक्षुवर सुनदोणन हनहन स्वाहाः।

० निद्रा जीतने का मन्त्र ०

पहिले नीचे लिखे मन्त्र को १०८ बार जपकर सिद्ध कर ले।

मन्त्रः—ॐ नमो नृसिंह निद्रा स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहाः। कटेली की जड़ पीसकर शहद में मिलावे, मन्त्र पढ़ते हुए आँख में लगावे तो नींद नहीं आवेगी।

० सरस्वती सिद्ध्यर्थे महामंत्र ०

ॐ श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा लक्ष्मी मायादि कश्चैव मण्त्रोऽयं कल्प पादपः ॥१॥ (ब्रह्म पुराण प्रकृति खण्ड ४-५१/५२)

दीपावली के दिन सिद्ध करके २१ मंत्र नित्य जपे

श्री दुर्गा गायत्री मन्त्र

ॐ महातेव्यै विद्महे दुर्गायै धीमहि तन्नोदेवी प्रचोदयात् ॥

यह मण्त्र नवरात्रा ओं में जपकर सिद्ध करें। विधि—गुरुदेव से पूछिए।

० कान की पीर का मन्त्र ०

मान मान कान भाई, वारे अधम रहे बुझाई।
ना माने तो राम दुहाई, तोह को आज रहे समुझाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

महावीर है मोर सहाई, तोको मार नरक पहुँचाई ।
धाय धाय बजरङ्ग बली, हर हर नाशय नाशय ।
ठुँ ठुँ हुं हुं फट् स्वाहा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ॥

दुखभंजन ससम्पुट महामृत्युंजय मन्त्र

ॐ हौं: जूँ: स:, ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, स: जूँ: हौ ॐ

अर्थ—ॐ=भगवान। हौं=जिसके लिए हवन किया जाता है जूँ:=संसार में लीला जिसकी—स: जिससे सब उत्पन्न होते हैं त्र्यम्बकं=तीन नेत्र वाले तथा प्रसन्नता देने वाले स्वास्थ्य क भगवान शङ्कर को मैं (यजामहे)=पूजा करता हूं ।

हे भगवान गर्भ की झिल्ली की तरह संसार के मृत्यु बन्धन से मुझे मुकत करिये तथा अमर बनाइये ।

नोट:—यह मंत्र जिसके लिए करना हो उसका नाम लेकर सं करे १ पान १ सुपाड़ी रखकर हवन करे विधि पूछ लें/१ आहुति देवें शङ्कर मंदिर में शीघ्र लाभ होता है ।

नोट:—इन सभी मंत्रों को दीपावली या देवोत्थान या किसी शुभ दिन में सिद्ध करले विधि जानने के लिए पूज्य गुरुदेव से पत्र व्यवहार कीजिए या मिलिए—पता आगे इसी पुस्त में है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सप्तर्षियों के नाम	ऋषि पत्नियों के नाम
१—वशिष्ठ जी	अरुन्धती जी
२—भरद्वाज जी	पैठनसी जी
३—अत्रि जी	अनसूया जी
४—विश्वामित्र जी	हेमवती जी
५—जमदग्नि जी	रेणुका जी
६—गौतम जी	अहिल्या जी
७—कश्यप जी	अदिति जी

* संसार मोहनम गणेश कवचनम *

० शनैश्चरं प्रति विष्णुनोपदिष्टम् ०

विष्णुरुवाच

संसार मोहनस्यास्य, कवचस्य प्रजापतिः ।
ऋषिश्छन्दश्च बृहती, देवो लम्बोदरः स्वयम् ॥ १ ॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु, विनियोगः प्रकीर्तितः ।
सर्वेषां कवचानां च, सारभूतमिदं मुने ॥ २ ॥
ॐ गं हूं श्रीगणेशाय। स्वाहा मे पातु मस्तकम् ।
द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो, ललाटं मे सदावतु ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं गमिति च, संततं पातु लोचनम् ।
तालुकं पातु विघ्नेशः, संततं धरणीतले ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीमित च, संततं पातु नासिकाम ।
ॐ गौं गं शूर्पकर्णाय, स्वाहा पात्वधरं मम ॥ ५ ॥
दन्तानि तालुकां जिह्वां पातु मे षोडशाक्षरः ॥ ६ ॥
ॐ लं श्रीं लम्बोदरायेति, स्वाहा गण्डं सदावतु ।
ॐ क्लीं ह्रीं विघ्ननाशाय, स्वाहा कर्ण सदावतु ॥ ७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ॐ श्री गं गजाननायेति, स्वाहा स्कन्धं सदावतु ।
ॐ ह्रीं विनायकायेति,स्वाहा पृष्ठं सदावतु ॥ ८ ॥
ॐ क्लीं ह्रीमिति कङ्कालं, पातु वक्षःस्थलं च गम् ।
करौ पादौ सदा पातु, सर्वाङ्गं विघ्ननिघ्नकृत् ॥ ९ ॥
प्राच्यां लम्बोदरः पातु, आग्नेय्यां विघ्ननायकः ।
दक्षिणे पातु विघ्नेशो, नैर्ऋत्यां तु गजाननः ॥ १० ॥
पश्चिमे पार्वतीपुत्रो, वायव्यां शंकरात्मजः ।
कृष्णस्यांशश्चोत्तरे, च परिपूर्णतमस्य च ॥ ११ ॥
ऐशान्यामेकदन्तश्च, हेरम्बः पातु, चोर्ध्वतः ।
अधो गणाधिपः पातु, सर्वपूज्यश्च सर्वतः ॥ १२ ॥
स्वप्ने जागरणे चैव, पातु मां योगिनां गुरुः ॥ १३ ॥
इति ते कथितं वत्स, सर्वं मन्त्रोघविग्रहम् ।
संसारमोहनं नाम,, कवचं परमाद्भुतम् ॥ १४ ॥
श्रीकृष्णेन पुरा दत्तं, गोलोके रास मण्डले ।
वृन्दावने विनीताय, मह्य दिनकरात्मज ॥ १५ ॥
मया दत्तं च तुभ्यं च, यस्मै कस्मै न दास्यसि ।
परं वरं सर्वपूज्यं, सर्वसंकटतारणम् ॥ १६ ॥
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत्, कवचं धारयेत्तु यः ।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ सोऽपि विष्णुर्न संशयः ॥ १७ ॥
अश्वमेधसहस्राणि, वाजनेयशतानि च ।
ग्रहेन्द्रकवचस्यास्य, कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ १८ ॥
इदं कवचमज्ञात्वा, यो भजेच्छंकरात्मजम् ।
शतलक्षप्रजप्तोऽपि, न मन्त्रः सिद्धिदायकः ॥ १९ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मन्त्रसहितं कालीकवचम्

नारद उवाच

कवचं श्रोतुमिच्छामि तां च विद्यां दशाक्षरीम् ।
नाथ त्वत्तो हि सर्वज्ञ भद्रकाल्याश्च साम्प्रतम् ॥ १ ॥

नारायण उवाच

श्रृणु नारद वक्ष्यामि महाविद्यां दशाक्षरीम् ।
गोपनीयं च कवचं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहेति च दशाक्षरीम् ।
दुर्वासा हि ददौ राज्ञे पुष्करे सूर्यपर्वणि ॥ ३ ॥
दशलक्षजपेनैव मन्त्रसिद्धिः कृता पुरा ।
पञ्चलक्षजपेनैव पठन् कवचमुत्तमांम् ॥ ४ ॥
बभूव सिद्धकवचोऽप्ययोध्यामाजगाम सः ।
कृत्स्नां हि पृथिवीं जिग्ये कवचस्य प्रसादतः ॥ ५ ॥

नारद उवाच

श्रुता दशाक्षरी विद्या त्रिषु लोकेषु दुर्लभा ।
अधुका श्रोतमिच्छामि कवचं ब्रूहि मे प्रभो ॥ ६ ॥

नारायण उवाच

श्रृणु वक्ष्यामि विप्रेन्द्र कवचं परमाद्भुतम् ।
नारायणेन यद् दत्तं कृपया शूलिने पुरा ॥ ७ ॥
त्रिपुरस्य वधे घोरे शिवस्य विजयाय च ।
तदेव शूलिना दत्तं पुरा दुर्वाससे मुने ॥ ८ ॥
दुर्वाससा च यद् दत्तं सुचन्द्राय महात्मने ।
अतिगुह्यतरं तत्त्वं सवमंत्रोघविग्रहम् ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा मे पातु मस्तकम् ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

क्लीं कपालं सदा पातु ह्रीं ह्रीं ह्रीमिति लोचने ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं त्रिलोचने स्वाहा नासिकां मे सदावतु ।
क्लीं कालिके रक्ष रक्ष स्वाहा दन्त सदावतु ॥ ११ ॥
ह्रीं भद्रकालिके स्वाहा पातु मेऽधरयुग्मगम् ।
ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा कण्ठ सदावतु ॥ १२ ॥
ॐ ह्रीं कालिकायै स्वाहा कर्णयुग्म सदावतु ।
ॐ क्रीं क्रीं क्लीं-काल्यै स्वाहा स्कन्ध पातु सदा मम ॥ १३ ॥
ॐ क्रीं भद्रकाल्यै स्वाहा मम वक्षः सदावतु ।
ॐ क्रीं कालिकायै स्वाहा मम नाभि सदावतु ॥ १४ ॥
ॐ ह्रीं कालिकायै स्वाहा मम पृष्ठं सदावतु ।
रक्तबीजविनाशिन्यै स्वाहा हस्तौ सदावतु ॥ १५ ॥
ॐ ह्रीं क्लीं मुण्डमालिन्यै स्वाहा पादौ सदावतु ।
ॐ ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा सर्वाङ्ग मे सदावतु ॥ १६ ॥
प्राच्यां पातु महाकाली आग्नेय्या रक्तदन्तिका ।
दक्षिणे पातु चामुण्डा नैर्ऋत्यां पातु कालिका ॥ १७ ॥
श्यामा च वारुणे पातु वायव्यां पातु चण्डिका ।
उत्तरे विकटास्या च ऐशान्यां साट्टहासिनी ॥ १८ ॥
ऊर्ध्वं पातु लोलजिह्वा मायाद्या पात्वधः सदा ।
जले स्थले चान्तरिक्षे पातु विश्वप्रसूः सदा ॥ १९ ॥
इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम् ।
सर्वेषां कवचानां च सारभूतं परात्परम् ॥ २० ॥
सप्तद्वीपेश्वरो राजा सुचन्द्रोऽस्य प्रसादतः ।
कवचस्य प्रसादेन मान्धाता पृथिवीपतिः ॥ २१ ॥
प्रचेता लोमशश्चैव यतः सिद्धो बभूव ह

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

यतो हि योगिनां श्रेष्ठः सौभारिः पिप्पलायनः ॥ २२ ॥
यदि स्यात् सिद्धकवचः सर्वसिद्धिश्वरो भवेत् ।
महादानानि सर्वाणि तपांसि च व्रतानि च ।
निश्चितं कवचस्यास्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ २३ ॥
इदं कवचमज्ञात्वा भजेत् कालीं जगत्प्रसूम् ।
शतलक्षप्रजप्तोऽपि न मंत्र· सिद्धिदायकः ॥ २४ ॥
इति श्रीब्रह्मवैवर्ते मन्त्रं सहितं काली कवचं सम्पूर्णम्

(गणपति खण्ड ३७।१-२४)

० काली स्तुति ०

काली काली महाकाली, कालिके परमेश्वरी ।
सर्वानन्द करे देवी, नारायणि नमोऽस्तुते ॥

० शीतला स्तुति ०

शीतले त्वं जगन्माता, शीतले त्वं जगत्पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री, शीतलायै नमो नमः ॥

० चामुण्डा मंत्र ०

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

◈ ब्रह्माण्डविजयं नाम दुर्गाकवचम् ◈

नारायण उवाच

श्रृणु नारद वक्ष्यामि दुर्गायाः कवचं शुभम् ।
श्रीकृष्णेनैव यद् दत्तं गोलोके ब्रह्मणे पुरा ॥ १ ॥
ब्रह्मा त्रिपुरसंग्रामे शङ्कराय ददौ पुरा ।
जघान त्रिपुरं रुद्रो यद् धृत्वा भक्तिपूर्वकम् ॥ २ ॥
हरो ददौ गौतमाय पद्माक्षाय च गौतमः ।
यतो बभूव पद्माक्षः सप्तद्वीपेश्वरो जयी ॥ ३ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

यद् धृत्वा पठनाद् ब्रह्मा ज्ञानवाञ्छक्तिमान् भुवि ।
शिवो बभूव सर्वज्ञो योगिनां च गुरुर्यतः ।
शिवतुल्यो गौतमश्च बभूव मुनिसत्तमः ॥ ४ ॥
ब्रह्ममाण्डत्रिजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ।
ऋशिश्छन्दश्च गायत्री देवी दुर्गतिनाशिनीं ॥ ५ ॥
ब्रह्ममाण्डविजये चैव विनियोगः प्रकीर्तितः ।
पुन्यतीर्थ च महतां कवच परमाद्भुतम् ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं दुर्गतिनाशिन्यै स्वाहा मे पातु मस्तकम् ।
ॐ ह्रीं मे पातु कपालं च ॐ ह्रीं श्रीमिति लोचने ॥ ७ ॥
पातु मे कर्णयुग्मं च ॐ दुर्गायै नमः सदा ।
ॐ ह्रीं श्रीमिति नासां मे सदा पातु च सर्वतः ॥ ८ ॥
ह्रीं श्री ह्र मिति दन्तानि पातु क्लीमोष्ठयुग्मकम् ।
क्रीं क्रीं क्रीं पातु कण्ठं च दुर्गे रक्षतु गण्डकम् । ९ ॥
स्कन्धं दुर्गविनाशिन्यै स्वाहा पातु निरन्तरम ।
वक्षो विपद्विनाशिन्यै स्वाहा मे पातु सर्वतः ॥ १० ॥
दुर्गे दुर्गे रक्षणीति स्वाहा नाभिं सदावतु ।
दुर्गे दुर्गे रक्ष रक्ष पृष्ठं मे पातु सर्वतः ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं दुर्गायै स्वाहा च हस्तौ पादौ सदावतु ।
ॐ ह्रीं दुर्गायै स्वाहा च सर्वाङ्गं मे सदावतु ॥ १२ ॥
प्राच्यां पातु महामाया आग्नेय्यां पातु कालिका ।
दक्षिणे दक्षकन्या च नैर्ऋत्यां शिवसुन्दरी ॥ १३ ॥
पश्चिमे पार्वती पातु वाराही वारुणे सदा ।
कुबेरमाता कौवेर्यामैशान्यामीश्वरी सदा ॥ १४ ॥
ऊर्ध्वे नारायणी पातु अम्बिकाधः सदावतु ।
ज्ञाने ज्ञानप्रदा पातु स्वप्ने निद्रा सदावतु ॥ १५ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम् ।
ब्रह्माण्डविजयं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥ १६ ॥
सुस्नातः मर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु यत् फलम् ।
सर्वव्रतोपवासे च तत् फलं लभते नरः ॥ १७ ॥
गुरुयर्च्य विधिवद् वस्त्रालंकारचन्दनैः ।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ कवचं धारयेत्तु यः ॥ १८ ॥
स च त्रैलोक्यविजयी सर्वशत्रुप्रमर्दकः
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् दुर्गतिनाशिनीम् ॥१९ ॥
शतलक्षप्रजप्तोऽपि न मन्त्र सिद्धिदायकः ॥ २० ॥
कवचं काण्डशाखोक्तमुक्तं नारद सुन्दरम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं सुदुर्लभम् ॥ २१ ॥
इति श्रीब्रह्मवैवर्ते ब्रह्ममाण्डविजयं नाम दुर्गाकवचं मेम्पूर्ण ।
(गणपतिखण्ड ३९।३—२३)

◈ सरस्वती कवचम् ◈

कवचस्यास्य विप्रेन्द्र, ऋषिरेव प्रजापतिः ।
स्वयं च बृहतीच्छन्दो, देवता सारदाम्बिका ॥ १ ॥
सर्वँतत्त्व परिज्ञाने, सर्वार्थँसाधनेषु च ।
कवितासु च सर्वासु, विनियोगः प्रकीर्त्तित ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा, शिरो मे पातु सर्वँतः ।
श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा, भालं मे सर्वँदावतु ॥ ३ ॥
ॐ सरस्वत्यैस्वाहेतु, श्रोवं पातु निरंतरम् ।
ॐ श्रीं ह्रीं भारत्यै स्वाहा, नेत्रयुग्मं सदावतु ॥ ४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ऐं ह्री बाग्वादिन्यै स्वाहा, नासां में सर्वतोऽवतु।
ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै, स्वाहा ओष्ठं सदावतु॥ ५॥
ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्मायै स्वाहेति, दन्तपङ्क्तीःसदावतु।
ॐ ऐमित्येकाक्षरो मंत्रो, मम कण्ठं सदावतु॥ ६॥
ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवा, स्कन्धं मे श्रीं सदावतु।
श्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा वक्षः सदावतु॥ ७॥
ॐ ह्रीं विद्यावरूपायै स्वाहा मे पातु नाभिकाम्।
ॐ ह्रीं ह्रीं वाण्यै स्वाहेति मम पृष्ठं सदावतु॥ ८॥
ॐ सर्वं वर्णात्मिकायै पादयुग्मं सदावतु।
ॐ रागाधिष्ठातृदेव्यै सर्वाङ्गं मे सदावतु॥ ९॥
ॐ सर्वकण्ठवासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदावतु।
ॐ ह्रीं जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहाग्निदिशि रक्षतु॥ १०॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा।
सततं मन्त्रराजोऽयं दक्षिणे मां सदावतु॥ ११॥
ॐ ह्री श्रीं त्र्यक्षरो मन्त्रो नैऋत्यां मे सदावतु।
कविजिह्वाग्रनासिन्यै स्वाहा मां वारुणेऽवतु॥ १२॥
ॐ सदाम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदावतु।
ॐ गद्य पद्य वासिन्यै स्वाहा मामुत्तरडेवतु॥ १३॥
ॐ सर्वशास्त्रवासिन्यै स्वाहैशान्यां सदावतु।
ॐ ह्रीं सर्वपूजतायै स्वाहा चोर्ध्वं सदावतु॥ १४॥
ऐं ह्रीं पुस्तकवासिन्यै स्वाहाधो मां सदावतु।
ॐ ग्रंथवाजरूपायै स्वाहा मां सर्वतोऽवतु॥ १५॥
इति ते कथितं विप्र सर्वमन्त्रौघविग्रहम्।
इदं विश्वजयं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम॥ १६॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पुरा श्रुतं धर्मवक्त्रात् पर्वते गन्धमादने ।
तव स्नेहात्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥ १७ ॥
गुरुमभ्यर्च्य विधिवद् वस्त्रालंकार चन्दनैः ।
प्रणम्यदण्डवद् भूमौ कवचं धारयेत् सुधी ॥ १८ ॥
पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धंतु कवचं भवेत् ।
यदि स्यात् सिद्ध कवचो बृहस्पतिसमो भवेत् ॥ १९ ॥
महावाग्मा कवीन्द्रश्च त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
शक्नोति सर्वं जेतुं स कवचस्य प्रसादतः ॥ २० ॥
इदं ते काण्वशाखोक्तं कथितं कवचं मुने ।
स्तोत्रं पूजाविधानं च ध्यानं वै वन्दनं तथा ॥ २१ ॥
इति श्रीब्रह्मवैवर्ते ध्यानमंत्र सहितं सरस्वती कवचं सम्पूर्णम्
(प्रकृति खण्ड ४।७१-९१)

—◈◈◈—

० नाद ध्वनि खोलने का मन्त्र ०

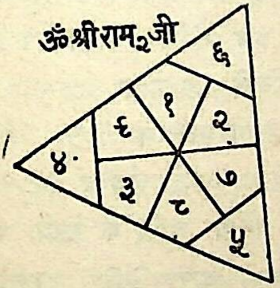

ॐ बीसा मन्त्र हरिसा ताकि गौर करे जगदीश ।
नाद—ध्वनि खोलने के लिये, १२५००० सपाद लक्ष जप करें ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

घी का दीपक जला लें, अगरबत्ती सुगन्धी कर लें। फलाहार की विशेष विधि गुरु जी से पूछ लें।

० सन्तान के लिये गोपाल मन्त्र ०

ॐ क्लीङ् देव की सुत गोविन्दं वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण, त्यामहं शरणं मम ॥
शर्याति च सुकन्या च च्यवनं शक्रमश्विनौ।

० नेत्र ज्योति के लिये मन्त्र ०

शर्यांति च सुकन्यां ज चत्ननं शक्रमश्विनौ।
भोजनान्ते स्मरेद्यस्तुश्चक्षुस्तस्य न हीयते ॥

भोजन के उपरान्त यह मन्त्र पढ़कर दोनों हाथों की गीली हथेली घिस कर आँखों में चार बार लगायें।

भुक्त्वा पाणि तलं धृष्टवा, चक्षुषा दीयते यदि।
जाताः रोगाः विनश्यन्ति, तिमिराणि तथैव च ॥

० विद्या बुद्धि के लिये०

गुरूचि (गिलोय) अपामार्ग, वायबिडग, शंखिनी, ब्राह्मी वच सोंठ और शतावरी—यह सब सम मात्रा में लेकर गौ घृत में मिला कर एक-एक तोले की ४४ गोलियाँ बनालें। निम्न मन्त्र २१ बार पढ़कर प्रतिदिन एक गोली खा लें।

मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं हयग्रीवाये नमः
मे विद्या देहि-देहि, बुद्धिवर्धय हुं फट् स्वाहा

० विद्या बुद्धि के लिये ०

मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं थी क्लीं वाग्वाहिनि सरस्वतिः।
म जिह्वाग्रे वद वद ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा ॥

आसाढ़ में जब उत्तरा षाढ़ा नक्षत्र हो तब इस मन्त्र को

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

१०८ बार दिन में जप ले और रात्रि को ग्यारह बजे से १२ बजे के बीच में जब कभी भी इस मन्त्र का २१ बार जप कर लाल चन्दन से जीभ पर "ह्रीं" मन्त्र लिख दे ।

० ॐ महा मन्त्र भगवती ०

ॐ नामो भगवती पद्मावती सर्व जन मोहनी ।
सर्व कार्य कारणी-मन सर्व संकट हरणी ।।
मम मनोरथ पूर्णा, मम चिन्ता चूरणी ।
मम शत्रु उच्चटनी ॐ नमो ।।
पद्मावती नमः स्वाहा

० घंटा कर्ण का मन्त्र ०

ॐ ह्रीड घंटा कर्णो नमोस्तुते । ठः ठः ठः स्वाहा ।।

◈ नेत्र रक्षा के लिए चाक्षुसी विद्या ◈

० अथ कृष्ण यजुर्वेदीय चाक्षुषोपनिषद् ०

ॐ अस्याश्चाक्षुषी विद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः सूर्यो देवता चक्षुरोगनिवृत्तये विनियोगः ।

ॐ चक्षुश्चक्षुश्चस्तेजः स्थिरो भव । मां पाहि पाहि ।

"त्वरितं चक्षुरोगान् शमय शमय । मम जात रूप तेजो दर्शय दर्शय । यथा अहमन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय । कल्याणं करु करु । यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूल्य ।"

ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय ।

ॐ नमः करुणाकरायामृताय । ॐ नमः सूर्याय । ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षि तेजसे नमः । रजसे नमः तमसे नमः असतोमासदगमय ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तमसो मा ज्योर्तिगमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। ऊष्णो भगवाञ्छुचिरू
हंसो भगवान शुचिऽप्रतिरूप।"

"ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा।

"ॐ विश्वरूपं घृणि तं जात वेदसं, हिरण्यमयं पुरुषं ज्योतिरू
तपन्तं। विश्वस्य योनि प्रतपन्तं महान्तं पुरः प्रजानामुदयव्येष सूर्यः।

य इमां चाक्षुष्मति विद्यां द्विजो नित्यमधीयते नतस्याक्षिरोगं
भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति।

अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति।

❖ पाठफल ❖

इस चाक्षुषि विद्या के पाठ मात्र से नेत्रों के सम्पूर्ण रोग दूर होते हैं।
आंख की ज्योति सदा स्थिर रहती है। इसका नित्य पाठ करने
वाले के कुल में कोई अन्धा नहीं होता। पाठ के अन्त में गन्धादि
युक्त जल से सूर्य को अर्घ्य देना चाहिये।

❖ अद्भुत चमत्कारी कनक धारा स्तोत्र ❖

इसी स्तोत्र के प्रभाव से श्री शङ्कराचार्य जी ने स्वर्ण की वर्षा कराथी थी।

अंगं हरेः पुलक भूषणमाश्रयन्ती,
भृंगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अंगीकृताखिलविभूतिरपांगलीला,
मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः॥ (१)

मुग्धामुहुर्बिदधती बदने मुरारेः,
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोमधुकरीवमहोत्पलेया,
सामे श्रियं दिशतु सागर सम्भवायाः॥ (२)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष-
मानन्ददहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्ध-
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ३ ॥

आमीलिताक्षमधिगभ्य मुदा मुकुन्द-
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं,
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ४ ॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या,
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला,
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ५ ॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे-
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति-
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायः ॥ ६ ॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावा-
न्माङ्गल्यभाजिमधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्द्धं,
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ ७ ॥

दद्याद दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा,
मस्मिन्नकिंचनविहङ्गशशौ विषण्णे ।
दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥ ८ ॥
इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-
दृष्टया त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
इष्टिः प्रहृष्ठकमलोदरदोप्तिरिष्टां,
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥९॥
गीर्देवतेति गरुड़ध्वजसुन्दरीति,
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति ।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै,
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥
श्रुत्यैनमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै,
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायैं ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै,
पुष्टयै नमोस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ ११ ॥
नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै,
नमोस्ऽतु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै,
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥ १२ ॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि,
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि,
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥ १३ ॥
यत्कटाक्षसमुपास्ताविधिः, सेबकस्य सकलार्थसम्पदः ।
सन्तनोति बचनाङ्गमानसै–स्त्वां मुरारी हृदयेश्वरी भजे ॥१४॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

O-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सरसिज निलये सरोज हस्ते,
धवल तमांशुक गन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिबल्लभे मनोज्ञे,
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीदमह्यम् ।। १५ ।।
दिग्धस्तिभिः कनक कुम्भामुखावसृष्ट,
स्ववाहिनीविमलचारुजलप्लुतांगीम् ।।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष,
लोकाधिराज गृहिणीममृताब्धि पुत्रीम् ।। १६ ।।
कमले कमलाक्ष वल्लेभेत्वं,
करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गः ।।
अवलोकय मां किञ्चनानां,
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दमायाः ।। १७ ।।
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरभूरिन्वहं,
त्रयी मयी त्रिभुवन मातरं रमाम
गुणाधिका गुरुधन भाग्यभागिनो,
भवन्ति ते भुवि वुधम विताशयाः ।। १८ ।।

* इति श्री भगवत्पाद शंकराचार्य विरचित कनक धारा स्तोत्रम् *

श्री कनकधारा स्तोत्र का हिन्दी रूपान्तर

जैसे भ्रमरी अधखिले कुसुमों से अलंकृत तमालतरुका आश्रय लेती हैं, उसी प्रकार जो श्रीहरि के रोमांच से सुशोभित श्रीअङ्गों पर निरन्तर पड़ती रहती है तथा जिसमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य का निवास है, वह सम्पूर्ण मङ्गलों की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी की कटाक्षलीला मेरे लिए मंगलदायिनी हो ।। १ ।। जैसे भ्रमरी महान् कमलदल पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आती-जाती या मंडराती है, उसी प्रकार जो मुरशत्रु श्रीहरि के मुखारबिंद की ओर बारम्बार प्रेमपूर्वक जाति और लज्जा के कारण लौट आती है, वह समुद्रकन्या लक्ष्मी की मनोहर मुग्ध दृष्टिमाला मुझे धन-सम्पत्ति प्रदान करे ॥ २ ॥ जो सम्पूर्ण देवताओं के अधिपति इन्द्र के पद का वैभव-विलास देने में समर्थ हैं मुरारी श्रीहरि को भी अधिकाधिक आनन्द प्रदान करने वाली है, तथा जो नीलकमल के भीतरी भाग के समान मनोहर जान पड़ती है, वह लक्ष्मीजी के अधखुले नयनों की दृष्ठि क्षण भर के लिये मुझ पर भी थोड़ी सी अवश्य पड़े ॥ ३ ॥ शेषशाली भगवान् विष्णु की धर्मपत्नीय श्री लक्ष्मीजी का वह नेत्र हमें ऐश्वर्य प्रदान करने वाला हो, जिसकी पुतली तथा बरौनियां अनङ्ग के वशीभूत (प्रेमपरवश) हो अधखुले किन्तु साथ ही निर्निमेष नयनों से देखने वाले आनन्दकंद श्रीमुकन्द को अपने निकट पाकर कुछ तिरछी हो जाती हैं ॥ ४ ॥ जो भगवान् मधुसूदन के कौस्तुभमणिमण्डित वक्ष:स्थल में इन्द्रनीलमयी हारावलीसी सुशोभित होती है तथा उनके भी मन में काम (प्रेम) का संचार करने वाली है, वह कमलकुञ्जवासिनि कमला की कटाक्ष-माला मेरा कल्याण करे ॥ ५ ॥ जैसे मेघों की घटा में बिजली चमकती हैं, उसी प्रकार जो कैटभशत्रु श्री विष्णु के काली मेघमाला के समान श्यामसुन्दर वक्षःस्थल पर प्रकाशित होती है, जिन्होंने अपने आविर्भाव से भृगुवंश को आनन्दित किया है तथा जो समस्त लोकों की जननी हैं, उन भगवती लक्ष्मी की पूजनीया मूर्ति मुझे कल्याण प्रदान करे ॥ ६ ॥ समुद्रकन्या कमला की वह मन्द अलस, मन्थर और अर्धोन्मीलित

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दृष्टि जिसके प्रभाव से कामदेव ने मङ्गलमय भगवान मधुसूदन के हृदय में प्रथम बार स्थान प्राप्त किया था, यहां मुझ पर पड़े ॥७॥ भगवान् नारायण की प्रेयसी लक्ष्मी का नेत्ररूपी मेघ दयारूपी अनुकूल पवन से प्रेरित हो दुष्कर्मरूपी घाम को चिरकाल के लिए दूर हटा कर विषाद में पड़े हुए मुझ दीनरूपी चातकपोत पर घन-रूपी जलधार की वृष्टि करे ॥ ८ ॥ विशिष्ट बुद्धिवाले मनुष्य जिनके प्रीतिपात्र होकर उनकी दयादृष्टि के स्वर्गपद को सहज ही प्राप्त कर लेते हैं, उन्हीं पद्मासना पद्मा की वह विकसित कमल-गर्भ के समान कान्तिमती दृष्टि मुझे मनोवांछित पुष्टि प्रदान करे ॥ ९ ॥ जो सृष्टि-लीला के समय वाग्देवता [ब्रह्म-शक्ति] के रूप में स्थित होती हैं, पालन-लीला करते समय भगवान् गरुड़ध्वज की सुन्दरी पत्नी लक्ष्मी (या वैष्णवी शक्ति) के रूप में विराजमान होती हैं तथा प्रलय-लीला के काज में साकम्भरी (भगवती दुर्गा) अथवा चन्द्रशेखरवल्लभा पर्वती (रुद्र-शक्ति) के रूप में अवस्थित होती हैं, उन त्रिभुवन के एक मात्र गुरु भगवान् नारायण की नित्ययौवना प्रेयसी श्रीलक्ष्मीजी को नमस्कार है ॥ १० ॥ मातः ! शुभ कर्मों का फल देने वाली श्रुति के रूप में आपको प्रणाम । रम-णीय गुणों की सिन्धुरूप है रति के रूप में आपको नमस्कार है। कमलवन में निवास करने वाली शक्ति-स्वरूपा लक्ष्मी को नमस्कार है तथा पुरुषोत्तम-प्रिया पुष्टि को नमस्कार है ॥ ११ ॥ कमल वदना कमला को नमस्कार है । क्षीरसिन्धुसम्भूता श्रीदेवी को नमस्-कार है । चन्द्रमा और सुधा की सगी बहिन को नमस्कार है । भगवान् नारायण की वल्लभा को नमस्कार है ॥ १२ ॥ कमलसदृश नेत्रों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वाली माननीया मां ! आपके चरणों में की हुई वंदना सम्पत्ति प्रदान करने वाली, सम्पूर्ण इन्द्रियों को आनन्द देने वाली, साम्राज्य देने में समर्थ और सारे पापों को हर लेने के लिये सर्वथा उद्यत है। वह सदा मुझे ही अबलम्बन करे (मुझे ही आपकी चरणवन्दना का शुभ अवसर सदा प्राप्त होता रहे) ॥ १३ ॥ जिनके कृपा-कटाक्ष के लिए की हुई उपासना उपासक के लिए सम्पूर्ण मनोंरथों और सम्पत्तियों का विस्तार करती है, श्रीहरिकी हृदयेश्वरी उन्हीं आप लक्ष्मीदेवी का मैं मन, वाणी और शरीर से भजन करता हूं ॥१४॥ भगवति हरिप्रिये ! तुम कमलवन में निवास करने वाली हो, तुम्हारे हाथों में लीला-कमल सुशोभित है। तुम अत्यन्त उज्ज्वल वस्त्र, गन्ध और माला आदि से शोभा पा रही हो। तुम्हारी झांकी बड़ी मनोरम है। त्रिभुवन का ऐश्वर्य प्रदान करने वाली देवि! मुझ पर प्रसन्न हो जाओ ॥१५॥ दिग्गजों द्वारा सुवर्ण-कलश के मुख से गिराये गये आकाश गंगा के निर्मल एवं मनोहर जल से जिनके श्रीअंगों का अभिषेक (स्नान कार्य) सम्पादित होता है, सम्पूर्ण लोकों के अधीश्वर भगवान विष्णु की गृहणी और क्षीर सागर की पुत्री उन जगज्जननी लक्ष्मी को मैं प्रातः काल प्रणाम करता हूं ॥ १६ ॥ कमल नयन केशव की कमनीय कामिनी कमले! मैं अकिंचन (दीन हीन) मनुष्यों में अग्रगण्य हूं, अतएव तुम्हारी कृपा का स्वाभाविक पात्र हूं। तुम उमड़ती हुई करुणा की बाढ़ की तरल तरंगों के समान कटाक्षों द्वारा मेरी ओर देखो ॥ १७ ॥ जो लोग इन स्तुतियों द्वारा प्रतिदिन वेदत्रीयस्वरूपा त्रिभुवन जननी भगवती लक्ष्मी की स्तुति करते हैं, वे इस भूतल पर

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

महान् गुणवान् और अत्यन्त सौभाग्यशाली होते हैं तथा विद्वान् पुरुष भी उनके मनोभाव को जानने के लिये उत्सुक रहते हैं ॥ १८ ॥ (कनकधारास्तोत समाप्त)

आवश्यक सूचना

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए दुःख दारिद्र्य को दूर करने के लिये, इस कनक धारा स्तोत्र का प्रयोग करें, इसी के प्रभाव से भगवान श्री शंकराचार्यजी ने स्वर्ण की वर्षा करायी थी।

विधि—सर्व प्रथम जो आगे संकल्प की विधि दी गई है। उससे संकल्प करले, पुनः इस स्तोत्र का नित्य ११ बार पाठ करे। महालक्ष्मी कवच धारण करलें तथा महालक्ष्मी सिद्धयर्थ-महामंत्र की नित्य १ माला उसे सिद्ध करके जपें, प्रत्येक दीपावली को उसका हवन करें, अवश्य लाभ होता है विशेष विधि श्री पूज्य गुरुदेव जी से पत्र द्वारा पूछें या मिलें। लक्ष्मी कवच आगे इसी पुस्तक में दिया गया है। अब आगे संकल्प करने की विधि दी जाती है।

संकल्प विधि

स्नान, दान, देवपूजन, आदि के आरम्भ में संकल्प करना चाहिये। दायें हाथ की हथेली में केवल जल या जौ, जल, तिल, पुष्प आदि का नीचे लिखे संकल्प वाक्य में (अमुक) के स्थान पर उसके बाद जो शब्द हैं उसका विशेष नाम पंचाग आदि में देख कर बोलना चाहिये। पुनः वह जल भूमि पर गिरादे।

ब्राह्मण अपने नाम के अन्त में 'शर्मा'—क्षत्रिय 'वर्मा' वैश्य 'गुप्त', और शूद्र 'दास' कहें। श्राद्ध तर्पणाणि में पितरों के नाम के अन्त में इसी प्रकार बोलें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

// हरि: ॐ तत्वदद्यैतस्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयप श्रीश्वेत वारहाकल्पे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्याव देशान्तंगते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे (अमु संवत्सरे (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) ति (अमुक) वासरे, (अमुक) गोत्रोत्पन्न: (अमु नामाहं मम कायिक-वाचिक-मानसिक-ज्ञाताज्ञातस दोषपरिहारार्थं श्रुतिस्मृति-पुराणोक्तफल-प्राप्त्यर्थं परमेश्वर प्रीत्यर्थम् (अमुक) काले (अमुक) सम्मु (अमुककर्म करिष्ये कहकर जलादि छोड़ें।

नोट:—यजमान के लिये करें तो यजमान का गोत्र तथा नाम उच्चा रण करें और अन्त में "करिष्ये" की जगह "करिष्यामि" कहें।

* षोडषोपचार पूजन-विधि *

१—औ३म् सर्वेभ्यो देवेभ्यो नम: । आवाहयामि स्थापयामि ॥

२—आसन समर्पयामि ॥ ३—पाद्य समर्पयामि ॥

४—अर्घ्य समर्पयामि ॥ ५—आचमनम् समर्पयामि ॥

६—स्नानम् समर्पयामि ॥ ७—वस्त्रम् समर्पयामि ॥

८—यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ ९—गन्धम् समर्पयामि ॥

१०—पुष्पान् समर्पयामि ॥ ११—धूपम् समर्पयामि ॥

१२—दीपम् समर्पयामि ॥ १३—नैवैद्यं समर्पयामि ॥

१४—अक्षतान् समर्पयामि ॥ १५—ताम्बूल पुंगीफलाण् समर्पयामि

१६—दक्षिणां समर्पयामि ॥

सर्वाभावे । अक्षतान् समर्पयामि ॥ ततो नमस्कार करोमि

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

◈ महालक्ष्मी कवचम् ◈

नारायण उवाच

सर्वसम्पअदस्यास्य कवचस्य प्रगापतिः ।
ऋषिश्छन्दश्य बृह्तो देवी पद्मालया स्वयम् ॥१ ॥
धर्मार्थकामोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
पुण्यबीजं च महतां कबच परमाद्भूतम् ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं कमलवासिन्यै स्वाहा मे पातु मस्तकम् ।
श्री मे पातु कपालं च लोचने श्रीं श्रियै नमः ॥ ३ ॥
ॐ श्रीं श्रियै स्वाहेति च कर्णयुग्यं सदावतु ।
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा मे पातु नासिकाम् ॥ ४ ॥
ॐ श्रीं पद्मालयायै च स्वाहा दन्तं सदावतु ।
ॐ श्रीं कृष्णप्रियायै च दन्तरन्ध्रं सदावतु ॥ ५ ॥
ॐ श्रीं नारायणेशायै मम स्कन्ध कण्ठं सदावतु ।
ॐ श्रीं केशवकान्तायै मम स्कन्ध सदावतु ॥ ६ ॥
ॐ श्रीं पद्मानिवासिन्यै स्वाहा नभि सदावतु ।
ॐ श्रीं ह्रीं संसारमात्रे मम वक्षः सदावतु ॥ ७ ॥
ॐ श्री श्रीं कृष्णकान्तायैस्वाहा पृष्ठ सदावतु ।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रियै स्वाहा मम हस्तौ सदावतु ॥ ८ ॥
ॐ श्रीं निवासकान्तायै मम पादौ सदावतु ।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रियै स्वाहा सर्वाङ्ग मे सदावतु ॥ ९ ॥
प्राच्यां पातु महालक्ष्मीराग्नेय्यां कमलालय ।
पद्मा मां दक्षिणे पातु नैर्ऋत्यां श्रीहरिप्रिया ॥ १० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पद्मालया पच्चिमे मां बायव्यां पातु श्रीःस्वयम् ।
उत्तरे कमला पातु ऐशान्यां सिन्धुकन्याका ॥ ११॥
नारायणेशी पातूर्ध्वमधो विष्णुप्रियावतु ।
संततं सर्वतः पातु विष्णुप्राणाधिका मन ॥ १२॥
इति ते कथित वत्स सर्वमन्त्रौधविग्रहम् ।
सर्वश्वर्यप्रदं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥ १३॥
सुवणपर्वतं दत्त्वा मेरुतुल्यं द्विजायते ।
यत् फलं लभते धर्मी कवचेन ततोऽधिकम् ॥ १४॥
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवच धारयेत् तु यः ।
कण्ठे वा दीक्षिणे बाहौ स श्रीमान प्रतिजन्मनिः ॥ १५॥
अस्ति लक्ष्मीर्गृहे तस्य निश्चला सतपुरुषम् ।
देवेन्द्रैश्चासुरेन्द्रैश्च सोऽत्रघ्यो निश्चितं भवेत् ॥ १६॥
स सवपुण्यवान् श्रीमान् सर्वयज्ञेष दोक्षित्ः ।
स स्नातः सर्वतीथषु यस्येदं कवचं गले ॥ १७॥
यस्मै कस्मै न दातव्य लोभमोहभयैरपि ।
गुरुभक्ताय शिष्याय शरणाय प्रकाशयेत् ॥ १८॥
इदं कवचमज्ञात्वा जपेल्लक्ष्मीं जगत्प्रसूम् ।
कोटिसंख्यं प्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धिदायकः ॥ १९॥

(गणपतिखण्ड ३८ । ६४-८२)

यह कवच सिद्ध करके दीपावली के दिन कण्ठ या दाहिने भुजा पर धारण करें, विशेष विधि गुरुदेवजी से पूछलें ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

* महालक्ष्मी सिद्धयर्थ महामन्त्र *

ॐ श्रीं ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद

श्री ह्रीं महालक्ष्मयै नमः

इस मन्त्र को एक बार दीपावली के दिन सिद्ध करलें पुनः नित्य १ माला जपें लक्ष्मी जी का ध्यान करते हुए।

विधि गुप्त है गुरुदेवजी से पूछ लें।

गुरु प्रकाशयेत् धीमान मन्त्र नैव प्रकाशयेत्

भावार्थ—बुद्धिमान गुरु का प्रकाशन करे किन्तु मन्त्र का नहीं इसीलिये विधि गुप्त रखी गई है कहा भी है कि—

जोग जुगति तप मन्त्र प्रभाऊ। फले तबहिं जब करिये दुराऊ॥

और भी गायत्री आदिक सभी मन्त्रों के बीज मंत्र हैं। बीज मंत्रों में विशेष शक्ति होती है। गुरुदेवजी से जानकारी करलें पत्र व्यवहार द्वारा। उत्तर के लिये बन्द जवाबी लिफाफा भेजें। पत्र व्यवहार का स्थायी पता आगे है।

विद्या बुद्धि के लिए

मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं श्री क्लीं वाग्वाहिनि सरस्वतीः

मम जिह्वाग्रे वद वद ॐ ऐं ह्रीं श्री क्लीं नमः स्वाहा॥

आसाढ़ में जब उत्तरा षाढ़ा नक्षत्र हो तब इस मन्त्र को १०८ बार दिन में जप ले और रात्रि को ग्यारह बजे से १२ बजे के बीच में जब कभी भी इस मंत्र का २१ बार जप कर, लाल चन्दन से जीभ पर "ह्रीं" मंत्र लिख दे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

—: लक्ष्मीजी का मन्त्र :—

ॐ श्रीङ् ह्रीङ् कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद।
ॐ श्रीङ् ह्रीङ् श्रीङ् महा लक्ष्म्यै नमः ॥

सन्तान के लिये गोपाल मन्त्र

देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं मम ॥

गायत्री-उपासना

श्लोक—गायत्र्यास्तु परं नास्ति, शोधनं पाहकर्मणम्।
महाव्याहृतिसंयुक्तां प्रणवेन च स जपेत् ॥
(संवर्तस्मृति श्लोक २१८)

अर्थ—गायत्री से बढ़कर पाप कर्मों का शोधक (प्रायश्चि... दूसरा कुछ भी नहीं है। प्रणव (ॐकार) सहित तीन ... व्याहृतियों से युक्त गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिये। गा... मंत्र तथा उसकी विषद् व्याख्या इसी ग्रन्थ के चौरानबे, पचा... पृष्ठ पर दी गई है। गायत्री को शाप से मुक्त किये बिना जपक... फल नहीं देता, अतः पृष्ठ ९० पर दिये गये शापमोचन मंत्र ... प्रथम तीन बार बोल कर गायत्री जप प्रारम्भ करें। पुत्र की इ... वाले ब्रह्मगायत्री का भी साथ जाप करें।

इस गायत्री—मन्त्र के ऋषि-विश्वामित्र है, देवता-सविता... छन्द गायत्री है।

गायत्री के चौबीस देवताओं की गायत्री तथा फल

'१ गणेश गायत्री—ॐ एक दंष्ट्राय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो बुद्धि प्रचोदयात्। (फल-सफलता, विघ्ननाश)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

२ नृसिह गायत्री--ॐ उग्र नृसिहाय बिद्महे वज्र नखाय धीमहि। तन्नो नृसिह प्रचोदयात् (फल-पराक्रम शक्ति, रक्षा)

३ विष्णु गायत्री—ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णु प्रचोदयात्। (फल-पालन शक्ति)

४ शिव गायत्री—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवधीमहि तन्ना शिवः प्रचोदयात्। (फल कल्याण अनिष्ट नाश)

५ कृष्ण गायत्री—ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि। तन्नो कृष्ण प्रचोदयात्। (फल योग शक्ति)

६ राधा गायत्री—ॐ वृषभानुजायै विद्महे, कृष्ण प्रियायै धीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात्। (फल-प्रेमशक्ति)

७ लक्ष्मी गायत्री—ओ३म महालक्ष्म्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि। तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्। (फल-धन शक्ति)

८ अग्नि गायत्री—ओ३म महज्वालाय विद्महे, अग्नि देवाय धीमहि। तन्नो अग्नि प्रचोदयात्। (फल तेज शक्ति)

९ इन्द्र गायत्री—ओ३म सहस्त्र नेत्राय विद्महे, बज्र हस्ताय धीमहि। तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात्। (फल-रक्षा शक्ति)

१० सरस्वती गायत्री—ओ३म सरस्वत्यै विद्महें, ब्रह्म पुत्र्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। (फल-बुद्धि शक्ति)

११ दुर्गा गायत्री—ओ३म गिरजाये विद्मये, शिव प्रियायै धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्। (फल-दमन शक्ति)

१२ हनुमान गायत्री—ओ३म् अजनी सुताय विद्महे, वायु पुत्राय धीमहि। तन्नो मरुतः प्रचोदयात्। (फल-कर्म परायणता)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

१३ पृथ्वी गायत्री—ओ३म् पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्र धीमहि। तन्नो पृथ्वी प्रचोदयात्। (फल-धारणा शक्ति)

१४ सूर्य गायत्री—ओ३म् भास्कराय विद्महे, दिवाक धीमहि। तन्नो सूर्यो प्रचोदयात्। (फल-प्राण शक्ति)

१५ राम गायत्री—ओ३म् दशरथाय विद्महे, सीता बल्ल धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात् (फल-मर्यादा शक्ति)

१६ सीता गायत्री—ओ३म् जनक नन्दिन्यै विद्महे, भूमिज धीमहि। तन्नो सीता प्रचोदयात्। (फल-तप शक्ति)

१७ चन्द्र गायत्री—ओ३म् क्षीर पुत्राय विद्महे, अमृत तत्व धीमहि। तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्। (फल—शान्ति शक्ति)

१८ यम गायत्री—ओ३म् सूर्य पुत्राय विद्महे महाकाला धीमहि। तन्नो यमः प्रचोदयात्। (फल—मृत्यु से निर्भयता)।

१९ ब्रह्मा गायत्री—ओ३म् चतुर्मुखाय विद्महे, हंसारुढ़ाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्। (फल—पुत्रादि उत्पादक शक्ति)

२० वरुण गायत्री—ओ३म् जल बिम्बाय विद्महे, नील पुरुषा धीमहि। तन्नो वरुणोः प्रचोदयात् (फल-रस शक्ति)

२१ नारायण गायत्री—ओ३म् नारायणाय विद्महे, वासुदेवा धीमहि। तन्नो नारायण प्रचोदयात् (फल आदर्श शक्ति)

२२ हयग्रीव गायत्री—ओ३म् वाणीश्वराय विद्महे, हयग्रीवा धीमहि। तन्नो हंस प्रचोदयात्। (फल—साहस शक्ति)

२३ हंस गायत्री—ओ३म् परमहंसाय विद्महे, महःहँसाय धीमहि तन्नो हंस प्रचोदयात्। (फल-विवेक शक्ति)

२४ तुलसी गायत्री—ॐ विलस्य विद्महे, विष्णुप्रियामै धीमहि तन्नो वृन्दा प्रचोदयात् (फल-सेवा शक्ति)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नोट—ये गायत्री के २४ देवता हैं, तथा उनकी भिन्न भिन्न २४ गायत्री हैं। उनके लाभ भी साथ दिये गये है। जिन्हें जिस लाभ की आवश्यकता हो वे उसी का जप करें, तथा साथ ही साथ मूल गायत्री का जाप भी करें। इसके अतिरिक्त गायत्री का बीज मंत्र भी है उसके जप करने से शीघ्र ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है, तथा निष्काम भाव से जाप करने से शीघ्र ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है, तथा निष्काम भाव से जाप करने से प्रभु की प्राप्ति शीघ्र होती है। मंत्र गुप्त है—गुरुदेवजी से पत्रव्यवहार करें अथवा मिलें। //

पूज्य गुरुदेवजी का पत्र का पता—

श्री १००८ श्री विश्वगुरुजी महाराज महामण्डलेश्वर

विश्वगुरु नगर,

वेदनिकेतन धाम—पो० स्वर्गाश्रम ऋषिकेश (हिमालय) फोन २७९

* उपदेश सूत्र *

जो पूर्ण श्रद्धा व भक्ति से भगवान का पल्ला पकड़ता है। भगवान उसका सारा भार अपने कन्धों पर उठाते हैं।

सतावेगी न माया नहीं काल ग्रासेगा।
सुखी ही सुखी सदानन्द भासेगा।।
तिहूँ ताप नाशगे मिटेगा मैल उर का।
करो पाठ विश्वगुरु कृत कल्पतरु का।।

।। नित्योपयोगी मन्त्र समाप्त ।।

◇ श्रीलक्ष्मीजी की आरती ◇

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशि दिन सेवत हर विष्णु धाता।। ॐ जय।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तूही हैं जगमाता ॥ मैया ॥
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥ ॐ जय ॥
दुर्गा रूप निरंजन सुख सम्पत्ति दाता ॥ मैया ॥
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धिसिद्ध धन पाता ॥ ॐ जय ॥
तूही है पाताल बसन्ती तूही है शुभ दाता ॥ मैया ॥
कर्म प्रभाव––प्रकाशक जगनिधि से त्राता ॥ ॐ जय ॥
जिस घर तुम्हरो बासा बाही मे गुण आता ॥ मैया ॥
करन चहे सोई करले मन नहीं धड़काता ॥ ॐ जय ॥
तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न हो राता ॥ मैया ॥
खान पान अरू वैभव तुम बिन कुण दाता ॥ ॐ जय ॥
शुभ गुण सुन्दर युक्ता क्षीरनिधि जाता ॥ मैया ॥
रत्न चतुर्दश तोकू कोई भी नही पाता ॥ ॐ जय ॥
यह आरती लक्ष्मी जी को जो कोई नर गाता ॥ मैया ॥
उर आनन्द अति ऊमगे पाप उतर जाता ॥ ॐ जय ॥
चराचर जगत बचावैं कर्म प्रेरल्याता ॥ मैया ॥
राम प्रताप मैया की शुभ दृष्टि चाहता ॥ ॐ जय ॥

विश्वगुरु प्रार्थना

हे पूरण परमात्मा, पावन हो जीवात्मा ।
विश्व बने धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

औषधि भाग

शुभ कामना

दुर्जनः सज्जनो 'भूयात्, सज्जनः शान्ति माप्नुयात् ।
शान्तोमुच्येत् बन्धेभ्यो, मुक्तश्चान्यान्विमोचयेत् ॥

सिद्धि की मूल भावना

मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे, दैवज्ञे भेषजे गुरो ॥
यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी ॥

विद्या बुद्धि के लिये

गुरुचि (गिलोय) अपामार्ग, वायविडग, शंखिनी, ब्राह्मी बच सोंठ और शतावरी=यह सब सम मात्रा में लेकर गौ घृत में मिलाकर एक २ तोले की ४४ गोलियां बनालें। निम्न मन्त्र २१ बार पढ़कर प्रति दिन १ गोली खालें।

मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं हयग्रीवाय नमः
मे विद्यां देहि देहि, बुद्धि वर्धय वर्धय हुं फट् स्वाहा।

◈ विषधर सर्प का शर्तिया इलाज ◈

यदि किसी व्यक्ति को सर्प काटले तब तुरन्त ही काफी तन्दुरुस्त बलवान ५ आदमियों को वहां लेजाओ। काटे हुए व्यक्ति को बिठाल दो।

एक-एक आदमी एक-एक पैर दबाले, एक-एकआदमी एक-एक हाथ दबावें, ताकि वह व्यक्ति जिसे सर्प ने काटा है, बिल्कुल भी हिलडुल न सके। पांचवा आदमी उस व्यक्ति के पीछे बैठकर मजबूती से उसका सिर पकड़ले, ताकि सिर भी न हिले। अब आप फौरन ही पीपल की एक ऐसी डाल तोड़कर मंगावें जिससे बीस या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पच्चीस हरे चमकदार पत्ते लगे हों। उसमें से ऐसे दो पत्ते म बंडल के (नकुनों सहित) तोड़िये जो कि टूटा हुआ हिस्सा, ज दूध निकलता है वह पत्ते का डन्ठल कानों में जा सके। आप पह एक कान में देखकर काफी सावधानी से. जैसे कनखदा मल निकाल है, उसी तरह धीरे-धीरे डन्ठल कान में डालें यदि सर्प ने काटा तो ज्यों ही लगभग एक इन्च डन्ठल कान के अन्दर जायगा व्यक्ति जिसे सर्प ने काटा है, इतनी तेजी से चीखने लगेगा जैसे कोई मारे डाल रहा हो। वह उठकर भागने, चीख़ने या सि हिलाने, व पत्ता पकड़ने के सैकड़ों प्रयत्न करेगा इसी बीच दूस कान में भी उतना ही पत्ता डालकर अब शांत होकर बैठ जाइये मरीज को रोने चीखने चिल्लाने दीजिये। अधिक से अधिक पां मिनट में वह चिल्लाना बन्द कर देगा और वह चिल्लाना त बन्द करेगा जब पत्ते विष खीच लेंगे। यदि चिल्लाना बन्द न क तो पत्ते बदल दीजिये और पांच मिनट तक फिर दूसरे पत्ते ल दीजिये। चाहे जहरीले सर्प का विष हो, ठीक दस मिनट में वह ठीक जायेगा, अचूक प्रयोग है। यदि सर्प ने नहीं काटा है, तो कान पत्ता डालने पर वह चुपचाप बैठा रहेगा। यही परीक्षा है कि स का विष नहीं है। सर्प के विष के अतिरिक्त अन्य विषों में पत्त काम नहीं करेगा। पत्ता डालने वाले को खूब सावधान रह चाहिये। रोगी की चिल्लाहट से घबरा कर पत्ता हाथ से छोड़ दे नहीं चाहिये। अन्यथा, पत्ता अपने आप कान में खिंच कर चला जाय और परदा फाड़ देगा। जहाँ से रोगी चिल्लाने लगे, बस वहीं से पत न आगे जाने दें और न पीछे आने दें। दूसरे कान से निकाल पत को या तो जलादें या जमींन में खोद कर गाड़ दें, क्योंकि य

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कोई जानवर उन पत्तों को खालेगा तो वह मर जायगा। इससे हजारों आदमी ठीक हो चुके हैं जिन सज्जनों को कोई भ्रम हो या जो विशेष जानकारी करना चाहें वे स्वामीजी महाराज से पत्र द्वारा पूछ कर भ्रम निवारण करलें किन्तु जवाबी कार्ड या लिफाफें के लिये टिकिट अवश्य भेजें उनका पता इसी पुस्तक में अन्यत्र दिया है।

◈ हिमालय के योगियों की अनुभूत औषधियां ◈

कृमिरोग की दवा

वाय विडंग सेंधा नमक, जवाखार, कतीरा, हर्ड यह सभी वस्तु समान भाग में मिलाकर कूट पीस के कपड़े में छना लें मात्रा ६ मासा प्रतिदिन प्रातः सायं गौ के मट्ठे के साथ सेवन करें। कृमि रोग नष्ट हो जाता है।

बाल उगाने की दवा

खरबूजे के बीज, जैतून, तेजपात, और लौह चूर्ण पीस कर अण्डे की जरदी के साथ लेप करें, जहाँ बाल न हों वहाँ लेप करें, १५ दिन में बाल उग जाते हैं।

मधुमेह (डाइबटीज) की दवा

विधारा एकपाव, नागौरी असगन्ध एक पाव, मिश्री एक पाव बारीक पीस कर रखलें साँयकाल व प्रातःकाल छः छः माशा गौ के दूध के साथ या जल से खाली पेट लेवें सर्दी के दिनों में एक छटाँक, सोंठ भी मिला लेनी चाहिये।

तिजारी बुखार की दवा

नीम की ढाई पत्ती बारीक पीसकर गुड़ में लपेट कर खाने से तिजारी ज्वर शान्त हो जाता है।

आंखों में पानी आने की दवा

नीम के रस में जस्त मिलाकर लेप करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नीम के गुण: श्लोक:—

निम्ब वृक्षस्य पंचाङ्गं, रक्त दोष हरं भवेत्।
पित्तं कण्डू व्रणं दाहं कुष्टञ्चैव विनाशयेत्।

चम्बल की दवा

बनी हुई हरिद्वार से मंगाइये

पता—ॐ गिरिगोस्वामी विजय भवन हरिद्वार (उ० प्र०)

खांसी की अनुभूत औषधि

केले के फूल को तवे के ऊपर जलाकर बारीक पीसकर कपड़े में छान ले साफ शीशी में रखें, एक रत्ती सायंकाल शुद्ध शहद के साथ सेवन करने से भयंकर काली खांसी भी चली जाती है। बच्चे को आधा रत्ती दें।

सर्वोत्तम औषधि सूखा रोग के लिये, दांत निकालने के लिये, बच्चों के दस्तों के लिये, बड़ों के पेट में गैस बनना बन्द करने के लिये।

यह औषधि जो बच्चे सूख जाते हैं, दूध उलट देते हैं टट्टियां बार बार जाते हैं अथवा जिन पुरुषों के पेट में गैस बनती है, पेट फूला रहता है, खट्टी डकारें आती रहती हैं उन्हें चाहिये किबबूल की वक्कल सहित लकड़ी को जलाकर जब कोयला खूब दहक जावे कच्चा न रहे तब थाली में उठा कर रखलें कुछ देर में वह सफेद राख हो जायेगा उसे प्रथम छलनी में तथा दुबारा कपड़े में छान कर रखलें। बड़े आदमी को प्रातः व मध्याह्न तीनों समय एक एक रत्ती शुद्ध शहद में मिलाकर तथा छोटे बच्चे को आधा रत्ती शहद में या माँ के दूध में देवें। स्वस्थ अवस्था में दो बार नित्य लेने से बच्चे को निरोग रखती हैं। दाँत निकलते समय शहद में दवा मिला-

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कर मसूड़ों से मलनी चाहिये दांत सहज में ही निकल आते हैं। कमजोर बच्चे को देने से मोटा हो जाता हैं।

चम्बल दाद छाजन की सर्वोत्तम बूटी

एक बूटी जिसे दुधिया या दूधी कहते हैं उसका दूध खुजला कर पीड़ा के स्थान पर लगावें २४ घन्टे के बाद स्वर्णकारों से जस्त लेकर २१ बार धोये हुये मक्खन में मिलाकर लगाते रहें रोग समूल नष्ट हो जायगा कष्ट तो होता है।

० दस्तों का इलाज ०

दुधिया बूटी आधा तोला लेकर ५ काली मिर्चों के साथ चबा कर दो घूंट पानी पीलें, छाछ (तक्र) का सेवन करें।

◈ पुत्र उत्पन्न होने की दवा ◈

जीया पोता एक वृक्ष होता है जो कि सहारनपुर के लालदास के बाड़े में तथा ऋशिकेश के ब्रह्मानन्द आश्रम वीरभद्र में मिलता हैं उसके फल व फूल कहीं भी पंसारी के यहाँ मिल जाते हैं। जीया पोता के फल आधा सेर, फूल आधा सेर, जड़ ३ सेर, पत्ते ६ सेर, छाल पाँच सेर लेकर खूब बारीक पीसकर कपड़े में छान कर रखलें। उसमें से चालीस तोला यानी आधा सेर तो पीने के लिये निकालें बाकी और सभी के चालीस भाग करलें एक भाग नित्य ताँबे के कलश जल में सायंकाल भिगोदें प्रातः काल उसी से सिर सहित स्नान करें चालीस दिन तक।

पीने के लिये एक तोला नित्य सायंकाल मिट्टी के सकौरे में भिगोएँ प्रातः काल छान कर चालीस दिन तक पीयें पन्द्रह दिन में गर्भ रह जाता है गर्मपदार्थ नहीं खाने चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

◈ सर्दी के लिये हिमालय के योगियों का पेय ◈

आधा सेर बेखरजुआर जिसे संजीवा भी कहते हैं, जावि तीन तोला, जायफल तीन तोला लौंग छः तोला, काली मिर्च तोला, दालचीनी छः तोला, सोंठ छः तोला, तेजपात छः तो मुलहठी छः तोला, तुलसी पत्र छः तोला यह सब बारीक पीस कपड़े में छान लें शीशी में रखें।

मात्रा एक आदमी एक समय में सर्दी के दिनों में १ तोले से तोले तक ले सकता है, बच्चे के लिये आधा।

विधि—यह चूरा जल में डालकर उबालें एक पाव या छटांक रह जावे उबाला हुआ दूध पानी के बराबर मिलावें, उबालते समय ही डाल देवें पानी जितना पीना चाहें उतना औषधि की मात्रा न्यूनाधिक जैसे अनुकूल पड़े लेते रहें। हिमा में योगी लोग बर्फ में रहने की शक्ति इसी से प्राप्त करते हैं नियां को ठीक करती है।

दांतों के पायेरिया का इलाज

पिसी हुई हल्दी और शुद्ध सरसों का तेल बराबर मात्रा में मिला कर मंजन करके गर्म कुल्ला करें पायेरिया दूर होगा दांत वज्र समान मजबूत चमकीले हो जायेंगे। स्वस्थ दांत वाला नि प्रयोग करें।

आंखों की दवा

पिसी हुई लाल फिटकरी और शुद्ध घृत दोनों को मिला तीन दिन तक रात को सोते समय आंख के ऊपर लेप कर देना चाहि

बिच्छू के काटे का उपाय

छः माशा सफेद फिटकिरी बारीक पीसकर तीन माशा घृत मिलाकर काटे हुए पर लेप करदें।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

श्वेतकुष्ट यानी सफेद दाग की दवा

बावची, ननी यानी मक्खन छाछ का निकाल हुआ १०० सौ ...र धोकर दोनों मिलाकर लेप करें दो सप्ताह तक प्रयोग करने ...र पुरानी खाल में रङ्ग मिल जायगा।

दांतों का रोग (पायेरिया)

आम के पत्तों को आग में जलाकर राख बना लीजिये। पुनश्च ...सकी कपड़ छान कर लीजिये। इस राख को किसी बोतल में रख ...लीजिये। सायं-प्रातः इससे दांतों में खूब मल कर कुल्ला कर लीजिये।

खारिश का इलाज

इक्कीस २१ नीम के पत्ते भली प्रकार साफ करके आधे आधे ...प्रातः काल व सायंकाल १ छटांक जल में बारीक पीस कर पीवें ...सात दिन पीने से खून साफ हो जाता है।

छोटे बालकों को २॥, ५, ७ या ११ पत्ते जैसी अवस्था हो ...१, २ या ३ तोला जल में घोट कर पिलावें तथाः—नीम की छाल ...चन्दन का भांति पीसकर फुन्सी पर लगावें नीम के पत्ते पानी में ...उबाल कर ठन्डा करके उससे स्नान करें सात दिन तक।

प्रमेही की औषधि

आम के वृक्ष की त्वचा (छाल) पाव भर लेकर रात में पानी में रख दीजिये। प्रातः समय उसको छान-पीसकर पी लीजिये।

दूसरा उपाय

आम के कोमल पत्ते दो-तीन सेर ले आइये उनको कई दिनों तक छाया में सूखने दीजिये। सूख जावें तो पीसकर छान लीजिये प्रतिदिन सायं प्रातः छः छः माशे खाकर पानी पी लीजिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मधुमेह

आम के पत्ते (एक तोला) आधा सेर जल में उबाल लीजिये जब चौथाई जल रह जाय तो साफ एवं शुद्ध वस्त्र से छान कर पी लीजिये।

दांत को चमकाने के लिए

आम की गुठली को आग में जलाकर कोयला बना लीजिये उसमें अन्दाज से सेंधा नमक मिला दीजिये। इसी चूर्ण को प्रति दाँत में लगाइये तो दाँत चमकने लगेंगे।

नजले का तुरन्त उपाय

काली मिर्च सात दाने मुख में डालकर भली भाँति मुख में रखते हुए चबाते रहना चाहिये जब मुख में खूब पानी भर जाय तो थूक देना चाहिये इसी प्रकार लगातार तीन बार ऐसी क्रिया करना आवश्यक है।

प्रात: व सायंकाल सात दाने गोल मिर्च बारीक कूटकर, पांच तुलसी पत्र, एक पाव जल में पकाकर एक छटांक रहने पर छानकर पीना चाहिये। दो दिन में नजला बिल्कुल दूर हो जायेगा।

पथ्य—१ नजला करने वाली वस्तु सेवन न करें।

२—भोजन विशेष ठन्डा न करें।

३—जल भोजन के एक घन्टे बाद पीवें।

पागल कुत्ता काटे की औषधि

लाल मिर्च सरसों के तेल में पीस कर काटी हुई जगह पर लगाकर पट्टी बांधें, मिर्च लगेगी नहीं जहर चूसेगी, जब लगना प्रारम्भ हो जावे तब न बांधें, अगर पूर्व में ही लगने लगे तो समझिये कुत्ता पागल नहीं है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

शुद्ध घी गरम करके काली मिर्च डालकर दिन में दो दो बार सात दिन तक पिलाना चाहिये।

टी० बी० रोग का उपाय

शुद्ध जल, धूप और शुद्ध हवा का सेवन कीजिये। गाय का दूध हितकर है। प्रातः सायं हवा में भ्रमण कीजिये। मकड़ी का जाला जो बहुत पुराना मालूम पड़े हाथ में लेकर मसल दीजिये और शहद (मधु) मिलाकर ४१ दिनों तक सेवन कीजिए। एक जाला से काम चल जायेगा। ३ रत्ती सायं ३ रत्ती प्रातः काल।

अन्डकोष की वृद्धि का उपाय

तम्बाकू के एक बड़े पत्ते को आग पर गर्म कर लीजिए और अण्डकोष पर बांध लीजिए। मन हो जायगी तो घबड़ाइए मत।

पेशाब लाने का उपाय

एक माशा कलमी शोरा, एक तोला मुलतानी मिट्टी बारीक पीस कर पेडू कर लेप करदें।

बादाम प्रयोग की सुन्दर विधि

बिना नमक मिर्च के पत्थर पर चन्दन की भांति घिसकर कटोरी में लेकर गर्मी में एक तोला शीतल जल के साथ, सर्दी में एक तोला गर्म जल के साथ प्रयोग करें ५ बादाम से अधिक न लेवें। बच्चा १ बादाम से ३ बादाम तक प्रथम बादाम को भिगो कर लाल छिलका उतार कर घिसें।

मृगी रोग की दवा

अपामार्ग की जड़ या पत्ती ४ माशे, सौंफ ४ माशे, ४माशे, १० काली मिर्च पीसकर पानी मिला के पीने से तीन तीन दिन में लाभ हो जाता है।

CC-0. RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

खांसी का उपाय

तुलसी की मंजरी अदरक के साथ सेवन करें।

ज्वर की दवा

तुलसी का रस काली मिर्च डाल कर पीवें।

सिर दर्द की दवा

तुलसी के सूखे हुए पत्तों को बारीक पीसकर नस्य लेवे

प्रदर की दवा

भिण्डी की जड़ का चूर्ण सेवन करें।

चौथिया की दवा

बबूल की पत्तियों को सूघना चाहिये।

मस्सों की दवा

मस्सों को काट कर सिन्दूर भर देना चाहिये।

पसली के दर्द की दवा

तारपीन का तेल लगाना चाहिये।

पथरी की दवा

बवाखार व मिश्री बराबर मिलाकर खानी चाहिए

नींद लगने का उपाय

पैर धोकर सोना चाहिये।

आधा शोशी का उपाय

केसर घी में मिलाकर नस्य लेनी चाहिये।

खूनी दस्त का उपाय

गौ का दूध चार तोला, काले धान का आटा दो तोले, घोल चार घन्टे के बाद सुबह से शाम तक पीवें १ दिन में ही दस्त हो जाते है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

O-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सर्दी—जुकाम का उपाय

(१) अमरुद के कोमल पत्ते अथवा लभेरा के कोमल पत्ते की चाय बनाकर पीनी चाहिये। लभेरा=लसोड़ा को कहते हैं।

नेत्र ज्योति वर्धक दवा

मुल्तानी मिट्टी १ पाव, वहेड़ा, आँवला, नागरमोथा, जटामाशी सुगन्धवाला, कपूर काचरो, सफेद चन्दन का चूरा एक-एक तोला व कपूर ३ माशा यह सब बारीक पीसकर थोड़ा सा पानी में घोल कर माथे पर लेप करें।

पीलिया की शर्तिया दवा

वदाल का डोडा (लंवा गोल कांटेदार) २ तोला पानी में शाम को भिगोकर दोनो नथुओं से प्रातः पीवें (सूंत लेवें) इससे ज्वर व कमजोरी हो जाती है, उसका उपाय करालें कोई चिन्ता न करे।

भूख न लगने का उपाय

कमल बीज अधेना (यानी अपामार्ग के बीज) तुलसी की जड़, आँवला चूर्ण, भैंस के दूध में खीर वनाकर खाने से बहुत दिनों तक भूख नहीं लगती।

जुकाम व बुखार की शर्तिया दवा

शीतारि आंठ रत्ती, अमृत बटी २ रत्ती, इसके दो भाग करके एक पुड़िया सुबह व एक पुड़िया शाम को गर्म जल के साथ लेवें। बाद में भी गर्म जल ही पीवें, यदि एक दिन में ठीक न होवे तो एक दिन और लेवें।

रतोंधी:—(Night blindness) की दवा

(१) छाछ में काली मिर्च मिलाकर पुतली में कई दिनों तक लगावें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

(२) धनिये की पत्ती का रस छान कर कई दिन तक में लगावे।

(३) पीपल की छाल गौमूत्र में घिसकर लगावे।

आँख के दर्द की दवा

(१) बरगद के दूध का आँखों पर लेप करें।

(२) आक (मदार-अर्क) का दूध पैर के नाखूनों पर लगा

आँखों में जाला और मोतियाबिन्दु की दवा

(१) कागजी नीबू का रस प्रतिदिन आंखों में डालें।

(२) प्याज को शहद में मिलाकर आंख में लगावें। (४० दिनों तक)

ज्वर का उपाय

एक रत्ती भुनी हुई फिटकरी वताशे के साथ बुखार आने पहले खा लें, सायं-प्रातः कागजी नींबू या ढाक का पत्ता मसल कपड़ा के खूँट में बांध लें और ज्वर आने के पहले सूंघते रहें।

अफीम के बिष की दवा

चार माशे हींग पानी के साथ पिलावें।

सफेद कुष्ट की दवा

नमक और मिठाई छोड़ दो। कागजी नींबू का रस छः मही तक लगावें। सूर्य की उपासना करें। उपासना मन्त्र पुस्तक में है

बहरापन की दवा

(१) अकौवा (मदार) का पीला पत्ता लेकर उसमें घी चु दें फिर उसको आग में सेक लें, उसी का रस निचोड़ कर क में डालें।

(२) जिस गाय के बच्चे न हुए हों, उस गाय का मूत्र करके कान में डालें।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कान दर्द की दवा

(१) गेन्दा के फूल के पत्ते का रस, या सुदर्शन का रस गर्म करके डालें।

(२) नीम के पत्ते का रस गर्म करके कान में डालें।

(३) गोमूत्र गर्म करके कान में डालें।

(४) पान लगाकर तम्बाकू के साथ पीस लें और उसी का रस कान में डालें।

(५) आम का पीला पत्ता घी में चुपड़ लें फिर उसको आग में सेककर उसका रस निकाल लें और कान में डालें।

(६) बरोह (बरगद की जटा) और काली मिर्च पीसकर गर्म करें और कपड़ा में भिगोकर कान में डालें।

(७) पलाश के कोमल पत्तों का रस कान में डालें।

(८) पीपल के पत्तों रस का कान में डालें।

कान में जलन की दवा

मट्टी की पट्टी कान के चारों ओर लगावें।

कान के बहने की दवा

(१) नीम के पत्ते का रस गर्म करके शहद में मिलाकर कान में डालें।

(२) पीपल के कोमल पत्ते का रस कान में डालें।

गठिया की दवा

(१) एक तोला बथुआ का शाक प्रातःकाल सर्व प्रथम खायें।

(२) सहिजन की जड़ पीसकर सरसों के तेल में मिला ले और उसी का लेप करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कण्ठ माला की दवा

(१) पीपल का गूदा गुलाब जल के साथ लगावें।
(२) अपामार्ग (चिरचिर) की जड़ गले में बांध ले।
(३) बड़ (बरगद) का दूध लगावें।

ब्लड प्रेशर दवा (BLOOD PRESSURE)

(१) सेब का बीज ४ रत्ती पीसकर उसमें शहद मिला प्रातःकाल खावें और ऊपर से बकरी का दूध पी लें।

(२) रुद्राक्ष की माला पहननी चाहिये।

असली रुद्राक्ष मिलने का पता—सरस्वती आला पुस्तक भंडार बड़ा बाजार (हरिद्वार)

अशुद्ध रक्त की दवा

(१) एक तोला घी में ८ काली मिर्च भून कर खायें।
(२) शीतल प्राणायाम किया करें तो बड़ा लाभ होगा।

स्वर भंग की दवा

(१) काली मिर्च घी में भूनकर शहद के साथ खायें।

(२) अदरक भून कर घी, शक्कर या मिश्री में मिला रखें और भाषण देते समय खालें।

पाण्डु रोग की दवा

गो मूत्र ४० दिनों तक पीवें। २ तोला प्रातः २ तोला सायंका

खून खराबी की दवा

(१) त्रिफला गो मूत्र के साथ पीवें।

(२) एक आना भर तुलसी बीज का पान के साथ शाम सु खाना चाहिए।

चर्म रोग की दवा

गौ का गौब्र लगायें पुनः स्नान करें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मस्तिष्क शक्ति के लिये ब्रह्मी बूटी

ग्रीष्म ऋतु में ब्रह्मी का शरबत, नित्य घोलकर पीवें।
वर्षा ऋतु—ब्रह्मी घृत (सारस्वत घृत)
शीतकाल में—ब्रह्मी पाय सेवन करें।

नोट—जिन्हें शरबत शीतलता लाये वे गरम जल या गरम दुग्ध से सेवन करें, या उसीमें उबाल कर लेवें। ब्रह्मी का चूरा २ माशे।

यह प्रत्येक स्त्री-पुरुष, विद्यार्थी; क्लर्क वकील आदि सभी के लिये उपयोगी है।

मिलने का पता——लल्लूजी वैद्य आदर्श आयुर्वेदिक फार्मेसी पो० कनखल (हरिद्वार)

अभ्रक भस्म सहस्त्र पुटी

यह योग वाह है घबराहट,-हृदय की धड़कन, मृगी, हिस्टीरिया स्वास खाँसी आदि रोगों में हितकर है, मात्रा बड़े को १ रत्ती, बच्चे को आधा रत्ती, कीमत ५०) तोला लोह घनसत्व २०) तोला अपूर्ण बल वर्धक हैं।

मिलने का पता—श्री पं० भँवरलाल जी वैद्य,
स्थान-पोस्ट——कुचामान रोड जिला—नागौर (राजस्थान)

प्रमेह की दवा

१—हरी गिलोय के चार तोले रस में छः माशे शहद मिला कर उसे प्रातःकाल पियें।

२—शहतूत के हरे पत्ते पीसकर पीयें।

३—आम के कोमल पत्तों को छाया में सुखाकर पीस छान सायं प्रातः ६-६ माशे पीने के साथ खायें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

सोते समय पेशाब होने की दवा

आंवलें का गूदा, काला जीरा और शहद बराबर मिलाकर खा

होंट फटने की दवा

१—खरबूजे का बीज पीसकर लगाये।
२—पीपल या बरगद का रस लगावे।

पैर की एडी फटने की दवा

पीपल का रस या बरगद का दूध लगावे।

छोटे बच्चों की दवाइयां

नाभि से खून बहने का इलाज

सफेद और साफ वस्त्र को जलाकर उसी राख को नाभि पर लगाइये।

खूनी दस्तों की दवा

दूब का रस डेढ़ छटांक, गौ दुग्ध पाव भर के साथ लीजिये। बच्चों को एक तोला रस एक छटांक दूध में दें।

बच्चों के सिर पर बाल उगाने की दवा

हाथी दांत की राख और रसौत लगाने से लाभ होगा।

पथरी के रोग की दवा

करमकल्ला की जड़ को जला कर राख बना लीजिये और शहद (मधु) के साथ सेवन करे।

बालकों के आसानी से दांत निकलने की दवा

सीपियों की माला गले में पहना दीजिये।

पेशाब रुकने पर दवा

१—एक धातृफल (आंवला) को पत्थर पर पीसकर पेट पर रखिये।

२—टेसू का फूल पीसकर पिलावे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बहु मूत्र की दवा

आंवले का रस शहद डालकर प्रतिदिन पीने से लाभ होता है। दिन में दो बार।

खुजली की दवा

नारियल का तेल कपूर मिलाकर लगावे।

हिचकी की दवा

१– छोटी हर्रा का चूर्ण शहद के साथ चाटे।

२–सोहागा पीसकर शहद में चाटें।

बहुत रोने की दवा

घुंघची की माला पहनावें।

दूध फेंकने की दवा

धनिये का भिगोया हुआ जल थोड़ा-थोड़ा पिलावें।

दूध नहीं पीने की दवा

पानी में परवल का पत्ता डालकर उसे उबालें फिर उसी जल से स्नान करावें।

पेट बढ़ने की दवा

रात को गरम पानी के साथ थोड़ा शहद मिलाकर पिलावें।

खांसी जुकाम की दवा

(१) ५-६ तुलसी के पत्ते का रस निकाल कर उसमें शहद मिलाकर चटावें।

नाक की हड्डी, सिर तथा कनपटी को सेक दें।

ज्वर की दवा

(१) कूटकी को जल में पीसकर शरीर में लेप करें।

(२) किसी प्रकार का ज्वर क्यों न हो, गिलोय को ४८ पहर तक जल में छोड़ दें। फिर उसे घोटकर पिला दें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सिर पर फोड़े फुन्सी की दवा

रसौत और मेंहदी की पत्ती पीसकर फोड़ों पर लगावें।

पसली का रोग, ब्रांकोन्यूमोनिया की दवा

फुलाया हुआ सोहागा ६ रत्ती लेकर गुनगुने पानी में मिला बार-बार खिलावें।

* स्त्री रोगों की दवा *

अधिक रजस्राव की दवा

दो तोले दूब का रस लेकर उसमें आधा तोला देशी चीं मिला दें। सायं-प्रातः और रात को सोते समय पीवें।

थनैला (स्तन में गांठ) की दवा

(१) अरंड के पत्ते के रस में वस्त्र को भिगोकर बार-बार लगा

(२) सहिजन का पत्ता पीसकर लेप करें।

श्वेत प्रदर की दवा

(१) ठण्डे जल में नमक मिलाकर प्रतिदिन कुछ समय त कमर डुबो कर बैठें।

(२) अच्छी जावित्री पानी के साथ कई दिनों तक दिन पांच बार खायें।

रक्त प्रदर की दवा

(१) असली नाग केसर आठ आने भर ठन्डे जल के सा दोनों समय लेवे।

प्रसव के बाद छाती के दर्द की दवा

चिरायते के अर्क का सेवन करें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

◈ प्रसव के बाद पेट, जांघ, तथा पेड़ू के दर्द की दवा ◈

प्रदर की दवा

चौलाई के साग का रस, शहद और मिश्री कई दिनों तक मिला कर पिये।

मासिक धर्म की दवा

कपास की जड़ [एक आना भर] हाथ में बांध लें। एक मास तक बांधे रखें।

बांझपन की दवा [Barrenness]

बरगद के फल का चूर्ण सायंकाल-प्रातः चार आने भर लेकर पानी के साथ खाना चाहिए। (४० दिनों तक)

गर्भ गिरने को रोकने की दवा

फिटकरी और बाँस की छाल दोनों को अच्छी तरह कूट लेना चाहिये। पुनश्च गर्म जल में खूब औटा कर प्रतिदिन एक छटाँक (सात दिनों तक) पीना चाहिये इससे बहुतों को लाभ होते देखा गया है।

बालक होकर मर जाते हों उसकी दवा

शिवलिङ्गी के बीज और नाग केसर पांच तोले लें और सबको जल में खूब बारीक पीसकर ८० गोलियां बना लीजिये सायं-प्रातः एक गोली शीतल जल के साथ ४० दिनों तक लें।

केवल कन्या ही उत्पन्न होती हो उसकी दवा

जिस स्त्री की केवल कन्या ही उत्पन्न होती हैं उसको पुत्र उत्पन्न होने के लिये निम्नलिखित उपाय करना चाहिए।

(१) गर्भवती स्त्री को [प्रारम्भ में] ढाक के पत्ते पीसकर पिलावें। [एक सप्ताह तक प्रतिदिन एक तोला]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

(२) गर्भ के दूसरे महीने में शिवलिङ्गी के बीजों का तीन माशे लेकर गाय के दूध तथा मिश्री के साथ तीन सप्ताह सेवन करें।

(३) पीपल अथवा बरगद (बट) के कोमल पत्ते एक तो भर सायं प्रातः खाये।

(४) मोर पंख के चांद को गुड़ के बीच में रख दें। सव गौ के दूध के साथ कई दिनों तक इसका सेवन करें। ध्यान रहे इसका सेवन गर्भ रहने से तीन मास भीतर ही किया जाता है

◈ खांसी व दमा की औषधि ◈

पुराने पीपल की छाल जो १०० वर्ष से अधिक का हो अ तरह बारीक पीसकर कपड़े से छानकर साफ शीशी में भर लें गौ के दूध में बासमती चावल की खीर बनाकर, बढ़िया का मिश्री डालकर २ माशे छाल डालकर शरद पूर्णिमा की रात्रि चांदनी में रखें रात्रि को भोजन न करें सारी रात्रि जागरण क प्रातः काल वह खीर खालें तथा नित्य पीपल की ही दांतुन क पश्चात् पीपल का कोमल पत्ता जीभ से नित्य चाटें।

खांसी श्वास की दूसरी दवा

आधा पाव तीसी को भूनकर उसमें आधा तोला बबूल पीसा हुआ गोंद डालकर शहद में आग पर पकालें। दिन में चा पांच बार खावें मात्रा आठ आने भर। अनुभूत प्रयोग है। प भारी पदार्थ तथा आलू बिल्कुल न खावें।

खाँसी श्वास की तीसरी दवा

(१) पीपल की छाल का चूर्ण दो आना भर शहद में मि कर खावें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(२) दो आना भर खैर की लकड़ी का चूर्ण शहद में मिला कर नित्य खावे।

(३) एक आना भर मोर पंखी की भस्म शहद में मिलाकर दोंनों समय खावें इन तीनों प्रयोगों में से कोई भी करें पथ्य से रहें।

(४) खुश्क खांसी के लिये बबूल का गोंद और साबित मिश्री खावे

बिच्छू के काटे की दवा

पेमदी वेर जो बड़ा होता है झरबेरी का नही, बड़े बेर के वृक्ष से तीन पत्ते मुंह से तोड़ कर चबालें, निगले नहीं मुंह में ही रखे, फिर रोगी के दोनों कानों में ३ बार फूँक मार दें रोगी हंसता हुआ चला जायेगा यह अनुभूत प्रयोग है। पत्ता हाथ से नहीं मुंह से तोड़े।

बुद्धि वर्धक दवा

(१) शंख पुष्पी जड़ सहित इतवार के दिन प्रातः काल आधा पाव लावें, एक तोला काली मिर्च, एक छटांक मुनक्के, थोड़ा सा काला नमक डालके, बारीक पीसलें झरबेरी के बराबर गोली बना कर छाया में सुखालें, २ गोली प्रातः २ गोली सायंकाल दूध के साथ या दही के साथ, या मठ्ठे के साथ, या जल के साथ, जिस प्रकार अनुकूल पड़े लेता रहे। समाप्त होने पर फिर बनवा लेवे ९० दिन का योग।

(२) यदि गर्मी के दिन हों तो बराबर ब्रह्मी भी डाल लेवें।

शंखपुष्पी विषहरा कांति स्मृति बलांग्निद्द (चरक)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सर्दी का बुखार

तुलसी पत्र १५, काली मिर्चें १५, खबकला १ तोला, पोदी ।।) भर, धनियां १ तोला, आधा सेर पानी में चढ़ाकर आधा रह जाये तब १ तोला मिश्री मिलाकर पीना चाहिये।

बुखार के जलन की दवा

पेट में जलन हो तो चन्दन घिसकर २ तोला अन्दाज में डाल देवें। यदि सारे शरीर में जलन होवे तो नाभि पर की कटोरी रखकर एक हाथ ऊँचे से उसमें पानी की धार दस मिनट में जलन मिट सकती हैं।

बुखार और बदहजमी की दवा

ब्रह्मदण्डी १ तोला, जलनीम १ तोला, काली मिर्च २५, नमक जायके बतौर डाल कर, एक पाव पानी घौट कर सुबह पीवें या गोली बनाकर छाया में सुखालें जल या दूध के साथ गोली झरबेर के समान।

मलेरिया ज्वर की दवा

"श्यामा" तुलसी के पत्ते ११ काली मिर्च ११ का बुखार चढ़े रहने और उतरने पर भी पीता रहे, और अपामार्ग जड़ लाल रेशम से भुजा पर बांधनी चाहिए तथा १० तुलसी के पत्ते, १० काली मिर्च के साथ रोज चबाने चाहिए।

कृमि की दवा

(१) बिडग चूर्ण आधा तोला शहद के साथ लेवें। अथवा
(२) नीम की पत्ती का रस आधा तोला नित्य पीवें।

शौच में सूत के समान कीड़ों की दवा

गंधक का तेजाब आधा पाव, कल्मीसोरा आधा पाव, पा

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

राबर मात्रा में लेकर, तामचीनी के प्याले में अग्नि पर रखकर खूब पकावें, जब धुँवा उठना बन्द हो जावे, तब उतार कर, इमाम-दस्ते में कूटकर खरल किया जावे, खूब महीन पीसकर शुद्ध शीशी में भर लेवें, भोजन के बाद १ या २ रत्ती लेकर दुगनी मिश्री मिलाकर मुंह में डालकर ऊपर से आधा पाव जल पीवें। खाली पेट नहीं लेवें भोजन के बाद लेवें, पेट में दो बड़े कीड़े होते हैं वे ही छोटे-छोटे कीड़े पैदा करते हैं नष्ट हो जावेंगे बच्चे को आधी रत्ती मां के दूध में।

उदरमय पेट दर्द की दवा

सौंफ १ तोला तवे पर भूनलें, सौंफ १ तोला कच्ची, आधा तोला मिश्री के साथ पीस कर फँकी कर लेवें।

पेट फूलने की दवा

नमक एक आना भर, और अजवायन आधा तोला मिला कर खावें।

मन्दाग्नि की दवा

एक आना भर सैन्धा नमक और एक आना भर भुनी हुई हींग प्रतिदिन भोजन के साथ पहले ग्रास पर ही खावे और भोजन के कुछ ही पहिले थोड़ी सी कच्ची अदरक नमक के साथ खावें।

आंव के दस्त

(१) सूखे बेल का गूदा ४ माशा, पुराना गुड़ ४ माशा, काली मिर्च ४ माशा पीसकर १ छटांक पानी में घोलकर पी लेवें।

अथवा—२ एक तोला ईसवगोल, एक तोला मिश्री मिलाकर फांक लेवें।

(३) खून पड़ता हो तो २ तोला दूब का रस पीवें।

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सर्दी की दवा

थोड़ा सा कपूर खाना और सूँघना चाहिए।

रक्त, श्वेत प्रदर की दवा

सफेद ऊन का कम्बल, या आसन जो १० या १५ व पुराना होवे लेकर किसी पात्र में रख कर जलती हुई आ रख देवें। वह अन्दर जल जायेगा पुनः बारीक पीस कर में रखलें १ रत्ती सुबह १ रत्ती शाम शहद के साथ खावें। तेल, खटाई, मिर्चो लाल, गुड़ नहीं खावें।

मासिक धर्म खोलने की दवा

मेथी का बीज १ तोला, सेंजना की छाल २ तोला, सेंज पत्ती ४ तोला, हल्दी आधा तोला, एक पाव पानी में उब आधा पाव रहने पर पी लेवे। यह मासिक धर्म की पारी से पहले पीवें। इतनी-इतनी ३ दिन पीवें।

मासिक धर्म बन्द करने की दवा

शीशम के २० पत्ते, ५ काली मिर्च, ३ तोला मिश्री कर पीस लेवें, १ पाव पानी मे मिलाकर पीने से लाभ होता यदि गर्मी मालूम हो तो पेट पर जल की पट्टी बांधे। गर्भ को भी रोक देता है। मिट्टी की पट्टी भी लाभप्रद है।

पुत्र उत्पन्न होने की दवा

"पीपली की दाढ़ी १ तोला, तीन साल का पुराना गुड़ ३ मिलाकर गोली झरबेर के समान बनाकर छाया में सुखा लें दूध के साथ सात दिन तक प्रातः काल १ गोली खावें, मासिक के बाद, रविवार के दिन शुरू करें उस दिन व्रत करें नम खावें। और भी दवा हैं गुरूजी महाराज से, जिनका पता इसी में दिया है, पत्र द्वारा पूछलें जवाबी लिफाफा भेजें।"

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नोटः—पीपल की दाड़ी रविवार को लेवै, उसका मन्त्र पूछ लेना चाहिये।

प्रदर की दवा

"मुलेठी २ तोला, मिश्री २ तोला, चावल धोये हुये, जल में पीस कर दिन में दो बार सेवन करें। इससे रक्तप्रद भी मिट जाता है। तथा अशोक की छाल के क्वाथ से भी प्रदर को आराम होता है।

रक्तस्राव: रज बहुत पड़ने की दवा

रज बहुत पड़ता हो तो नागकेसर की फांकी, या दूब का रस पीना चाहिए, पेट पर ठंडे जल की पट्टी रखनी चाहिए।

नहरूआ [नारू] की दवा

कच्ची हल्दी का रस आधी छटांक रोज पीवें।

प्रमेह की दवा

सफेद कली का चूना (चूना का टुकड़ा जो पान वगैरा के काम आता है) बड़े-बड़े अच्छे टुकड़े और असली तिल का तेल उतना लेवे जितने तेल में जितने टुकड़े पीसे जा सकें। दोनों को खरल में खूब महीन पीस लें, जिससे वह मलहम जैसी बन जाय, दवा जितनी अधिक घोटी जाये उतनी ही अधिक लाभप्रद होगी। दवा लगाने की विधि यह है, आक का पीला पत्ता लेकर उस पर थोड़ी सी मलहम लगाकर जहां नहरूआ का मुंह हो, वहाँ दवा लगा कर उस पत्ते को रखकर ऊपर से १ या १५ आक के हरे पत्ते रख कर मजबूत पट्टी बांध दें, तीन दिन बाद पट्टी खोलें, ईश्वर की कृपा से एक ही बार में पूरा आराम हो जायेगा। यदि पूरा आराम न हो तो एक बार फिर इसी तरह दवा लगाकर बांध दें और तीसरे

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दिन खोलें निश्चित ही रोग नष्ट हो जायेगा। नहरूआ पर पा लगने पाये। दवा मुँह पर लगानी चाहिए, ऊपर से पीला और उस पर हरे पत्ते रखे जायँ।

नहरूआ की दूसरी दवा

नहरूआ बड़ा कठिन रोग है। यह अधिकांश राजस्थान मध्य प्रदेश में हुआ करता है।

दवा—आधा पाव कबूतर की वीट को अच्छी तरह पीसकर छटांक किसी भी चीज के आटे में मिलाकर चूल्हा पर पा पकाया जाय, पकते समय आधा छटांक शुद्ध तिल का तेल डाल जाव। फिर जब वह पूरी तरह पक जाय तो उतारकर किसी पर रखलें और ठन्डा होने के बाद घाव पर बांध दें तीन ही दि नहरूआ ठीक हो जायेगा।

नहरूआ की तीसरी दवा

प्रतिदिन दो आना भर कपूर, आधापाव दही में घोलकर दिन पीना मात्र ही इसकी अक्सीर दवा है। बमन हो तो घब नहीं। परहेज कुछ नहीं।

खूनी बवासीर [रक्तार्श की दवा]

'रसौत एक तोला और कलमीशोरा एक तोला दोनों को में खूब महीन पीसकर आठ-आठ आने भर की गोली बनालें। गोली प्रातःकाल और १ संध्या को ठन्डे पानी के साथ खिला यह दो दिन की दवा है। इसी से खून बन्द हो जायगा। न हो तो दिन इसी प्रकार और दे दें; गुड़, लाल-मिर्च, खटाई, तेल बिल न खावें।'

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बवासीर की दूसरी दवा

'खून पड़ता हो तो दूब का रस १ छटांक चीनी मिलाकर या नागकेशर १ तोला चीनी मिलाकर पीसकर रखलें दर्द में भांग की ...ई दें। खून न पड़ता हो तो हर्रे २ तोला गोमूत्र में पीसकर गुड़ के साथ ७ दिन तक ले। खून पड़ता हो तो फिटकरी के जल से शौच के समय अङ्ग धोना चाहिये।'

दाद खाज की अनुभूत दवा

'मूली का बीज पानी में पीसकर खूब गरम करलें। फिर उसे उस स्थान पर जहां दाद या खाज हो खूब गरम-गरम लगावें। पहले दिन तो मूली का बीज खूब लगेगा और मरीज को थोड़ा कष्ट भी होगा किन्तु दूसरे दिन कम लगेगा जब तक ठीक न हो लगाता रहे।'

खुजली की दवा

'दो रत्ती शुद्ध गंधक केले में दबाकर या शहद के साथ प्रति दिन खावें। चावल मोगरे का तेल या कपूर, मिलाया हुआ नारियल का तेल लगाकर धूप में बैठे। नीम के पत्तों के जल से धोवें।

दाद की दवा

माजूफल का चूर्ण आठ तोला; इमली की छाल की भस्म १ तोला; कपूर आठ आना भर नारियल के तेल में लगावें।

फोड़े की दवा

काली या पीली चिकनी मिट्टी बारीक पीसकर पानी में सानकर उसे फोड़े पर बांधलें। अथवा अनन्तमूल की जड़ पीसकर उसका चारो ओर लेप करें।

किसी जगह काटने की दवा

बरफ या पानी की पट्टी रखें। अथवा गेन्दे के फूल पीसकर बांधने से खून बन्द हो सकता है।

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मृगी रोग की दवा

अपामार्ग [औंगा] की जड़ को या पत्ते पीसकर इसमें गोल मिरच व सौंफ मिलाकर पीने से [अपस्मार] मृगी का रोग दूर हो जाता है।

सिर दर्द की दवा

१–पुराने गुड़ के साथ सौंफ का चूर्ण मिलाकर सूँघें।

२–सोंठ; बादाम! कपूर; सफेद चन्दन के साथ पीसकर जरा सा गरम करके लेप करें। अफीम बहुत थोड़ा डालें।

३–कपूर; पिपरमेंट; और अजवायन के फूल बराबर मिलाकर अमृतधारा बनालें; उसका लेप करें; या बनी हुई ले लेवें।

४–गाय के दूध में चन्दन की भांति घिसकर मस्तक पर लेप करो।

आधा सीसी की दवा

सबेरे चार बजे आधा तोला भुना हुआ सोहागा पीसकर एक तोला घी और एक तोला चीनी के साथ खाना चाहिये।

गठिया के दर्द की दवा

आधी छटांक धतूरे के बीज कूटकर तीन पाव खालिस सरसों के तेल में सात दिन तक भिगोवें फिर छान कर उस तेल की मालिश करें।

कण्ठ की जलन की दवा

खूब मोटे आटे की रोटि खावें और कुछ शारीरिक श्रम भी करना चाहिये।

बहुमूत्र की दवा

पुराने गुड़ के साथ काले तिल भूनकर लड्डू बना लेवें; नित्य प्रति २–लड्डू खावें।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आंख की दवा

'अफीम, रसौत, लाल फिटकरी यह पानी में घोल लें और गरम करके आँखों के ऊपर लेप करें अन्दर न जाने पावें।'

जुकाम प्रतिष्याय की दवा

आधी छटांक गेहूं की भूसी (बूर), १० तुलसी पत्र, दस काली मिर्च, अदरक एक छटांक, बताशे, आधा सेर पानी में उबालें, ६ छटांक रहने पर कुछ ठन्डा करके पी लेवे ओढ़कर सो जावें दोनों समय लेना चाहिए।

खुजली की फुन्सी की दवा

'नीम की टहनी पत्ते सहित तोड़कर जितने जल से स्नान किया जा सके, उतने जल में उबालो जब खूब गरम हो जावे तब थोड़ा ठंडा कर उस जल से स्नान करें ठीक हो जायगा।

गर्मी की छोटी फुन्सी की दवा

मुल्तानी मिट्टी आधा पाव जल में भिगो दें गल जाने पर सारे शरीर में गर्मी के दिनों में जहां फुन्सी हो लगावें सर्दी में नहीं।

मृगी रोग की औषधि

सिरस के बीज बारीक पीसकर कपड़े में छानकर रखे, रोगी को सुंघावे छींक आयेगी तुरन्त लाभ होगा।

स्मरण शक्ति के लिये

रूमी मस्तगी और शक्कर बराबर लेकर बारीक पीस लें दोनों समय ६ माशे का प्रयोग करें जो पढ़ेगा वह याद रहेगा।

सोते हुए डरने का उपाय

बच्चे या बड़े के सिरहाने कपड़े में फिटकरी की डाली बांध कर रखदें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लकवा की औषधि

सफेद सन के बीज पीसकर १ माशा सुबह शाम शहद में मिला कर १५ दिन खिलायें आराम होगा।

कण्ठमाला का उपाय

चिड़चिड़ा अपामार्ग की जड़ रविवार को लाकर कण्ठ में बांधे

जलन्धर का उपाय

करील की जड़ कूटकर ६ माशा रोज एक छोटी चम्मच जल के साथ खायें और लेप भी करें सात दिन में रोग दूर हो जायगा।

पीलिया की औषधि

खट्टे अनार का रस आँखों में लगाने से दिन में आराम होगा।

तिल्ली की औषधि

खाली पेट मूली तथा सेंधा नमक खाने से आराम होता है।

पेट के कीड़े की औषधि

(१) नीम की कोमल पत्ती खावें तथा उसका रस पाखाने के स्थान पर लगावें।

(२) अरन्ड के पत्ते का रस पाखाने के स्थान पर लगाने से बच्चों के पेट के कीड़े मर जाते हैं।

संग्रहणी की औषधि

चार आना भर मेथी के बीज पीसकर जल के साथ ७ दिन तक फंकी करें; दूसरे सप्ताह में आठ आने भर, तीसरे सप्ताह में १२ आने भर, चौथे सप्ताह में एक तोला लेवें फिर कम करें पाँचवें में बारह आना भर, छठे में आठ आना भर, सातवें आठ में आना भर आठवें में चार आना भर संग्रहणी दूर हो जायगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दिल की औषधि

पाँच लोंग तथा सेन्धा नमक सूखा खूब बारीक घोटकर फिर जल मिलाकर भोजन के वाद दोनों समय पिये।

मधुर कंठ व आवाज खुलने की औषधि

बच, कुलंजन बावची चौथा नागर पान।
चारों का सेवन करें, कंठ कोकिला जान॥

यानि १ तोला वच; एक तोला कुलंजन, १ तोला बावची; नागरबेल पान के रस में मटर के समान गोली बनाकर छाया में सुखालें तीन समय गोली चबायें या जल में घोलकर सेवन करे।

नेत्रों की ज्योति के लिए त्रिफला जल

हड़ १॥ तोला, बहेड़ा ३ तोला, आँवला ६ तोला इन तीनों को डेढ़ सेर जल में रात को मिट्टी के वरतन में भिगो दो और ऊपर से एक कपड़ा बांध कर खुले स्थान में रख दो। सवेरे उठकर उसी पानी से वरावर दो मास आँख-मुँह धोने से तथा नेत्र पर छपके मारने से नेत्रों को ज्योति तेज हो जाती है। आँखों के सामने अन्धेरी का आना, आँखों में जलन, कम दीखना तथा सिर घूमना आराम हो जाता है।

◈ बिच्छू काटने की दवा ◈

नौसादर, कली का चूना और सुहागा, तीनों जल के साथ एक में मिलाकर सुँघाने से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है।

स्त्री का दूध बढ़ाने की दवा

(१) सफेद जीरा और साठी का चावल दूध में पका कर कुछ दिन खिलाओ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(२) सतावार को बहुत बारीक पीसकर खाने से दूध बढ़ जाता है।

(३) बरगद की दाढ़ी के लाल किनारे सुखाकर पानी में पीसकर लगाने से छाती कठोर हो जाती है।

पसली के दर्द की औषधि

नारायण तेल मालिश करो और पुरानी रुई से उस स्थान को सेको और थोड़ी देर बाद जगह बाँध दो।

अथवा

सिन्दूर में शहद मिलाकर एक साफ कपड़े पर लगा दो। उस कपड़े को दर्द के स्थान पर चिपका दो और सुलगते हुये कन्डे की आग से सेंक दो। आग दूर रखो पर भभक लगने दो। यह बात अजमाई हुई है

मुहासा की दवा

जायफल दूध में घिस कर बराबर कुछ दिन लगावे जबान की फुन्सियाँ मिट जाती हैं।

फोते का बढ़ना

छोटी इन्द्रायण की जड़ का चूर्ण, अरण्डी के तेल में पीस कर दिन में ५ बार लगाने तथा दो माशा चूर्ण फांक कर दूध पीने से शीघ्र लाभ होता है।

बिच्छू की दवा

शहद, घी और चूना बराबर लेकर मिला लो। जहाँ बिच्छू ने काटा हो लगा दो फौरन आराम होगा (परीक्षित)

मुँह के छालों की दवा

चमेली के पत्ते अच्छी तरह तीन या चार दिन चबायें।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दाद खाज छाजन

८ तोला मक्खन १०१ बार धोया हुआ। १ तोला नीलाथोथा १ तो० गन्धक, ६ माशा मुश्क कपूर। तीनों चीज कपड़ छान करके मक्खन में मिलाकर १ दिन काँसे की थाली में घोटे हाथ साफ अच्छी तरह करे। गौ की छाना से छाना से खुजाकर लगाया करें।

ताऊन [प्लेग] की औषधि

बीमारी के दिनों में गिलटियाँ राँग में या गर्दन में उठा करती हैं और बुखार बहुत जोर से होता है।

१—नीम के पत्ते और काली मिर्च पीसकर खिलाये ताऊन के लिये हुक्मी दवा है तथा नीम के पानी से नहाया करें।

२—सिरके में उम्दा नरवसी (जदबार घिस कर) गिल्टी पर लगावे, आराम होगा।

३—अपने पेशाब (मूत्र) को एक बर्तन में रख कर और उसमें कपड़ा भिगोकर गाँठ पर बाँधे। गाँठ को आराम होगा।

४—नीला थोथा पानी में घिस कर गिल्टी पर लगाने से गिल्टी को बिठा देता है और आराम हो जाता है।

५—सोंगिया का लेप करें

नाभी का हट जाना

१—नक छिकनी बूटी से दुगना गुड़ मिलाकर जंगली बेर की बराबर गोलिया बनाले। एक दो गोली पानी के साथ खाने से नाभी अपनी जगह आ जावेगी। कभी कभी यह गोली खाने से फिर नहीं हटेगी।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

२—२ तोला सौंफ लेकर गुड़ के साथ मिला कर खाने से तीन दिन में यह नाभी टलना जाता रहेगा।

पथरी और दर्द गुर्दा

१—अरन्ड के बीज छील कर उनको इस कदर भूनें कि वह सुर्ख हो जायें और एक बीज सुबह शाम को थोड़े दूध के साथ लें। पन्द्रह दिन में दर्द गुर्दे में हमेशा के लिये आराम होगा। रेग और कंकरी फिर पैदा न होगी। (परीक्षित है)

२—सूरजमुखी के पत्तों का रस पीना इसके लिये बहुत लाभदायक है।

३—पथरचटा को निहार मुँह खावे तथा सुबह शाम भी सेवन करे।

जिया बितुन-बहुमूत्र

१—बड़ की छाल का काढ़ा इसके लिये बहुत फायदे मन्द है।

बिछौने पर पेशाब कर देना

थोड़ी कबूतर की बीट आटे में गूँधकर और रोटी पका कर खावे तो सोते में पेशाब करने की आदत दूर हो जायगी।

पेशाब बन्द होना

१—शोरा कलमी पीस कर नाभी में रखें और ऊपर से चार छः बूँद पानी में डाले। फौरन पेशाब खुल जावेगी।

२—गुनगुने पानी को किसी बरतन में भरकर उसमें पन्द्रह बीस मिनट नगें बैठने से पेशाब खुल जाता है।

३—राख की डेली नाभी में रखकर एक बूँद पानी डालना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

थोड़ी देर में पेशाब खुल जायगा ।

जरियान प्रमेह

१—बड़ का फल पीस कर दो तोला खावे या कौंपल ९ माशे रोजाना खावें। धात गाढ़ा करने और ताकत का शर्तिया इलाज है। बड़ का दूध बताशे में डाल खावें।

२—बड़ का दूध १ बताशे में भर कर खाने से और हर रोज एक बताशा बढ़ाते जायें तो सात दिन में पतली धात गाढ़ी हो जाती है।

फोता बढ़ जाता [अण्ड वृद्धि]

१—पाखाने से फारिग होकर खड़े होकर पेशाब करना इसका उत्तम इलाज हैं।

२—अरहर पानी में पीस कर लगावें तो बच्चों के फोते बढ़ने से रुक जाते हैं।

स्त्रियों के रोग

बाँझपन

पीपल की दाढ़ी २० तोला बारीक पीसकर छान ली जाय और उसके बराबर कच्ची शक्कर मिलाकर जब से स्त्री नहाने को हो, उसी दिन से दो तोले स्त्री को और दो तोले मर्द को गाय के दूध से १० दिन तक दी जावें। १० दिन तक स्त्री प्रसंग न करें। ग्यारहवें दिन स्त्री प्रसंग करने से गर्भ जरूर रह जायगा।

मुश्किल से बच्चा पैदा होना

१—कपास का दरख्त जो एक साल पुराना हो, उसकोसूरज ग्रहण के वक्त जबकि ग्रहण पूरा होकर कम होने लगे, उखाड़ कर रख लें। इस

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जड़ को घिसकर १ चमचा भर पिलाने से थोड़ा सा पानी गर्भवती के सर पर डालने से फौरन बच्चा बाहर आ जायगा। इस जड़ का घर में रहना अत्यन्त लाभप्रद है।

२—बथुआ के बीज २ तोले औटा कर पिलाने से पेट में मरा हुआ बच्चा निकल पड़ेगा।

३—चिरचिटा की पत्ती का रस तलवों पर लेप करे, परन्तु ज्यादा देर तक न करे।

मासिक धर्म का ज्यादा आना

१—ज्वार के भुट्टे की राख खिलावें, शर्तिया बन्द हो जायगा।

२—इसके लिये चौलाई की जड़ सबसे तेज हुक्मी दवा है।

स्त्रियों का प्रदर और प्रसूत रोग

पीपल के पेड़ के पके फल बारीक पीसकर उसके बराबर शक्कर मिला ले और दूध के साथ खावे तो प्रदर और प्रसूत दोनों दूर हो जायें।

काग गिरना

चूल्हे की मट्टी और कालीमिर्च पीसकर और अँगूठे पर लगा कर काग को उठा दे, फिर न गिरेगा।

चेचक का रोग

१—रूद्राक्ष जिसको माला बनाकर पहनते हैं बारीक पीसकर बच्चे को पिलावे। इससे चेचक नहीं निकलेगी, और अगर निकलेगी भी तो कम। बड़ का पत्ता जिस पर दाना उभरा हो उस दाने को खिलाना।

२—बच्चा जिस समय पैदा हो उसको साफ करके मेंहदी पानी में पीसकर उसके पांव के तलवों मे लगाने से उम्र भर चेचक नहीं निकलेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बच्चों को सूखा रोग

अन्डे की जरदी निकाल कर अपनी हथेली पर रखें और बच्चे के पाखाने का मुकाम इस जरदी पर रखा जावे, अगर सूखा रोग होगा तो जरदी अपने आप खींच कर बच्चे के पेट में चली जायगी। यही पहचान है और इलाज भी। ऐसा करे। ५.६ रोज तक

इस हाल—संग्रहणी

बरगद का दूध नाभी में भरे, हर किस्म की संग्रहणी में फायदा करेगा।

बाल बढ़ाने के लिये

सीताफल के बीज व बेरी के पत्ते पीसकर बालों की जड़ में लगावें।

पेचिस

ईसब गोल १ तोला खीर की तरह पानी में पका कर और मिश्री मिलाकर खावें। फौरन पेचिस दूर होगी।

बवासीर

१—मठा (छाछ) में सेंधिया नमक मिलाकर कुछ अर्से तक इस्तेमाल करने से बवासीर जड़ से जाती रहती है। फिर पैदा नहीं होती।

२—नारियल की जटा जला कर उसकी राख कर लें और उसी के बराबर सुर्ख शक्कर मिलाकर १ तोला पानी के साथ सुबह में खावें और मस्सों पर भी दिन में ३. ४ बार उसी राख को घी से लगावें २१ रोज में हर प्रकार की बवासीर और मस्से दूर हो जायेंगे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

३—एक सेर कुँकरौंधे का रस लेकर पकावें। जब वह गाढ़ा हो जाय, कालीमिर्च के बराबर गोली बना लें सुबह शाम खाने से हर प्रकार की बवासीर दूर हो जाती है।

४—हर सिंगार के फूल दो माशे रात को तीन तोले पानी में भिगोकर सुबह के वक्त निथारा हुआ पानी लेकर और थोड़ी मिश्री मिला कर पियें। खूनी बवासीर के लिये निहायत मुफीद है।

५—शोरा कलमी कालीमिर्च निसोथा बवासीर के मस्सों पर तीन रोज तक तीन मरतबा लेप करें। एक हफ्ते में 'बवासीर' जाती रहेगी। दस्त भी खुलकर आता है।

गंज

१—बरगद के पत्ते जला कर उसकी राख गंज के जख्मों पर बुरकें, जल्द खुश्क हो जावेंगे।

२—सरसों का तेल और बासी पानी दोनों को हथेली पर डालकर एक उंगली से इस कदर मले कि रङ्ग सफेद हो जावे। उसको गंज पर लगावे, बहुत फायदेमन्द हैं।

सफेद दाग छीप

१—दरख्तों पर और घास पर गिरी हुई ओस सुबह को १५ दिन तक बराबर मुँह पर मले छीप के दाग दूर हो जायेंगे। अगर तिल में पौधे की ओस हो तो फौरन फायदा होगा।

२—गन्धक को खूब बारीक पीसकर और सिरके में मिलाकर लेप करे। सफेद दाग दूर हो जायेगा।

नहरवा [नारव]

आक की जड़ दूध में औटा कर दही जमा कर घी निकालें उसको चावलो के साथ खायें, उम्र भर न निकलेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आक का दूध लगाने से दाद पुराना दाद भी जाता रहता है दर्द दूर होता है।

पित्ती उछलना

नीम का तेल या नीम की निबौली सरसों के तेल में जलाकर उस तेल की मालिश करने से बहुत जल्द फायदा होगा।

बगल में बदबू आना

मुरदा संख को सिरके में पीस कर बगल में १ हफ्ता मलने से बदबू दूर हो जावेगी।

मुंहासे

१—एक नींबू लेकर उसके दो टुकड़े कर लिये जावें उन पर ३ तोला नौसादार पीस कर रखें, फिर थोड़ा सा रगड़ कर अपने मुंह पर मलें। सात रोज में दाग बिल्कुल दूर हो जायेंगे, मगर मलने के बाद थोड़ी खारिश होती हैं। उसमें मलाई मलें फिर आराम हो जाता है।

२—घास जिस पर ओस पड़ी मिले, उसको सुबह मुंह पर लगाओ इन को आराम करता है।

फोड़े और फुन्सियां

कागज पर बरगद का दूध लगा कर चिपका दें दुम्नुल और फुन्सी दोनों को आराम करता है।

भगन्दर

मक्खन ६ माशे, राल ३ माशे, पारा ४ माशा इन सबको पीस कर ३६० बार धोये हुये घी में मिलाकर मरहम बनावें। उसके लगाने से १४ साल तक के पुराने भगन्दर को भी आराम होगा।

छाजन

सत्यानासी की जड़ पीस कर लगाने से छाजंन दाद सफेद दाग को फायदा होता है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जाड़ा बुखार

कफ़ का जाड़े का बुखार=आक की कली गुड़ में रखकर खिलावें तीन मर्तबा ऐसा करने से फिर न आवेगा।

पुराना बुखार

✓तिजारी का बुखार=जिस दिन दौरा हो, दौरा से पहले पीपल की शाख से दांतौन करना शुरू करें। ईश्वर ने चाहा बुखार न आयेगा।

बाल तोड़

×१–दस पन्द्रह दाने गेहूं में खूब बारीक चबाकर लगावें बहुत जल्द आराम होगा।

२–पान को आग पर गरम करके दो तीन बार बांधने से जल्दी बाल तोड़ जाता रहेगा।

जाड़ों का दर्द

१—दर्द के वास्ते राई का लेप करें। बहुत लाभदायक है।

२—अजवाइन पानी में उबाल कर भपारा दें किसी तरह का दर्द हो फायदा करता है।

३—कनेर की पत्तियाँ उबाल कर और कूट कर उसमें मीठा तेल मिला कर लेप करें। गाठिया के दर्द को बहुत फायदेमन्द है।

जख्म [घाव]

सिरस की छाल बारीक पीस कर घाव पर बुरकने से घाव बहुत जल्द अच्छा होता है।

नासूर

१–सांप की कांचली जलाकर उसमें बरगद का दूध मिलावें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उसमें रुई भिगोकर नासूर पर रख दें। दस दिन पीछे उस पर से वे रुई उठा लें। इससे नासूर भर कर घाव अच्छा हो जायेगा।

२—अरन्ड के पत्तों का आधा रस निकाल कर उसमें एक तोला अच्छा सिन्दूर लेकर खरल करें, जब सब रस सिन्दूर में मिल जावे तो एक बत्ती को उसमें भिगो कर रात में नासूर में रख दे और बहुत से बारीक बारीक कीड़े लगे हुये नजर आयेगें। इस तरह तीन चार बार ही रखने से आराम हो जायेगा।

आग से जलना

१—जले हुये मोकाम पर आलू का रस निकाल कर लगाने से उसी वक्त दर्द दूर हो जाता है।

२—बड़ की कोपल गाय के दही में पीस कर लेप करें। उसी समय आराम होगा।

जूँ ज्यादा पैदा होना

बकायन का फल पानी से पीसकर सर में लगावें सब जूं फौरन मर जायेंगे।

खटमल

फिटकरी गर्म पानी में घोलकर चारपाई में डालने से खटमल उसमें हरगिज न आवेगा।

गुहेरी=आंख के पलक की फुन्सियां

इमली या छुहारे का बीज घिसकर लगाने से शीघ्र आराम होगा।

* चमत्कारी औषधियां *

० पुत्र दाता औषधि ०

जिनके पुत्र उत्पन्न नहीं होता केवल कन्या ही उत्पन्न होती, हैं वे मोर पंख के दो नग, चन्दोवे लेकर जो कि गोल होते हैं। उन का वह हिस्सा कैंची से काटे जो कि काले चांद की तरह चवन्नी के बराबर गोल होता है काटकर खूब बारीक कतरकर, किसी छोटे व

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अच्छे न घिसने वाले पत्थर के खरल में पानी की सहायता से एक एक बूँद डालते जायें और पानी की ही सहायता से खूब बारीक पीस लें। ताकि सारे कण एक जान हो जायें, और कोई टुकड़ा अलग न रहे। फिर इनमें आवश्यकतानुसार गुड़ मिलाकर २ भाग कर लें। और दोनों भागों में एक एक बीज शिवलिंगी का भी रख देवें फिर दो कैप्सूलों में भरदें।

इसके बाद विदारीकन्द को खूब पीस कर कपड़छान करें, और उसकी ६-६ माशे की दो पुड़िया बना लेवें।

सेवन विधि—एक कैप्सूल सबेरे मुख में डाल कर ऊपर से दूध पी लेवें।

दूध बिलकुल ताजा या उबाल कर ठण्डा किया हुआ हो मिश्री डाल सकते हैं, दूध ऐसी गाय का हो जो बछड़े वाली हो और उसका बछड़ा जीवित हो। उस दिन भोजन न करें जितना पी सकें दूध पीवें दवा कैप्सूल से बाहर नहीं निकालनी चाहिए कैप्सूल सहित ही सेवन करें।

दूसरे दिन सुबह के समय १ पुड़िया विदारी कन्द वाली, गाय के दूध के साथ लेवें। सुबह को भोजन न करे शाम को रोटी दाल भाजी ताजी मेवे आदि लेवें।

तीसरे दिन विदारी कन्दवाली पुड़िया गौ के दूध के साथ खायें। शाम को साद भोजन कर लें।

परहेज—तेल, खटाई, लाल मिर्च, व पुरुष से समागम (भोग) न करें।

नोटः—दवाई गर्म रहने पर अन्तिम मासिक धर्म के बाद २ महीने के अन्दर ही ले लेवें जल्दी लेना अच्छा है।

(१) यह दवा विश्वगुरुजी की परिक्षित है पुनः जब पुत्र १ वर्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

…हो जाय तब उसके हाथ से आश्रम को कुछ दिलावें, सूचना उत्पन्न होते ही भेजें, बहुत पत्र आते रहते हैं।

—:०:—

[गंज] बाल उगाने की पेटेन्ट दवा

हाथी दाँत का बुरादा लेकर कढ़ाई में भस्म करलें पुनः कपड़े में छानकर १० तोला भस्म में ५ तोला रसौत डाल कर बकरी के दूध में १ रात भिगोकर रखें। सवेरे खरल में घोर लें फिर १ घन्टे तक खुली हवा में रखें बन्द न करें। सूखने पर पानी मिलाकर गीला करलें। फिर सिर पर लेप करें सारी रात लगा रहने दें। दूसरे दिन साफ करके रात को चिकनी मिट्टी का लेप करें।

दूसरे दिन सबेरे साफ करके दिन में दो बार अरन्डी के तेल की मालिश करें। खून खराब हो तो १ तोला अरण्डी का तेल रोज रात को ३ दिन तक थोड़े दूध के साथ पीवें।

बाल शर्तिया उग जाते हैं।

बाल काले होने की दवा

काला भांगरा का रस लेकर बराबर नारियल (गोला) के तेल में पकावें, रस जल जाना चाहिए पुनः कपूर डालकर बन्द करके रख लें उस तेल की मालिश करें।

खाने की दवा

काले तिल ५ तोला, सूखा गोला ५ तोला काली छोटी हरड़ ५ तोला कूटकर बारीक करलें छः माशे की पुड़िया बांध लें दिन में तीन बार १ घूंट जल के साथ सेवन करें। सात आठ दिन तक।

पुराना बुखार पैर की सूजन की दवा

कड़वे नीम की छाल २ तोला १ पाव पानी में उबालें आधा पाव रहने पर ठण्डा करके पीवें इस प्रकार दिन में ३ बार सेवन करने से,

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पुराना बुखार, पेट खराबी तथा पैर की सूजन सभी ठीक हो जाते हैं। सात दिन तक लें।

गर्भ ठहरने की दवा

३ माशे मुरहटी ४ माशे कतीरा १ छटांक मिश्री १ पाव अर्क सौंफ में रात को भिगो दे, प्रातः काल १ पाव गौ का दूध में मिला कर खावे ४० दिन सेवन करे महावारी के बाद प्रारम्भ करे तथा २ दिन पहले वन्द करदे, फिर दूसरी बार महावारी के बाद सेवन करे।

० अनौषधि व औषधि भाग समाप्त ०

ॐ

संयम भाग अनौषधि चिकित्सा

★ हजार दवा=एक संयम ★

विश्वगुरु प्रार्थना

हे पूरन परमात्मा, पावन हों जीवात्मा।
विश्व बने धर्मात्मा सुखी रहें सब आत्मा॥

◈ श्लोक ◈

विनाऽपि भेषजं व्याधि पथ्यादेव निवर्त्तते।
नतु पथ्य विहीनऽय भेषजानां शतैरपि॥

बिना औषधि के रोग केवल पथ्य से ही ठीक हो जाते हैं। यदि पथ्य न करो तो सैकड़ों औषधियों के सेवन से भी लाभ नहीं होता।

◈ संयम के अन्दर बड़ा बल है ◈

संयम ही जीवन है, भोग ही मृत्यु है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

खांसी का संयम ६० साल का अनुभव

श्री गुरुदेवजी का कहना है कि—मेरे को बचपन में बहुत खांसी रहती थी बहुत कुछ इलाज करने पर भी ठीक नहीं हुई रोग बढ़ता ही गया। एक सन्त मेरे को मिले उन्होंने कृपा करके एक संयम मुझे बतलाया —कि भोजन करने के समय जल बिल्कुल मत पिया करो, भोजन के एक या डेढ़ घन्टे बाद जल पीना चाहिए सो भी सरदी के दिनों में गरम और गर्मी में गरम करके उसे ठन्डा करके पियें। हां भोजन के साथ तरल पदार्थ ले सकते हो, रसदार शाक दूध, दही, आदि। मैंने ऐसा ही किया आज ३० वर्ष हो गये मेरी खांसी जाती रही और आज तक नहीं हुई। मैं अब भी भोजन करते सयय जल नहीं पीता भोजन के १॥ घन्टे बाद पीता हूं।

नोटः—मेरे इस प्रयोग के बताने से सैकड़ों स्त्री, पुरुषों का खांसी, दमा चला गया।

✓ पेट की आतों की निर्बलता पर

० खड़ाऊ का चमत्कार ०

श्री गुरुदेव जी कहते हैं यदि पेट में नरे हों या आंतें कमजोर हों तो आप थोड़ा बहुत खूंटी वाले खडाऊँ (पावड़ियाँ) अवश्य पहनिये। यह ब्रह्मचर्य, और पेट के लिये उत्तम प्रयोग है। मैं तो पहाड़ों में, गुफाओं में भी रहा, बद्रीनाथ तक हिमालय में गया, बर्फ पर भी चला किन्तु इन्हीं का प्रयोग करता रहा अब भी यही पहिनता हूं।

नोटः—यह नेत्रों को थोड़ी हानि अवश्य करते हैं उनकी बचत का उपाय यह है कि नीचे तले में रबर लगवा लेनी चाहिये ताकि तला मुलायम रहे, धमक न देवें, प्रयोग अवश्य करें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आतों की कमजोरी के लिए

१—खाने की वस्तु को पीवे। २—पीने की वस्तु को खावे। अर्थात् भोजन के ग्रास को गिनकर ५० बार चबायें जो मुंह में ही पानी हो जावे यह खाने की वस्तु को पीना है।

दूसरी—पीने की वस्तु को खाना यह है कि पीने की वस्तु जल या दूध आदि पतली भी हो तो उसको घूंटकर ४ या ५ बार मुंह को खाने सरीका घुमाकर अन्दर निगलें मानो कुछ खा रहे हैं।

तीसरा प्रयोग—दोपहर को भोजन के बाद कम से कम २०० श्वास बायें करवट(पंजाबी में खब्बे) से लेटें।

४—सायंकाल भोजन के बाद कम से कम २०० कदम टहलना चाहिये। कहा भी है कि:—

० भोजनान्ते शत पदं गच्छेत् ०

जुकाम के लिये भस्त्रिका क्रिया

जुकाम के लिये—भस्त्रिका क्रिया करनी चाहिये किसी सन्त से सीख ले या गुरुजी से सीख लें जुकाम ठीक हो जाता है। नित्य करने वाले को होता ही नहीं, विधि आगे द्वितीय भाग में है।

शीतली प्राणायाम मस्तिष्क की दुर्बलता व खुश्की के लिए

शीतली या शीत्कारी प्राणायाम करें। इसकी भी विधि गुरुजी से या अन्य किसी भी जानकार सन्त से सीख लें यह बहुत उत्तम प्रयोग है विधि आगे द्वितीय भाग में दी गई है।

कुछ आसन नित्य करें विधि आगे है

शीर्षासन ३ मिनंट से अधिक नहीं करना चाहिये, हानि करता है तथा सिर जमीन पर न टेकें माथा टेकना चाहिये नाक पृथ्वी पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

...वी रहे तो विशेष लाभप्रद होता है । पद्मासन, सर्वाङ्गासन, ...जानुशिरासन, आदि कुछ आसन अवश्य सीखलें महान लाभप्रद हैं । ...बिना किसी की देख रेख के आसन मनमानी नहीं करने चाहिये ।

कुछ आसनों की सचित्र विधि आगे दी जायेगी

आसन भोजनोपरान्त

भोजन के बाद दस मिनट जिसे वज्रासन कहते हैं करने से पेट ...के समस्त विकार नष्ट होते हैं ।

श्लोक दैनिक प्रयोग

दिनान्ते च पिवेत् दुग्धं, निशान्ते च जलं पिवेत् ।
भोजनान्ते पिवेत् तक्रं, वैद्यस्य किं प्रयोजनम् ॥

भावार्थ—रात्रि को दुग्ध पान करे, प्रात:काल शौच जाने से ...पूर्व जल पीवे (प्रथम दस चुल्लू पुनः यथेच्छ) मध्याह्न भोजन के ...बाद मट्ठा पीवे तो वैद्य की आवश्यकता नहीं होगी ।

दांतो में खून न आने का उपाय

भोजन के उपरान्त बीच वाली (बड़ी उंगली से दाँतों को साफ ...करें छोटी से लाभ नहीं होता है ।

हिलते हुए दांतों का उपाय

मल मूत्र त्यागते समय दांतो को जोर से भींचे रखना यानी ...दबाये रखना चाहिये ।

पायरिया का उपाय

वट वृक्ष की दातुन करे यदि दांत अधिक हिलते हों तो वट का ...दूध सुखा कर बारीक पीसकर मले यदि ताजा रोज मले तो और ...भी अच्छा है । इससे वृद्धावस्था के गिरे हुए दांत भी, तीसरी बार ...भी निकल आते हैं, छोटे बच्चों के लिये भी लाभदायक है ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दर्द गुर्दे का उपाय

भोजन करने के पश्चात् तुरन्त लघुशंका यानी (पेशाब) जाने से दर्द गुर्दा कभी नहीं होगा यदि है तो नष्ट हो जायेगा।

भगन्दर का उपाय

यह एक प्रकार का फोड़ा सीवन में होता है मल मूत्र की इन्द्रिय के बीच इसमें सफेद पीव आती है रक्त नहीं बढ़ने पर मल मूत्र तक बन्द कर देता है। विशेष बढ़ने पर मल मूत्र वहीं से बहने लगता है। केवल दो महीने के लिए नमक और मीठा खाना बन्द कर दें, १ महीने में पूर्ण लाभ हो जाता है लेकिन मीठा व नमक दो महीने बन्द रखें, रुई या कपड़े की गद्दी को आग पर गर्म करके दिन में तीन बार दस दस मिनट सेकते रहें। औषधि की आवश्यकता नहीं है।

जिगर का उपाय

केवल दो हफ्ते तक किसी भी प्रकार का मीठा न खायें, एक रत्ती भी भूल कर नहीं लें. दूध मुनक्के डालकर मीठा कर लें। रोटी कम खायें मसाला भी न लें अरहर उरद की दाल के सिवाय अन्य सभी दालें, पपीता, टमाटर, पालक, बथुआ, चौलाई, मूली शलगम विशेष रूप से लेवें। सर्पासन अवश्य करें।

प्रातः नासिका से जल पान के गुण

:o: श्लोक :o:

विगतघननिशीथे प्रातरुत्थाय नित्यं पिबति खलु नरोयोघ्राणरन्ध्रेण वारि।
स भवति मतिपूर्णश्चक्षुषा ताक्ष्यतुल्यो, बलिपलितविहीनः सर्व-रोगैर्विमुक्तः॥
(शारङ्गधर संहिता)

भावार्थ—जो पुरुष प्रातःकाल घोर अन्धकार विगत होने पर नित्य उठकर नासिका छिद्र द्वारा जल पीता है, वह निश्चय ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तथा गरुड़ के समान नेत्रों वाला शरीर में झुर्रियां तथा श्वेत बालों से रहित तथा सर्व रोगों से मुक्त होता है।

नोट—जल शीतल अनुकूल न पड़े तो गर्म पीयें।

नेत्रों का उत्तम उपाय

:o: श्लोक :o:

भुक्त्वा पाणि तलं घृष्ट्वा, चक्षुषो दीयते यदि।
जाता रोगा विनश्यन्ति, तिमिराणि ततैव च। (शारङ्गधर संहिता)

भावार्थ:—जो व्यकित नित्य दोनों समय भोजन के पश्चात् तुरन्त गीली दोनों सथेलियों को रगड़ कर तीन बार नेत्रों में लगाता है तिमिर तथा उत्पन्न हुए अन्य सभी रोग नाश हो जाते हैं। साथ श्लोक भी बोलें ३ बार लगायें।

श्लोक:—शर्याविच सुगन्यं च, च्यवन शक्र मश्विनौ॥
भोजनान्ते स्मरद्य स्तुश्च क्षुस्तस्य नहीं यते॥

नेत्र रोग व चश्मा छुड़ाने को

:o: श्लोक :o:

गण्डूषाम्बु पूरित मुखः प्रतिवासरं यः वारत्रयं नयनयोर्द्वितयः जलेन।
आसिञ्चति ध्रुवमसौ न कदाचिदक्षि-रोग अयथा विधुरतांभजते मनुष्यः॥

भावार्थ:—जो मनुष्य नित्य प्रातःकाल (दांतुन करने के बाद) मुख में पूर्णतया शीतल जल भरकर पुनः हाथ में जल लेकर तीन-तीन बार दोनों नेत्रों को (उस जल में खोले रहे) इस प्रकार आसिञ्चन करता है, वह कभी नेत्र रोग पीड़ा की विकलता को प्राप्त नहीं होता अर्थात् नेत्र निरोग रहते हैं।

:o: वात, पित्त, कफः व ज्वर का उपाय :o:

वमनं कफ नाशाय, वात नाशाय मर्दनम्।
शयनं पित्त नाशाय, ज्वर नाशाय लंघनम्॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भावार्थः—१—कफ नाश करने के लिए वमन (उल्टी) करें।
२—वायु नष्ट करने के लिए तेल मर्दन करें।
३—पित्त नाश के लिए शयन करें।
४—ज्वर नष्ट करने के लिए लंघन करें।

:०: सौ वर्ष जीने का उपाय :०:

बामशायी द्विभुंजानो, षणमूत्री द्विपुरीशकः।
स्वल्प मैंथुनकारी च, शतं वर्षाणि जीयति ॥

भावार्थ—बायें करवट से सोने वाला, दो समय भोजन, छः बार मूत्र त्याग, दो बार शौच, तथा स्वल्प मैथुन करने वाला सौ वर्ष तक जीवित रहता है।

:०: प्रातः नासिका द्वारा जलपान गुण -०:

व्यंग वलि पलितघ्नं पीनस काश शोथ हरम्।
रजनी क्षयेऽम्वुनस्यं रसायनं दृष्टि संजनम् ॥

भावार्थः—रजनी क्षय होने पर नासिका द्वारा जल पीने से शरीर का टेढ़ा होना, झुर्रियां पड़ना, सिर के बाल श्वेत होना पीनस, खांसी, शोथ आदि रोग नष्ट हो जाते हैं, तथा दृष्टि संजन के लिए रसायन है। जल विशेष शीतल अनुकूल न पड़े तो गरम ले लें।

सद्यः प्रज्ञाकरी वचा (चाणक्य)

अर्थात् बच सेवन करने से व्यक्ति शीघ्र बुद्धिमान होता है।

खेचरी मुद्रा

यह योगियों का विशेष लाभप्रद साधन है इसको पूर्णतया सिद्ध करने के महान गुण है किन्तु साधारण रीति से करने पर भी नेत्रों की ज्योति स्मरण शक्ति, ब्रह्मचर्य में सहायता, कान्ति प्रदायिनी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विधि साधारण—जीभ को उलट कर ऊपर तालु के स्थान पर जितनी जा सके लगाये रखना चाहिए ध्यान करते समय तथा हर समय भी लगाये रखना चाहिए ।

विशेष रीति के लिए मिलिए या लिखिए ।

:o: उड्डीयान बन्ध :o:

एक या आधा मिनट में जोर से ॐ का लम्बा उच्चारण करते हुए मुख से अथवा नासिका से श्वास को बाहर फेंकदे, पुनः बिना श्वास लिए हुए पेट को ऊपर की ओर खीचें। सयम १ से २ मिनट।

लाभ:—आसन स्थिर होता है, वायु विकार गठिया आदि सभी नष्ट होते हैं। जठराग्नि प्रज्वलित होती है, पेट की आंव गैस बनना आदि सभी नष्ट हो जाते हैं ॐकार की ध्वनि के साथ रोग के समस्त कीटाणु बाहर निकल जाते हैं।

खुली हवा में नित्य खाली पेट यह क्रिया करें। अत्यन्त लाभदायक है, पूज्य गुरुदेवजी से यह सभी क्रियायें सीखलें—सीखने का स्थान व पूरा पता आगे लिखा है।

प्राचीन वैद्यों का लाभप्रद उपदेश

चैत्रे गुड़ बैसाखे तेल, जेठे पन्थ आषाढ़े बेल ।
सावन साग न भादों दही, क्वार करेला कातिक मही ।।
अगहन जीरा न पूषे धना, माघे मिश्री फाल्गुन चना ।
इन बारह से बचे जो भाई, तो घर वैद्य कभी नही जाई ।।

एक वर्ष पूर्व मृत्यु का ज्ञान

यदि आप एक वर्ष पूर्व ही अपने मरने का समय जानना चाहते हैं तो पूज्य विश्वगुरुदेवजी के पास आकर वह प्रयोग सीखलें, उससे

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एक वर्ष पूर्व ही पता चल जायगा कि अमुक मास में अमुक दि अमुक टाइम पर शरीर त्याग होगा। साधन बहुत ही सरल है। अपढ़ सभी कर सकते हैं टाइम केवल १ मिनट लगता है।

बिच्छू नहीं काटेगा

आम का बौर (मंजर या फूल) जिस दिन सर्व प्रथम दिख पड़े उसी दिन उसको तोड़ कर हाथों एवं पैरों के तलवों में लीजिए। एक वर्ष तक इसका ऐसा प्रभाव रहेगा कि बिच्छू न काटेगा। जिसको काटले उसको भी कटे स्थान पर ऊपर से नीचे ओर हाथ से झाड़ देगें तो विष उतर जायगा।

अजीर्ण का संयम

दाहिना श्वांस चलने के समय भोजन करें। बाया श्वांस चलते पानी पीवें। भोजन के बाद १५ मिनट तक बांया श्वांस बन्द रखें भोजनोपरान्त १५-२० मिनट तक बाई करवट से लेटना चाहि तथा १५ मिनट तक पद्मासन से प्रातःकाल के समय बैठकर ना पर दृष्टि रखें।

० मलेरिया ज्वर ०

अपामार्ग (चिरचिरा) की जड़ लाल रेशम से भुजा पर बां से लाभ होता है।

० दमा का संयम ०

दमा का दौरा शुरू होने पर अथवा श्वांस फूलने पर जो स्व चलता हो, उसे एकदम बन्द कर दो। इस को जड़ से नाश करने लिये लगातार एक मास तक चलते हुए स्वर को बन्द कर दो औ दूसरा चलाने का अभ्यास नित्य प्रति अधिक से अधिक कर चाहिये।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० कान के पुराने रोग पर ०

मिट्टी की पट्टी कान के नीचे भाग पर तथा पेडू पर लगावै तथा गर्म पानी की भाप कान में दें।

० स्वप्नदोष ०

पेडू पर मिट्टी की पट्टी लगावें।

०मिट्टी की पट्टी के प्रयोग की विधि ०

(१) पट्टी बांधने के लिये शुद्ध चिकनी मिट्टी का प्रयोग करना चाहिये। नदी या तालाब की मिट्टी को शीतल जल में अधिक समय तक भिगो लेना चाहिये।

(२) मिट्टी में कंकड़-पत्थर नहीं रहने पावें इसलिये उसको छान लेना अच्छा है।

(३) मिट्टी को मोटी रोटी की तरह बनाकर रोग-स्थान पर रख कर ऊपर से साफ वस्त्र लपेट दें। यदि जाड़े का समय हो तो ऊनी वस्त्र लपेटना चाहिये।

(४) एक पट्टी ३०-४५ मिनटों तक ही रखनी चाहिये।

ज्वर का संयम

रविवार को सफेद कनेर की जड़ कान पर बांध लेवे।

नेत्र स्वस्थ रखने का संयम

आश्विन शुक्ल दशमी से शारदीय पूर्णिमा तक १०-१५ मिनट चन्द्रमा की ओर टकटकी लगाकर देखा करें तो आंखें स्वस्थ रहती हैं और अनेक रोग दूर होते हैं।

० श्वेत कुष्ट का संयम ०

सूर्य की उपासना करें तथा रविवार को नमक रहित भोजन करें। गौ की छोटी बाछी का मूत्र सायं प्रातः १ तोला सेवन करे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एकान्तरा ज्वर (जूड़ीताप) का सफल यन्त्र

"यह मन्त्र पीपल के पत्ते पर लिखकर दाहिने हाथ की कलाई पर बांध दें मंगलवार या रविवार का दिन हो। बस उसी दिन से

ह्रीं ह्रीं

८	१	६
३	५	७
४	९	२

ह्रीं ह्रीं

कैसा ही कितने दिन का भी अन्तरा (एकांतरा) ज्वर (जाड़ा बुखार) क्यों न हो नहीं आयेगा। कदाचित् बांधने पर एक दिन आ भी गया तो दूसरी पारी से बिल्कुल नहीं आयेगा। मङ्गल या रविवार के दिन अगर पारी तो उसी दिन बांधें। पत्ते को पांचवे दिन खोलकर किसी कुएँ में फेंक दें—"किसी का पैर न पड़ें" ऐसी जगह गन्दी जगह न फेकें।

* पीपल पूजनीय क्यों है *

आधुनिक विज्ञान वाले भी मान गये, सनातन प्राचीन प्रणाली वाले तो मानते ही थे : पीपल चौबीसों घन्टे (Twenty Four hours) शुद्ध वायु (Oxygen) उगलता है और गन्दे विषय को तुरन्त खींच लेता है। किन्तु दूसरे वृक्ष दिन में शुद्ध वायु जिसे अंग्रजी में आक्सीजन कहते हैं उगलते हैं और रात को अशुद्ध वायु कार्बनडाई औक्साइड। दूसरी विशेषता का प्रमाण।

जो पीपल १०० वर्ष से अधिक प्राचीन होता है उसमें एक (वन्दा) यानी वांद निकलता है। वह ऊपर चोटी वाली डाली में से डाली निकलती है। किन्तु उसके पत्ते पीपल जैसे शक्ल के नहीं होते, आम के या बेलपत्र के या अशोक वृक्ष की शक्ल के होते हैं। वह डाली बड़े काम की है उसके तोड़ने का मन्त्र होता है, गुरुजी जानते है। उससे वन्ध्या के भी पुत्र उत्पन्न हो सकता है। तथा

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

...त विषधर सर्प का और श्वास के रोग का शर्तिया इलाज है।
...सि में पीपल का पूजन इसलिये विशेष है कि उसके पास जाने
...विशेष (आक्सीजन) (स्वच्छ वायु) मिलती है और वह दूषित
...को खींच लेता है और भी विशेषतायें हैं विस्तार भय से
...हीं लिखी हैं।

धन्य है पीपल की महिमा।

बिच्छू का सफल मन्त्र

विच्छू के काटे हुए स्थान पर उंगली से इस प्रकार का दो त्रिकोण मिला हुआ चिन्ह बना देने से विष दूर हो जाता है।

* योग की चमत्कारी देन *

शंख प्रछालिनी क्रिया

इस क्रिया के करने से उदर स्वच्छ हो जाता है। प्रत्येक स्त्री ...र युवक-वृद्ध इस क्रिया को कर सकता है।

... क्रिया को करने से एक दिन पूर्व हरी सब्जी का प्रयोग न करे, ... न लेवें रात्रि को यथेष्ट दूध पीवें, प्रातःकाल ६ सेर जल गर्म ...रें, उसमें साधारण सेंधा नमक डाल देवें, जब जल पीने के योग्य ...म हो जाये तब एक बार में तीन पाव पीवें, तदुपरान्त निम्न ...क्रिया करें।

क्रिया नं० १—दोनों हाथों को ऊँचा करके पंजे बांध कर (यानी ...चारों उंगलियों को आपस में फंसाकर) दांयें बायें ओर घुमायें, ...दोनों पैर मिले रहने चाहिये। यह क्रिया आठ गिनती तक चार ...बार दायें तथा चार बार बायें घुमायें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

क्रिया नं० २—(सर्पमणि-चक्रासन) लम्बा होकर आगे जमीन पर हाथ टेकें जैसे कि दण्ड करने की प्रथम मुद्रा में होते हैं, फिर कंधे के उपर से दोनों पैरों को एड़ियों की कभी दांयी ओर से कभी बाँयी ओर से आठ बार देखें।

क्रिया नं० ३—(कटि चक्रासन) खड़े होकर दोनों हाथ सामने की ओर लम्बे करें एवं दोनों पैर चोड़े करें, हाथ और पैरों में दो दो फुट का फासला रहे, तदनन्तर धड़ से ऊपर का भाग दायें व बायें जितना जा सके आठ बार घुमावें।

क्रिया नं० ४—काक आसन से बैठकर यानी पँजे के ऊपर एड़ी को ऊँचा करके दाहिने घुटने को बांयें घुटने के सामने जितना ले जा सकें जमीन की ओर ले जायें। घुटना जमीन से दो अंगुल ऊँचा रहे। जब दाहिना पैर बायें पैर के सामने हो तो मुख बायीं ओर घुमावें इस प्रकार जब बांया पैर दाहिनी ओर हो तो मुख दाहिनी ओर घुमावें।

इसके बाद शौच आने से पहिले भी पेट में वायु भरकर दोनों घुटनों को पेट से लगाकर दोनों हाथों से घुटनों को पेट की ओर दबायें, यह सभी क्रियायें करने के बाद पुनः तीन पाव जल पीवें और उपरोक्त सभी क्रियायें करें, ढाई तीन सेर जल पीने के बाद शौच आवेगा, दो तीन बार में स्थूल मल निकलने के उपरान्त रङ्गदार पानी जैसा शौच आयेगा। जब तक श्वेत जल शौच में न निकले तब तक जल पीता रहे और क्रिया करता रहे, पूर्ण स्वच्छ होने पर जल पीना बन्द करदें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नोट १:—यदि बार-बार शौच में जल आए और बन्द करना हो तो एक गिलास पानी शीतल जल पीवें तत्पश्चात् पाँच मिनट बाद कुँजर क्रिया द्वारा सभी जल बाहर निकाल दें (मुख के अन्दर उँगली डाल कर जल को बाहर निकालना ही कुँजर क्रिया है।)

२—क्रिया समाप्त होने पर तुरन्त ही गेहूँ का दलिया उबाला हुआ सेंधा नमक व शुद्ध देशी घृत डालकर खाएँ पुनः तुरन्त ही दो घन्टे तक विश्राम करें। बोलना, पढ़ना, लिखना आदि कोई भी क्रिया न करें।

३—गर्मी में सूती और सर्दी में ऊनी वस्त्र ओढ़ कर विश्राम करना आवश्यकीय है।

४—क्रिया करने के बीच अन्त में स्नान न करें, शीतल जल से पैर न धोवें, नगें पैर न घूमें। प्रथम में स्नान कर लेवे।

५—कम्बल बिछाकर ही क्रियाएँ करें।

६—रात्रि को दाल फुलका खावें दूध व दही का सेवन न करें, वर्षा व बादल के दिन यह क्रिया नहीं करें।

७—यदि डेढ़ सेर या दो सेर जल पीने के बाद जल पीने की इच्छा न हो और पीने पर उल्टी होने की संभावना हो तो जल न पीवें, टहलना शुरु कर देवें, टहलने से शौच की इच्छा होगी या पेट खाली होने से जल पीने की इच्छा होगी—क्रिया करने में जल्दी व जबरदस्ती न करें।

लाभ:—इस क्रिया के करने से पेट स्वच्छ हो जाता है. पाचन शक्ति तीव्र होकर आंतो की सफाई हो जाती है। रोग होने पर

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एक महीने में दो बार तथा स्वस्थ पुरुषको साल में दो बार, क कर लेनी चाहिये। पेट में गैस बनना व डाइबटीज व वन्ध्या आदि रोगों को नष्ट करती है।

★ आवश्यकता ★

जैसे आप वस्त्र की, मकान की, दुकान की शरीर की स आवश्यक समझते हैं, ठीक वैसे ही पेट के अन्दर की सफाई भी आ श्यक है क्योंकि लिखा है कि—

कहावत—पेट खराब तो सब खराब। पेट ठीक तो सब ठीक किन्तु ध्यान रहे कि ! कोई भी यौगिक क्रिया देखकर या पढ़ अथवा सुनकर ही नहीं करनी चाहिये क्योंकि—

देखा देखी साधे योग, छीजे काया बाढे रोग।

अतः यह क्रिया तथा अन्यान्य और भी क्रियायें किसी अ अनुभवी से वा पूज्य गुरुदेवजी से सीख लेनी चाहिये ।।

० बल व बुद्धि के लिए अमोघासन अवश्य सीखिये ०

नोटः—पूज्य श्री विश्वगुरु जी के आदेशानुसार एक सा सप्ताह रखा जाता है अवधि १५ मई से १५ जून के मध्य में—प्र वर्ष पत्र द्वारा निश्चित तिथियों का ज्ञान करलें तथा अपना पता भेजें। कार्यक्रम छपा हुआ भेज दिया जायगा। आसन, प्राणायाम आदि अवश्य सीखिये।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ध्यान लगाना सीखिये

*** प्रश्न ***

क्या आपका भजन में मन नहीं लगता ?
क्या आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता ?
क्या आप परिवार से दुखी हैं ?
क्या आप इसी जीवन में मुक्ति चाहते हैं ?
क्या आप चिर सुख व शान्ति के इच्छुक हैं ?

उत्तर—यदि हाँ तो

विश्व गुरुजी से मन के लिये ध्यान की विधि।
स्वास्थ्य के लिये योग-आसन-प्राणायाम-संयम ।
परिवार सुख के लिये मंत्र साधन ।
मुक्ति के लिए ज्ञान आदि सीखिये ।

प्रशिक्षणाचार्यजी से पत्र व्यवहार का पता—
अनन्त श्री विभूषित
महामण्डलेश्वर विश्वगुरुजी महाराज
वेद निकेतन धाम, विश्वगुरु नगर
पो० स्वर्गाश्रम वाया ऋषिकेश (हिमालय)
फोन २७९

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० स्वास्थ्य-सुधार के नियम ०

१—उष: पान विशेष लाभदायक है। रात में तांबे के वर्तन में जल रख दीजिये। प्रात:काल उठते ही कुल्ला करके पी लीजिये। यदि शीतल जल अनुकूल न पड़ें तो गर्म पीजिये।

२—प्रात: स्नान अवश्य करना चाहिये।

३—सूर्योपासना सब प्रकार के रोगों को दूर करती है। अतः प्रतिदिन नियमपूर्वक सूर्योपासना कीजिए।

४—गाय का धारोष्ण दूध पीना चाहिए।

५—छाछ तो स्वास्थ्य के लिये अमृत ही है।

६—"आरोग्यम् आनन्दम्" इस मन्त्र का जप भावपूर्वक कम से-कम १०८ बार अवश्य कीजिये।

७—कागजी नीबू लाभदायक है, पर वर्षा ऋतु में तो विशेष लाभप्रद है। इसके सिवा अन्य खटाइयों कात्याग कीजिये

८—प्रतिदिन पद्मासन, सिद्धासन तथा शीर्षासन का अभ्यास कीजिये।

९—प्रतिदिन प्रात:काल कम-से-कम ३ मील टहलना चाहिये।

१०—हरी सब्जी तथा फल का सेवन अधिक-से-अधिक कीजिए।

११—स्नान करते समय साबुन के बदले मिट्टी का प्रयोग कीजिए।

१२—एकादशी तिथिको निराहार, दुग्धाहार या फलाहार कीजिए

१३—रविवार को नमक का त्याग करना अच्छा है।

१४—रात को ठीक समय पर शयन कीजिये और प्रात:काल ठीक समय पर जागिये।

१५—प्रतिदिन प्रात:काल में नित्योपयोगी मंत्रका पाठ कीजिए।

१६—छः महीने में १ बार संख प्रच्छालिनी क्रिया द्वारा पेट को साफ कीजिये।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० जीवन और मृत्यु के प्रश्न ०

१—ईश्वर-उपासना जीवन और प्रकृति-उपासना मृत्यु है।
२—विद्या जीवन और अविद्या मृत्यु है।
३—योग जीवन और भोग मृत्यु है।
४—सत्य जीवन और झूठ मृत्यु है।
५—धर्म जीवन और अधर्म मृत्यु है।
६—परोपकार जीवन और स्वार्थ मृत्यु है।
७—पुरुषार्थ जीवन और आलस्य मृत्यु है।
८—ब्रह्मचर्य जीवन और व्यभिचार मृत्यु है।
९—सादगी जीवन और सजावट मृत्यु है।
१०—एकता जीवन और विरोध मृत्यु है।
११—मित्रता जीवन और शत्रुता मृत्यु है।
१२—वीरता जीवन और कायरता मृत्यु है।
१३—सत्संग जीवन और कुसंग मृत्यु है।
१४—सन्तोष जीवन और लोभ मृत्यु है।
१५—अहिंसा जीवन और हिंसा मृत्यु है।
१६—कृतज्ञता जीवन और कृतघ्नता मृत्यु है।

प्रत्येक मनुष्य जीवन से प्रेम रखता,
और मृत्यु से डरता है।
इस कारण से उपरोक्त मृत्यु के साधनों से,
घृणा करना परम उचित साधन है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ओ३म

❖ विश्वगुरु प्रार्थना ❖

हे पूरण परमात्मा, पावन हों जीवात्मा।
विश्व बने धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ॥

विश्वगुरु कृत मंगलाचरण

रामाय मंगलं कृष्णाय मंगलं,
सीता समेत रामचन्द्राय मंगलम्।
राधा समेत कृष्णचन्द्राय मंगलं,
रामाय मंगलं कृष्णाय मंगलम् ॥
गौरी समेत भालचन्द्राय मंगलं,
रामाय मंगलं कृष्णाय मंगलम् ॥
लक्ष्मी समेत नारायणाय मंगलं,
रामाय मंगलं कृष्णायं मंगलम् ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

ट्रेन की तैयारी

हो जाओ तैयार ट्रेन जंकशन से है जाने वाली।
नाम का टिकट जल्द ले बैठो आफिस से बटने वाली।।
नारायण भज नारायण भज नारायण भज बनमाली।। १ ।।
सत्संग बुकिंग आफिस और बुकिंग क्लर्क हैं सन्त सभी।
.. दाम दो नाम टिकट लो कभी नहीं कटने वाली।।
नारायण भज नारायण भज० ।।२।।
.. के मनी वेग में रखना टिकट बचाकर चौरों से।
.. लगेज टिकट यह दोनों चीजें हैं लुटने वाली।।
नारायण भज नारायण भज०।। ३ ।।
.. जीवन जंकशन जगत के प्लेटफार्म पर ट्रेन रुकी।
.. नरक अपवर्ग को लाइन यहां से है फटने वाली।।
नारायण भज नारायण भज०।। ४ ।।
.. सा सिगनल झुका कि हिचकी सीटी देकर ट्रेन चली।
.. में फिर एक मिनट भी नहीं घटने बढने वाली।।
नारायण भज नारायण भज०।। ५ ।।
.. का चैकर बुद्धिका ड्राईवर वृत्ति का हैंडिल ठीक करो।
.. फिर यह परम धाम तक ट्रेन नहीं रुकने वाली।।
नारायण भज नारायण भज०।। ६ ।।

—: ० :—

० क्षण भंगुर जीवन की कलिका ।।१।। ०

.. भंगुर जीवन की कलिका, कल होत प्रभात खिली न खिली।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मलया गिरि की शुचि शीतल मन्द, सुगन्ध समीर मिली न मिली।
कलिकाल कुठार लिए फिरता, तन नम्र से चोट झिली न झिली।
भजले हरिनाम अरी रसना, फिर अन्त समय पे हिली न हिली।

० क्षण भंगुर जीवन ।।२।। ०

क्षण भंगुर जीवन है जग में मन मंजुल पुण्य कमाते चलो।
फिर अवसर ऐसा मिलेगा नहीं, परलोक का पन्थ कमाते चलो।
सत्संग करो पर पीर हरो, हरि को सुमिरो सुख पाते चलो।
श्रीराम सिया, श्रीराम सिया, श्रीराम सिया, सिया गाते चलो।

० नाशवान शरीर की दशा ०

कुन्द इन्दु के समान मृदु मंजु देह जापे,
चोआ चारु चन्दन रुचिर चुपरे गये।
रतन जटित जापे भूषन बसन धारे,
मणियों के मुकुट सुधारि के धरे गये।
जाकी तुष्टि पुष्टि हेतु नाना भोग भोगे अरु,
वलिदान कितने ही जीवों के करे गए।
ताही इस देह पर माधव मसान बीच,
वड़े बड़े लक्कड़ धकेलिके धरे गये।

० शरीर की तुच्छता ०

दुर्गन्ध- वाला घर व्याधियों का, जीता मरा भोजन हिंसकों का
जो अन्त में ईंधन आग का है, तो देह में शोभन वस्तु क्या है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

० दूत द्वारा सुदामाजी का सन्देश ०

सीस पगा न झगा तन में अरु जाने को आहि बसे केहि ग्रामा ।
धोती फटी सी लटी दुपटी, अरु पांय उपानहु की नहिं सामा ।।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकि सो वसुधा अभिरामा ।
पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपनों नाम सुदामा ।।

।। (सवैया) नैनन के जल सों पग धोये ।।

ऐसे बेहाल बिवाइन सों, सखा कन्टक जाल गड़े पग जोये ।
हाय सखा दुख पायो महा, तुम आये इतै न कितै दिन खोये ।।
देखि सुदामा की दीन दशा, करुणा करिके करुणानिधि रोये ।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोये ।।

।।(सवैया) क्यों रस में बिष ।।

क्यों रस में विष वाम कियो, तैंने और न खान दियो एक फंका ।
विप्र को लोक तृतीय के देत, सो क्यों तें करी अपने मन शंका ।।
भामिनि मोहि जिमाइ भली विधि, कौन रह्यो जग में नर रंका ।।
लोग कहैं हरि मित्र दुखी, हमसे न सह्यो यह जात कलंका ।।

।। एकादशी को लक्ष करके भामिनि का श्रीकृष्णजी को दोहा ।।

एक मास दो होति हैं, सो प्रभु हमरे नित्त ।
तुम हो दीन दयालजी, राखो चित को चित्त ।।

।। द्वादशी को संकेत करके श्रीकृष्ण का उत्तर

पाछे दिन पाछे गये, अब डुलावो चित्त ।
हम हैं दीन दयालजी, मनाओ द्वादशी नित्त ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

* चेतावनी *

नादान दीन्हा नहिं ध्यान कीन्हा, संसार चक्की बिच शीश दीन्हा।
ना श्रेय कीन्हा अपना पराया, रे मूढ़ क्यों तू जग मांहि आया ॥१॥
काया फुलाना पुरुषार्थ जाना, या बाल बच्चों में मोद माना।
झूंठी बड़ाई यश में भुलाया, रे मूढ़ क्यों तू जग मांहि आया ॥२॥
आया कहां से चलना कहां है, लेना किसे क्या तजना यहाँ है।
है कौन तू आप पता न पाया, रे मूढ़ क्यों तू जग मांहि आया ॥३॥
थे भोग पांचों यदि भोगना ही, क्यों जन्म लीन्हा नर देर मांही।
कीटादि होता नर क्यों बनाया, रे मूढ़ क्यों तू जग मांहि आया ॥४॥

भजन

बैठ अकेला दो घड़ी कभी तो ईश्वर ध्याया कर,
मन मन्दिर में गाफिला झाड़ू रोज लगाया कर ॥ ।टेक।
सोने में तो रात गुजारी दिन भर करता काम रहा ।
इसी तरह बरबाद तू बन्दा करता अपना आप रहा ।
बिस्तर से उठ प्रेमियों की सत्संगत में जाया कर ।।बैठ अ०॥१॥
बारम्बार मनुष तन पाना बच्चों वाला खेल नहीं ।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का जब तक होता मेल नहीं ।
नरतन पाने के लिए अच्छे कर्म कमाया कर ॥ बैठ अ० ॥२॥
पास तेरे है दुखिया कोई तूने मौज उड़ाई क्या ।
भूखा प्यासा रहा पड़ौसी तूने रोटी खाई क्या ॥
पहले सबसे पूछ के पीछे भोजन पाया कर ॥ बैठ अ० ॥३॥
देख दया उस परमेश्वर की जिन वेदों का ज्ञान दिया ।
सोच करे क्या बन्धु पियारे कितनों का कल्याण किया॥
ॐ प्रभु का नाम है प्रात समय उठ ध्याया कर ।।बैठ अ०॥४॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

० सवैया ०

सन्त सदा उपदेश बतावत केस सबै सिर श्वेत भये हैं ।
बारहिबार विषय फल खात, अघात न जात सुधा रस फीको ॥
आन अरुशान तजो अभिमान, कही सुनि कान भजो सिय पीको
पाय परम पद हाथ सों जात गई सो गई अब राख रही को । ३॥

० सवैया ०

पुत्र कलत्र सुमित्र चरित्र, धरा धन धाम है बन्धन जी को ।
बारहिबार विषय फल खात, अघात न जात सुधा रह फीको ॥
आन अरु शान तजो अभिमान, कही सुनि कान भजो सिय पीको ।
पाय परम पद हाथ सों जात गई सो गई अब राख रही को ॥३॥

छन्द

सुत नारि धरा धन के सुख में सुधि भूलि रह्यो अपने हरि की ।
अजहूं ममता मद मोह फँस्यो, करि आश रह्यो भन भोगन की ॥
बुध जाइ बसे बन कुंजन में क्षण भंगुर देख दशा इनकी ।
अजहूं भज शङ्कर स्याम सदा, यह पास कटै भव रोगन की ॥

थे दांत हाथी दांत सम, मजबूत हिलने लग गये । ॥१॥
जैसे गिरें छत से कड़ी, एक-एक गिरने लग गये ॥
खूँटे गिरे डाढ़ें गिरीं, बत्तीसि सारी गिर गई ।
मुख हो गया है पोपला, तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई ॥

आंखें हुई हैं धुन्धली, पढ़ना पढ़ाना बन्द है । ॥२॥
नहिं पास तक का दीखता, अब दृष्टि इतनी मन्द हैं ॥
कुछ भी नहीं अब सूझता, है रात दिन की हो रही ।
आंखें दिखाई आंख ने, तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई ॥

अब कान आना कानि की, ऊँचा सुनाई देय है । ॥३॥

Shri Shri Ma Anandamayee Ashram, RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जब जोर से चिल्लाय कोई, बात कुछ सुन लेय है ॥
सुनना-सुनाना बन्द है, नहिं आस सुनने की गई।
बहरे हुए हैं कान पर, तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई ॥

काया गली झुर्री पड़ीं, लोहू हुआ है लापता। ॥४॥
पग डिगमिगाते चालते, कर कांपते सिर हालता॥
ली हाथ लाठी बांस की, धनु सम कमर है झुकगई।
काया हुई बूढ़ी मगर, तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई ॥

बेटे बहू विपरीत हैं, मानें नही कोई कहा। ॥५॥
रोटी मिले नहिं वक्त पर, है स्वाद भी जाता रहा॥
बाबा मरा माई मरी, है कूंच पत्नी कर गई।
इज्जत गई लज्जत गई, तृष्णा नही बूढ़ी हुई॥

सब इन्द्रियाँ बलहीन हैं, नहिं देह में सामर्थ्य है। ॥६॥
नहि खा सके नहि पी सके, सब भांति से असमर्थ है॥
नहि हिल सके नहिं झुकसके, अब खाट तक भी कटगई।
मरना न फिर भी चाहता, तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई॥

पुत्रादि कहते हैं सभी बुढ्डा बहुत दुख पाय है। ॥७॥
देता हमें भी कष्ट है, मर क्यो नहीं अब जाय है॥
मर जाय अच्छा होय अब तो, कष्ट की हद हो गई।
मरना न फिर भी चाहता, तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई॥

बुड्ढा मरण सब चाहते, बुड्ढा मरा नहिं चाहता। ॥८॥
धन धाम के कुल ग्राम के, भोला मनोरथ ठानता॥
बाणी हुई है बन्द नाहीं, देह आसक्ती गई।
मरना न फिर भी चाहता, तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

० तृष्णा की बाढ़ का उपाय सन्तोष ०

जो दस बीस पचास भये, शतं होय हजारन चाह मगेगी।
कोटि अरब्धख रध्धनिलों, पृथवी पति होन की चाह जखेगी।
स्वर्ग पताल को राज चहों, तृष्णा अधिकी अति आग जगेगी।
'सुन्दर' एक सन्तोष बिना, शठ तेरी तो भूख कबहूं न भगेगी।

० सन्तोषी सुखी है ०

लोग सोचते हैं राजा सम, कौन सुखी रह सकता है।
जो प्रति पालक जगती का है, वह स्वयं न क्याकर सकताहै ॥
नृपति सोचता है मन में, हूं यद्यपि छत्र चंवर धारी।
किन्तु सुखी हैं मुझ से जग, में योगी भिक्षा व्रत धारी॥
किन्तु वस्तुतः इन दोनों में, भी है कोई सुखी नहीं।
सन्तोषी है सुखी तोष को, छोड़ नहीं सुख अन्य कहीं॥

० भजन : बिन धर्म मनुष्य की जाति ०

टेक- बिन धर्म मनुष्य की जाति पशु से नीचे गिर जाती ॥
अन्तरा- आंख नाक अरु कान पे तुमको है यदि कुछ
अभिमान तो आँख मृगा की नाक सुआ की—
कस्तूरी बीच जहान घोड़े की बढ़िया कहलाती ॥
॥ बिन धर्म ॥ १ ॥

हाड़ मास अरु खून में तेरे बदबू होती पूरी।
सवासो रुपया तोला है बिकती मृगा की कस्तूरी ॥
जिसे है दुनिया खाती ॥ बिना धर्म ॥ २ ॥

थूक तलक भी तेरा भाई होता बदबूदार।
कीड़े की तो लार से निकलता है रेशम का तार ॥
पहन कर युवती सज जाती ॥ बिन धर्म ॥ ३ ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बाल काट तेरे नाई फेंके खेती के दरम्यान।
भेड़ो के बालों से बनते कम्बल अरु अलमान॥
ओढ़कर दुनियां सुख पाती ॥ विन धर्म ॥ ४॥
आबादी से बाहर मित्रों शौच करन सब जाते।
गौ के गोबर से तो देखो चौका सभी लगाते॥
बैठ जहां दुनियां भोजन पाती ॥ बिन धर्म ॥५॥

० भजन: तम्बाकू तेरे अवगुण ०

तम्बाकू तेरे अवगुण अपरम्पार ॥
डाक्टर वैद्य हकीम सभी तुझे कह रहे इसी प्रकार ॥ टेक॥
डाक्टर हकीम वैद्य सभी का फरमान है यह,
तम्बाकू का पीना जग में सब दुखों की खान है यह।
दमा कफ खाँसी आदि रोगों का मकान है यह,
धातु क्षीण करने का तो लख संहारी बाण है यह।
जिसका मारा हुआ लगभग सारा हिन्दुस्तान है यह,
क्या नर अरु क्या नारि ॥ तम्बाकू तेरे ॥ १॥
अमेरिका का बुढ्डा जो कि एक सो अस्सी वर्ष जिया।
इतने दिन जीने का कारण यह भी एक बयान किया॥
घड़ी २ पल पल उमर बिहानी रे।
माटी का खिलौना चन्द रोज की निशानी रे।
॥ अरे नर ॥ १॥
जब यमराज तेरी डोली उठवायेगा।
कुल परिवार कहो कौन संग जायेगा।
वस्तु नहीं जाने कोई अपनी बिरानी रे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

...तक जीता रहा उसने तम्बाकू को नहीं पिया।
...ने अरु सूँघने को हाथ में भी नहीं लिया॥
...के लिए मित्रो तुम भी इससे मुख को मोड़ लीजे।
...सुख से जीना चाहो जग में तम्बाकू को छोड़ दीजे॥
सब विधि समझ असार॥ तम्बाकू तेरे॥ २॥

० भजन :— सो लीला तेरी अजब ०

...लीला तेरी अजब निराली है॥ टेक॥
...अजर अमर अज निराकार परमेश्वर देह कभी न धरे।
...बिन पैर चले बिन कान सुने बिन हाथ करोड़ों कर्म करे॥
...हर जगह पर ईश्वर वास तेरा हो महाप्रलय तो भी न मरे।
...पिता तू सबका पुत्र तेरे सब भोजन दे सबका पेट भरे॥
...हाकिम सारी दुनियां का है हुक्म तेरा टारे न टरे।
...जिसकी लौ तुझमें लाग रही उसके दुःख टारे सुख करे॥
...जो दीन बन्धु तेरी याद करे एक पल भर में भव सिन्धु तरे।
...गुण निधान जग फुलबगिया का तू ही तो माली है।
सो लीला तेरी अजब निराली है॥ १॥
...कहीं किसी पेड़ पर फूल लगे अरु किसी के ऊपर लगी कली।
...कहीं ऊँचे टीले चमक रहे, कहीं नींची भूमि करतार करी॥
...कहीं खाक उड़ें है जंगल में, कहीं घास खड़ी है हरी हरी।
...कहीं घना विपिन वीरार पड़ा, अरु कहीं पर खुश्की कहीं तरीं।
...कहीं वाह वाह कहीं हाय हाय, कहीं खैर खुशी कहीं पड़ी मरी।
...जन्म हुआ कहीं मरण हुआ, कोई गाये गीत कहीं चिता जली॥
...कहीं द्वार पर नौबत बाज रही, कोई घर में अंखियाँ नीर भरी।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

किस तरह करें गुणगान तेरे, है धन धन तेरी कारीगरी।
किसी के घर में घोर अन्धेरा, कहीं दीवाली है।
सो लीला तेरी अजब ॥२॥

कोई शाहनशाह बना दिया कोई ठोकर खावे दर दर के।
कोई को साहुकार किया, कोई करे आसरा पर घर के।
कोई बना दिया बेखौफ खतर, कोई वक्त गुजारे डर डर के।
कोई गुजर करे है छप्पर में, कोई खड़ा महल संगमरमर के।
कोई को मुखिया बना दिया, कोई मिला खाक में जर जर के।
कोई हुक्म चलावे लाखों पर, कोई जीवे सेवा कर कर के।
कोई मौज करे कोई पेट भरे सिर ऊपर बोझा ढोकर के।
तेरी नजर में कुल दुनियां की, देखा भाली है।
सो लीला तेरी अजब निराली हं ॥ ३॥

कहीं खार पड़े हैं धरती पर, कहीं ऊँची शिखर पहाड़ों की।
कहीं गर्मी ने तन गर्म किया, कहीं शान दिखाती जाड़ों की।
कहीं झील वनादी बड़ी बड़ी, कहीं शोभा छोटे तालों की।
कहीं बड़े समुद्र हैं नीर भरे, कहीं छवि है नदियां नालों की।
कहीं रेगिस्तान बड़े भारी, कहीं शोभा प्यारे बागों की।
कहीं कोयल कू कू शब्द करे, कहीं कांय कांय है कागों की।
कहीं दिन है सूरज निकल रहा. कहीं रात है रंगत तारों की।
कहीं शहर कोई वीरान हुआ कहीं शान बुलन्द बाजारों की।
किसी की काया गोरी, किसी की बिल्कुल काली है।
सो लीला तेरी अजब निराली ॥४॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कोई चले नहीं बिन मोटर के, कोई नंगे पैरों भाग रहा।
कहीं ढेर पड़ा जर जेवर का, कोई कर्ज किसी से मांग रहा।
कोई किसी का दुश्मन बन बैठा, कोई प्रेम किसी से पाग रहा।
कोई छिड़क कहीं पर नीर रहा, कोई जला कहीं पर आग रहा।
कोई सुखकी निंदिया सोय रहा, कोई पड़ा फिकर में जाग रहा।
कोई आस करे है महलों की, कोई बनी हवेली त्याग रहा।
कोई धर्मके लिये बलिदान करे, कोई धर्म से मुखड़ा मोड़ रहा।
माया तेरी मुनियों के मन मोहने वाली है।
सो लीला तेरी अजबनिराली है ॥५॥

कुल जहां में तेरा जलवा है. तुझसा जलवागर कोई नहीं।
तू हर अफसर का अफसर हैं, पर तेरा अफसर कोई नहीं।
तू सबके अन्दर बाहर है, पर तुझसे बाहर कोई नहीं।
जो ईश्वर तेरी शानी का, दुनिया में दिलावर कोई नहीं।
करुणा-निधान सबसे महान धरती के ऊपर कोई नहीं।
जिसने ले ली है शरण तेरी उसे खौफ-खतर है कोई नहीं।
तू ही मात-पिता स्वामी सबका, बस तेरे बराबर कोई नहीं।
राम को दर्शन दो क्यों देर लगाली है।
सो लीला तेरी अजब निराली है॥ ६॥

* अहं (मैं) की दुर्दशा *

फक्र बकरे ने किया मेरे सिवा कोई नहीं,
मैं ही मैं हूं इस जगत में दूसरा है ही नहीं।
मैं ही मैं जब तर्क की इस माया के असबाव ने,
फेर दी गर्दन पर छूरी जल करके तब कस्साव ने॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मांस हड्डी और चमड़ा जो था जाने जार में,
कुछ लुट गया कुछ पिस गया कुछ बिक गया बाजार में।
अब फकत आतें रहीं मैं मैं सुनाने के लिये,
ले गया नद्दार तब धुनकी बनाने के लिये॥
जर्व सोटे की पड़ी तब तांत घबराने लगी,
मैं ही मैं की जगह धुन तब तू ही तू गाने लगी।
जब प्रभू की याद आई छूट गया पीछा अभी,
दु:ख झंझट सब छूटे सुख शान्ति पाई फिर तभी॥

॥ दोहा ॥

जब मैं था तब तू नहीं, जब तू है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी, जिसमें दो न समाहिं।

० भजन-यशोदा तेरे ०

यशोदा तेरे लाला ने मिट्टी खाई॥ टेक ॥
दौड़—मेरे साथ खेले नहीं दूर खेलने को जाय,
एक दिन मैं भी वाके पास में पहुंचा जाय,
देखूं तो वहां ढेले में से तोड़ तोड़ मिट्टी खाय,
मैं ने तो कही कि तेरी मैया से कहूंगा जाय।
तो पुनि करत लड़ाई ॥ यशोदा तेरे ॥१॥
श्रीदामा की बात सुन माता ने बुलाये कान्ह,
सांची तो बतादे कान्हा कहांसे सीखो मिट्टी खान।
तेरी जो हैं सभी बात कह गये गवाल बाल,
मारूंगी तमाचा तेरे मुख को करूँगी लाल।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

फाड़ के दिखादे मुख ऐसी मेरी बात मान,
मो को बहुत खिझाई ॥ यशोदा तेरे ॥२॥

तेरी कसम मैय्या मेरी मिट्टी मैंने खाई नाँहि,
श्रीदामा ने छाछ मांगी मैंने सो दई है नाँहि ।
दी न छाछ एक घुँट ताही ते गयो है रूठ,
मेरी तो लगाई मैया तो सों आन झूठ मूठ ॥
मिलेगी श्रीदामा बाके मारूँ एक मुक्का तान ।
झूठी आन बनाई ॥ यशोदा तेरे ॥३॥

माता के दिखाने को जब फाड़ो है मुखारबिन्द,
दीखें नव खण्ड जिसमें सातों द्वीप सातो सिंधु ।
पृथ्वी आकाश नभ तारे अरु इन्द्रयान,
कृष्ण कन्हाई की विचित्र गति लखी जान ।
कहें सियाराम नत्थूराम ने सुनाई गाय,
मुख में सृष्टि दिखाई ॥ यशोदा तेरे ॥४॥

* धर्म परायण पक्षी *

० प्रश्न-पक्षियों से—दोहा ०

आग लगी इस पेड़ में, जलने लागे पात ।
तुम क्यों जलते पक्षियों, क्या पर नं तुम्हारे साथ ॥

० उत्तर-पक्षियों का दोहा ०

फल खाये इस पेड़ से गन्दे कीन्हे पात ।
धर्म हम्हारा है यही, जलें इसी के साथ ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० एक सखी का प्रश्न राजा के विषय में ०

दोहा:—चढ़े पालकी जात हैं, सेवक लीन्हें संग ।
कब के यह थाके सखी, पड़े दबवात अङ्ग

० दूसरी सखी का उत्तर ०

दोहा:—तीर्थ दान बहुधा किये, निशि दिन रहे सत्संग ।
तब के यह थाके सखी पड़े दबवा अङ्ग ॥

० प्रश्न चम्पा का अवगुण ०

दोहा:—चम्पा तुझमें तीन गुण, रूप रंग अरु वास ।
अवगुण तुझ में एक है, भ्रमर न आवे पास ॥

० उत्तर:—दोहा ०

चम्पक वरणी राधिका, भ्रमर कृष्ण का दास ।
निजकी जननी जान के, भ्रमर न आवे पास ॥

० भर्तृहरि का मन को धिक्कार ०

दोहा:—रत्न जटिल मन्दिर तजे, अरु सखियन का साथ ।
धिक् मन धोके लाल के सने पीक में हाथ ॥

भजन-शास्त्रार्थ

कमला व विमला का, येषां न विद्या, श्लोक-पर

० दोहा ०

कमला विमला बहिन दो बड़ी चतुर होशियार ।
येषा न विद्या श्लोक पर, दोनों करें विचार ॥

प्रश्न:—कमला का-श्लोक:—

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

येषां न विद्या तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मृत्युलोके भुविभारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।।

॰ भावार्थः—दोहा ॰

कमला ने कहा अर्थ यह, ज्ञान शील अरु दान ।
विद्या तप अरु धर्म बिन, मनुज है हिरत समान ।।

उत्तरः—विमला का श्लोकः—

धर्मा रता न ये पुरुषाः सर्व लक्षण हीनकम् ।
पशुभिर्निकृष्ट वर्त्तन्ते, नरा बुद्धि मलीनकम् ।।

॰ भावार्थः—दोहा ॰

धर्म परायण जो नहीं, सर्व गुणों से हीन ।
पशुओं से भी हैं बुरे, वे नर बुद्धि मलीन ।।

॰ भाषा में ॰

कमल प्रश्न करती है कि जिन मनुष्यों में विद्या, तप ज्ञान, शील, गुण अथवा धर्म नहीं है, वे पृथ्वी पर भारभूत मृग के समान विचरण करते हैं ।

विमलाः—कहती है नहीं बहिन, जो मनुष्य धर्म परायण नहीं हैं । और सभी गुणों से शून्य हैं, ऐसे मलीन बुद्धि पुरुष तो पशुओं से भी बुरे हैं अर्थात् पशु अच्छे हैं । उदाहरणार्थः—

कवित्तः—

विमला ने कहा बहिन देखो तो विचार कर,
परोपकारी जीव की संसार में बड़ाई है ।
मृग दे कस्तूरी जो कि यज्ञ की सामग्री बने,
और कई रोगों की अपूर्व ही दवाई है ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

किसी की प्रशंसा करें मृग जैसे नैन कहैं,
मृग छाला इसकी योगी जनों ने विछाई है।
चन्द्र उस निकम्मे अरु निरर्थक मनुष्यों को तू,
मृग के समान कहे बुद्धि बेच खाई है॥
कली:—जिनमें नहीं धर्म तप दान, विद्य शील और गुण ज्ञान।
वह कुल कलंक जग में आयके, निज कुल को शर्माता है॥१॥

० दोहा:— कमला का ०

कमला फिर कहने लगी, यह तो मैं गई मान।
मृग नाहीं तो बहिन वो, होंगे बैल समान॥

० कवित्त-विमला का ०

विमला ने कहा बहिन बैल के सिर पर है जगत,
सच्चा है सहायक हितैषी हितकारी हैं।
अपने आप घास फूँस तृण हूं से पेट भरे,
मनुष्यों को अन्न देता कैसा उपकारी है॥
मार खाये भार ढोये तब हू न नाहीं करे,
जबकि उसके कन्धे माँहि होता रक्त जारी है।
ऐसे परोपकारी की उस मूढ़ से तू उपमा करे,
चन्द्र कहे बहिन कहां अकल तुम्हारी है।
कली:—जो हैं मूर्ख मूढ़ गुणहीन परहित परोपकार विहीन।
सस्ते है कौड़ी के तीन उनको लेना कौन चाहता है॥ २॥

० दोहा:— कमला का ०

कमला विमला से कहे, त्रुटि को क्षमा कराय।
गधा उसे कहना उचित, यह है मेरी राय॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

० कवित्तः—विमला का ०

विमला ने कहा बहिन गधा भी उससे है शुभ,
स्वामी काज करे अरु जंगलो में चरता है।
वह काम काज कुछ करता और धरता नहीं,
उलटा भोजन वस्त्र आदि मँहगा बिकवाता है॥
कमला ने कहा तो अच्छा भेड़ अरु बकरी सही,
विमला ने कहा वह तो उनसे भी गिर जाता है।
दूध अरु घृत देकर निर्धनों का पालन करें.
चन्द्र पहाड़ी मार्गों में बोझा लादा जाता है॥
जो-जिनमें नहीं है शिष्टाचार, करते सदा दुष्ट व्यवहार।
वह नर शरीर को प्राप्त करके नष्ट यों ही करता है॥ ३॥

० दोहा:—कमला का ०

कमला फिर कहने लगी, दोनों कर को जोड़।
वे नर कुत्ता ही सही, अब तो पीछा छोड़॥

० कवित्तः—विमला का ०

विमला ने कहा बहिन कुत्ता सा सहायक पशु,
इस सारे संसार में खोजे से नहीं पाता है।
जबकि अन्धेरी रात में नर नारी बालक सारे सोवें,
केवल रूखी रोटी पर ही पहरा लगाता है॥
जंगल में रहने वालों की एक मात्र रक्षा करे,
मालिक के लिये अपनी जान तक लड़ाता है।
कौन नहीं जानता कि योरोप आदि देशों में,
चन्द्र बड़ा बड़ा कार्य इनसे लिया जाता है॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कलीः—जिसमें नहीं धर्म अनुराग, विद्या भूषण को दिया त्याग।
मानो फूटे उनके भाग, भजन कवि 'चन्द्र' कवि गाता है ॥४॥

● फैला भ्रष्टाचार हमारे भारत में ●

लड़के का जब ब्याह रचावें श्री मुख से श्रीमान सुनावें।
चाहिए तीस हजार हमारे भारत में ॥ फैला० ॥१॥
घड़ी अंगूठी सूट चाहिये, सैन्डल चप्पल बूट चाहिये,
हार, रेडियो कार, हमारे भारत में ॥ फैला० ॥२॥
एक मशीन हो सीने वाली, सोफा सैट कटोरी थाली।
मेज कुर्सियां चार, हमारे भारत में ॥ फैला० ॥३॥
सबर न इतने पर भी आया, दोनों ओर का और किराया।
मांगें हाथ पसार, हमारे भारत में ॥ फैला० ॥४॥
सिस्टम एक और भी खोटा, कहें बराती थाली लोटा।
हमको भी दरकार, हमारे भारत में ॥ फैला ॥५॥
महाभ्रष्ट रिकार्ड गन्दे, सुन सुन होते हैं खुश अन्धे।
फेंकी शर्म उतार, हमारे भारत में ॥ फैला० ॥३॥
सुने ना जब तक गन्दा गाना, हजम न होता तब तक खाना।
डूब रहे मझधार, हमाँरे भारत में ॥ फैला ॥७॥
ऐसे आते कई बराती, पीते शराब लाज नहीं आती।
गिरते बीच बाजार, हमारे भारत में ॥ फैला ॥८॥
गन्दा खेल अगर आजाए, युवक देखने दौड़ा जाए।
सत्संग से इनकार, हमारे भारत में ॥ फैला ॥९॥
जब से धर्म भुलाया चन्दन, सुख के कभी न होते दर्शन।
दुखी हुआ संसार हमारे भारत में ॥ फैला ॥१०॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० फैशन से तबाही—हे जगदीश ०

हे जगदीश दुनियां में यह क्या हो रहा है,
कि फैशन से हर घर तबाह हो रहा है।
नहीं पाठ पूजा न संन्ध्या सुबह को,
कि मूछों पे रेजर हवा हो रहा है ॥ हे जग० ॥१॥
सुहाती नहीं धर्म चर्चा किसी को,
सिनेमा ही धर्मो करम हो रहा है ॥ हे जग० ॥२॥
नहीं मिलता घी दूध खाने को अब तो,
गर्म चाय पीकर गुजर हो रहा है ॥ हे जग० ॥३॥

० चेतावनी पूरब की कमाई ०

पूरब की कमाई तूने पच्छिम बैठ खाई।
और आगरे की खेप कबहुं, आगे न चलाई है ॥
दिल्ली के दलालों ने, तो सौदा ही बिगाड़दीन्हों।
पटियाले की ओट में जगाधरी न पाई है ॥
आज—नाले के लोग कहैं, लाहौर जाइ के।
पर सहारनपुर के रास्ते से हरिद्वार जाइये ॥
मुरादाबाद आवै जब, मुक़दमा पेश होय।
कलकत्ता में आइके सिर धुनि धुनि रोइये ॥

० भजन—मत इनमें फंसना ०

दोहा—मृग पतंग गज मीन अलि एक एक कर नाश।
पांच विषय रत पुरुष जो, कहनी पुनि क्या तास ॥
श्लोक—शब्दादिभिः पंचभिरेव पंच, पंचत्व मांपुः स्वगुणेन बद्धा।
कुरंग मातंग पतंग मीनाः भृङ्गाः नराः पचभि रञ्चतः किम् ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भजन— मत इनमें फंसना पांचों विषय हैं दुखदाई ।।टेक।।

नाक विषय में भौंरा फंस कर फूल से सुरत लगाई ।
सूर्य अस्त ही कमल बन्द हुआ मृत्यु भ्रमर की आई ।।
।।मत इनमें ।।१।।

आंख विषय में फँसा पतंगा दीपक पर तन छार किया ।
काम विषय में हाथी फँस कर बन्दी में डलवाई ।।
।।मत इनमें।।२।।

एक शिकारी वीणा हाथ ले जंगल जाल बिछाई ।
कान विषय में मृगी फँस कर तुरन्त जाल में आई ।।
।।मत इनमें।।३।।

एक मछुए ने जल में जाकर आटा दिया गिराई ।
जिह्वा के वश हो मछली ने अपने प्राण गँवाई ।।
।।मत इनमें।।४।।

एक विषय में एक जीव की ऐसी गति होई ।
जिस प्राणी में पांचों विषय हैं उसकी क्या गति होई ।।
।।मत इनमें।।५।।

० भजन ०

जब तेरी डोली निकाली जायेगी ।
बिन महूरत के उठाली जायगी ।।टेक।।
उन हकीमों से कहो यूँ बोलकर ।
करते थे दावा किताबें खोल कर ।
यह दवा हरगिज न खाली जायगी ।। जब तेरी ।।१।
क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार ।
पीछे है माली खड़ा हो खबरदार ।
मारकर गोली गिरादी जायगी ।।जब तेरी।।२।।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

जर सिकन्दर का यहां सब रह गया।
मरते दम लुकमान भी यूँ कह गया।।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायगी ।।जब तेरी।।४।।
होयगा पर लोक में तेरा हिसाब।
कैसे मुकरोगे वहाँ पर तुम जनाब।
जब बही तेरी निकाली जायगी ।।जब तेरी।।

० भजन रसिया ०

हरि नाम सुमिरि सुखधाम जगत में जीवन दो दिन का ।।टेक।।
पाप कपट कर माया जोड़ी गर्व करें धन का।
सभी छोड़ कर चला मुसाफिर वास हुआ बन का ।।हरिनाम।।१।।
सुन्दर काया देख लुभाया लाड़ करे तन का।
छूटी श्वांस बिखर गई माटी ज्यों माला मनका ।।हरिनाम।।२।।
यौवन नारी लगे पियारी मौज करे तनका।
काल वली का लगै तमाचा भूलि जाय ठुमका ।।हरिनाम।।३।।
यह संसार स्वप्न की माया मौज करे छिनका।
ब्रह्मानन्द भजन कर बन्दे नाथ निरंजन का ।।हरिनाम।।४।

० भजनः है चन्द मिनट ०

है चन्द मिनट विश्राम रे इस टूटी सी खटिया पर ।।टेक।।
पार हुआ चाहे तू प्यारे शीघ्र शरण ईश्वर की आरे।
सतरूपी बल्ली के सहारे ले चल अपनी नावरे।।
शुभ कर्मों की घटिया पर ।।है चन्द मिनट ।।१।
रे मूरख मति मन्द मुसाफिर मृग तृष्णा मे धोखा खाकर।
इस सोचनीय दशा में आकर क्यों देता है पांवरे।।
इस पाप रूप अटिया पर ।।है चन्द मिनट ।। २ ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अरे मूढ़ उठ धर्म कमाले, परम कृपालू के गुण गाले ।
वृथा समय जाता मतवाले, लोहे का सा तावरे ।।
रह धोखे की टटिया पर ।।है चन्द मिनट ।। ३ ।।
क्यों अब नींद गहरी सोवे तू। वृथा उमर अपनी खोवे तू।
तेज सिंह क्यों नहीं धोवे तू, अपने खोटे घावरे ।।
शुभ ज्ञान रूप पाटया पर ।। है चन्द मिनट ।। ४ ।।

० भजनः वा अनहद ०

वा अनहद के मैदान में नर गाड़ जीत का झंडा ।।टेक।।
आसा आसन फिक्र फावरी तृष्णा तीर बांधले जिगरी ।
उसी देश की गहले डगरी ।।
काम क्रोध को मार ले जो वीर बड़े परचंडा ।।वा अनहद ।।१।।
ज्ञान कटारी धर्म सिरोही वस्तर पहन समर के सोई ।
होके युद्ध करो निर्मोही—पाँचो दुश्मन जीतले ।।
तव पकड़ किले का डंडा ।।वा अनहद ।।२।।
गदका ज्ञान कर्म के कोड़ा—तप की तोप नाम का तोड़ा ।
पवन स्वरूपी ठाड़ो घोड़ा—है सवार चल गगन को ।।
तोहि जब पावे ब्रह्मंडा ।। वा अनहद ।।३।।
इन्द्रिय पांच छटो मन जीते घड़ी २ अरु पल पल बीते।
छीता हाथ चला क्यों रीते ज्ञान की अग्नी दाग दे ।।
तब होय पाप का खंडा ।। वा अनहद ।।४।।

० भजन हरिशरणम् ०

यही एक मन्त्र है प्यारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ।
लगालो प्रेम से नारा, हरि शरणम् हरि शरणम् । टेक ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

भरे दरबार में जब द्रोपदी की लाज जाती थी।
विकल होकर के उच्चारा, हरि शरणम् हरि शरणम्।
यही एक ॥ १ ॥

बचाई लाज द्रोपदि की लगाई चीर की ढेरी।
दुःशासन खींच कर हारा हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥ २ ॥

पिता प्रहलाद को जब लाल खम्बे में बंधाया था।
भरा दरबार था सारा हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥ ३ ॥

कहा जब डाट करके तू बुलाले राम को अपने।
कहां वह है तेरा प्यारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥ ४ ॥

कहा प्रहलाद ने हंस कर हमारा राम है सब में।
नहीं है उससे कुछ न्यारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥ ५॥

निकाला दुष्ट ने खंजर कहा मैं कतल करता हूं।
दिखा तू अपना चमकारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥ ३॥

पिता की देख निष्ठुरता नहीं प्रहलाद घबराया।
लगाया प्रेम से नारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥७॥

मेरे दातारजी अब लाज तो तुमको बचाना है।
तुम्ही हो मूलधन सारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥८॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पुकारा प्रेम से प्रभु को बहाया प्रेम का आँसू ।
कदम पीछे नहीं टारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥९॥

सुनी जब भक्त की बाणी, खम्भ को फाड़ हरि निकले ।
रूप नरसिंह का धारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥१०॥

झपट कर दुष्ट को पकड़ा गिराया हाथ से खंजर ।
पटक कर भूमि पर मारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥११॥

पड़ी जब भीर भक्तन पर हुई जब धर्म की हानी ।
तभी यह मन्त्र उच्चारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥१२॥

तुम्हीं गुरुदेव पितु माता तुम्ही भक्तन के सुख दाता ।
तुम्ही हो बिश्व भरतारा हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥१३॥

कहें यह मंत्र 'गीता नन्द' जपें जो भक्तजन कोई ।
होंय भव सिंधु से पारा, हरि शरणम् हरि शरणम् ॥
यही एक ॥१४॥

० भजन: अरे नर मूढ़ ०

अरे नर मूढ़ तेरी अकल भुलानी रे,
माटी का खिलौना चन्द रोज की निशानी रे ॥टेक॥
जगत सराय बिच रहन न पावेगा ।
खाली हाथ आया पगले खाली हाथ जावेगा ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

माटी का खिलौना चन्द रोज की निशानी रे।
अरे नर ॥ २ ॥

सुतधन धाम कोई काम नहीं आयेगा।
सुन्दर शरीर इक दिन लुट जायेगा।
काहे को तू फूला फूला फिरत गुमानी रे।
माटी का खिलौना चन्द रोज की निशानी रे।
अरे नर ॥ ३ ॥

मांस की पिटारी तेरी क्षण माहिं जलेगी।
भक्ति प्रभू की तेरे संग माहिं चलेगी॥
कहें 'गीतानन्द' चेत कर अभिमानी रे।
माटी का खिलौना चन्द रोज की निशानी रे॥
॥ अरे नर ॥ ४ ॥

० भजन: रे मन मुसाफिर ०

रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा ॥टेक॥

भाड़े के क्वाटर को क्या तू संभाले।
जिस दिन तुझे घर का मालिक निकाले।
इसका किराया भी भरना पड़ेगा ॥काया कुटी ॥१॥

आएगा नोटिस जमानत न होगी।
पल्ले में गर कुछ अमानत न होगी॥
होकर कैद तुझको चलना पड़ेगा।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा॥ रे मन ॥२॥

यमराज की जब अदालत चढ़ोगे।
पूछेगा हाकिम तो क्या तुम कहोगे॥
पापों की अग्नि में जलना पड़ेगा।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा॥ रे मन ॥३॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

मेरी मत मानों यमराज तो मनायेंगे ।
तेरा कर्म दण्ड तुझे मार कर भोगायेंगे ॥
घोर नरक बीच दु:ख सहना पड़ेगा ।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा ॥ रे मन ॥४॥
कहें 'गीतानन्द' फिरेगा तू रोता ।
लख चौरासी में खावेगा गोता ॥
फिर फिर जनम और मरना पड़ेगा ।
काया कुटी खाली करना पड़ेगा ॥ रे मन ॥५॥

० भजन : हरि ॐ तत्सत ० 7

हरिः ॐ तत्सत् इसी के सहारे,
जीवन की नौका बही जा रही है ॥टेक॥
नहीं जानता हूं ये नैया हमारी,
गलत जा रही या सही जा रही है ॥हरिः ॐ॥१॥
कोई वेद वक्ता कोई ब्रह्म ज्ञानी,
कोई कहता है मैं हूं लोकों का स्वामी ।
कोई कहता है जग के झूठे झमेले,
कहीं सत्य दुनियाँ कही जा रही है ॥हरिः ॐ॥२॥
कोई कहता ईश्वर, क्या है, कहां है,
दिखा दो मुझे मेरे आगे बिठा कर ।
सभी वेद शास्त्रों को झूंठा बताकर,
नास्तिकों की राह गही जा रही है ॥हरिः ॐ॥३॥
कोई कहता अल्लाह अकबर खुदावन्द,
कोई कहता ईसामसी आदि हैं वे ।
इसी भांति आपस में लड़ते झगड़ते,
अनमोल आयु ढही जा रही है ॥हरिः ॐ॥४॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

हुआ सख्त वारण्ट जारी प्रभू का,
पुलिस रूप यमदूत संग ले चले हैं।
महल धन वतन पल में छूटे ये सारे,
दमड़ी भी संग में नहीं जा रही है ॥हरिःॐ॥५॥
कपट झूँठ चोरी, दगाबाजी करके,
गरीबों के आंसू बहा धन को जोड़ा।
कहें 'गीतानन्द' सारी दौलत तुम्हारी,
यहां की यहीं पर रही जा रही है ॥हरिःॐ॥६॥

॥ भजन : जीवन दो दिन का ॥

भज मन सीता राम, जीवन दो दिन का ॥ टेक ॥
गर्भवास में भजन कबूल्यो, बाहर आय बचन सब भूल्यो,
रूप रङ्ग के मद में फूल्यो, देख्यो गोरा चाम,
जीवन दो दिन का ॥ भज ॥१॥
जिस काया को रोज सजावे, मल मल साबुन तेल लगावे,
इक दिन माटी में मिल जावे, पड़े दूत से काम,
जीवन दो दिन का ॥ भज ॥२॥
ऊंचे महल सेज सुख दायी, भूषण बसन हैट नकटाई,
पल में सब से होय बिदायी, संग न जाय छदाम,
जीवन दो दिन का ॥ भज ॥३॥
मन इन्द्रिन को बस कर लीजे, घड़ी पलक में उमरा छीजे,
'गीतानन्द' देर मत कीजे, भजलो आठों याम,
जीवन दो दिन का ॥ भज ॥४॥

॥ भजन : मुसाफिर करले तैयारी ॥

मुसफिर करले तैयारी अगर कुछ दूर जानी है।
भला इस प्लेटफारम पर कहाँ किसका ठिकाना है ॥टेक॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

जगत यह रेल गाड़ी हैं, महल डिब्बे के सम जानो।
कुटुम डिब्बे के साथी हैं, टिकिट आयु ही माना है ॥
॥ मुसाफिर॥१॥

मुसाफिर बारी बारी से सभी चढ़ते उतरते हैं।
जनम लेना ही चढ़ना है, मृत्यु ही उतर जाना है ॥
॥मुसाफिर॥२॥

शिवोऽहं मंत्र बामक पास लो साहब गुरूजी से।
अगर जमदून टीटी से नहीं भय रंच खाना है ॥
॥मुसाफिर॥३॥

सत्य की सीट पर बैठो सुखी हो आत्मानन्द में।
लो'गीतानन्द'का अनुभव न रोना है, न गाना है ॥
॥ मुसाफिर॥४॥

० भजन : मेरे स्वामी सतगुरु ०

मेरे स्वामी सत् गुरु देव, खबर मेरी लेव,
देर मत कीजै, धोखे में उमरा छीजै ॥टेक॥

दुःख को सुख हमने जाना, विषयों में फिरत भुलाना,
अब करहु कृपा भगवान, ज्ञान का दान, दया करि दीजै,
धोखे में उमरा छीजै ॥ मेरे स्वामी ॥१॥

विषयों से होय छुटकारा, सत्संग लगे मोहे प्यारा,
मेरा निर्मल होवे अङ्ग, सदा सत्संग, प्रेम रस पीजे,
धोखे में उमरा छीजै ॥मेरे स्वामी ॥२॥

तीरथ अनेक फिर आया, गिरि कानन में बहु धाया।
नहीं हुआ आत्म का बोध किया अति शोध शरण में लीजै,
धोखे में उमरा छीजै ॥ मेरे स्वामी ॥३॥

कहें गीतानन्द पुकारी, सत्संग करो नर नारी,
यह है तरने का ढङ्ग, सदा सत्संग, अमिय रस पीजै,
धोखे में उमरा छीजे ॥ मेरे स्वामी ॥४॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

।। भजन : सच्चिदानन्द धन ।।

सच्चिदानन्द धन, पाके मानुष का तन, तू भुलाना,
काहे फिरता है बन कर दिवाना ।। टेक ।।
माया, के बन्धन को तोड़ो, सच्चिदानन्द में प्रीति जोड़ो ।
झूठा संसार है, माया बाजार है, सब जहाना,
काहे फिरता है बन कर दिवाना ।। सच्चिदानन्द ।। १ ।।
बन्धु सुत दास दासी घनेरे, संग कोई न जायेंगे तेरे।
मूढ़ पछतायगा, छूट सब जायगा, धन खजाना,
काहे फिरता है बन कर दिवाना ।। सच्चिदानन्द ।। २ ।।
होवेगी तेरी यह काया, तेल मल करके जिसमें नहाया ।
सुन्दर गोरा यह तन, राख जावेगा बन, फिर न आना,
काहे फिरता है बन कर दिवाना ।। सच्चिदानन्द ।।३।।
नन्द' कहें सुन सुन सयाना, यह दुनिया मुसाफिर खाना ।
मोह माया तजो, निशदिन हरि को भजो, तज बहाना,
काहे फिरता है बन कर दिवाना ।। सच्चिदानन्द ।। ४।।

।। भजन कर बीती जात ।।

भजन कर बीती जात घड़ी ।। टेक ।।
स में भक्ति कबूली रक्षा आन करी ।
तुम्हारा करब हम साहिब पक्का कौल करी ।।भजन कर।।१।।
के आय हवा जब लागी माया अमल करी ।
यत मुसकात गोद में किलकत कठिन करी ।।भजन कर ।।२।।
पियत ऐंडात गलिन में वह चरचा बिसरी ।
भये तरुणी संग लागे कहो अब कैसे करी ।। भजन कर ।। ३ ।।
भये तन कम्पन लागे कंचन जाति खरी ।
कबीर सुनो भाई साधो वृथा ही उमरि गरी ।। भजन कर ।।४।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० भजन : करनी सो करले आज ०

करनी सो करले आज खबर नहीं कल की।
आयु नित कमती होय रोज क्षण पल की ॥ टेक ॥

तू गर्भवास में भारी कष्ट सहे था,
तेरे आस पास में मल और मूत्र बहे था।
तेरा नीचे सिर ऊपर को पैर करे था,
तू पड़ा नरक में राम ही राम रटे था।
तेरो दिन रैन करूंगो भजन विपति कर हलकी ॥ करनी सो ॥१॥

तब हरि की माया फिरी निकाला दुख से,
तू दुद्धी घुट्टी पीवने लग गया सुख से ।
फिर मात पिता की गोद रहन लगा सुख से,
निरमुख हो गया तू हाय राम के रुख से ॥
तेरी बाल आवस्था इसी तरह से टलगी ॥ करनी सो ॥ २॥

तेरा बचपन गुजरा फेर जवानी जागी ।
तब मद में अन्धा भया नारि संग लागी।
नहीं लिया राम का नाम अरे निरभागी,
नहीं धोकर दिल के दाग बना बेदागी ॥
तेरी रतन जवानी इसी तरह से ढलेगी ॥ करनी सो ॥ ३॥
तेरी गई जवानी फेर बुढ़ापा आया,
सब इन्द्री दुर्बल भई सिकुड़ गई काया।
तब रोग जाल ने आकर तुझे दबाया,
तू अन्त समय सिर धुन-धुन कर पछिताया ॥
फिर मरण काल में लई सुमिरनी छल की ॥ करनी सो ॥ ४॥

० भजन : करो रे मन उस दिन की ०

करोरे मन उस दिन की तदबीर ॥ टेक ॥

भव सागर एक नदी बहत है जल बाढ़े गम्भीर।
गहरी नदिया नाव पुरानी खेवटिया बेपीर ॥ करोरे० ॥ १॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

यमराज लेन तोहि आवे, तनिक धरे नहीं धीर ।
मार मुग्दर प्राण निकारें, नैनन बरसेंगे नीर ।। करोरे० ।। २ ।।
यमराज खम्भ से बांधे, व्याकुल होय शरीर ।
ऐंठी तेरी चातुर नारी, कोई न बंधावे धीर ।। करोरे० ।। ३ ।।
मुल्क की कौन चलावें, संग न चले शरीर ।
कबीर सुनों भाई साधो, वहां न चलेगी तकसीर ।। करोरे० ।।४।।

० भजन : मूरख छांड़ि वृथा अभिमान ०

छांड़ि वृथा अभिमान ।। टेक ।।
बीत चल्यो है तेरो, दो दिन का महमान ।। मूरख० ।। १ ।।
अनेक भये पृथ्वी पर, रूप तेज बलवान ।
बचा इस काल व्याल से, मिट गये नाम निशान ।। मूरख० ।।२।।

धाम धन गज रथ सैना, नारी चन्द्र समान ।
समय सबहीं को तजकर, जान बसे शम्शान ।। मूरख० ।। ३।।
कुसंग भ्रमत विषयन में, जाविधि मर्कट श्वान ।
बैठ न सुमिरन कीनो, जासों होय कल्यान ।। मूरख०।।४।।
मूढ़ अन्त जनि भटके, मोर कहा अब मान ।
वृजराज कुँवर सों, वेगहिं कर पहचान ।।मूरख० ।। ५ ।।

० भजन : हरिनाम सुमिर ०

सुमिर सुखधाम जगत में, जीवन दो दिन का ।। टेक ।।
कपट कर माया जोडी, गर्व करे धन का ।
छोड़ कर चला मुसाफिर वास हुआ वन का ।।हरिनाम०।।१।।
काया देख लुभाया, लाड करे तन का ।
श्वास बिखर गई माटी, ज्यों माला मन का ।।हरिनाम०।।२।।
नारी लगे प्यारी, मौज करे मनका ।
बली का लगे तमाचा, भूल जाय ठनका ।। हरिनाम० ।। ३ ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यह संसार स्वप्न की माया, मेला पल छिन का ।
ब्रह्मानन्द भजन कर बन्दे, नाथ निरंजन का ।। हरिनाम० ।। ४ ।।

० भजन : भजन श्याम सुन्दर का करते रहोगे ०

भजन श्याम सुन्दर का करते रहोगे,
तो संसार सागर से तरते रहोगे ।। टेक ।।
कृपा नाथ वेशक मिलेंगे किसी दिन
जो सत्संग पथ से गुजरते रहोगे ।। भजन० ।। १ ।।
चढ़ोगे सभी के हृदय में सदा तुम,
जो अभिमान गिरि सेउतरते रहोगे ।। भजन० ।। २ ।।
न होगा कभी क्लेश मन को तुम्हारे,
जो अपनी बुराई से डरते रहोगे ।। भजन० ।। ३ ।।
छलक पड़ेगा कृपा सिन्धु का दिल ।
जो द्रग विन्दु से रोज भरते रहोगे ।। भजन ।। ४ ।।

० भजन : सब कुछ जीवन को व्यवहार ०

सब कुछ जीवन को व्यवहार ।। टेक ।।
मात पिता भाई सुत बान्धव अरु पुनि गृह को नार ।। सब कुछ ।। १ ।।
तन से प्राण होत जब न्यारो टेरत प्रेत पुकार ।
आध घड़ी कोऊ नहिं राखत घरते देत निकार ।। सब कुछ ।। २ ।।
मृग तृष्णा ज्यों जग रचना यह, देखो हृदय विचार ।
कह नानक भज राम नाम नित जाते होय उद्धार ।। सब कुछ ।। ३ ।।

० भजन : राम सुमिर राम सुमिर यही तेरा काज है ०

राम सुमिर राम सुमिर यही तेरा काज है ।। टेक ।।
विषयन को संग त्याग प्रभुजी की शरण लाग ।
सत्य एक राम नाम झूठा सब साज है ।। राम सुमिर ।। १ ।।
स्वप्ना ज्यों धन पिछान काहे पर करत मान ।
बालू की भीत जैसे बसुधा का राज है ।। राम सुमिर ।। २ ।।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

नक जन कहत बात विनसि जैहैं तेरा गात ।
क्षण क्षण कर गया काल जैसे जात आज है ।। राम सुमिर ।। ३ ।।

० भजन : काहे रे बन खोजन जाई ०

काहे रे बन खोजन जाई ।। टेक ।।
सर्व निवास सदा अलेपा तोही संग समाई ।। १ ।।
पुष्प मध्य ज्यों वास बसत है, मुकर माहिं ज्यों काई ।
तैसे ही हरि बसें निरन्तर, घट ही खोजों भाई ।। २ ।।
बाहर भीतर एकहिं जानो, यह गुरु ज्ञान बताई ।
कहै नानक बिन आंपा चीन्हे, मिटे न भ्रम की काई ।। ३ ।।

० भजन : सुकरात का सिकन्दर के प्रति ०

सिकन्दर से कहा सुकरात ने जब हिन्द में जाना ।
हमारे वास्ते भारत से कुछ सोगात ले आना ।।
जहां तक हो सके तुझसे ले आना कृष्ण की गीता ।
शहन्शाह भूल मत जाना कहानी राम अरु सीता ।।
यद्यपि मुश्किल से आयेगा वो गंगाजल भी ले आना ।
जिसे पीकर के ऋषियों ने वेदों के तत्व को जाना ।।
वहाँ के बाँस की एक बांसुरी भी साथ में लाना ।
बजाके हम भी देखेंगे कि कैसा स्वर है मस्ताना ।।
वहां जाकर सिकन्दर मुझको बृज की धूल भी लाना ।
कि जिसमें लेटकर बृज वासियों ने ब्रह्म को जाना ।।
हमारे वास्ते भारत से एक ज्ञानी गुरु लाना ।
सीखेंगे हम भी सच्चिदानन्द रूपी ब्रह्म को पाना ।।

✧ सनातन धर्म का महत्व ✧

० हरि गीत छन्द ०

ब्रह्मादिज सकल सनकादिक मुनि कपिलादि जे सर्वज्ञ थे,
मुनि व्यास आदि वशिष्ठ जे अद्वैत के मर्मज्ञ थे ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इन सर्व से उपदिष्ट जो श्रुति विहित निर्मल कर्म है,
वो ही अनादि अनन्त व्यापक यह सनातन धर्म है ॥ १ ॥
जिसका कि गीता में किया भगवान ने निर्देश है,
सुपुराण निगमागम सभी के तत्व का उपदेश है ।
जो सर्व प्राणी मात्र का कल्याण कारक कर्म है,
वो ही अनादि अनन्त व्यापक यह सनातन धर्म है ।। ॥२॥

जो धर्म 'धारयतीति' धर्म विश्व का धारण करे।
है ईश्वरीय महान यह भवजन्म दुख सारे हरे ।
जिसका विभाजन सांख्म योग उपासना निष्कर्म है,
वो ही अनादि अनन्त व्यापक यह सनातन धर्महै ॥ ३ ॥

जो एक लक्ष प्रमाण वाले वेद का विज्ञान है,
विज्ञान का भी सार जो सिद्धान्त गीता ज्ञान है ।
वर्णादि के अनुसार जो इसका विभाग स्वधर्म है,
वो ही अनादि अनन्त व्यापक यह सनातन धर्म है ॥ ४ ॥

उस धर्म के मर्मज्ञ का सत्सङ्ग करना चाहिए,
सत्सङ्ग से मानव सुलभ धर्मज्ञ होना चाहिए ।
धर्मज्ञ हो निज धर्म मय जीवन बनाना चाहिए,
इस हेतु 'शंङ्कर' भेंट यह स्वीकार करना चाहिए ॥ ५ ॥

★ मानवीय कर्तव्य ★

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥टेक॥
विचार लो कि मृत्यु हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो न किन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी ।
हुई न यों सुमृत्यु तो वथा मरे वृथा जिये,
मरा कदा वही कि जो जिया न विश्व के लिये ॥
यही पशु प्रवृति है कि आप आपही चरे ॥ वही मनुष्य० ॥ १ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

क्षुधार्त रन्तिदेव ने करस्थ थाल दे दिया,
तथा दधीचि ने परार्थ अस्थि जाल दे दिया।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान दे दिया
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर चर्म दे दिया ॥
नित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे ।। वही मनुष्य० ।।२।।

रहो न भूल के कभी मदान्ध तुच्छ वित्त में,
समर्थ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन हैं यहाँ त्रिलोकी नाथ साथ हैं,
दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं ॥
व भाग्य हीन है अशुद्ध भाव जो भरे ।। वही मनुष्य० ।।४।।

चलो अभीष्ट मार्ग पर सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति विघ्न जो पड़ें उन्हें धकेलते हुए।
घटे न हेल मेल हां बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पन्थ हो सतर्क पन्थ हों सभी ॥
ही समर्थ भाव हैं कि तारता हुआ तरे ।। वही मनुष्य० ।।४।।

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार व्यक्ति की सदैव कीर्ति गूँजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती ॥
ड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे ।। वही मनुष्य० ।।५।।

० प्रभाति ०

गो सज्जन वृन्द हमारे, मोह निशा के सोवन हारे ।। टेक ।।
गो जागो हुआ सबेरा, मोह निशा का उठ गया डेरा।
न भानु ने किया उजेरा, आशा दुखद अस्य भये तारे ।। जागो।।१।।
ह संसार जगत सब सपना, सुत दारा कोई नहीं अपना।
या तेरा छोड़ कल्पना, माया मोह तजो अब प्यारे ।। जागो ।।२।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

काम क्रोध ने जीव खजाना, सोते पर लूटा मन माना
तुमने कुछ न अभी तक जाना, ऐसे मस्त पड़े मतवारे ॥ जागो ॥३॥
यह संसार रात्रि है भारी, सोतो जिसमें दुनियां सारी।
जगते कोई संत व्रतधारी, परमारथ पथ के उजियारे ॥ जागो ॥४॥
जानो तभी कि अब हम जागे, जब मन विषयों से खुद भागे।
पूरण चित्त राम में लागे, जिसको पाकर संत सुखारे ॥ जागो ॥५॥
जग कर संत शरण में जाओ, जाकर राम नाम चित लाओ।
पूरन शांति हृदय में पाओ, मिट जाये भय संकट सारे ॥जागो ॥६॥

दोहा—कथा कीर्तन कलि विषे, भवसागर की नाव।
कहें कबीर इसके बिना, दूजा नहीं उपाव ॥

★ संकीर्तन ध्वनियाँ ★

१—जय जय गणेश कृपा कीजे महेश दयाधारी।
तेरे भक्तों पे संकट है भारी,

२—राम कृष्ण हैं कृष्ण राम हैं, एक सूर्य दो ज्योति।
राम कहो चाहे कृष्ण कहो, दोनों से मुक्ति होती ॥

३—अच्युतं केशवं रामा नारायणं, कृष्ण दामोदरं वासुदेवं भजे।
श्री धरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे॥

४—भव भय हरणं मंगल करणं, प्रभु तुम शरणं शंकर हरि ॐ।
भव भम हारी मंगलं कारी, प्रभु त्रिपुरारी शंकर हरि ॐ॥

५—तू राम नाम मन भजियों रे, ईश्वर को ना तजियो रे।
नित हरी का सुमिरन करियो रे भव सागर तरियो रे॥

६—हे राम रमापति स्वामी, दर्शन दो अन्तर्यामी।
हम विनय करें चरणों में पड़े॥

७—तू राम भजन कर प्राणी तेरी दो दिन की जिन्दगानी।
रघवीर सुमिर चरणों में गिर॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

० कीर्तन मारवाड़ी ०

सीताराम ने भजिने लावो लीजिये रे ।
मुख राम कृष्ण राम कृष्ण कीजिये रे ।

० हरि बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी ०

रि बोल मेरी रसना घड़ी घड़ी ।। टेक ।।
र्थ बिताता है क्यों जीवन, मुख मन्दिर में पड़ी पड़ी।। हरिबोल।।१।।
ल उठे जिसमे तेरी यह, इस काया में कड़ी कड़ी।। हरिबोल।।२।।
न सुधा रस बरसादे प्रभु, बूँद बूँद से झड़ी झड़ी ।। हरिबोल ।।३।।
त निकाल गोविन्द नामको, स्वांस स्वांस सेलड़ी लड़ी ।। हरिबोल४।

० कीर्तन : बोले तो बोले जा ०

ले तो बोले जा, हरिनाम बोलेजा ।। टेक ।।

रना है तो करता जा, सन्त, समागम करता जा ।
ना है तो खाता जा गम का खाना खाता जा ।।बोले तो० ।। १ ।।

ना है तो गाये जा, गोपाल नाम गाये जा ।
लना है तो चलता जा, सत्य धर्म पर चलता जा।।बोले तो० ।।२।।

ड़े तो छोड़े जा, राग द्वेष को छोड़े जा ।
पना है तो जपता जा, मन की माला जपता जा ।।बोले तो० ।।३।।

रना है तो डरता जा, पाप कर्म से डरता जा ।
वना है तो नवता जा, हरि चरणों में नवता जा ।। बोले तो० ।।४।।

रना है तो तरता जा, भव सागर से तरता जा ।
ना है तो देता जा, दान अन्न का देता जा ।। बोले तो० ।।५।।

रना है तो धरता जा, हरि हीरा हिय धरता जा ।
ढ़ना है तो पढ़ता जा, वेद शास्त्र को पढ़ता जा ।।बोले तो० ।।६।।

चना है तो बचता जा, परनिन्दा से बचता जा ।
ले तो भूले जा, सुकृत करके भूले जा ।।बोले तो० ।।७।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

मारे तो मारे जा, काम क्रोध को मारे जा।
सेवे तो सेवे जा, गुरु चरणों को सेवे जा ।। बोले तो० ।।८।।

० कीर्तन : राम चरण सुखदाई ०

राम चरण सुखदाई, भजन करो भाई यह जीवन दो दिन का ।।टेक।।
यह मानव माटी का ढेला, बूँद पड़े गल जाई।
भजन करो भाई यह जीवन दो दिन का ।। रामचरण० ।।१।।
यह मानव कागज की पुड़िया, हवा चले उड़ जाई।
भजन करो भाई यह जीवन दो दिन का ।। रामचरण० ।।२।।
यह मानव पानी का बुदाबुदा, छिन में ही गल जाई।
भजन करो भाई यह जीवन दो दिन का ।।रामचरण० ।।३।।

० कीर्तन : जपले नमः शिवाय ०

तेरी पल पल बीती जाय, मुखसे जपले नमः शिवाय ।। टेक।।
शिव शिव नाम हृदय से बोलो, मन मन्दिर का परदा खोलो।
तेरी आयु निष्फल जाय, मुख से जपले नमः शिवाय ।।१।। तेरी।।
ये दुनियां पन्छी का मेला, मानव यह उड़ जाय अकेला।
सगे सब सम्बन्धी रह जांय, मुखसे जपले नमः शिवाय ।।२।। तेरी
मुसाफिरी जब पूरी होगी, चलने की मजबूरी होगी।
तेरा तन मन धन छुट जाय, मुखसे जपले नमः शिवाय ।।३।। तेरी।।
शिव पूजन में मस्त बने जा, भक्ति सुधारस पान किये जा।
दर्शन दिव्य ज्योति हो जाय, मुखमें जपले नमः शिवाय ।।४।। तेरी।।

० कीर्तन : कृष्ण गोविन्द गोपाल ०

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो,
मन को विषयों के विष से हटाते चलो।
देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगें,
रात दिन इनको संयम के कोड़े लगें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

रथ को सुमारग चलाते चलो. कृष्ण गोविन्द..............॥१॥
जपते रहो काम करते रहो,
पाप की वासनाओं से डरते रहो।
धन का खजाना बढ़ाते चलो, कृष्ण गोविन्द..............॥२॥
जायें मगर नाम भूलो नहीं,
दु:ख में तड़पो नहीं सुख में फूलो नहीं।
भक्ती के आंसू बहाते चलो, कृष्ण गोविन्द..............॥३॥
आयेगा उनको कभी न कभी
भक्त पायेगा उनको कभी न कभी।
विश्वास मन में बैठाते चलो, कृष्ण गोविन्द..............॥४॥

० कीर्तन : प्रेम से बोलो ०

से बोलो रे जय-जय सीताराम, प्रेम से बोलो रे................
भाग्य मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा॥
सब खोटे काम वृथा मत डोले रेल जय जय सीताराम॥१॥
क्रोध पर निन्दा त्यागो, भगवद्भक्ती में मत पागो॥
बहुत दिनों अब जागो, कौड़ी लगे न दाम प्रेम से बोलो रे॥
॥ जय जय सीताराम॥२॥
नाम है रतन अमोला, एक रती अरु बावन तोला॥
जनों ने खब टटोला, बिगड़े बन जाय काम प्रेम से बोलो रे॥
॥ जय जय सीताराम॥३॥
द्वेष प्रेम मिलन हो हरी नाम का नित कीर्त्तन हो॥
ग्राम घर-घर हरि ध्वनि हो, देश बने हरि धाम प्रेमसे बोलोरे॥
॥ जय जय सीताराम॥४॥
घड़ी को शीघ्र सम्भालो, राम नाम ले जन्म सुधारो॥
कौड़ी लगे न दाम प्रेम से बोलो रे॥ जय जय सीताराम॥५॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

◈ कछुक देर धीरज—वीरवृत्त छन्द ◈

कछुक देर धीरज उर धरिये क्यों अस धीर रहा अकुलाय।
धीरज त्यागि दयेउ दसरथ ने तनु तजि सुरपुर पहुंचे जाय॥
तजेउ न धीरज कौशल्या ने वन से राम मिले पुनि आय।
धीरज सरिस हितू नहिं जग में जो संकट में करै सहाय॥ १॥

व्याल ग्रसै हरि के वाहन को विनु पर पक्षी उड़ें अकास।
अचल स्वभाव तजे निज मेदिनि इन्दु तजै निज सील प्रकाश॥
बिनु अवसर मर्याद त्याग कर सिन्धु करें सब विश्व विनाश।
ये सब सम्भव धर्म होंहि परि धीर न दुख में होंहि उदास॥२॥

भानु प्रभा को रैनि नसावै, रैनि नसै खद्योत प्रकाश।
व्योम त्यागि निज धर्म देई नहिं व्यक्त पदारथ को अवकास॥
बिनु चिद सत्ता के भ्रम भासै होवै बिनु उपाधि आभास।
ये सब सम्भव धर्म होंहि परि धीर न दुख में होंहि उदास॥३॥

भानु फटे नभ में गर्जन कर विधु के वदन स्त्रवै विषधार।
भूधर उड़ि नभ में टकरा कर खण्ड खण्ड हो गिरें अगार॥
पवन वेग सों अवनि प्रकम्पन होइ मचे जग हाहाकार।
तजें न धीरज धीर सहें तन ऐसे विघन अनेकन वार॥४॥

प्रलय काल के वारिद नभ से छोड़ें नीर मूसलाधार।
बढ़वानल की प्रबल प्रभा सों स्वर्ग तचै सुर करें पुकार॥
तारे टूटि गिरें भूतल पर हों ऐसे उतपात अपार।
तजें न धीरज धीर सहें तन ऐसे विघन अनेकन बार॥ ५॥

अनल ताइ घन की चोटन सों लोहा बने तेग की धार।
धीर कहाये वे नर जिन्होंने हँसकर सही विपति की मार॥
अल्पकाल की पाइ आपदा ऐसो गयो तु सहिस हार।
मोइ सपथ है श्री गंगे की जो न करउँ भवसागर पार॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

० कवित्त : (प्रताप) मंगल मनाया ०

जङ्गल मनाया धूल जङ्गल की छान कर,
डिगा पाया प्रण से न बच्चों के बिलाप ने।
सिंहकेन्द्र पाया सुख करके स्वदेश सेवा,
सच्चा स्वर्ण रंग चमकाया दुख ताप ने।
भक्त पुजारी है बनाया मातृ मन्दिर का,
सुखद स्वतन्त्रता के महा मंत्र जाप ने।
गाया राग वीरता का स्वार्थ का दिखाया त्याग,
गौरव बढ़ाया वीर भूमि का प्रताप ने।

० कवित्त : खेत खोपड़ी पड़ी रही ०

नाका वीर वंश की विभा का करने को ख्यात,
विजय पताका रण भूमि में गढ़ी रही।
सिंहकेन्द्र वीरता के बाने को न जाने दिया,
झुकने न पायी मूँछ ऊँची ही खड़ी रही॥
हिम्मत न हार बार बार ललकार कर,
रिपु मारने की चाह चित्त में अड़ी रही।
सीने चोट झेल झेल जान पर खेल वीर,
खेल गए खेल खेत खोपड़ी पड़ी रही॥

अर्जुन की मातृ भक्ति तथा माता का आर्शीवाद ✧

ऐरावत पूजन : कवित्त

भादों के महीना में जब आई है गणेश चौथ,
गान्धारिनि रानी गज पूजिबे की, ठानी है।
करिके सलाह सब नगर में बुलाये दिये,
कुन्ती न बुलाई जिमि भारत की निशानी है॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

आईं सब चन्द्रमुखी गावति अनेक राग,
सुन कर आवाज महारानी वहां आई है।
गान्धारिनि रानी गज पूजिवे अकेली गई,
देखि के अनादर कुन्ती मन में दुख्यानी है॥१
बैठी है उदास सो उसांस लेति गहरे-गहरे,
मन है मलीन द्युति मुख कुम्हिलानी है।
हौनहार बलवान रोके से रुकति नाही,
आय गयो अर्जुन जहां बैठी महारानी है।
माता को उदास देखि दोऊ कर जोरि कहै,
छुइके चरण अर्जुन बोलौ मृदु बानी है।
एहो अम्बारानी कैसे नैननु में पानी,
जौजू मेरी जिन्दगानी मातु काहे पै दुख्यानी है॥२
बेटा गाँधारिनि के भाग्य की मैं कहां लौ बड़ाई करूँ,
ऐसी उग्र भागी जाने पुत्र शत पाये हैं।
सम्पत्ति में गर्व करि कुल कानि मेटि दई,
मेरी करी निन्दा दिये नगर में बुलाये हैं॥
मेरे तो हैं पांच तुमपे कहा उनकी सरवरि होइ,
आज उनके ऐरावत सोने के बनाये हैं।
कर्मन की हारी कछू कसर न तिहारी मेरी,
निन्दा करी भारी मन आवत पछिताये हैं॥३
तेरे तो पांचन को लाख हू न पाइ सकें,
गान्धारिनि के सौऊ सुत कीड़ा के समान हैं।
सम्पत्ति में गर्व करि कुल कानि मेंटि दई,
तोको ना बुलायो वाको हाथी को गुमान है॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

तो काहे को उदास होइ मन मांहि मातु मेरी,
हस्तिनापुर मे मारूँ सारे वैरिन के मान हैं ।
तेरो सुत कहाऊँ इन्द्र ऐरावत मंगाऊँ,
और तेरे हाथ पुजाऊँ मेरे कर में धनुषबाण हैं ॥ ४ ॥

सिद्धि श्री परम पिताजी को प्रणाम लिखि,
लिखि रह्यो चिट्ठी लीनी द्राति कमल कर में ।
गान्धारिनि रानी गज पूजिबे अकेली गई,
हैकें तो दुखित मातु बैठी है भवन में ॥
माता को उदास देखि गज की प्रतिज्ञा करी,
दुखी देखा मैया जब क्रोध बाढ़ौ तन में ।
क्रोध के बढ़े से ज्ञान नष्ट होत सबही को,
ऐरावत भेजो बात समझ लेउ मन में ॥ ५ ॥

रण में दिये ते भारी जगत बीच कीर्ति होइ,
वैरिन के मान मरें सत्य राखूँ प्रण मैं ।
मैंने तो प्रतिज्ञा इस बात की करी है नाथ,
मात पूजे गज कि ये प्राण नहीं तन में ॥
या तो भेजो ऐरावत नहीं बोलि लेउ सेनापति,
पिता अरु पुत्रन को खाडो बाजे रण में ॥ ६ ॥

लिखिके चिठ्टी लिफाफा मांहि बन्द करी,
ऊपर कीन्हे दसकत जानें बांधि दीन्हीं बाण से ।
बाण माहीं चाह्यो क्रोध तन बीच छायो जाके,
क्रोधित पंचानन जैसे देखे अभिमान से ॥
कृष्ण के चरण को प्रणाम करि बार बार ।
श्रवण लागी तांनि वाण छोड़ो है कमान से ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

बाण सर सरानो और घन जू गहिरानो पुनि,
इन्द्र की सभा में जाइ गिरो आसमान से ॥७
बाण का प्रकाश मानों चपला सी गिरी है आइ,
देख-देख दसकत सब देव घबराइ रहे।
अर्जुन को बाण जाने कहा उत्पात लायो,
सुनने को अहवाल सारी प्रजा को बुलाइ रहे ॥
खोलकर लिफाफा खत बाचि लियौ देवन ने,
पुत्र मांगे हाथी ऐसे इन्द्र को सुनाइ रहे।
या तो देवो ऐरावत नहीं युद्ध को तैयार होउ,
देवन की वाणी सुनि इन्द्र मुसिकाइ रहे ॥८
देव घबराने लखि इन्द्र ने जवाब दियो,
धीरज धारो देव तुम मत घबराओ जू।
हाथी हू न जाइ और युद्ध हू न करनो पड़े,
मेरी एक बात तुम विचार बीच लाओ जू ॥
तुम तो देव ज्ञानी यह मनुज अज्ञानी ही है,
मेरी एक वाणी तुम कागज पै लिखाओ जू।
कैसे तो तुम युद्ध को तैयार भये बाण साधि,
हाथी तो तैयार कहूं रस्ता हू बताओ जू ॥९
इन्द्रजू की वाणी सब देवन मन भाइ गई,
लेके कागज कलम पत्र अर्जुन को बनायो है ॥
लिखि के तो चिठ्टी लिफाफा के मांहि बन्द करी,
देवन को भेजौ पत्र अर्जुन पै आयो है ॥
बाँचि लई चिठ्टी जब फरकि उठे भुजदण्ड,
दसकत देखे इन्द्र के जब मन में सुख पायो है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

इन्द्र की असीस सब देवन ने बानी लिखी,
हाथी तो तैय्यार कहूं रस्ता हू बनायो है ॥ १० ॥

...ने लई चिट्ठी जब फरकन लागे भुज दण्ड,
मन है प्रसन्न लहरें उठी बदन से ।
...ी में सामान धरि मातु गज पूजिवे को,
दे दे तू बुलाये बाम आवें घर घर से ॥
...ा ने लिखी हूं पाती रस्ता तो तैयार करो,
क्षण में बनाऊं जो मैं पैदा तो उदर से ।
...ा के चरण को प्रणाम करि बार बार,
लेके धनुषवान आयो बाहर नगर से ॥ ११ ॥

...न को सुमिर गुरु द्रोण को प्रणाम कर,
व्यास को मनाइ वाण कर में सम्हारे हैं ॥
...हली वार एक हजार छोड़ि दिये वाण जिसने,
अमरपुर जाइ टिके बिना ही सहारे हैं ॥
...जी वार दस हजार तीजी बार एक लाख,
चौथी बार दस लाख क्रोध करि मारे हैं ।
...ांची वार एक करोड़ छोड़ि दिये अर्जुन ने,
ऐसे उड़े जात मानों वमहीं के कारे हैं ॥ १२ ॥

...ठीं वार अरब दस छोड़ि दिये बाण जाने,
सातवीं बार कई खरबन प्रहारे हैं ।
...ठवीं वार नील दस छोड़े बाण अर्जुन ने,
नवीं बार कई पद्मन पतियारे है ॥
...न की संख्या जाने कई बार छोड़ि दई,
वेहू संख छोड़े जैसे जल के फुहारे हैं ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सो थोड़ी सी देर में बनाइ नभ मार्ग दियौ,
जय जय करें देव सब स्वर्ग बीच ठाड़े हैं ।।१३।।
विस्मय करें देव सब आपस में बात करें,
अर्जुन सौ प्रतापी कहो कौन जग जायो है।
देखिये की कौन कहें काहू युग भयो नाहिं,
कानन सुनों न सो तो करिके दिखायो है ।।
मेंट दई मर्यादा लोक सब एक करे,
देवन जाइ किस्सा ऐसे इन्द्र कौ सुनायो है।
हाथी के तो भेजिवे की बात अब कौन रही,
आज वाने सीधो रास्ता स्वर्ग को बनायो है।।१४।।
देव घबराने लखि इन्द्र ने जवाब दियो,
धीरज धारो देव तुम बात मेरी मानि लेउ।
पूजकर हाथी फिर हाल ही रवानों करे,
ऐसे लिख के चिट्ठी जाके माथे हूपे बांधि देउ ।।
तुमने कही हैं सो तो पैंज तुम्हरी पूरी भई,
हाथी को लौटाइ याहि रस्ता को बिगाड़ देउ।
देनों हू पड़ेगो वाने रस्ता हू बनाइ लियो,
जल्दी से सजाइ याहिहस्तिनापुर भेजि देउ ।।१५।।
इन्द्रजू की वाणी सब देवन मन भाइ गई,
हाथी को सजाइ माथे पर गणेश काढ़ो है।
मखमल को पल्हेचा जापर रेशम हू की झूल पड़ी,
मणिन की खौरि ताको होत उजियारो है ।।
सोने ही का औहदा और सोने ही का गुम्मट है,
सोने ही की टलियां जिनका होत झनकारी है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

बांध दियो घन्टा जापर गज गाहन भी डाल दियो,
करके अभिमान यहां से हाथी हू सिधारो है ॥१६॥
कहाँ को लिते जात कहा अकल बीच फेर परो,
मेटूंगो महीद नहीं पृथ्वी पग धारूँगो ।
नाहक उत्पात जानें मेरे संग ठान दियो,
ऐसो अभिमानी जाके मान को विगाऊँगो ॥
स्वर्ग लोक वासी मोहि मृत्यु लोक वासी करी,
काहू की न मानें वाके गर्व को प्रहारूगो ॥
वाणन के रस्तो पर मोहि हस्तिनापुर लिये जात,
सूँडते पकड़ि सारो पिंजर तोरि डारूँगो ॥ १७ ॥
गज सुसकारे जब क्रोध को सम्हारे,
अभिमान पग धारे सर पिंजर पे जाइ के ।
करिके चिंघाड़ बल मार रह्यो बार बार,
सूँडते पकड़ि सो हिलावे रिसियाइ के ॥
छूटो अभिमान जापे एकहू न टूटौं बाण,
आगे को चल्यो है गज मन में लजाइ के ॥
कहत कवि मुरली राम जाके हैं सहाय श्याम,
ताके अभिमान को सकेगो को घटाइ के ॥ १८ ॥
अमरापुरी ते ऐरावत जब पाँव दियो वाणन पे,
मणिन चक चोंधा मृत्यु लोक बीच छायो है ।
हस्तिनापुर के नर नारि ऊपर को दृष्टि करें,
हाथी के तो देखिवे को दिल में उम्हायौ है ॥
पर्वत के समान गज चलो आवै बाणन पै,
एक बोलो अंजी देखौ अबके वह आयो है ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दूजो बोलो कहां आयो बोलो आयो आयो,
चौथो बोलो ठीक ठीक आयो गज आयो है ॥१९॥
गाण्डीव धनुष को टंकोरि रह्यो बार बार,
आवत देखो हाथी अपने पन्थ को सम्हारे जी।
पर्वत के समान गज चलो आवे बाणन पै,
एक टूटे वाण बीस रिस करि मारै जी॥
घण्टन की घनघोर नगर बीच छाइ गई,
उठके कुन्ती रानी अपने बाल सम्हारे जी।
आनन्द के सिन्धु में स्नान करे कुन्ती रानी,
कौन कवि की वाणी इस आनन्द को उचारै जी ॥२०॥
ऐरावत आयो जब द्वार चलौ पाण्डवन के,
थाल को सजाइ कुन्ती आइ गई द्वार पै।
सोने हू को कलश भरि मोतिन को चौक पूर,
जोर के कपूर धरि लाई वह थार पै।
सो पहिले तो भुजा जानें अर्जुन की पूजि लई,
पीछे ते लगायौ टीको हाथी के लिलार पै।
ऐरावत आयो जाके देखिवे को नग्र धायौ,
भीषम के खुशी है सो उदासी परिवार पै ॥२१॥
धूप दीप अक्षतन से पूजन कियो हाथी हू को,
फेरि सुत अर्जुन पै आरती उतारो है।
देति ह असीस तेरी लोकन बीच कीर्ति होय,
धन्य सुत भयो तू मो कोखि को उजारो है।
तैंने तो मान मेरो लोकन बीच राखि लियो,
तेरो रथ हांकेगो वह नन्द को दुलारो है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

पूज कर हाथी वाने हाई ही रवाना कियो,
लैकें धनुष वाण सब रास्ता तोरि डारो है ॥ २२॥

अर्जुन का चरित्र लखि भीषमजी प्रसन्न हुये,
करत हैं प्रशंसा धन्य तोर सुत रावरे।
ऋषि मुनि सृष्टि माहिं भयो नहिं वाण धारी,
तो सो तो तुही है और हैवे को न दावरे॥
पन्थ तें बनायो और बाण पै मतंग लाओ,
पारथ नाम काहायौ करि कृष्ण के आदावरे।
भारत की नीम जमी कहत कवि मूरलीराम,
कृष्ण भजि कृष्ण भजि कृष्ण भजि बावरे॥

इन्द्रिय विजयी वीर अर्जुन

लज्जित हो जाते अरुणाम्बुज, सज्जित कल्प लता के पुंज।
विस्मित हो जाता नन्दन वन, सस्मित शरदचन्द्र सुख पुंज॥१॥

सम्मुख जिस छवि के पड़ जाता, फीका मन्मथ का उपहार।
विश्व सार होता न्यौछावर लगता लघु रति का शृङ्गार॥२॥

वही उर्वशी आज पाण्डु सुत, पाकर सुरपति का आदेश।
प्रेम रसास्वादन करने को, प्रस्तुत हुई अहो रसिकेश॥३॥

उस नितान्त एकान्त रात्रि में, करके मुग्धा ने सत्कार।
आशा है निज भ्रू विलास से, हरलोगे मानस का भार॥४॥

लज्जित हो अवनत मस्तक कर दर्शाते विनम्र व्यवहार।
किया उर्वशी का अर्जुन ने, निज जननी सा शिष्टाचार॥५॥

बोले वन्दनीय तुम मुझ से, कुन्ती माद्री हो साकार।
पुरु वंशज पुरुरवा नृपति की, आप भार्या थी सुकुमार॥६॥

तब क्यों निज बालक से माता, करती नरक प्रद प्रस्ताव।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भरत वंश की जननी को क्या, उचित कभी यह कलुषित भाव ॥७॥
कहा उर्वशी ने यह तो है, स्वर्गधाम का सौख्य विनोद।
जब जो भी आता तप बल से, करता सुख से प्रेम प्रमोद ॥८॥
देवि सत्य है पर अर्जुन से, पूर्ण न होगा तब अनुरोध।
मर्माहित सी हुई उर्विशी, उपजा उसके मन में क्रोध॥९॥
कहा शाप देतीमें तुमको, रहो नपुंसक द्वादश मास ॥
दासी बनकर करो नृत्य, तुम ललनाओं में रास विलास ॥१०॥
धन्य जितेन्द्रिय वीर धनुर्धर धन्य तुम्हारा त्याग महान।
क्यों न तुम्हारे से भक्तों के, बने सारथी श्री भगवान ॥११॥

● श्री शुकदेव जी रम्भा संवाद ●

दो०—मुख इव सन्त समाज को, विषयिन करन विषाद।
वरणों मैं संक्षेप सौं शुक रम्भा संवाद ॥
दो०—व्यास परीक्षा लेन हित, रम्भहिं शुके समीप।
पठयो सो आवति भई, बोली बचन प्रतीप ॥

० रम्भा बोली—सवैया ०

फूलन सेजन सोये कहूं, नहिं मीठि पदारथ को लियो खाई।
भूषण अंवर धारयो नअङ्गन, योग कियो सुख को गये पाई॥
कीजत जेती बिरागमें प्रीति, सौ तेती करौ हममें चित्त लाई॥
जीवन को तबही फल पाइ हों, क्यों दियो वयस वृथाही विताई॥
दों०—प्रेम लपेटे अटपटे सुन रम्भा के बैन।
कह्यौ वचन शुकदेवजी, कियो जगत की भैन ॥

०.शुकदेवजी बोले—सवैया ०

आमिष अस्थि व चाम को आनन, ठीवन तामें भरो अधिकाई
त्यों मल मूत्र मयो उदरो, दुर्गन्ध प्रश्वेद की पूरणताई॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

...व मज्जा सनी सब अङ्गनि, मूरति मोह खरी निठुराई।
...जो नारि को नेही भयो सो, लिया जन नर्क निवास बनाई॥

◈ रम्भा बोली कवित ◈

मुनि शुकदेव बैन चैन सो चतुरि बोली,
देह दुर्गन्धि तिय तुम जो उचारो है।
सो तो मुनि मानो मृषा कहुं सत्य जानो एक,
नयन सों निहारी देखो चरित हमारो है॥
रघुराज एती कहि देवसुन्दरी तुरन्त,
आपनों उदर निज नख से विदारो है॥
फैल गई सुवास दस योजन लों आस पास,
बसुमति ह्वै गई बसन्त को अगारो है॥

० शुकदेवजी बोले : कवित्त ०

कौतुक विलोकि मुनि विहसों ठठाय तहां,
वार-बार रम्भा को सराहि बैन भाख्यो है।
मोहि रह्यो धोको अस आजलों न देख्यो कहूं,
वेद अरु पुराण नारि निन्द्य करि राख्यो है।
रघुराज ऐसो बिना जाने मैं बरस बहु,
नाहक जननि को उदार दुःख चाख्यो है।
सौरभ समोयो स्वच्छ उदर परेखि तेरो,
जने को बहोरि मेरी मन अभिलाख्यो है॥
...हार मान शुकदेव सों, रम्भा शीश नवाय।
बहुरि चली सुरसदन को, गुण अचरज पछिताय॥

० प्राचीन भारतीय ०

गौतम, जावालि, व्यास वामदेव, बाल्मीकि,

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कपिल, कणाद, से महान ब्रह्म ज्ञानी थे।
अर्जुन से वीर अम्बरीश से महान भक्त,
हरिश्चन्द्र कर्ण के समान यहां दानी थे॥
नारद से सन्त सती सीता अनसूया सम,
सत्य सदाचार पूर्ण एक एक प्राणी थे।
ऐसा था हिन्दुओं के भाग्य का अतीतकाल,
सुयश यहाँ के देव लोक की कहानी थे॥

० उत्साह व धैर्य प्रद : पद्य ०

अपने सहायक आप ही होंगे सहायक प्रभु तभी।
बस चाहने से ही किसी को सुख नहीं मिलता कहीं॥
आने दो न अपने निकट औदस्य मय उत्ताप को।
आत्मावलम्बी हो न समझो तुच्छ अपने आपको॥
अति धैर्यता के साथ अपने कार्य में तत्पर रहो।
आपत्तियों के वार सारे वीरवर बनके सहो॥
सब विघ्न भय मिट जायेंगे होगी सफलता अन्त में।
फिर कीर्ति फैलेगी तुम्हारी एक बार दिगन्त में॥

० ज्ञानी बनो—छन्द ०

हे पाठको फिर पूर्वजो के तुल्या तुम ज्ञानी बनो।
भूलो न अनुपम आत्म गौरव, धर्म के ध्यानी बनो।
करदो चकित फिर विश्व को, अपने पवित्र प्रकाश से।
मिट जायं सारे गम तुम्हारे, शुद्ध ज्ञान प्रकाश से॥

० पौराणिक सद्धर्म प्रेम की राह ०

कितना ही संकट आजाये, क्यों बन जायँ उदास।
प्राण जायें या महिमा जाये, हो न न्याय का नाश॥१

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

भले हों निर्धन या धनवन्त, बनें या कुटिया वाले संत।
रहें हम चाहे भूप महन्त, प्रेम की इच्छा रहे अनन्त॥२॥

पौराणिक सद्धर्म यही है, चलें प्रेम की राह।
सदा हो सब के सुख की चाह॥ ३ ॥

० है प्रेम जगत में सार और कुछ सार नहीं ०

कहा घनश्याम ने उद्धव से वृंदावन जरा जाना।
वहां की गोपियों को ज्ञान का कुछ तत्व समझाना॥
विरह की वेदनां में वो सदा बेचैन रहती हैं।
तड़प कर आह भर कर और रो रो कर ये कहती हैं॥ है प्रेम० १॥

कहा उद्धव ने हँस कर मैं अभी जाता हूँ वृंदावन।
जरा देखूं कि कैसा है कठिन अनुराग का बन्धन॥
हैं कैसी गोपियां जो ज्ञान बल को कम बताती हैं।
निरर्थक लोक लीला का यही गुणगान गाती हैं॥हैं प्रेम० २॥

चले मथुरा से जब कुछ दूर वृन्दावन निकट आया।
वहीं से प्रेम ने अपना अनोखा रङ्ग दिखलाया॥
उलझ कर वस्त्र में कांटे लगे उद्धव को समझाने।
तुम्हारा ज्ञान पर्दा फाड़ देंगे प्रेम दीवाने॥ हैं प्रेम० ३ ॥

विटप झुक कर यों कहते हैं इधर आओ इधर आओ।
पपैया कह रहा था पी कहां यह भी तो बतलाओ॥
नदी यमुना की धारा नाद हरिहर का सुनाती थी।
भ्रमर गुंजार से भी यह मधुर आवाज आती थी॥ हैं प्रेम० ४ ॥

गरज पहुचे जहां था गोपियों का जिस जगह मण्डल।
वहां थी शान्त पृथ्वी वायु धीमी व्योम था निर्मल॥
सहस्रों गोपियों के मध्य में श्री राधिका रानी।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

सभी के मुख से रह रह कर निकलती थी यही बानी ।। है प्रेम०॥५॥

कहा उद्धव ने जा करके कि मैं मथुरा से आया हूँ ।
सुनाता हूं संदेशा कृष्ण का जो साथ लाया हूं ।।
कि आत्म शक्ति ही है अलख जो निर्गुण कहाती है ।
तो फिर क्यों मोह वस होकर वृथा गुणगान गाती है।।है प्रेम०॥६॥

अगर निर्गुण हैं हम तुम कौन कहता है खबर किसकी।
अलख हम तुम हैं तो किस किस को लखता है नजर किसकी॥
जो हो अद्वैत के कायल तो फिर क्यों द्वैत लेते हो ।
अरे खुद ब्रह्म होकर ब्रह्म को उपदेश देते हो ।। है प्रेम० ।।७॥

अभी तुम खुद नहीं समझे कि किसको योग कहते हैं
सुनो इस तौर योगी द्वैत में अद्वैत रहते हैं ।
उधर मोहन बने राधा वियोगिन की जुदाई में ।
इधर राधा बनी हैं श्याम मोहन की जुदाई ।। है प्रेम० ॥८॥

कहा राधा ने उद्धव से कि तुम संदेशा खूब लाए हो ।
मगर ये याद रक्खो प्रेम की नगरी म आये हो ।।
सम्भालो योग की पूंजी न हाथों से निकल जाये ।
कहीं विरहाग्नि में यह ज्ञान की पोथी न जल जाये ।। है प्रेम०॥९॥

सुना जब प्रेम का उद्वेग उद्धव की खुली आँखें ।
पड़ी थी ज्ञान मद की धूल जिसमें ये धुली आखें ।।
हुआ रोमांच तन में बिन्दु आँखों से निकल आया ।
गिरे श्री राधिका पद पर कहा गुरु मन्त्र है पाया ।। है प्रेम०॥१०॥

० गोपियो का उद्धव के प्रति कवित्त ०

जब न जिय में प्रेम तब कीजै व्रत नेम,
जब कंज मुख भूलें तब संयम विषेखिये ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

आस नहीं पीकी तब आसन ही वांधियतु,
सासन के सांसन को मूंदि पति पेखिये,
नखते सिखालों जब श्याममयी वाम भई,
बाहर ह्वै भीतर न दूजो देव लेछिये।
योग करि मिलें जो वियोग होय प्रीतम को,
ह्याँ न हरि होय तब ध्यान धरि देखिये॥

० कवित्त : उद्धव के प्रति श्याम तन ०

श्याम तन श्याम मन श्याम है हमारो धन,
आठों याम ऊधो हमें श्याम ही सों काम है।
श्याम हिये श्याम जिये श्याम बिना नाहिं तिये,
अन्धे की सी लाकड़ी अधार श्याम नाम है॥
श्याम गति श्याम मति श्याम ही है प्राणपति,
श्याम सुखदाई सो भलाई शोभा धाम है।
ऊधो तुम भये बौरे पाती लेके आये दौरे,
योग कहां राखें यहां रोम रोक श्याम है॥

श्रुतिः—यत्र नान्यत् पश्यति नान्यत् शृणोति नान्यद्विजानाति स भूमा

० श्रुति के आधार पर ०

० गोपियों की निष्ठा (सवैया) कानन दूसरो नाम ०

कानन दूसरो नाम सुने नहिं एक ही रंग रंग्यो यह डोरो।
धोखेहु दूसरो नाम कढ़े रसना रस बांधि हलाहल बोरो।
ठाकुर चित्त कीं वृत्ति यही हम कैसेहु टेक तजें पल भोरो।
बावरी वे अँखियाँ जरि जाउ जेसाँवरो छोड़ निहारतींगोरी॥

० गोपियों की निष्ठा से उद्धव बदले ०

सुनि गोपिन को प्रेम नेम ऊधो को भूल्यौ,

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गावत गुन गोपाल फिरत कुंञ्जन में फूल्यौ।
छिन गोपिन के पग धरै धन्य तिहारो नैम,
धाय धाय द्रुम भैंटहीं ऊधो छाके प्रेम॥
उपदेशन आयो हुतो, मोहि भयो उपदेश,
ऊधो जदुपति पै गये किये गोप को भेष।
दो०—गोकुल को सुख छाँड़ि कें, कहाँ बसे हो आय,
कृपावन्त हरि जानि कें, ऊधो पकरे पाय॥
देखत व्रज को प्रेम, नेम कछु नाहिन भावै,
उमड्यौ नैनन नीर बात कछु कहत न आवै॥
दो०—सूरश्याम भूतल गिरे रहे नैन जल छाय।
पोंछ पीतपट सों कह्यो, आये जोंग सिखाव॥

० हिन्दुआनी हो रहूँगी (कवित्त) सुनो दिलचस्पी ०

सुनो दिल जानी मेरे दिल की कहानी,
तुम अस्म की विकानी बदनामी भी सहूंगी मैं।
देव पूजा ठानी अरु नमाज भी भुलानी,
तजूं कलमा कुरान सारे गुननि गहूँगी मैं॥
सांवरा सलोना सिर ताज सिर कुल्लेदार,
तेरे नेह दाध में निदाघ ज्यों दहूँगी मैं॥
नन्द के कुमार कुरबान तेरी सूरत पै,
हों तो मुगलानी हिन्दुआनी हो रहूंगी मैं॥

० कवित्त : कोऊ कहो कुलटा ०

कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कहो,
कोऊ कहो रंकिनि कलंकिनि कुमारी हौं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

कैसी परलोक वरलोक वर लोकन में,
लीनी में अलोक लोक लीकन में न्यारी हौं॥
तन जाव मन जाव देव गुरु जन जाव,
जीव क्यों न जाव टेक टरति, न टारी हौं।
वृन्दावन वारी बनवारी के मुकुट पर,
पीत पटवारी वाहि सूरत पै वारी हौं॥

० सवैया : मेरी ये प्रेम व्यथा ०

ों ये प्रेम व्यथा लिखिबे को, गनेश मिलें तो उन्हीं लिखावौं।
स के शिष्य कहाँ मिले मोहि, जिन्हें अपनों विरतान्त सुनावौं॥
न मिलें तो प्रनाम करों कवि, तोष वियोग कथा सर साबौं।
इन सांवरे मीत बिना, यहि काहि करेजो निकारि दिखावौं॥

० वियोगिनी (कवित्त) वरुणी बघस्वर ०

वरुणी बघम्बर में गूदरी पलक दोऊ,
कोये रात वसन भगौंहें भेष रखियाँ।
बूढ़ी जलही में दिन, जामिनि हूं जागे भोंहें,
धूम सिर छायो विरहानल बिलखियाँ,
अंसुआ फटिक माल लाल डोरी सेल्ही पैन्हि,
भई हैं अकेली तजि चेली संग सखियां।
दीजिये दरश 'देव' कीजिये संयोगिनि ये,
जोगिनि ह्वै बैठी हैं वियोगिनि की अंखियाँ॥

० मुकुट की चटक (कवित्त) इन आउरे ०

मुकुट की चटक लटक विंव कुण्डल की,
भोंह की मटक नेक आँखिन दिखाउरे।
ऐरे बनवारी बलिहारी जाऊँ तेरी "मेरी",
गैल किन आय नेंकु गायन चराउरे॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

आदिल सुजान रूप गुन के निधान कान्ह,
बाँसुरी बजाय तन तपन बुझाउ रे।
नन्द के किशोर चित्त चोर मोर पंख वारे,
बंशी वारे सामने पियारे इत आउरे॥

० वृजराज रूप (सवैया) गुच्छ नि के अवतंस ०

गुच्छनि के अवतंस लसें, सिखि पुच्छन अच्छ किरीट बनायो।
पल्लव लाल समेत छरी कर, पल्लव में मति राम सुहायो॥
गुँजनि के उर मंजुल हार, निकुँजन ते कढ़ि बाहिर आयो।
आज कौ रूप लखौ वृजराज कौ, आज ही आँखिन कौ फल पायो॥

० बांसुरी : कवित्त : यमुना के हिलोर ०

यमुन के हिलोह की विभोर करकम्पन में,
पिक काकली का करती तू उपहासुरी।
होते मोर मौन मृग देते तृण छोड़ अरु,
नव कलिकान मध्य भरती विकासुरी॥
बेधि जात तानिन के वानन सों प्राणिन को,
विकल करति मति विषम उपासुरी।
असुरन सुरन सुरन गुन बाँधि राखे,
वंशीबारे तेरी विश्व मोहिनी है बांसुरी॥

० सवैया : छछिया भरि छाछ ०

शेष महेष गनेश दिनेश, सुरेशहु जाहि निरंतर ध्यावें,
जाहि अनादि अखण्ड अनन्त, अछेद अभेद सो वेद बतावें।
नारद से शुक व्यास रटें, पचिहारे तहूं पुनि पार न पावें,
ताहि अहीर की छोकरिया, छछिया भरि छाछपै नाचनचावें।

० सच्चा पागल ०

ये दुनियां पागल खाना है सभी पागल इसमें रहते हैं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

मेरी मेरी में फंसे हुए पागल बनकर यों कहते हैं।
कोई पागल है दुनिया का कोई पागल सहनाई का।
कोई पागल है लड़की का कोई पागल जमाई का॥
कोई पागल बहिन का है, कोई पागल है भाई का।
कोई पागल पिता का है, कोई पागल हैं माई का।
कोई पागल है इज्जत का कोई पागल है नारी का।
वैरागी सच्चा वो पागल जो पागल है मुरारी का॥

उत्तम-निष्ठा

अरे विश्व तू मुझे लुभाने का करता है व्यर्थ प्रयास।
नहीं जानता, मेरे उरमें दीख रहा प्रिय का मृदु हास॥
भले फूट जायें ये आंखें, पर न लखेंगी तेरी ओर।
देख देख वह नृत्य कर रहा, मेरा प्यारा नन्दकिशोर

० रसखान की निष्ठा (सवैया) मानुष होंतो ०

मानुष हों तो वही रसखान बसों बृज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हों तो कहां बसु मेरो,चरों नित नन्द की धेनु मँझारन॥
पाहन हों तो वही गिरि को, जो धरयो कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हों तो बसेरो करों मिल कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन॥
प्रीति न छुड़ावो गिरधारी लाला सों

० प्रहलाद का पिता के प्रति (कवित्त : तौक पहिरावो) ०

तौक पहिरावो पाव बेड़ी ले भरावो,
गाढ़े बन्धन बंधावो ओ खिचावो काची खाल सों।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

बिच्छू ले बिछावो तापै मोहिं ले लिटावो,
फेरि आगि भी लगावो बांधि कापड़ दुसाल सों ॥

० गर्भ चढ़े (सवैया) अब कांधे चले चढ़ि ०

गर्भ चढ़े अरु सूप चढ़े, पलना पै चढ़े चढ़े गोद घना के ॥
हाथी चढ़े अरु घोड़ा चढ़े, सुखपाल चढ़े चढ़े यान घना के ॥
शत्रु ओ मित्रके चित्त चढ़े, कवि 'ब्रह्म' कहे दिन नीके पनाके ॥
ईश कृपालु को जान्यो नहीं, अब काँधे चले चढ़ि चारि जनाके ॥

० छूटें ये मन्दिर (कवित्त) बाला चित्र शाला बीच ०

छूटें ये हैं मन्दिर मतंग मतवारे वृन्द,
कोठी जर जवाहर की पड़ी ही रहेगी ॥
माल और खजाने तोपखाने न चलेंगे संग,
सेना चतुरंगिनी सब योंही खड़ी रहेगी ॥
लाल कहै जोड़ जोड़ जमीं में जो धरी द्रव्य,
दान में न दीनी सो तो धरी ही रहेगी ॥
जादिन चिता पै लेट जलेगो तू ज्वाला बीच,
बाला चित्त शाला बीच खड़ी ही रहेगी ॥

——भोज का मुँज के प्रति श्लोक——

मान्धाता च मही पतिः कृतयुगेऽलंकार भूतो गतः ।
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः ॥
अन्ये चाऽपि युधिष्ठिर प्रभृतयो नाशंगताः द्वापरे ।
नैके नापि समंगता वसुमतीः मन्ये त्वयायास्यति ॥

० भोज का मुँज के प्रति (कवित्त) पद्यानुवाद

सतयुग के आदि में प्रियव्रत नरेश हुए,
जिनके रथ चक्र से समुद्र सात हो गये ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

त्रेता के बीच राम लक्ष्मण सम प्रतापी हुए,
सेतु बांधि रावण को मार यश वो गये ॥

रज वीरज की यह देह सौ, तू अब चालत देखत छाँहीं ।
दर गर्वं गुमान कहा शठ, अपनी आदि विचारत नाहीं ॥

॰ जब जीवत यह गति होय तुम्हारी ॰

॰ (सवैया) जो तुम पुत्र त्रिया ॰

तुम पुत्र त्रिया निज जानत, पाप करो जिनके हित भारी ।
रथ के यह जान सगे सब, लागे हैं तेरी करन अति ख्वारी ॥
भये सुत लात दिखावत, नारि हजारहिं देत हैं गारी ।
समय गति ह्वै है कहा, जब जीवत यह गति होय तिहारी ॥

॰ सवैया : देह को गर्व ॰

को गर्व करे क्यों मना, तेरी देह को काल चवैना बनावै ।
को दौड़े क्यों रात दिना, फूटी कौड़ी हू संग में तेरे न जावे ॥
खों खजाने भरे पड़े वीर, तें नाहिं रहे कछु खोज न पावे ।
किशोर तू चेत मना, झूंठे जगत से क्यों नहीं प्रीति हटावे ॥

॰ सवैया तात मिले पुनि ॰

मिले पुनि मात मिले, सुत भ्रात मिले युवती सुखदाई ।
मिले गज वाज मिले सब साज मिले मनवांछित पाई ॥
मिले सुरलोक मिले, विधि लोक मिले बैकुण्ठ को जाई ।
र और मिलें सबही सुख, संत समागम दुर्लभ भाई ॥

॰ संत के लक्षण (सवैया) कोउक निन्दत ॰

निन्दत कोउक वन्दत, कोउक देत है आय के भक्षण ।
आय लगावत चन्दन, कोउक डारत धूंरि ततक्षण ॥
कहे यह मूरख दीखत, कोई कहे यह आये विलक्षण ।
काहूसों रागन द्वेष, सो यह सब जानहु साधु के लक्षण ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० शंकर चरणों में (सवैया) तेरो कह्यो ०

तेरो कह्यो सिगरो मैं कियो, निशि द्‌्‌यौस तप्योतिहुं तापनि पाई॥
मेरो कह्यो अब तू करि रे सब, दाह मिटे परि है सियराई॥
शङ्कर चरणन में लगि रे मन, थोड़े ही वातनि सिद्धि सुहाई।
आक धतूरे के फूल चढ़ाये ते, रीझत हैं तिहुं लोक के सांई॥

० भक्त का दावा : कवित्त तारिहौं न शम्भो

तारिहों न शम्भो तो हम अम्ब की अदालत में,
नेह को वकील कर नालिश लगावेंगे॥
वायदा सदा तारिवे को कीन्हौं त्रिपुरारि आप,
अब इन्कार यही दावा लिखवावेंगे॥
दावा के जवाबमें कहोंगे यह पातकी है,
तो अनेक पापिन की नजीर दिखलावेंगे॥
एतेहू पै यदि नहीं तारोगे दिगम्बर तो,
कोष करुणा के सब कुड़क करावेंगे॥

० घर की गति (सवैया) आपको वाहन ०

आपको वाहन बैल बली, बनिता हूको वाहन सिंह परेखि कें।
एक चढ़ो सुत मूषक पै अरु, दूजो मयूर की पीठि विशेखि कें॥
अङ्ग भुजङ्ग के भूषण हैं, अरु एक को एक सों बैर विशेखि कें।
तीनहुं लोक को ईश गिरीश, सों योगी भयो घर की गति देखि कें॥

० यही जग जीवन को फल है ०

दुख भूरि भरे भव भोगन को, चहुं ओर भरो भव में दल है।
धन वैभल भांतिन भांतिन के, दिन रैनि नहीं मन को कल है।
नित भोग अभाव कुभावन से, न मिले सुख शान्ति सुधा जल है।
भजिये भगवन्त सदा भव में, सो यही जग जीवन को फल है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

० सवैया—रही अन्त समय मन में मन की ०

जग में जनमे जब बाल भये, तब एक रही सुधि भोजन की ।
तन में तरुणाई जबै प्रगटी, तब प्रीति रही तरुणी तनकी ॥
जब वृद्ध भयो तन की तृष्णा, सब लोग कहैं सनकी सनकी ।
नहीं दान कियो नहीं भक्ति करी, रही अन्त समय मनमें मन की ॥

० सवैया : बुद्धि बढ़ी चतुराई बढ़ी ०

बुद्धि बढ़ी चतुराई बढ़ी अरु सुन्दरता तन में लिपटी ।
मान बढ़ो धन धाम बढ़ो, यश कीरति हूं जग में प्रगटी ॥
घूमत द्वार गजेन्द्र हजार, सो इन्द्रहुं से कछु नाहि घटी ।
तुलसी जगदीश की भक्ति बिना, जैसे सुन्दर नारि की नाक कटी ॥

—श्लोक—

शरीरं सुरूपं नवीनं कलत्रं, धनं मेरुतुल्यं यशश्चारुचित्रं ।
हरे रंघ्रियुगले मनश्चेन्न लग्नं,ततःकिं ततःकिं ततःकिं ततःकिम् ॥

० सवैया : एक दिना हरि को जननि ०

एक दिना हरि को जननी, अन्हवाय के भूषण वसन पिन्हाये ।
अङ्क से भागि निशंक चले, पुनि पंक गिरे गिर के सनि आये ॥
खीजिके मातु कह्यौ गत जन्म को सूकर है सुनि के मुसिकाये ।
मानि गई जननी सच हैं, सुनि के पुनि गोद समोद बिठाये ॥

० चिन्ता हैं दुखी के (कवित्त) कच्छप नृसिंह ०

कच्छप नृसिंह मत्स्य वामन विचित्र रूप,
सूरत बनाली कभी विकट वराहों की ॥
पल में मिटादी शान करुणा निधान जी ने,
विप्र सुरधेनु धरणी के बदख्वाहों की ॥
रीति ऋषियों में युद्ध नीति असुरों में विन्दु,
प्रीति मन में थी रीछ और कपि चाहों की ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

जातिकी न चिन्ता भेद भांतिकी न चिन्ता मुझे,
चिन्ता है दुखी के आंसुओं की और आहों की ॥

० चिन्ता है दुखी के (कवित्त) गिरि से गिराया ०

गिरि से गिराया प्रहलाद को प्रमादियों ने,
सेजसी बनाली कृपा नाथ निज बाहों की ।
देवकी दया की भीख मांगने लगी तो,
कृष्ण रूप से सजा दी क्रूर कंस के गुनाहों की ।
द्रवित विलोके विन्दु द्रुपद सुता के दृग,
जड़ की मिटादी कौरवादि नर नाहों की ॥
मान कीन चिन्ता अपमान की न चिन्ता मुझे
चिन्ता है दुखी के आंसुओं की और आहों की ॥

० द्रोपदी का (सवैया) दीन दयालु कहाय के ०

दीन दयाल कहाय के धायके, दीनन सों क्यों सनेह बढ़ायो ।
त्यों हरिश्चन्द्रजू वेदन में करुणानिधि नाम कहो क्यों गनायो ॥
ऐसी सखाई न चाहिये तापै, कृपा करिकें जेहि को अपनायो ।
ऐसो ही जो पै स्वभाव रह्यो, तो गरीब निवाज क्यों नाम धरायो ॥

० द्रोपदी का (सवैया) ०

दीन दयालु सुने जबते, तबते मन में कछु ऐसी बसी है ।
तेरो कहाय के जाऊँ कहाँ, तुम्हरे हित की पट खेंचि कसी हैं ॥
तेरो ही आसरो एक मलूक, नहीं प्रभु सो कोउ दूजो यसी है ।
एहों मुरारि पुकारि कहों अब, मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है ॥

० प्रभु का नाव माँगना (सवैया) नाम अजामिल ०

नाम अजामिल से खल कोटि, अपार नदी भव बूढ़त काढ़े ।
जेहि सुमिरे गिरि मेरु सिलाकण, होत अजाखुर वारिद बाढ़े ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

तुलसी जेहि के पद पङ्कज से, प्रगटी सुरसरि नाशत अघ गाढ़े ।
सो प्रभु स्वै सरिता तरिवे कँह, माँगत नाव कनारे पै ठाड़े ।।

० केवट का उत्तर (सवैंया) एहि घाट ते ०

एहि घाट ते थोरिक दूर अहै, कटिलों जल थाह दिखाइहों जू ।
परसे पगधूरि तरे तरनी, घरनी घर क्यों समझाइहों जू ।।
तुलसी अवलम्ब न और कछु, लरिका केहि भाँति जियाइहों जू ।
बरु मारिये मोहि बिना पग धोये, हों नाथ न नाव चड़ाइहों जू ।।

० केवट का कथन [कवित्त] जाति पाँति ०

जाति पांति न्यारी कहा मेरी और तुम्हारी नाथ,
केवट की एक जाति निश्चय विचारिये ।
तारो भव सागर से दीन बन्धु दीनानाथ,
सरिता से उतारि दिन हमहूं गुजारिये ।।
नाई से न नाई लेत धोबी से न धोबी लेत,
केवट से केवट न लेत यह विचारिये ।
मेरे घाट आये नाथ तुमको मैं उतार दियो,
आँऊजो तुम्हारे घाट मुझको भी उतारिये ।।

० श्लोक ०

अहञ्च नद्याः परिपार कर्त्ता, भवाम्बुधेस्तवं परिपार कर्त्ता ।
अमुना प्रकारेण त्वया मयाच, एका व्यवस्था परिपालनीया ।।

० केवट की अभिलाषा [कवित्त] करेंगे दया ०

करेंगे दया दयालु दीन बन्धु कृपागार,
बालक अनजान जान चरणों की धूरी है । ।। १ ।।
मान्यता बड़ाई, नहिं चाहूं पण्डिताई,
नहिं सेवक सेवकाई, सब भाँति से सबूरी है ।। २ ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नारी धन धाम, लोक लाज कुल ग्राम,
नहिं मोते कछु काम, राम सभी आश पूरी है ॥ ३ ॥
एक अभिलाष 'गीतानन्द' और शेष रही,
केवट के खेवट से, मिलना जरूरी है ॥ ४ ॥

० जटायु की धूरी [सवैया] दीन मलीन ०

दीन मलीन अधीन है अङ्ग, विहंग परयो महिं खिन्न दुखारी।
राघव दीन दयालु कृपालु को, देख दशा करुणा भई भारी॥
देखि जटायु की दीन दशा पुनि, नैन सरोजन में भरि वारी।
बारहिं बार सुधारत पंख, जटायु की धूरि जटानसों झारी॥

★ चेतावनी (कवित्त) ऐरे अभिमानी ★

एरे अभिमानी तोहि दीन्ही नर देहि जेहि,
जगत पिता को तू कहाँ लो बिसरायेगो।
कबलों रे जगत जाल बन्धन में बंधो बंधो,
"सैनिक" अपार पाप धन कँह कमावेगो ॥
तेरे तन तरकस ते श्वास तीर जात चले,
छिन ही छिन आयु घटे पीछे पछितायेगो।
चेत रे अचेत चेत चेत अजहूं याद रख,
भूल मत लेखा पल पल को लिखो जावेगो॥

० कवित: किसी न किसी भी ०

किसी न किसी भी भाँति संसार की सभी जाति,
जपती हरी का नाम नित्य नियम करके।
चराचर जीव सभी भूले नहीं ईश्वर को,
नास्तिक बना है क्यों तू पाइ जन्म नर के॥
मन कर्म वचन सों आतम कल्याण हेतु,
विह्वल दे त्याग दोष बाहर भीतर के।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

निशि दिन आठों याम कर परहित काम,
भूलो न कभी ये राम नाम हरि हरि के ॥

० पायो हैं मनुष्य देह: कवित्त ०

पायो है मनुष्य देह अवसर बन्यो है आज,
ऐसी देह बार बार कहो कहाँ पाओगे ॥ १ ॥
भूले हो अयाने बने फिरत सयाने,
मन मूरख दिवाने रोये रोये पछताओगे ॥ २ ॥
आय यमराज जब कण्ठ से निकालें प्राण,
कहो मस्ताने तव भाग कहां जाओगे ॥ ३ ॥
कहें 'गीतानन्द' नीर नैनन से टपकेंगे,
वड़ी बुरी मार यम दूतन की खाओगे ॥ ४ ॥

० मनुष्य की खाल (कवित्त) हाथिन के दांत के ०

हाथिन के दाँत के खिलौना बनें भांति भांति,
सिंह की तो खाल शिवजी के मन भाई है ।
मृग की तो खाल को ओढ़ेंगे जती और सती,
बकरी की खाल थोड़ो पानी भरि प्याई है ॥
गैंडा की खाल को तो बांधेगे सिपाही लोग,
सावर की खाल कोई वीर मन भाई है ।
कहत दयाराम एक नेकी बदी रहिजात,
मानुष की खाल कोई काम नहीं आई है ॥

० कालघटा (सवैया) न बचौ कोई ०

न बचो कोई वेद पुराण पढ़े, न बचौ कोई शीश रखाय जटा ।
न बचौ कोई बन माँह वास किये, न बचौ कोई ऊंचे चुनाव अटा ॥
सपने सम यह संसार चलाचल, चार दिनों का ही ठाठ डटा ।
तुलसी तुम राम से प्रेम करो, तुम्हें घेरति आवती काली घटा ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

० बड़े बड़े पण्डित : कवित्त ०

बड़े बड़े पण्डित पढ़ने पढ़ाने वाले गये,
ज्योतिषी भी ज्योतिष विचार कर चले गये ॥ १ ॥
बाल्मीक नारद वशिष्ठ मुनि ज्ञानी गये,
हनुमान लङ्का को उजार कर चले गये ॥ २ ॥
रामचन्द्र जानकी समेत चारों भाई गये,
कृष्ण ग्वाल बालों को विसार कर चले गये ॥ ३ ॥
कहें 'गीतानन्द' बड़ें बड़े शूरवीर इस,
जग बीच आये, कर पसार कर चले गये ॥ ४ ॥

० हाड़ माँस मज्जा मेद (कवित्त) ०

हाड़ मांस मज्जा मेद चर्म से लपेटी हुई,
मल मूत्र पूर्ण दुर्गन्ध भरी काया है।
काली गोरी सांवली अनेक रूप दीखत हैं,
कभी बाल तरुण कभी वृद्ध रूप आया है।
कभी गर्भवास कभी विषय विलास कभी,
चिता पर निवास कर धूलि में समाया है ॥
कहें 'गीतानन्द' ऐसी क्षण भंगुर काया को
अपना स्वरूप कहे लाज नहीं आया है ॥

० श्लोक ०

द्रव्याणि भूमौ पशवश्चगोष्ठे, नारो गृहद्वारि जनाः स्मशाने।
देहश्चितायां परलोक मार्गे, धर्मानुगो गच्छति जीव एकः ॥

★ गुरुदेव कृत पद्यानुवाद छन्द ★

धन धरा के बीच ही सारा पड़ा रह जायगा,
पशु भी बंधे रह जांयगे जब अन्त का दिन आयगा।
नारी लगे प्यारी घनी रोती खड़ी रह जायगी,

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

जिस देह का करता गर्व, सो चिता में जल जायगी ।।

वैभव तुम्हारा इस जगत का काम नहिं कुछ आयगा,
जावे धर्म ही साथ एक जब अन्त का दिन आयेगा।
यदि धर्म नहिं संग्रह किया तो हाथ खाली जायगा,
भोग के भूखे भला जाकर वहाँ क्या खायगा ।।
दे दान मुट्ठी अन्न की जो काम तेरे आयगा,
कुछ देर कर ईश्वर भजन जो साथ तेरे जायगा ।।

❖ चेतावनी (सवैया) पेट में लेटे ❖

पेट में लेटे व लेटे मही, जननी संग लेट के बाल कहाये।
ज्वान भये युवती संग लेटे, अरु लेटत लेटत उमर गँवाये ।।
क्षीर समुद्र के लेटन हारे को, ध्यान कबहुं मन में नहिं लाये।
लेटत लेटत लेटत ही सो, चिता पर लेटन के दिन आये ।।

विष ले पिलावो तापै मूठि भी चलावो,
मांझधार में डुबावो बांधि पत्थर कमाल सों।
गिरि से गिराओ काले नाग से डसावो,
हा हा प्रीति न छुड़ावो गिरधारी नन्दलाल सों।

० भक्त रसखान (सवैया) सुनिये सबकी ०

सुनिये सबकी कहिये न कछु, रहिये इस ही भवसागर में।
करिये व्रत नेम सचाई लिये, जिनसे तरिये भवसागर में ।।
मिलिये सबसे दुर्भाव बिना, रहिये सत्संग उजागर में।
रसखान गोविंदहिं यों भजिये, जिमि नारी को चित्त है गागर में।

० भक्त रसखान (सवैया) धूरि धरे ०

धूरि धरे अति अति शोभित श्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरे अङ्गना, पग पैंजनी बाजतीं पीरी कछोटी ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

ता छवि को रसखान विलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी।
काग के भाग कहा कहिये, हरि हाथ सों ले गयो माखन रोटी॥

० पानी की बूंद ते (सवैया) वा दिन की सुधि ०

वा दिन की सुधि भूलि गयो, जब मूठि बंधो धरनी मह आयो।
भाँति सभी प्रतिपाल कियो, मन मूरख तू तिनको बिसरायो॥
दाँत न थे तब दूध दियो, जब दाँत दिये तब अन्न खिलायो।
ता प्रभु को नर क्यों न भजे, जिन पानी की बूंद ते पिण्ड बनायो॥

०सुन्दर गर्व गुमान कहा शठ (सवैया) जा दिन गर्भ संयोग ०

जा दिन गर्भ संयोग भयो तब, तादिन बूँद छियाहुती ताहीं।
द्वादश मास अधोमुख झूलत, बूढ़िरह्यो पुनि वा रस माहीं॥

द्वापर के बीच युधिष्ठिर आदि वीर हुए,
जिनके छत्र चौंसठ कोस पृथ्वी पर छाय गये।
पृथ्वी कहे शेष सों नरेसन की नीयत देखो,
मेरी मेरी कहत सब मोही में समाय गये॥

० गुरु गोविन्दसिंह (कवित्त) छाइ जाती ०

छाइ जाती अनेकता एकता बिलाइ जाती,
धाइ जाती कुचलता कवेतन कुरान की।
पाप ही प्रपक्व होते धरन धसिक जाते,
वरन गरकि जाते सहित विधान की।
देवी देव दोहरे सन्तोष सिंह दूर होते,
रीति मिटि जाती कथा वेदन पुरान की।
श्री गुरु गोविन्द सिंह पावन परम शूर,
मूर्ती न होती जो पै करुणा निधान की॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

० क्यों न अपनायेंगे (कवित्त) जिन्होंने बनाया ०

जिन्होंने बनाया घट घट में निवास निज,
हृदय हमारे में क्यों आते घबरायेंगे ।
जिन्होंने पठाया सुरलोक दुष्ट रावण को,
भूलों को हमारी न वे कैसे भूल जायेंगे ।
जिन्होंने घुमाया मन्दराचल मथानी सम,
पातक पहाड़ को नवे क्या फेंक पायेंगे ।
जिन्होंने चलाया रथ पारथ का संगर में,
संकट में किंकर को क्यों न अपनायेंगे ।

० जो न कृपा होत राम की (कवित्त) भूपति भिखारी तो ०

भूपति भिखारी होत बिनें गुनगारी होत,
नारी होत न्यारी लखे गत विधि वाम की ।
निपुनि अनारि होत मधुर सो खारी होत,
जीत हू में हारी होत बड़े बलधाम की ।
पण्डित पुजारी जो न भारी व्यभिचारी होत,
होत है अचारी भ्रष्ट प्रीति करि काम की ।।
सोने को सुमेर सोऊ छुए लोह लाठी होत,
माटी होत सबै जो न कृपा होत राम की ।

० हरि भक्ति बिना सब जगत दुखारी (सवैया) ०

दीन कहै धनवन्त सुखी, धनवन्त कहें सुख राजा को भारो ।
राजा कहे चक्रवर्ती सुखी, चक्रवर्ती कहें सुख इन्द्र को सारो ।।
कहत सुरेश विरञ्चि सुखी, औ विरञ्चि कहें सुख विष्णु को भारो ।
दासन दास कहै तुलसी हरि भक्ति बिना सब जगत दुखारो ।।

० खाने से बल हो (सवैया) ०

खाने से बल हो, कमाने से धन हो, नहाने से हो, गर सुन्दरताई ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

मारे से मृत्यु, जियाये से जीवन, जो बन जाय सनेह सगाई॥
जो रति दान दिये सुत होत, व औषधि खाए से रोग नमाई।
भिक्षु कहें सब काम बना, फिर राम व कृष्ण की कौन दुहाई॥

० कवित्त : दो बार द्वारिका ०

दो बार जाय द्वारिका, त्रिवेणी जाय तीन बार,
चार बार काशी, अङ्ग अङ्ग के नहाये ते।
पांच बार पशुपति छः बार नीमसार जाय,
सात बार पुष्कर जी आचमन कराये ते॥
रामेश्वर, जगन्नाथ, बद्री, केदार नाथ,
दसहुं सुमेर सौ बार पग धाये ते।
जे ते फल होय कोटि तीरथ स्नान किये,
तेते फल होंय एक राम नाम गाये ते॥

० अल्प तो अवधि : कवित्त ०

अल्प तो अवधि जामें जीव बहु सोचपोच,
करिवे को बहुत काम कहा कहा कीजिए।
पारन पुरान हूं को वेद हूं को अन्त नाहीं,
दाणी तो अनेक चित्त कहाँ कहाँ दीजिए॥
काव्य की कला अनन्त छन्द को प्रबन्ध बहु,
राग तो रसीले रस कहां कहाँ पींजिए।
सबही को सार तुलसी एक ही बताए जात,
जन्म को सुधारा चाहे रामनाम लीजिए॥

० कवित्त : एक दिन जगत बीच हरिश्चन्द्र ०

एक दिन जगत बीच हरिश्चन्द्र दानी भये,
डोम घर दास भए जाय एक छिन में।
एक दिन रावण ने विश्व जीत वश कीन्हों,
एक दिन दसों शीश कटे पड़े रन में॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

एक दिन पारथ महाभारत को जीत लीन्हों,
एक दिन भीलन ने लूटि लियो वन में।
मानुष विचारे की जग में कहा बसाय,
हरि हर के तीन समय होत एक दिन में॥

०सवैया: कर्म प्रताप तुरंग नचावत०

कर्म प्रताप तुरङ्ग नचावत, कर्म से छत्रपति नर होई।
कर्म से पुत्र सुपुत्र मिले अरु, कर्म से और बड़ो नहिं कोई॥
कर्म घट्यो लङ्कापति रावण, सोने की लंक क्षणेक में खोई।
एरे गुमान करै कहाँ मूरख, कर्म करै सो करै नहिं कोई॥

०कर्मानुसार सभी :कवित्त०

कर्मानुसार सभी जीवन को यथा योग्य,
जन्म दिया ईश सुख दुख भुगतायो है॥ १॥
जलचर थलचर नभचर अरु बनचर,
इत्यादि सभी जीव गण जहाँ तहाँ जायो है॥ २॥
कोई वना राजा कोई रङ्क भिखारी कोई,
वसे राज महल कोई झोपड़ी वसायो है॥ ३॥
कहै "गीतानन्द" जगदीश न्यायाधीश प्रभु,
जैसा कर्म करै जो सो तैसो फल पायो है॥ ४॥

०कमल का कथन (सवैया) वारिद तात०

वारिद तात हते विधि से सुत, आदित्य सोम सहोदर दोऊ।
रम्भा लक्ष्मि हतीं बहनें, मघवा मधसूदन से बहनेऊ॥
अंक तुसार इतौ परिवार करि न सहाय यहाँ अब कोऊ।
सूखि सरोज परे सर माहि, यहां कर्म फलौ न सरौ नहीं कोउ॥

०लक्ष्मी का ब्राह्मणों के प्रति :श्लोक०

पीतोऽगस्तेन तातश्चरण तल हतो वल्लभोऽन्येनरोशात्।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

आवाल्यात् विप्र वर्य्यैं स्ववदनं विवरेधारिता वैरणी मे॥
गेहं मे छेदयन्ति प्रतिदिवसमुमाकान्त पूजा निमित्तम्।
तस्मात् खिन्नाहं ब्राह्मण कुल सदनं नाथ नित्यं त्यजामि॥

० श्लोक का पद्यानुवाद (कवित्त) भरि के गंडूक ०

भरि के गंडूक में अचैयो जिन मेरो तात,
म्राता को कलंको किया दया विचारी है।
वैरिन हमारी वाणी ब्रह्माणि सों किन्ही प्रीति,
देखत हमारे लात पतिके प्रहारी हैं॥
गंगाधर कमलन मेरो गृह छेदि-छेदि,
मलिका बनाई त्रिपुरारी गल डारी है।
विप्रन के भवन में न गमन करूँ प्राणनाथ,
याही हेतु रहति देह दूबरी हमारी है।

०कवित्त : जबते जनम लेत०

जबते जनम लेत तव ही से आयु घटे,
मातु तो कहत मेरो बड़ौ होतु जातु है।
आज और कल और दिन दिन होत और,
दौर्‌यो दौर्‌यो फिरत खेलत और खात है।
बाल्यापन बीत्यो तब योवन लग्यो है आय,
योवन के बीते बूढ़ो डोकरा दिखात है।
सुन्दर कहत ऐसे देखत ही बुझि गयो,
तेल घटि गये जैसे दीपक बुझात है॥

० पाप करै नहिं: सवैया ०

पाप करै नहिं नेक डरे, मन व्यर्थंहि मानुष जन्म गँवावत।
साधु की संगति नाहिं करे, कबहूं हरि सों नहिं नेह लगावत।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

झूठ औ साँच मेंचित्त धरे, बिन काम रहै नित गाल बजावत।
पूर्व जन्म के पापन ते, कवि बिष्णु कथा तिनको नहिं भावत।।

०तिनते खर सूकर : सवैया०

तिनते खर सूकर स्वान भले, जड़ता बस ते न कहैं कछु वै।
तुलसी जिन राम सों नेह नहीं, सोसही पसु पूंछ विषान नद्वै।
जननी कत भार मुई दस मास, भई किन बांझ गई किन च्वै।
जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ, जिये जगमें तुम्हरो बिनह्वै।

०सो सुकृति सुचिमन्त: सवैया०

सो सुकृति सुचिमन्त सुसन्त, सुजान सुशील शिरोमनि स्वै।
सुरतीरथ तासु मनावत आवत, पावन होत है तातन छवै।।
गुनगेह सनेह को भाजन सो, सबही सों उठाय कहों भुज द्वै।
सतिभाय सदा छल छाँडि सवैं, तुलसी जो रहे रघुवीर को ह्वै।।

०दशा (सवैया) काम से अन्ध अरु०

काम से अन्ध अरु मोह के फन्द, परो भव कुप बनौ दुखदाई।
क्रोध अवोध करै जग में तन, छार करे पर ना दरसाई।।
मत्त भये मद के विकसे अरु, मत्सर आनि दुधार घलाई।
लोभ हँसाई करै दिन रैन, सु प्रेसजू चेतहु राम दुहाई।।

०उपाय (सवैया) काम नसै हरि भक्ति०

काम नसैं हरि भक्ति किये, अरुमोह के फन्द दे संग छुड़ाई।
क्रोध मैं चुप्प ह्वै राम भजो, मद में द्विज प्रेम न आन उपाई।
मत्सर छार करे हरिके गुन, जैसेहि कंस को दृश्य लखाई।
लोभि उदार वने जग में मन, राम को नाम बड़ो सुखदाई।।

०श्रीराम लिखने से पत्थर तर गये०

कहा नल नील ने भगवन अजब अन्दाज है इसमें।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

यही तो बात टेढ़ी है यही तो राज है इसमें ॥
हो जिस पर कृपा दृष्टि आपकी वह तैर जाता है।
अरु जिसको दूर फैंका आपने वह डूब जाता है॥
जिसे फैंको न तुम दिल से वो दर्शन तेरा कर जाये।
उसे सागर तो क्या संसार सागर से भी तर जाये॥
तभी तो बन गया यह पुल यही अंजाम लिखा है।
कि हमने सारे पत्थरों पर फकत श्री राम लिखा है॥

दो०—पारस में अरु सन्त में बड़ो आतरो जान।
वह लोहा सोना करे वह करे आप समान॥

◈ पारस कविता ◈

वृन्दावन यमुना तट बैठे साधु सनातन,
जपते थे हरि नाम प्रेम से कर निश्चल मन।
उसी समय में एक दीन ब्राह्मण ने आकर,
सादर किया प्रणाम सन्त को शीश नवाकर॥
पूछा उससे देव कहाँ से आप पधारे,
कहिये अपना नाम काम किस यहां सिधारे॥
ब्राह्मण कहने लगा कहूं क्या दर्शन पाया,
आज आपका, बहूत दूर से भटका आया॥
वर्दवान के जिले मानकर ग्राम हमारा,
जीवन मेरा नाम दीन अति ही दुखियारा।
मुझसे और अभागा नहीं जगत में कोई,
यज्ञ याग में बड़ी कीर्ति पहले थी खोई॥
जगह जरासी बची हो रहा है नीचा सिर,
थोड़ी सी है आय नहीं चलता जिससे घर।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

उन्नति की इच्छा से शिव की की उपासना,
वर चाहा जैसी थी मेरी मनोकामना ॥
शेष रात को एक दिवस शिव ने सपने में,
कहा मिलेगा जो कुछ भी हैं मांगा तुमने ।
जाओ यमुना तीर सनातन गोस्वामी के,
पकड़ो दोनों चरण भक्ति हित अनुगामी के ॥
समझो उनको पिता तुल्य यह निश्चय मानो,
धन का सुगम उपाय हाथ उनके ही जानो ।
यह सुनकर वह लगे सोचने साधु सनातन,
कुछ भी तो है नहीं इसे देने को अब धन ॥
जो कुछ था सब छोड़ छाड़ वृन्दावन आया,
भीख मांग कर उदर पूर्ति का काम चलाया ।
सहसा आई याद सन्त ने कहा तमक कर,
हां हां उस दिन नदी तीर पर पारस पत्थर ॥
पड़ा मिला था वहीं धूल में गाढ़ दिया था,
आवे किसके काम नहीं कुछ ख्याल किया था ।
जाओ ब्राह्मण उसे निकालो अभी धूल से,
दुःख तुम्हारा तुरन्त नष्ट हो विप्र मूल से ॥
यह सुनकर वह लगा हटाने बालू सत्वर,
ढूंढ निकाला मन चाहा वह पारस पत्थर,
लोहे के तावीज बिप्र के पास रहे दो,
छूते ही पारस के सोना हुए तुरत वो ॥
अचरज में पड़ गया ब्राम्हण तब बैठा बालू पर,
मन ही मन वह लगा सोचने विविध तर्क कर ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

यमुना ने कल्लोल गान से बातें कितनी,
　　समझाई चिन्तित ब्राह्मण को चाहिये जितनी।
नदी पर छा रही लालिमा थी नभ मण्डल,
　　क्लान्त हुये दिवसान्त सूर्य पहुंचे अस्ताचल॥
तव ब्राम्हण गिर पड़ा सन्त चरणो में जाकर,
　　पुलकित तन हो गया कहा फिर अश्रु वहाकर॥
जिस धन से हो धनी आप हे साधु सनातन,
　　कुछ भी नहीं समझते इस पारस को निजमन।
उस धन का कुछ भाग दीजिवे मुझे दयाकर,
　　फेंका पारस यमुना में बस इतना कहकर॥

❖ सन्त और बिच्छू ❖

विश्व पावनी वाराणसि में, सन्त एक थे करते वास।
राम चरण लवलीन चित्त थे, नाम निरत-नयनिपुण निरास॥
नित सुरसरि में अवगाहन कर, विश्वेश्वर अर्चन करते।
क्षमाशील पर दुःख--कातर थे, नहीं किसी से डरते॥
एक दिवस श्री भागीरथि में, ब्राम्हण विदथ नहाते थे।
दयासिन्धु देवकी नन्दन के, गोप्य गुणों को गाते थे॥
देखा एक बहा जाता है, वृश्चिक जल धारा के साथ।
दीन समझ कर उसे उठाया, संत विप्र ने हाथों हाथ॥
रखकर उसे हथेली पर निज, संत पोंछने लगे निशङ्क।
खल कृतघ्न पापी वृश्चिक ने, मारा उनके भीषण डङ्क॥
कांप उठा तत्काल हाथ, गिर पड़ा अधम वह जल के बीच।
लगा डूबने अथाह जल में, निज करनी बस निष्ठुर नीच॥
देखा उसे मुमूर्षु सन्त का, चित्त करुणा से भर आया।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

प्रबल वेदना भूल उसे फिर उठा कर पर अपनाया ॥
ज्यों ही संभला चेत हुआ, फिर उसने वही डंक मारा।
हिला हाथ गिर पड़ा, बहाने लगी उसे जल की धारा ॥
देखा पुनः सन्त ने उसको, जल में बहते दीन मलीन।
लगे उठाने फिर भी उसको, क्षमा--मूर्ति प्रति हिंसा हीन।
नहा रहे थे लोग निकट सब, बोले क्या करते हैं आप।
हिंसक जीव बचाना कोई, धर्म नहीं है पूरा पाप ॥
चक्खा हाथो हाथ विषम फल, तब भी करते हो फिर भूल।
धर्म देश को डुबा चुका, भारत इस कायरता के कूल ॥
भाई क्षमा नहीं कायरता, यह तो वीरों का बाना।
स्वल्प महा पुरुषों ने इसका, है सच्चा स्वरूप जाना ॥
कभी न डूबा क्षमा धर्म से, भारत का यह सच्चा धर्म।
डूबा जब भ्रम से था इसने, पहना कायरता का मर्म ॥
भक्त राज प्रहलाद क्षमा के, परम मनोहर थे आदर्श।
जिनसे धर्म बचा था जो खुद, जीत चुके थे हर्षामर्ष ॥
बोले जब हँस कर यों ब्राह्मण, कहने लगे दूसरे लोग।
आप जानते हैं तो करिये, हमें बुरा लगता यह लोग ॥
कहा सन्त ने भाई मैंने, बड़ा काम कुछ किया नहीं।
स्वभाव अपना बरता इसने, मैंने भी तो किया वही ॥
मेरी प्रकृति बचाने की है, इसकी डंक मारने की।
मेरी इसे हराने की है, इसकी सदा हारने की ॥
क्या इस हिंसक के बदले में, मैं भी हिंसक बन जाऊँ।
क्या अपना कर्त्तव्य भूल कर, प्रति हिंसा में सन जाऊँ ॥
ये जितनी बार डंक मारेगा, उतनी बार बचाऊँगा।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

आखिर अपने क्षमा धर्म से, निश्चय इसे हराऊँगा ॥
सन्तों के दर्शन स्पर्शन, भाषण अमोघ जगतीतल में।
वृश्चिक छूट गया पापों से, संत मिलन से इस पल में ॥
खूले ज्ञान के द्वार जन्म, जन्मान्तर की स्मृति हो आई।
छूटा दुष्ट स्वभाव सरलता, शुचिता सब उसमें छाई ॥
संत चरण में लिपट गया, वह करने को निज पावन तन।
छूट गया भव व्याधि विषम से, हुआ रुचिर वह भी हरिजन॥
जब हिंसक जड़ जन्तु क्षमा से, हो सकते हैं साधु सुजान।
हो सकते क्यों नहीं मनुज, जो माने जाने हैं सुज्ञान ॥
पढ़ कर वृश्चिक और संत का, यह रुचिकर सुखकर संवाद।
अच्छा लगे मानिये तज, प्रतिहिंसा हिंसा बैर विवाद ॥

❖ हृदत्त बोध ❖

१—हृदय प्रार्थना तुझसे है एक मेरी,
कि लय हो हरि में न कर और देरी।
विनय का अनादर अभी भी न कीजे,
हृदय सर्वदा राम में वास कीजे ॥ १ ॥

२—कहें वेद शास्त्रादि जिसकी कथा हैं,
तथा जिससे मिलती समाधी प्रथा है।
जो भटका बहुत वह न सुख पा सका है,
वृथा श्रम से क्या कोई हित हो सका है ॥ २ ॥

३—सभी छोड़ यह बात मन में बसाले,
कि श्रीराम जी को तू अपना बनाले।
मिले सुख तुझे सब तरह का जहाँ पर,
वहीं लक्ष्य दे अपना हे चित्त सादर ॥ ३ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

४—हृदयलोक में मौन रहना भला है,
तथा हरि कथा सार गहना भला है।
जहाँ हों न श्रीराम वह धाम छोड़ो,
सुखों हेतु कानन से सम्बन्ध जोड़ो ।। ४ ।।

५—उसे छोड़ वह संग अच्छा न जीको,
जिसे पा तजे बुद्धि श्रीरामजी को।
जो हरि बिन घड़ी एक तूने गमाई,
तो जग में स्वयं हानि अपनी बुलाई ।। ५ ।।

६—स्वयं वह करे जो कि मुख से बखाने,
अनेकों में है एक ये प्रभु ही जाने।
न हो चित्त में काम से जो विकारी,
उदासीन जो तापसी ब्रह्मचारी ।। ६ ।।

७—न मद है न मत्सर न है स्वार्थ बुद्धि,
प्रपंचादि ही है न तो है उपाधी।
विलसती हैं जिसकी सदा नम्र बाणी,
वही राम का दास है धन्य प्राणी ।। ७ ।।

८—जवानी ही में जिसने कानन बसाया,
विषय वासना के न चक्कर में आया।
रहे ब्रह्म चिन्तन में तल्लीन वाणी,
वही राम का दास है धन्य प्राणी ।। ८ ।।

९—विना भक्ति के दीन जीवन वृथा है,
गँवारों का दुख नित्य दूना हुआ है।
न कुछ गाँठ से खर्च होता कहीं है,
लिया नाम तो मुखकों भी दुख नहीं है ।। ९ ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

१०—व्रतादिक में दुख देह का कष्ट ही है,
मगर नाम जप में कहाँ दुख कहीं है।
बहुत संकटो से भरे अन्य साधन,
व्रतोंद्यापना दान कों चाहिये धन ॥ १० ॥

११—करो काम निष्काम श्रीरामजी का,
लखो रामसा रूप सब जीव ही का।
रखो जप में विश्वास हे मित्र मेरे,
करो राम की चित्त चिन्ता सवेरे ॥ ११ ॥

१२—तू मत्सर में पड़कर न हरिनाम छोड़,
तू सादर उन्ही से निदिध्यान जोड़।
करोगे जो आदर से तुम नाम घोष,
तो जाकर छिपेंगे गुफाओं में दोष ॥ १२ ॥

१३—अहो राम का जिसने विश्वास छोड़ा,
उसे जो कहा जाय वह सब है थोड़ा ॥
बसे मुख में जो राम आराम आये,
सदा नन्द आनन्द तू नित्य पाये ॥ १३ ॥

१४—सदा खाते पीते जपो राम नाम,
सदा उच्च स्वर से हो जप यह ललाम।
जो भोजन में तुम हरि का चिन्तन करोगे,
तो तुम उन हरी को सहज में लहोगे ॥ १४ ॥

१५—बड़ी हानि है जो हो जपहीन बाणी,
निरर्थक ही लेता है वह जन्म प्राणी।
हरी नाम आगम निगम सार सा है,
यती श्रेष्ठ श्री व्यास ने यह कहा है ॥ १५ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

१६—तिरस्कार करना न श्री रामजी का,
समादर से लो नाम उन रघुपती का।
बिना दाम के मुफ्त संपत मिली है,
कहो जोर से जानकीनाथ की जय ॥ १६ ॥

१७—वही देखलो देव है अन्नदाता,
उसे ही रहे सबके पोषण की चिन्ता।
जो उन राम का नाम तू सुख से लेगा,
बतारे हृदय मोल ही क्या लगेगा ॥ १७ ॥

१८—अजामिल ने था पुत्र ही को पुकारा,
मगर नाम ने शीघ्र उसको उबारा।
सुए को पढ़ाया पढ़ो राम राम,
पुराणों में वैश्या हुई ख्यात नाम ॥ १८ ॥

१६—हुए भक्त प्रहलाद राक्षस के घर में,
मगर नित्य हरिनाम था उनके स्वर में।
पिता दुष्ट था जिसने सुत को सताया,
कहां दैत्य को नाम पर प्रेम आया ॥ १६ ॥

❖ संसार की असारता ❖

जिसे समझते हो तुम अपना, जिस पर रखते स्नेह विशेष।
होता है आनन्द हृदय में, जिस प्रेमास्पद का मुख देख ॥
क्या है वह आत्मीय तुम्हारा, सच्चा जीवन का साथी।
या नश्वर कुछ दिन को प्यारा, है धन जन वाहन हाथी ॥१॥

माता पिता बन्धु सुत दारा, धरणी धाम तुम्हारे हैं।
जिन्हे समझते हो तुम अपने, सम्बन्धी अति प्यारे हैं ॥
माया के फन्दे में फँसकर, तुम अपने को घाल रहे।
बाजीगर का खेल समझलो, है न सत्य यह ख्याल रहे ॥२॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

एक-एक कर सभी पास से, निकल जायेंगे तुमको त्याग।
दो दिन के साथी ये सब है, करते क्या उनसे अनुराग॥
बाजीगर की झोली में वे, क्रम-क्रम से छिप जायेंगे।
हम अज्ञानी मोह विवश हो, बिना उन्हें दुख पायेंगे॥ ३॥

पूर्व जन्म में मेरे कितने, भाई बन्धु रहे होंगे।
मेरे लिये पिता माता ने, कितने कष्ट सहे होंगे॥
इस मानव जीवन में अब तो, वह सब हैं कुछ याद नहीं।
जन्म लिया अब यहाँ वहां का, मिलता कुछ संवाद नहीं॥ ४॥

अब तो बन्धु यहां वाले हैं, ये सब हैं मेरे प्यारे।
देहान्तर होने पर विस्मृत, होंगे फिर ये प्रिय सारे॥
यौं ही मैं कितने जन्मों से, पुत्र पिता बनता आया।
सबको अपना मान मोह वश, दुख कबसे सहता आया॥ ५॥

यह सब बात समझने पर भी, नहीं ज्ञान थिर रहता है।
प्रकृति रचित मिथ्या ममता वश, जीव वृथा दुख सहता है॥
निज तन धन सुख सम्पति लखकर अहंकार में फूल रहा।
यह अज्ञानी जीव मोह वश, है अपने को भूल रहा॥ ६॥

कितने आये इस दुनियां में, कर्म भोग कर चले गये।
उन्हें जान हम अपना प्यारा, व्यर्थ मोह वश छले गये॥
देखो समझो माया कृत यह, नाटक जो होता है नित्य।
है असार संसार जान यह, त्याग मोह साधो निज कृत्य॥ ७॥

है न तुम्हारा कोई अपना, तुम न किसी के अपने हो।
माया के प्रपञ्च में पड़कर, देख रहे सब सपने हो॥
सपने की बातें सब झूँठी, मत उन पर विश्वास करो।
जागो ! उठो मोह निद्रा तज भजहरि को भव सिन्धु तरो॥ ८॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

जिस शरीर को सुख देने के, हेतु यत्न करते दिन रात।
जिसे सजाते रहते हो तुम, नित अनेक विधि साँझ प्रभात॥
वह भी नहीं साथ जायेगा, यहीं पड़ा रह जायेगा।
करो धर्म शुभ कर्म अन्त में, काम एक वह आयेगा॥ ९॥

क्या उलझे हो धन दौलत में, कुछ भी साथ न जायेगा।
प्रिय परिवार तुम्हें तज देंगे, कोई काम न आयेगा॥
किसके पीछे परेशान हो, परमेश्वर से हेतु करो।
जनसीदन दुर्लभ तन पाकर, अब भी तो कुछ चेत करो॥ १०॥

◈ अरे हाय योंही चली-भुजंगी छन्द ◈

कभी स्वाद में षट् रसों के लुभाता।
  कभी वस्त्र आभूषणों को सजाता॥
कभी भी नहीं ईश की याद आती।
  अरे! हाय! योंही चली आयु जाती! ॥ १॥

कभी रूप में चित्त है मोह जाता।
  कभी नाच गाना बजाना सुहाता॥
कभी नासिका गन्ध में है फंसाती।
  अरे! हाय! योंही चली आयु जाती! ॥ २॥

बना ईश ने पेट आपत्ति डाली।
  भरो सांझ को ही सबेरे हि खाली॥
भला! ज्ञान भक्ति करूँ कौन भांती।
  अरे! हाय! योंही चली आयु जाती! ॥ ३॥

किया ब्याह क्या मैं! बला मोल लीनी।
  हुआ दीन स्वच्छन्दता वेच दीनी॥
सदा भोग की चाहना हैं भ्रमाती।
  अरे! हाय! योंही चली आयु जाती! ॥ ४॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

न माता पिता को हि सेवा बने है ॥
नहीं धर्म दानादि ही हो सके है ॥
करूँ जाप स्त्री बाघिणी फाड़ खाती ।
अरे! हाय! योंही चली आयु जाती ॥ ५ ॥

कभी बाल बच्चे खिलाया करूं हूं ।
कभी देव देवी पुजाता फिरूं हूं ॥
नहीं पूजता तो त्रिया है रिसाती ।
अरे! हाय ! यों ही चली आयु जाती ! ॥ ६ ॥

न हो पाठ संध्या द्विजन्मा कहारूँ ।
यही पाठ संध्या कहाँ द्रव्य पाऊँ ॥
सदा चित्त को दुष्ट चिन्ता जलाती ।
अरे ! हाय ! योंही चली आयु जाती ! ॥ ७ ॥

सभी धर्म माता पिता ने सिखाये ।
पढ़े शास्त्र नाना नहीं काम आये ॥
सभी कर्म- धर्मादि नारी छुड़ाती ।
अरे! हाय! योंही चली आयु जाती ! ॥ ८ ॥

जगत् मोहिनी ईश माया रची है ।
न मोहे जिसे कौन ऐसा जती है ॥
सभी भाँति माया हमें है सताती ।
अरे ! हाय! योंही चली आयु जाती ! ॥ ९ ॥

तजो मोह निद्रा सुनूँ संत वाणी ।
न जागूं तभी भी महा मूढ़ प्राणी ॥
नहीं बात कौशल्य की है सुहाती ।
अरे! हाय! योंही चली आयु जाती ! ॥ १० ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

★ बने ईश पूजा कहो : भुजंगी छन्द ★

कलू काल में अल्प आयुष्य पाई।
महा मूढ़ हो बाल्य अवस्था विताई ।।
जवानी दिवानी जरा है डराती।
बने ईश पूजा कहो कौन भाँती ।। १ ।।

सवेरा हुआ तेल घी साग लाना ।
दुपहरी हुई बाल बच्चे खिलाना ।।
हुई साझ आलस्य निद्रा सताती ।
बने ईश पूजा कहो कौन भाँती ।। २ ।।

नहीं चित्त स्वाधीन ना इन्द्रियाँ ही ।
न निश्चितता है किसी काल मांही ।।
सदा रक्त को दुष्ट चिन्ता सुखाती ।
बने ईश पूजा कहो कौन भांती ।। ३ ।।

न थी नारि तो ब्याह की कामना थी।
हुआ व्याह संतान की चाहना थी ।।
हुये वाल बच्चे न तृष्णा अधाती ।
बने ईश पूजा कहो कौन भाँती ।। ४ ।।

कमाई करूँ एक मैं चार खाते ।
कुटुम्बी सगे सोदरे हैं सताते ।।
नहीं शान्ति है स्वप्न मैं भी दिखाती।
बने ईश पूजा कहो कौन भाँती ।। ५ ।।

हुआ आज बीमार मैं कल्ल नारी।
कभी पुत्र बीमार पुत्री दुखारी ।।
नई नित्य आपत्ति है जो दुखाती ।
बने ईश पूजा कहो कौन भाँती ।। ६ ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

यहाँ दौड़ता हूं वहाँ भागता हूं ।
कमाते कमांते हुआ बावला हूं ।
मरा चाहता हूं नहीं मौत आती ।
बने ईश पूजा कहो कौन भाँति ॥ ७ ॥

पिता मातु को मान देता रहूं हूं ।
प्रिया पुत्र पुत्री मनाता रहूं हूं ॥
मने एक तो दूसरी रूठ जाती ।
बने ईश पूजा कहो कौन भाँती ॥ ८ ॥

जहाँ देखता हूं वहाँ कष्ट ही है ।
कहीं शांति का मार्ग सूझे नहीं है ॥
किसी भाँति बल्ली नहीं थाह खाती ।
बने ईश पूजा कहो कौन भाँती ॥ ९ ॥

घड़ी एक की भी मिले है न छुट्टी ।
दिनों रात हूं झोंकता भाड़ भट्टी ॥
छुटे राग तो होय कौशल्य ! शांती ।
बने ईश पूजा तभी श्रेष्ठ भांती ! ॥ १० ॥

रे हाय ! हाय गति आखिर होयगी क्या !

० वसंत तिलका छन्द ०

आसक्त हूं विषय में तनु पालने में ।
दारा सुतादि परिवार संभालने में ॥
खोई सभी उमर काल वृथा गंवाया ।
रे हाय ! हाय ! गति आखिर होयगी क्या ॥ ॥१॥

नारी महान मदिरा अति ही कढ़ी है ।
नाहीं कभी उतरती जब से चढ़ी है ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

बुद्धी विचार सब ही युवती नशाया ।
रे हाय ! हाय ! गति आखिर होयगी क्या ।। ।।२।।

लाऊँ कमा न धन तो अपनी हि प्यारी ।
वर्ते समान रिपु के दुख देय भारी ।।
मै काम हेतु उसमें मन को लगाया ।
रे हाय ! हाय ! गति आखिर हीयगी क्या ।। ।।३।।

ऐश्वर्य, राज्य, धन साधन भोग के हैं ।
देखा विचार कर कारण रोग के हैं ।।
मैं मूढ़ बुद्धि फिर भी उनमें लुभाया ।
रे हाय ! हाय ! गति आखिर होयगी क्या ।। ।।४।।

नारी सुशील मन मोहि फसाय लेती ।
दुष्टा चुड़ेल सम दारुण दुख देती ।।
सो पाश डारि अपना गले में फँसाया ।
रे हाय ! हाय ! गति आखिर होयगी क्या ।। ।।५।।

सन्तान चाहि सुख नींद कभी न सोया ।
रोया हुई न जब थी अब पाय रोया ।।
भोगे अनेक दुःख ही सुख को भगाया ।
रे हाय ! हाय ! गति आखिर होयगी क्या ।। ।।६।।

सन्तान ब्याह हित मै धन कर्ज लीन्हा ।
जो काम था न करना झक मार कीन्हा ।।
चिन्ता मिटी न फिर भी चित ही जलाया ।
रे हाय ! हाय ! गति आखिर होयगी क्या ।। ।।७।।

आसक्त होय धन में खरभार ढोया ।
बैठा न एक क्षण भी सुख से न सोया ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भक्ती हुई न शुभ कर्म किया कराया।
रे हाय ! हाय ! गति आखिर होयगी क्या ॥ ८॥

होवे निवृत्त दुख सो नहीं यत्न कीन्हा।
धाया किया जगत में नाहिं ईश चीन्हा॥

कीन्हे उपाय जितने दुख ही बढ़ाया।
रे हाय! हाय! गति आखिर होयगी क्या॥ ९॥

आसक्ति छोड़ जग की गुरु ईश भक्ती।
कौशल्य! नित्य करिये तब होय मुक्ती॥

जो जो गया शरण में भव से छुड़ाया।
विश्वेश की शरण ली फिर सोचना क्या॥ १०॥

० चेतावनी (भजन) उठो उठो आंखें ०

उठो उठो आंखें खोलो नये शहर को जाना होगा।
तनकी रेल अरु मनका इंजन, स्वास की घड़ी लगाना होगा॥१॥
पाप पुण्य का माल लदाकर, बिल्टी साथ रवाना होगा॥२॥
धर्मराज है टिकट कलक्टर, उसको टिकिट दिखाना होगा॥३॥
नहीं वहां पर चले सिफारिश, नहीं रिश्वत खाना होगा॥४॥

० वैराग्य प्रद (भजन) एक दिन उड़े ०

एक दिन उड़े ताल से हँस फेरि नहीं आवेंगे॥ टेक॥
लीपें सवा हाथ से धरती काटे बांस बनावें अरथी।
सङ्ग में तेरे चले न धरती चार उठावेंगे॥एक दिन॥१॥
इस काया में खाक मिलेगी जब नहीं तेरी पेश चलेगी।
जिसमें हरी हरी घास उगेगी मृग चरि जावेंगे॥ एक दिन॥२॥
विस्तर बाँध कमर हो तगड़ा सीधा पड़ा मुक्ति का दगड़ा।
जिसमें नहीं हैं कोई झगड़ा मुक्ती पावेंगे ॥ एक दिन॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

जो कुछ करी आपने करनी वह तो अवश्य ही होगी भरनी।
कहे वेदव्यास जी ने वरणी कवि कथि गावेंगे ॥ एक दिन ॥ ४ ॥

० भजन : तू कर उस दिन की याद ०

तू कर उस दिन की याद एक दिन चल-चल-चल होगी। टेक
जब यम के दूत पकड़ ले जावेंगे, वे घड़ी नहीं गम खावेंगे।
मुश्किल पल-पल-पल होगी ॥ तू कर० ॥ १ ॥
जिस तन के ऊपर तनता है, तू बांका छैल बनता है।
यह कंचन काया तेरी खाक सब,जल-जल-जल होगी ॥ तू कर०॥२॥
कहे टीकम कर सफल कमाई, सङ्ग में चले नहीं एक पाई।
मुर्दे को दो बाँस कफन को, मल-मल-मल होगी ॥ तू कर०॥ ३ ॥

◈ लकड़ी की लीला—विश्वगुरु कृत ◈

जीते लकड़ी मरते लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का।
दुनियां वालों तुम्हें बतायें, यह जगवासा लकड़ी का ॥
जिस दिन तेरा जन्म हुआ था, पलंग बना था लकड़ी का।
तेरे पालने को मंगवाया, एक पालना लकड़ी का ॥
पकड़ पकड़ कर चलने लागा बना गडूला लकड़ी का।
गलियों में जब खेलने निकला गिल्ली गण्डा लकड़ी का ॥
पढ़ने को जब चला मदरसे तख्ती कलम था लकड़ी का।
जब मास्टर ने अक्षर लिखे ब्लैक बोर्ड था लकड़ी का ॥
पढ़ लिखकर शादी को निकला ट्रेन का डिब्बा लकड़ी का।
विवाह मंडप में वेदी बनी थी सब खेल रचा था लकड़ी का ॥
बायें अङ्ग जब दुलहिन बैठी वह भी था पाटा लकड़ी का।
गृहस्थ चलाने लगा तू बन्दे फिकर था आटे लकड़ी का।
बूढ़ा होकर लिया सहारा फिर से तूने लकड़ी का ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जिस दिन बन्दे तू चला यहां से ढेर चला था लकड़ी का।
धूँ-धूँ करके चिता जली एक चिना चौंतरा लकड़ी का॥
बड़े पुत्र ने चिता पै सिर में मारा डण्डा लकड़ी का।
सगे सम्बन्धी सबन तोड़ा आखिर तिनका लकड़ी का॥

❖ वैराग्य प्रद (भजन) पड़े रहे सब रंगले ❖

पड़े रहे सब रंगले बंगले खाली बारह दरी रही॥ टेक॥
जोड़-जोड़कर भरे खजाने आज भी तृष्णा अड़ी रही।
कहाँ गये बिजली के पंखें कहाँ वो रेशम जरी रही।
चले गये सब अजल के मुख में खाली बारह दरी रही॥
पड़े रहे सब............॥ १॥

एक ब्राह्मण की सुनो कहानी, पूजा करने जाता था।
नहाय धोय कर नदी किनारे, आसन खूब जमाता था॥
काल बली का लगा तमाचा, माला हाथ में पड़ी रही।
पड़े रहे...............॥ २॥

बाबू जी एक सैर करने को गाड़ी पर असवार हुए।
गाड़ी अभी चलने नहीं पाई बाबू जी ठण्डे ठार हुए॥
काल बली का लगा तमाचा, सड़क पै टमटम खड़ी रही।
पड़े रहे...............॥३॥

एक स्त्री ऊँचे महल पर चढ़ी श्रृङ्गार बनाने को।
भरी सलाई सुरमा वाली सुरमा आँख में पाने को।
काल बली का लगा तमाचा, सुरमादानी पड़ी रही।
पड़े रहे...............॥ ४॥

पहन पोशाक बाँध कर चीरा, हट्टी ऊपर सेठ गये।
जाते ही एक चक्कर आया, पांव फैलाकर लेट गये॥
कूँच कर गया लिखने वाला, कलम कान में अड़ी रही।
पड़े रहे...........॥ ५॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

गौरी शङ्कर चेतो प्राणी, झगड़े और फिसाद तजो।
क्या लेना है इन झगड़ों से, मस्त रहो गोविन्द भजो।।
लाखों आये लाखों चले गये, खाली बारह दरी रही।
पड़े रहे..............।। ६ ।।

✧ पद्य व शेरें ✧

शेर-जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है जिसमें ईश्वर का प्यार नहीं।।

शेर-जब तलक है जिन्दगी फुरसत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो प्रेम कर लो राम से।।

शेर-तेरे दरबारे आली की निराली शान ये देखी,
सखावत खुद तेरी गलियों में चक्कर काटते देखी।
बढ़ाया जिसने अपना कर तेरे दरबार में मालिक,
तुझे देते नहीं देखा मगर झोली भरी देखी।।

शेर-प्रभू की प्रेम दृष्टि से बदल जाती हैं तकदीरें।
अगर विश्वास सच्चा हो तो कट जाती हैं जंजीरें।।

शेर-ढूंडता ढूंडता खुद खो गया।
जिसे ढूंडता था वही खो गया।। रामतीर्थ ।।

शेर-जब पता पाने चला पाया पता तेरा नहीं।
जब पता तेरा लगा तो फिर पता मेरा नही।। रामतीर्थ ।।

शेर:—तेरी सूरत के जो आशिक हैं, वे समझाये नहीं जाते।
जो तेरी ओर बढ़ते हैं, वे लौटाये नहीं जाते।।

० द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया शेर ०

मैं और मेरा यार एक बस्ती में रहते थे।
मगर यह सोच है भारी कि मिलने को तरसते थे।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शेर:—लाख संभलने पर भी गिरता है इन्सां।
लेकिन जो झुके को उठाले वो खुदा होता है।।

शेर:—दबा दे जो जहाजों को उसे तूफान कहते हैं।
जो तूफानों से टक्कर ले उसे इन्सान कहते हैं।

शेर:—सताये जो गरीबों को उसे शैतान कहते हैं।
गरीबों की करे रक्षा उसे भगवान कहते हैं।

शेर:—सुर्खरू होता है इन्सां ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जानेके बाद।।

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या जिस पथ में बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या, जब धाराएँ प्रतिकूल न हों।।

पद्य:—ओ प्रेमियो सत्संगियो अब मोह माया छोड़ दो।
संसार से मन को हटा, हरि के चरण से जोड़ दो ।।१।।
है चन्द दिन की जिन्दगी नाता जगत का झूठ है।
पल पल घडी दिन रात में, यह आयु तेरी छूट है ।।२।।

शेर:—पुन्य है श्रंगार मानव का चमकता नूर है।
पुन्य धन को प्राप्त करता वही सच्चा शूर है।।
पुण्य पथ का बन पथिक तू विश्व का उपकार कर।
धर्म की जय बोल कर सबसे सरल व्यवहार कर।।

पद्य:—हे पाठको फिर पूर्वजों के तुल्य तुम ज्ञानी बनो।
भूलो न अनुपम आत्म गौरव, धर्म के ध्यानी बनो।
करदो चकित फिर विश्व को, अपने पवित्र प्रकाश से।
मिट जाँय सारे तम तुम्हारे शुद्ध ज्ञान प्रकाश से।।

शेर:—बहुत सा बोलना सचमुच है बड़ी नादानी,
रहना खामोश है इन्सां में शिफत लासानी।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

यातो किसी की तारीफ या बुराई होगी,
गर ये हर दो नहीं तो निज राज कुसाई होगी ।।

शेरः—जुदाई ने मैं बनाया हमको जुदा न होता तो मैं न होता ।
खुदा की हस्ती है इससे साबित खुदा न होता तो मैं न होता ।।

शेरः—राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है ।
या यूं भी वाह वाह है और वूं भी वाह वाह है ।।

शेरः—अहले दुआ तो हाथ पसारे ही रह गये ।
अहले अमल ने चाँद सितारों को पा लिया ।।

शेरः—फूल बनने की खुशी मैं मुस्कराती थी कली ।
क्या खबर थी यह तगय्युर मौत का पैगाम है ।।

शेरः—क्या कयामत है कि इस दौरे तरक्की में जिगर ।
आदमी से आदमी का हक अदा होता नहीं ।।

शेरः—अहिंसा का मतलब वही जानते हैं ।
जो इन्सा को अपना खुदा मानते हैं ।।

० सवैया. बिपरीत अङ्ग ०

मीन मरे गहरे जल में कबहूं न, मरे जल के बिलगाये ।
अमृत पान करे सो मरे कबहूं न, मरे बिषपान कराये ।।
सुखीनारि पिया परदेस बसे कबहूं न, सुखी पिया कंठ लगाये ।
पाप करे से तरे तुलसी कबहूं न, तरे हरि के गुन गाये ।।

० शेर बिपरीत अङ्ग ०

बस गई जिनके दिलो में मोहनी घनश्याम की ।
बस, गई उनकी मुसीबत निधि मिली आराम की ।।

० श्री पति कवि (सवैया) समस्या: तरामिश्रा ०

(करो मिल आस अकव्वर की)

एककी दुनियां गुनियां जो भई, मिलि बाँधत पाग अटव्वर की ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एक ईश को छोंड़ि जो दूजो भजे, तब जीभ कटै वहि लव्वर की॥
शरणागत 'श्रीपति' श्रीपति के, हमें त्रास न काहुहिं जव्वर की॥
जिनको हरि की कछु आस नही, सो करो मिलि आस अकव्वर की॥

० समस्या: तराम्निश्रा : कुर्बान नहीं इसलाम के ०

लाम बल खाए हुए गैसू मेरे घनश्याम के।
हैं वही काफिर जो कुर्बान नहीं इस लाम के ॥

शेरः—इतना दीवाना बनादे रहवरे कामिल मुझे।
खुदा परेशां होके निकले ढूंढने मंजिल मुझे॥

शेरः—लिए फिरते हैं कन्धों पै उठाए हम मका अपना।
ठहर जाते हैं दो दिन को गुजारा हो जहाँ अपना।

शेरः—कजा को रोक लेती है दुआ रोशन जमीरों की।
भला मंजूर है अपना तो कर खातिर फकीरों की॥

शेरः—खुदा अपने दीवानों की तो खुद करता है निगरानी।
नया बिस्तर नया मंजा नया दाना नया पानी॥

शेरः—भागती फिरती थी दुनियां जब तलब करते थे हम।
जब से नफरत हमने की वों बेकरार आने को है॥

शेरः—जब से कि हमने यह सुना है मरने का नाम जिन्दगी है।
सर से कफन लपेटे कातिल को ढूंढते हैं॥

शेरः—कह रहा हैं आसमां यह सब शमाँ कुछ भी नहीं।
पीस दूंगा एक गर्दिश में जहाँ कुछ भी नहीं॥

शेरः—बहारे दुनियां है चन्द रोजा न चल यहाँ सर उठा उठाके।
खुदा ने ऐसे हजारों नक्शे बिगाड़ डाले बना बना के॥

शेरः—आदमी का जिस्म क्या है जिसपै शैदा है जहाँ।
एक मिट्टी की, इमारत एक मिट्टी का मकां।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

खून का गारा बनाया ईंट जिसमें हड्डियाँ।
चन्द श्वासों पर डटा है ये खयाले आसमां।
मौत की पुरजोर आँधी जब इसे ठुकराएगी।
टूट करके ये इमारत खाक में मिल जायगी।

० शेर—तैयारी ०

ए मुसाफिर बाँध बिस्तर कस कमर तैयार हो।
है कजा सिर पर खडी, मत चूक भव से पार हो॥

० शेर—सामान जा चुका ०

होशो हवास सब गये, सब रूपा जा चुका।
अब हम ही जाने वाले हैं, सामान जा चुका॥

❖ चौबीस अवतार ❖

दोहा—नारायण, नारद, हरि, कपिलदेव, श्रीराम।
हंस हयग्रीव मोहिनी दत्तात्रेय सुखधाम॥ १॥
नरसिंह वामन व्यास जी, ऋषिभदेव कौमार।
यज्ञ पुरुष धनवन्तरी बुद्धि कल्कि अवतार॥ २॥
पृथुराजा बाराह पुनि, कृष्णचन्द्र भगवान।
परशुराम मत्स्य कमठ, श्री भागवत परमान॥ ३॥
नमो चौबीस अवतार को, सांय प्रात हिये धार।
पाप नशें बहु जन्म के, ज्ञान होवे भव पार॥ ४॥

❖ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग ❖

सोमनाथ सौराष्ट्र में, काशी में विश्वेश।
महाकाल उज्जैन में, शिवालय घुश्मेश॥१॥
भीम शङ्कर डाकनी, सेतुबन्ध रामेश।
त्र्यम्बक गौमती तीरपर, दारुक बन नागेश॥२॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

मल्लिकार्जुन श्री शैलपर, हिमगिरि पर केदार ।
चिता भूमि स्थान में वैद्यनाथ भवहार ॥३॥
ओंकार परमेश्वर, रेवाट तट दोय नाम ।
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग को, सदा करुँ प्रणाम ॥४॥
श्रद्धा सहित जो ध्यावहिं, निशि दिन में दो बार ।
सर्व पाप से मुक्त हो पावें सिद्धि अपार ॥५॥

❖ शिव प्रार्थना ❖

जय प्रभु शंकर दीन दयाला । प्रभु जी मुझको करो निहाला।
सत्य सन्तोष शील मोहि दीजे । मोरे दोष दूर सब कीजे।
दया नम्रता मन में आवे । मन भोगन में कबहुं न जावे।
पर पीड़ा से चित्त हटाओ । पाप कर्म से मुझे वचाओ॥
निर्मल चित्त करो प्रभु मोरा । निशि दिन भजन करूँ मैं तोरा।
यही कामना मन में स्वामी । पूरण कर प्रभु अन्तर्यामी।
जब लग कृपा न तुम्हरी होवे । तब लग बृथा जन्म नर खोवे।
माया के वश पड़ा भुलाना । बार बार दुख पावे नाना।
बिन संतोष न सुख कहुं होई । भटकि भटकि नर जीवन खोई।
अन्तकाल रो रो पछितावे । गया वक्त फिर हाथ न आवे।
भोग शोक की खानि बखाने । तिनसों मन कबहुँ न अघाने।
ग्लानि योग्य जो वस्तु सारी । तिनसों प्रेम मूढ़ को भारी।
छोड़ा चहे न कबहुं जिनको । क्षण में काल छुडावत तिनको।
आपा छोड़ जो तुमको ध्यावे । सो नर सहज मुक्ति को पावे।
काम, क्रोध, मद लोभ घनेरे । प्रभुजी जग में बैरी मेरे।
भगवन् इनसे मुझे बचाओ । निज चरणों का दास बनाओ।
और न जग में ऐसा कोई । करुणा करे दीन पर जोई।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दुख मोचन है नाम तिहारा । मैं हुं जग में अति दुखि मारा ।
भव सागर है अतिशय घोरा । देख देख मन डरपत मोरा ।
माता पिता तुम बन्धु मोरे । चरण गहूं मैं प्रभुजी तोरे ।
अब में अपना रूप दिखाओ । जन्म मरण से मुझे बचाओ ।
कामादिक हैं ग्राह भयंकर । इनसे मुझे बचाओ शङ्कर ।
रागादिक सब दोष मिटाऊँ । जन्म मरण में कबहूं न आऊँ ।

दोहाः—बार बार बिनती करूँ, सुनिये दीन दयाल ।
कृपादृष्टि करके प्रभो, वेगहिं करो निहाल ।।

दोहाः—शरीर साधन के लिये, जैसे है जलपान ।
वैसे ही मन के लिए, है सत्संग प्रमान ।।

◈ भक्त की प्रार्थना ◈

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।।१।।
मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूँ दुनियाँ भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।२।।
जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं ज्यों' जल में कमल का पात रहे ।
मेरे गुण दोष समर्पित हों, करतार तुम्हारे हाथों में ।।३।।
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूँ ।
इस पूजक की एक एक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।।४।।
जब जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ ।
फिर अंत समय में प्राण तजूँ निराकार 'साकार' तुम्हारे हाथों में ५।
मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण हो ।
मैं हूं सन्सार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।।६।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

० गोविन्द प्रार्थना ०

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकलें।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकलें ॥१॥
श्री गङ्गाजी का तट हो, या यमुनाजी का वट हो।
मेरा सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकलैं ॥२॥
श्रीवृन्दावन का थल हो, मेरे मुख में तुलसी दल हो।
विष्णु-शरण का जल हो, जब प्राण तन से निकलें ॥३॥
वह सांवरा खड़ा हो, वन्शी का स्वर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकलें ॥४॥
सिर सोहता मुकुट हो, मुखड़े पर काली लट हो।
वही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकलें ॥५॥
जब प्राण कंठ आवे, कोई रोग ना सतावे।
यम दर्श ना दिखावे, जब प्राण तन से निकलें ॥६॥
मेरा प्राण निकले सुख से, तेरा नाम निकले मुख से।
बच जाऊँ घोर दुःख से, जब प्राण तन से निकलें ॥७॥
उस वक्त जल्द आना, नहि श्याम भूल जाना।
बंशी की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकलें ॥८॥

◈ ईश्वर प्रार्थना सामूहिक ◈

आओ पूज्य पिता भगवान, करदो जीवन का कल्याण ॥टेक॥
तुम हो परम कृपा के सागर हो, गुण मन्दिर नटवर नागर।
आओ आओ हे भगवान, करदो जीवन का कल्याण ॥१॥
तुम हो सत्य सनातन स्वामी, सब घट व्यापक अन्तर्यामी।
हम सब धरें तुम्हारा ध्यान, करदो जीवन का कल्याण ॥२॥
जग में बड़े-बड़े दुःख पाये, हम सब शरण तुम्हारी आये।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

हरलो-हरलो दुःख महान, करदो जीवन का कल्याण ॥६॥
हम सब बने सत्यव्रतधारी, शम दम शौर्य-धैर्य गुणकारी।
होवें अर्जुन भीष्म समान, करदो जीवन का कल्याण ॥४॥
'ब्रह्मानन्द' विनय सुन लीजे, हे प्रभु भक्ति अपनी दीजे।
हम सब बनें पूर्ण विद्वान, करदो जीवन का कल्याण ॥५॥

० भक्त प्रार्थना ०

हे दीनानाथ दयाल विनय सुन लीजे।
अब करहु कृपा महाराज देर मत कीजे।
अब कहाँ लगादी देर आपने स्वामी।
क्या हो गई मुझसे भूल हे अन्तर्यामी॥

० भजन—आनन्द ही आनन्द है ०

काहे रोवे मनुआ आनन्द ही आनन्द है॥ टेक॥
बाहर भी आनन्द तेरे भीतर भी आनन्द है॥१॥ काहे रोवे॥
ऊपर भी आनन्द तेरे नीचे भी आनन्द है॥२॥ काहे रोवे॥
दाहिने भी आनन्द तेरे बायें भी आनन्द है॥३॥ काहे रोवे॥
चलने में आनन्द है और बैठे में आनन्द है॥४। काहे रोवे॥
सोने में आनन्द है और जगने में आनन्द है॥५॥ काहे रोवे॥
खाने में आनन्द है और भूखे में आनन्द है॥६॥ काहे रोवे॥
रोने में आनन्द है और हँसने में आनन्द है॥७॥ काहे रोवे॥
टोटे में आनन्द है और नफे में आनन्द है॥८॥ काहे रोवे॥
जीने में आनन्द है और मरने में आनन्द है॥९॥ काहे रोवे॥
कहै 'विश्वगुरु' सब भाँति ही आनन्द है॥१०॥ काहे रोवे॥

० भजन—कण कण में है ०

कण कण में है झाँकी भगवान की॥ टेक॥
किसी सूझ वाली आँख ने पहिचान की।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नाम देव ने पकाई, रोटी कुत्ते ने उठाई,
पीछे घी का कटोरा लिये जा रहे।
बौले रूखी तो न खाओ, थोड़ा घी तो लेते जाओ।
रूप अपना क्यों मुझसे छुपा रहे ॥
तेरा मेरा एक नूर, फिर काहे को हजूर।
तूने सकल बनाली यह श्वान की,
मुझे ओढ़नी अढ़ादी इन्सान की ।। कण कण में।। ॥
निगाह मीरा की निराली, पीके जहर की प्याली।
ऐसा गिरधर बसाया हर श्वास में ।
आया जब काला नाग, बोली धन्य मेरे भाग,
प्रभु आये आज साँप के लिबास में ॥
आओ आओ बलिहार, काले कृष्ण मुरार,
बड़ी कृपा कृपा है निधान की ॥
धन्यबादी हूं मैं आपके एहसान की ।। कण कण में ।।२।।
इसी तरह सूरदास, निगाह जिनकी थी खास,
ऐसा नैनों में था नशा हरिनाम का ।
नैन हुए जब बन्द, तब मिला वह है आनन्द,
आया नजर नजारा घनश्याम का ॥
हर जगह वह समाया सारे जग को बताया।
आई आंखों में रोशनी जब ज्ञान की,
देखी झूम झूम झलकियां जहान की ।। कण कण में ।।३।।
गुरु नानक कबीर, नहीं जिनकी नजीर,
देख पत्ते पत्ते में निरंकार को ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

नजदीक और दूर, वही हाजिर हजूर,
यही सार समझाया संसार को ।
नत्था सिंह यह जहान शहर गाँव बियावान,
महरबानियाँ हैं उसी महरबान की ।
सारी चीजे हैं ये एक ही दुकान की । कण कण में४।।

० कवित्त—लाठी से पड़ेगा ०

लाठी से पड़ेगा पाल नाक से बहेगा नाला,
आँख पर तनेगा जाला जरा जिन्दगानी में ।
खड़े खड़े वस्त्रो में करोगे मल मूत्र त्याग,
पड़े पड़े थूकते रहोगे पीकदानी में ।।
भक्ति क्या करोगे जब शक्ति न रहेगी तब,
राम नाम लेने की तुम्हारी बन्द बानी में ।।
योग करो योग से अरु भोगों से वियोग करो,
कर लो भजन भगवान का जवानी में ।।

० श्री विश्वगुरुजी महाराज द्वारा प्राप्त ०

पन्द्रह पुष्प

१–सच बोलो २–हरिनामलो , ३–तजो कपट व्यवहार ।
४–सब प्रकार हिंसा तजो , ५–करो अतिथि सत्कार ।।
६–ब्रह्मचर्य पालन करो , ७–परधन को दो त्याग ।
८–वस्तु परिग्रह मत करो , ९–दृढ़ धारो वैराग ।।
१०–प्रेम करो सबसे सदा , ११–सदा करो सत्संग ।
१२–वृद्धों की सेवा करो , १३–कभी न बदलो रंग ।।
१४–क्षमा करो अपराध को , १५–दोष न देखो भूल ।
हरि सेवा में अति सुखद , ये हैं पन्द्रह फूल ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अर्थ—(१) सच बोलना (२) हरिनाम लेना (३) कपट व्यवहार छोड़ना (४) सब प्रकार हिंसा छोड़ना (५) अतिथि सत्कार करना (६) ब्रह्मचर्य पालन करना (७) परधन त्यागना (८) वस्तु का परिग्रह न करना (९) दृढ़ वैराग्य (१०) सबसे प्रेम करना (११) सत्संग करना (१२) वृद्धों की सेवा करना (१३) कभी रङ्ग न बदलना (१४) अपराध क्षमा करना (१५) दोष न देखना।

प्रभु की सेवा के यह अत्यन्त सुखदायक पन्द्रह पुष्प हैं इन्हें धारण करना चाहिए।

० तर्ज (कव्वाली) ०

एक बात तो बतादे, भारत के रहने वाले।
घी दूध की कहां है, नदियाँ कहाँ वो नाले ॥टेर॥
तेरे वतन की शोभा, गौवें थीं अब कहाँ हैं।
अब कृष्ण से कहाँ हैं, गोपाल और ग्वाले ॥१॥
जिन वर्तनों में पेड़े, बरफी भरे थे रहते।
सूखे पड़े हैं बिस्कुट, चाहे कभी चबाले ॥२॥
रबड़ी को तरसता है, मिलती नहीं मलाई।
किस्मत में अब हैं काफी और चाय के दो प्याले ॥३॥
पीता था तू रोजाना, जो दूध ताजा ताजा।
अब रह गया है चूरट, सीना कभी जला ले ॥४॥
पनघट व डालडा पर, डाली नजर है तूने।
मुख में रहे न माखन के रस भरे निवाले ॥५॥

० दिन चढ़ आया—पद्य ०

दिन चढ़ आया खुली आँख तब, पीने लगे बैंड टी लेट।
हाथों में अखबार आगया, मुख में सुलग रही सिग्रेट॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

काफी चाय सिगार दोस्त को, दे फिर आप बनाते बांल।
पाखाने के बाथ रूम में, नहा नहा हो रहे निहाल ॥

० कविता—कोई है कटाता ०

कोई है कटाता और छटाता मुझे अन्य कोई,
कोई हैं रखाता मुझे कितनी उमंग में।
खींच तान करके तोड़ मोड़ के मरोड़ता है।
ऐंठा करता है वीरताई की तरङ्ग में।
नाक के तो नीचे कोई मक्खी सी बिठाता मुझे,
कोई करे सफाचट्ट फैशन तरङ्ग में।
काट छांट के हैं देखो कैसे ही अजीब ढङ्ग,
तङ्ग आगई हूं आन बाबूजी के सङ्ग में।

० भजन—तुम जलाती रहो ०

तुम जलाती रहो जिन्दगी भर दिया,
इस तरह से न तुमको मिलेंगे पिया।
बावरे नैन भटके इधर कुछ उधर,
रूप घनश्याम को देखने के लिए।
श्याम तुझ में छिपे देखते थे तुम्हें,
तुम कहाँ जा रही खोजने के लिए।
ज्ञान के चक्षु ही जब नहीं खुल सके,
किस तरह से तुम्हें मिल सकेंगे पिया।
तुम जिसे खोजने में बनी बावली,
वह तुम्ही में रमा है तुम्हारा पिया।
एक तुम में नही विश्व में व्याप्त है,
अब न उसके लिये तुम जलाओ दिया।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

प्राण उपकार में तुम अगर दो गंवा,
तो समझ लो बड़ा दान तुमने दिया।
मैं न मेरा रहे जिस घड़ी विश्व में,
उस घड़ी तुम समझ लो मिलेंगे पिया।

० पद----कोई हाल मस्त ०

कोई हाल मस्त कोई माल मस्त,
कोई तोता मैना सूये में।
कोई खान मस्त पहरान मस्त,
कोई राग रागनी तूहे में।
कोई अमल मस्त कोई रमल मस्त,
कोई शतरंज चौसर जूये में।
एक खुद मस्ती बिन और मस्त,
सब पड़े अविद्या कूये में।
कोई अकल मस्त कोई शकल मस्त,
कोई चंचलता कोई हांसी में।
कोई वेद मस्त कोई देव मस्त,
कोई मक्के में कोई काशी में।
कोई नाम मस्त कोई धाम मस्त,
कोई सेवक में कोई दासी में।
एक खुद मस्ती बिन और मस्त,
सब फँसे अविद्या फाँसी में।

० गीत महिमा ०

दो०—हरि सम जग में वस्तु नहीं, प्रेम पंथ सम पंथ।
सद्गुरु सम सज्जन नहीं, गीत सम नहिं ग्रंथ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

दो०—पुनि श्री मुख गीता विषे, भाण्यो अर्जुन पास ।
योग क्षेम सब हो···करों, जिनके मेरी आस ॥

० अर्जुन बोला ०

...ा रक्त बहाऊँ मित्रों का, क्या शस्त्र चलाऊँ गुरजन पर ।
...ुलघात करूँ जिसके कारण, धिक्कार है उस सुखी जीवन पर ।
...ा पाप से डरता हूं भगवन, एक बोझ सा है मेरे मन पर ।
...ाण्डीव सम्हालूँ मैं क्यों कर, जब छाई शिथिलिता हो तन पर ।

० भगवान श्री कृष्ण जी का उपदेश ०

...ठ शस्त्र उठा कुन्ती नन्दन, यह काम है क्षत्री वीरों का,
...े रण में विजय या मोक्ष मिले, आदर्श है यह रणधीरों का ।
...ै काल के मुख में कौरव दल, क्या दोष है तेरे तीरों का,
...ंसार में जीना मरना क्या, है खेल फकत तसवीरों का ॥

० महाभारत की एक घटना ०

महाभारत के युद्ध मैं जब कौरवों का विनाश होने लगा तब ...र्योधन ने सभी रानियों को भीष्म पितामह के पास भेजा । ...ाओ! वरदान माँग लो, कल भीष्म सेना नायक बनें और एक ...ाण्डव को नित्य मारें। उनके जाने पर बाबा ने वायदा कर लिया, ...ब यह समाचार श्री कृष्ण जी को मिला तो वे द्रोपदी को ...ेकर पहुंचे और स्वयं बाहर खड़े रहे, द्रोपदी को अन्दर भेजा। ...विता इस प्रकार है :—

...ुद तो बाहर ही खड़े रहे, भीतर भेजा पंचाली को ।
...यती वर बाबा के चरणों में, जाकर अपना मस्तक रख दो ॥
...र्ध रात्रि की बेला में, भीषम की लगी समाधी थी ।
...न प्रभु चरणों में लीन हुआ, उस जगह न कोई व्याधी थी ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

द्रोपदी ने जाकर सिर रखा, चरणों पर भीष्म पितामह के।
चरणों पर कौन झुका देखूँ, बाबा भीषम एकदम चौंके॥
देखा एक सधवा नारी है, चरणों पर शीश झुकाती है।
उसके तन की रंगिस साड़ी, सधवा पन को दर्शाती है॥
आशीर्वाद मुख से निकाला "सौभाग्यवती भव" तू बेटी।
तेरे हाथों से मेंहदी का ना रङ्ग कभी छूटे बेटी॥
सौभाग्य तुम्हारा अचल रहे, सिन्दूर से माँग न खाली हो।
वर देता हूं मैं यह बेटी तू वीर कुमारों वाली हो॥
द्रोपदी ने सुन कर कहा तुरत, बाबा यह क्या बतलाते हो।
कल और आज कुछ और कहाँ तुम सत्यव्रती कहलाते हो॥
मेरे पाँचों पतियों में से यदि एक भी मारा जायगा।
आशीर्वाद तेरा बाबा सच्चा कैसे कहलायेगा॥
हाथों की मेंहदी रहने दो. सारी का रंग उड़ाओ ना।
सिन्दूर जो मेंरी माँग का है, वाणों में उसे मिटाओ ना॥
अब आया होश पितामह को हाथों से माला छूट गई॥
प्रभु चरणों में जो लगी हुई चित चोर समाधि टूट गई॥
बोले बेटी इन प्रश्नों का उत्तर पीछे दे पाऊँगा।
तेरे सुहाग का निर्णय भी मैं पीछे ही कर पाऊंगा॥
एक बात खटकती है दिल में हैरान है जिसने कर डाला।
बतला बेटी वह कहाँ छिपा इस जगह तुम्हें लाने वाला॥
बूढ़ा होने को आया है पर अब भी गई नही चोरी।
नित नई नीतियाँ चलता हैं, तुमसे चोरी मुझसे चोरी॥
पुत्री तुमने मेरे कुल को इतना पवित्र कर डाला है।
पहरा देता होगा तेरा जो विश्व रचाने वाला है॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

उठ कर देखा जो बाबा ने ड्योढ़ी का दृश्य निराला था।
पीताम्बर का घूँघट डाले वह खड़ा वांसुरी वाला था।।
भक्तों की रक्षा करने को. दासी का वेष बनाया है।।
कहते हैं द्रोपदी का जूता था पीताम्बर के कोने में।
थे श्री कृष्ण जी हसने में और भीष्म पितामह रोने में।:
आशीर्वाद मेरा बेटी निश्चय अब विजय तुम्हारी हैं।
पतियों का बाल न बांका हो रक्षक जब कृष्ण मुरारी है।।

० कवित्त ०

विन्ध्य के वासी उदासी तपो व्रतधारी महा बिनुनारी दुखारे।
गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनि वृन्द सुखारे।।
होइ हैं सिला सब चन्द्र मुखी परसे पद मंजुल कंज तुम्हारे।
कीन्हीं भली रघुनायक जू करुणा करि कानन को पगु धारे।।

० भजन---दर्शन दो घनश्याम ०

दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अंखियाँ प्यासी रे,
मन्दिर-मन्दिर मूरत हेरी, फिर भी न देखी सूरत तेरी,
युग युग वीते आई मिलन की पूरण मासी रे।।दर्शन।।१।।
द्वार दया का जब तुम खोले, पंचम स्वर में गूँगा बोले,
अन्धा देखे लंगड़ा, चल कर पहुंचे काशी रे ।।दर्शन।।२।।
पानी पी कर प्यास बुझाऊं नैनन को कैसे समझाऊँ,
आँख मिचौनी छोड़ो मोहन ब्रज के बासी रे ।।दर्शन।।३।।
निर्वल के बल धन निर्धन के तुम रखवारे भक्त जनन के,
तुम्हारी भक्ति में सब कुछ पाऊँ मिटे उदासी रे ।।दर्शन।।४।।
मन मंदिर में ज्योति जगाऊँ तेरे दर्श बिनु चैन न पाऊँ,
नैन की ओट में छिपने वाले, गगन निवासी रे ।।दर्शन।।५।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

द्वार खड़ा कब से मत वारा मांग रहा यह हार तुम्हारा,
नृसिंह की विनती सुन लेना घट घट वासी रे।।दर्शन।।६।।

० भजन कर्माबाई (मारवाड़ी) ०

थोड़ो आरोगी जी मदन गोपाल, करमा वाई रो खींचड़ लो ।।टेक।।
प्रभु जी थारो प्रेम पुजारी गयो तीरथाँ न्हाँण,
जातों जातों दे गया म्हाँने सेवारी वोलाद,
जद मैं आई थारे मन्दिरिये में चाल ।।कर्माबाई रो ।।१।।
मैं हूं दीन अनाथिणी नहि जाणूँ पूजा फन्द,
नयो नवादो झेलियो ओ धन्धो गोकुल चन्द,
तू ही राखड़ियो भक्तां रो वाजी भाल ।।कर्माबाई रो ।।२।।
नहि कर जानूँ षट रस भोजन खाटा सूँ अनुराग,
रूखो सूखो राम खीचड़ो गुँवार फली रो साग,
मीठी दही ल्याइं बाटके मैं घाल ।।कर्मा बाई रो ।।३।।
रूस्या क्यूँ बैठा जी राधा रुकमण जी रा श्याम,
भूखा मरता बण न सोदो मास दिवस रो काम,
थारां भूखा रा चिप जासी वाला गाल ।।कर्मा बाई रो ।।४।।
समझ गई शरमा गयो ठाकुर नई नवादी जान,
धाबड़िये रो पड़दो कीनी, प्रकट लियो परसाद,
हरख्यो हिवड़ा मैं मन लहरी मोती लाल ।।कर्मा वाई रो ।।५।।

० प्रार्थना ।। हे नाथ ।। ०

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाये ।।
यह मन न जाने क्या क्या दिखाये कुछ बन न पाया मेरे बनाये ।।
संसार में ही आसक्त रहकर, दिनरात अपने मतलब की कहकर।
सुखके लिये लाखों दुःख सहकर ये दिन अभी तक यों ही बिताये ।।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

ऐसा जगादो फिर सो न जाऊँ अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।
मैं आपको चाहूं और पाऊँ, संसार का कुछ भय रह न जाये।
वह योग्यता दो सत्कर्म कर लूँ, अपने हृदय में सद्भाव भरलूं।
नरतन हैं साधन भवसिंधु तरलूँ, ऐसा समय फिर आये न आये॥
हे प्रभु हमें निरभिमानी बनादो, दारिद्र हरलो दानी बनादो।
आनन्दमय विज्ञानी बनादो, मैं हूं पथिक यह आशा लगाये॥

० भजन—मानव सोचो ०

मानव सोचो जग के सुख का, विस्तार रहेगा कितने दिन।
सत्कार रहेगा कितने दिन यह प्यार रहेगा कितने दिन॥
चाहे पितु हो या माता हो, पत्नी हो सुत या भ्राता हो।
जिसको अपना कहते उस पर, अधिकार रहेगा कितने दिन॥
कोई आता कोई जाता सबसे थोड़े दिन का नाता।
जिसका भी आश्रय लेते वह, आधार रहेगा कितने दिन॥
जो जग में सच्चे ज्ञानी हैं, परमात्मा-तत्व के ध्यानी हैं।
उनसे पूछो मन का माना, सँसार रहेगा कितने दिन॥
तुम प्रेम करो अविनाशी से मिल जाओ सब उर वासी से।
हे पथिक यहाँ 'मैं मेरा' का व्यापार रहेगा कितने दिन।

० भजन—ओ आने वालों ०

ओ आने वालों इतना समझ लो इस जग से तुमको जाना ही होगा।
यदि रह गई हैं कुछ वासनायें उनके लिए फिर आना ही होगा।
जबतक किसी पर अधिकार रखकर जितना अधिक सुख भोगते हो।
मानो न मानो जीवन में अपने पुण्यों की पूँजी गंवाना ही होगा।
दानाधिकारी, बनकर किसी से श्रद्धा के बाहर यदि धन लिया हो।
तुम ले के देना भूलो भले ही जो ऋण लिया वह चुकाना ही होगा॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जिससे किसी को दुःख हो रहा हो ऐसा असत कर्म होने न पाये।
सुख के लिए जो दुख दे किसी को उसको कभी दुख उठाना ही होगा।
तुम दूसरों को वह देते रहना जो दूसरों से स्वयं चाहते हो।
जैसा भी दोगे वैसा प्रकृति से बहुगुणा तुमको पाना ही होगा॥
कुछ जानना है अपने को जानो मानना है तो प्रभु को ही मानो।
करना हैं तो सबकी सेवा करो तुम जीवन किसी विधि बिताना ही होगा॥
छोड़ो अहंता ममता जगत् की परमात्मा से ही प्रीति जोड़ो।
देखो पथिक तुम जिसकी शरण हो उनपर विश्वास लाना ही होगा॥

० फिर मत कहना कुछ न कर सके ०

जब नरतन तुम्हें निरोग मिला, सत्संगति का भी योग मिला।
फिर भी प्रभुकृपानुभव करके, यदि भवसागर तुम तर न सके॥
तुम सत्य तत्वज्ञानी होकर, तुम सद्धर्मी दानी होकर।
यदि सरल निरभिमानी होकर, कामना-विमुक्त विचर न सके॥
जग में जो कुछ भी पाओगे, सब यहीं छोड़के जाओगे।
पछताओगे तुम यदि अपना, पुण्यों से जीवन भर न सके॥
जो सुख सम्पत्ति में फूल रहे, जो वैभव-मद में भूल रहे।
उनसे फिर पाप डरेंगे क्यों जो परमेश्वर से डर न सके॥
अब अन्त समय आ जायेगा, तब क्या तुमसे बन पायेगा।
यदि समय, शक्ति के रहते ही, आचार विचार सुधर न सके॥
होता तब तक न सफल जीवन है भाररूप सब तन मन धन।
यदि पथिक प्रेम पथ में चलकर, अपना या पर दुख हर न सके॥

० श्री शंकराचार्य विरचित चर्पटमंजरी के आधार पर ०

भावानुवाद

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढ़ मते॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

बाल वयस सब खेल गंवाई तब तो रहा नहीं कूछ ग्यान।
तरुणावस्था की मादकता में केवल तरुणी का भान।
वृद्ध भये तब रात दिवस, है नाना चिन्ताओं का गान।
दुर्लभ मानव तन पा करके, किया न परमेश्वर का ध्यान।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढ़ मते ॥

बीती रात दिवस फिर आया, दिन बीता फिर आई रात।
सदा यही क्रम चलता रहता, नित्य शाम है नित्य प्रभात।
कभी ग्रीष्म है, कभी शिशिर है, कभी वसन्त, कभी बरसात।
इसी चक्र में बद्ध जीव को, नचा रही है आशा-बात।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ॥

केश पक गये नेत्र कान भी, काम न देते मति गति भङ्ग।
धीरे-धीरे दांत गिर गये, सभी हो गये जीरण अङ्ग।
अस्थिपिण्ड से खाल लटकती विगड़ गया जीवन का रङ्ग।
तब भी तृप्त न हुई वासना, श्वासा है आशा के संग।
भज गोविन्दं भजगोविन्दं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ॥

जन्म मरण के इस बन्धन से, हो न सकेगा यूँ उद्धार।
जब तक तू आसक्त स्वार्थवस, करता जग से ममता प्यार।
इस दुस्तर माया से मानव, तब तेरा होगा निस्तार।
जब मायापति परमेश्वर को, सौंप चुकेगा जीवन-भार।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं । गौविन्दं भज मूढ़ मते ॥

जब तक तेरे तन मन धन से, पूरे होते सबके काम।
तब तक तुझसे प्रेमपूर्वक लिपटा है परिवार तमाम।
जराग्रस्त होने पर एक दिन, छट जायेगा यह धन धाम।
बात न पूछेंगे फिर कोई, सेंत न लेंगे तेरा नाम।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भज गोविन्दं भज गोविन्दं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ।।
सलिल बिना है व्यर्थ सरोवर, धन से हीन व्यर्थ परिवार।
धर्म बिना धन धान्य व्यर्थ है, प्रेम दया बिन व्यर्थ विचार।
सद्गुण बिना सौन्दर्य व्यर्थ हैं, सेवा बिना व्यर्थ श्रंगार।
सद्विवेक बिन कर्म व्यर्थ है, भक्ति ज्ञान बिन, जीवन-भार।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ।।
मूरख इतना मोहित होकर, है जिस सुन्दरता में लीन।
माँस भरे स्नायु-जाल से, कसे पिण्ड के ही आधीन।
जिस विधि अपने रुधिर स्वाद में, श्वान मानता सुख मतिहीन।
यही दशा है विषयी नर की, तृष्णा से रहता अति दीन।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ।।
अपने ही स्वारथ के भूँखे, कर न सके कुछ पर-उपकार।
अपनी क्षुधा-पूर्ति के कारण, झाँके किनके किनके द्वार।
मूड़ मुड़ाये जटा रखाये, भेष बनाये विविध प्रकार।
तब तक शाँति नहीं जीवन में, जब तक मिटै न विषय विकार।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ।।
त्यागी बन के बन बन डोले, कर तल भिक्षा तरु तरवास।
किन्तु जहाँ लौ आशा-तृष्णा, तब तक पाता रहता त्रास।
क्यों न देखते निज अन्तर में, परमेश्वर का प्रेम-प्रकाश।
जिसकी कृपा-किरण से होता है, अज्ञान तिमिर का नाश।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ।।
अब न भूल तू इस माया में, करता रह भगवद्गुण गान।
निज धन से दीनों दुखियों को, स्वार्थ छोड़कर दे कुछ दान।
संत संग से पावन हो जा, धारण कर गीता का ज्ञान।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

पुनि विवेक समता के द्वारा, परम तत्व को ले पहिचान।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ।
जिसने श्रद्धा भक्ति का कुछ, थोड़ा भी पाया आनन्द ।
गंगाजल गीता ज्ञानाश्रय से, कब रह सकती मति मंद।
मुक्त हो चला वह बंधन से, छूट गये सारे दुख द्वन्द ।
अनुरागी जो हुआ प्रभू का, पड़ न सकेंगे फिर यम-फन्द ।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ।
यही देखा ! क्या रूप तुम्हारा, कौन पिता है माता कौन।
कब से कितने दिन के संगी, यह पत्नी सुत भ्राता कौन।
यह संसार स्वप्नवत लीला, तेरा इससे नाता कौन।
जाग ! जाग ! अब जाग, पथिक तू तेरा पालक त्राताकौन।
भज गोविन्दं भज गोविदं । गोविन्दं भज मूढ़ मते ॥

० भूल न जाना भारतवासी ७ नवम्बर सन् ६६ को ०

सात नवम्बर सन् छासट को, याद रखें सब भारतवासी ।
लाठी चार्ज अश्रु के गोले, गरज उठीं संगीनें प्यासी ॥
कई सिंदुरी माँगे मिट गई, सन्तों के सीने में गोली ।
जलियाँ वाला बाग से बड़ा, संसद की दीवारें डोली ॥
लहराता जो युगों युगों से, अब अशोक का चिन्ह झुक गया।
धर्म चक्र है स्तब्ध, क्षुब्ध हो चलते चलते वृद्ध रुक गया ॥
जो स्वराज से वड़ा प्रश्न था वह बापू का प्रश्न मिट गया।
सिसक पड़ा इतिहास तिलक का जन्म सिद्धअधिकार लुट गया।
प्राण पखेरू प्रजा तन्त्र के, उड़े दूर के नील गगन में।
कीली ठोंक दी पुजारियों ने सम्विधान के पावन तन में ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हिंसा के नर्तन से टूटा, बिखरे शान्ति के तार तार हैं।
राज घाट हे, राम कह उठा, यह छाती पर पद प्रहार है॥
अपने ही मन्दिर के आगे, लोक तंत्र कितना अशक्त है।
उन कांली काली सड़कों पर उछल उछल बह रहा रक्त है॥
यह इस शासन के सिंहासन का, यह शंशक का अध पात है।
रक्त रक्त की बूँद बूँद में, एक क्रान्ति का सूत्र पात हैं॥
लाक्षागृह की आग बुझ गई, सकुनी पाशा पलट जायेगा।
तपस्वियों के अनशन व्रत से, इन्द्रासन भी उलट जायेगा॥
हिला हिमालय, डोला सागर जगा पूर्व पश्चिम विश्वासी।
हर शहीद का खून बोलता, भूल न जाना भारत वासी॥

० भजन—रे मन ये दो दिन ०

रे मन ये दो दिन का मेला रहेगा।
कायम न जग का झमेला रहेगा ॥ टेक ॥
किस काम का ऊँचा महल जो तू बनायेगा,
किस काम का लाखो का जो तोड़ा कमायेगा।
रथ हाथियों का झुण्ड भी तो किस काम आयेगा,
जैसा यहाँ तू आया है वैसा ही जायेगा॥
तेरे सफर में सवारी की खातिर, कन्धों पै ठठरी का ठेला रहेगा
॥ १ ॥ रे मन ॥
कहता है तू दौलत कभी आयेगी मेरे काम,
पर यह बता कि धन कभी किसका हुआ गुलाम।
उपदेश दे गये है हरिश्चन्द्र, कृष्ण, राम,
पैसा तो नहीं रहता है सिर्फ नाम ॥
छूटेगी सम्पत्ति यहाँ की यहाँ ही, तेरी कमर में न धेला रहेगा
॥ २ ॥ रे मन ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

साथी हैं मित्र गंगा के, जल बिन्दु पान तक,
अर्धाङ्गिनी तो केवल मकान तक।
कुछ लोग साथ चलेंगे तो केवल मसान तक
बेटा भी हक निभायेगा तो अग्नि दान तक।।
इससे तो आगे भजन ही है साथी, हरि के भजन बिन अकेला रहेगा
।। ३ ।। रे मन ।।

विश्व गुरु महाराज जी द्वारा प्रसारित
✓ भजन—हरिनाम के हीरे मोती

हरी नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली–गली।
ले लो रे कोई राम प्यारा, आवाज लगाऊँ गली–गली।टेक०।।
दौलत के दीवाने सुनलो एक दिन ऐसा आयेगा।
धन यौवन अरु रूप खजाना यहीं धरा रह जायेगा।।
सुन्दर काया माटी होगी चर्चा होगी गली–गली।।हरी०।।
मित्र प्यारे सगे सम्बन्धी एक दिन तुझे भुलायेंगे।
कलतक अपना जो कहते थे अग्नी पर तुझे सुलायेंगे।।
जगत सराया दो दिन का है आखिर होगी चली-चली।।हरी०।।
जिसको अपना कहकर बन्दे तू इतना इतराता है।
छोड़दें ये सभी, विपत्ति में कोई साथ ना जाता है।।
दो दिन का यह चमन खिला फिर मुरझायेगी कली२।।हरी०।।
क्यों करता है मेरी मेरी तजदे इस अभिमान को।
झूठे धन्धे छौड़ दे बन्दे जपले हरि के नाम को।।
आजाद समय यह फिर न मिलेगा पछितायें मल तली तली।।हरी०।।

—:०:—

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विश्वगुरु जी महाराज द्वारा प्रसारित

० हरिनाम की लूट ०

हरी नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली गली ।।
लूटलो जिसका जी चाहे मैं शोर मचाऊं गली गली ।।
धर जोगी का वेष आज मै अलख जचाऊँ गली गली ।
जिस जिसने ये मोती लूटे सो सब माला माल हुए ।।
दुनियां के जो बने पुजारी आखिर वो कंगाल हुये ।
सोना चाँदी माया वालो मैं समझाऊं गली गली ।। १ ।।हरी०
दुनियां के सुख दुख हैं तबतक जबतक होता ज्ञान नहीं
ईश्वर को जो भूल गया है वह सच्चा इन्सान नहीं ।
बीज मन्त्र की माला फेरो ध्यान सिखाऊं गली गली।। २।। हरी०
किस प्रकार से हरि भक्तों ने उस ईश्वर को पाया है,
और ईश्वर ने कैसे अपने भक्तों को अपनाया है।
तुलसी-नरसी-मीरा का इतिहास सुनाऊँ गली गली ।। ३ ।।हरी०
अर्जुन को जब मोह ने घेरा तब हरि ने उपदेश दिया ।
ज्ञान की ज्योति जगाई ऐसी सारा संशय दूर किया ।
गीता वेद उपनिषद् का ज्ञान सुनाऊं गली गली ।। ४ ।।हरी०

० भजन दाता मेरा राम ०

दाता एक राम भिखारी सारी दुनियाँ ।। टेक ।।
निर्धन तो मांगे ही मागे, मांगे साहूकार
राजाहू महराजा मांगे जिनकी बड़ी बड़ी बनी
रजधानीयाँ ।। दाता एक राम ।। १ ।।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

दुर्जन मांगे, सज्जन मांगें चतुरा और गँवार
रोगी, योगी, भोगी मांगे माँगे ऋषि मुनि
ज्ञानी गुनजमियां ॥ दाता एक राम ॥ २ ॥
हाथ जोड़कर माँगे कोई दोनों हाथ पसारे
नाच गाय के माँगे कोई मन ही मनमें फेरे
सुमरनियां ॥ दाता एक राम ॥ ३ ॥
देते देते राम थके ना मांग मांग संसार
बिना मांगे ही सबको देदे भर भर पेट भोजन
और पनिया ॥ दाता एक राम ॥ ४ ॥

० भजन तेरा राम जी करेंगे ०

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार उदासी मन काहे को करे।
नैया तेरी राम हवाले, लहर लहर हरि आप संभाले।
हरि आपही उठायें तेरा भार ॥ उदासी मन ॥ १ ॥
काबू में मंझधार उसी के, हाथों में पतवार उसी के।
तेरी हार भी नहीं है तेरी हार ॥ उदासी मन ॥ २ ॥
तू निर्दोष तुझे क्या डर है, पग पग पर साथी ईश्वर है।
जरा भावना से कीजिए पुकार ॥ उदासी मन ॥ ३ ॥
सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा।
डोरी सौंप के तो देख एक बार ॥ उदासी मन ॥ ४ ॥

★ मेरा बेड़ा पार करो ★

रचयिता—श्री धर्मदेव जी आचार्य विद्या मार्तण्ड (देवमुनि)
आनन्द कुटीर, ज्वाला पुर (हरिद्वार)

मेरी सारी दुर्बलता को, करुणा सागर दूर करो।
सच्चा योगी मुझे बना कर, मेरा बेड़ा पार करो ॥ १ ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तुम को छोड़ कहाँ मैं जाऊं, कोई न तुम से बढ़ कर।
तन मन धन निज चरणों में ला, मेरे सारे क्लेश हरो ॥ २॥
निशि दिन मेरे मन में तेरा, चिन्तन तेरा ध्यान।
वाह्य विषय से चित्त हटाकर, अपने में अनुरक्त करो ॥ ३॥
आता है आनन्द मुझे भी, तेरे चिन्तन में दिन रात।
पर चित्त की चंचलता मेरी, पूर्ण रूप से दूर करो ॥ ४॥
ईश्वर की प्रणिधान भावना, भर कर सारे कार्य करूँ।
यज्ञ रूप मेरा जीवनकर, निज कर में शुभ यन्त्र करो ॥ ५॥
कोई भी घटना इस जग में, क्षुब्द न मुझको बना सके।
भक्ति शक्ति से शान्ति कान्ति से सम जीवन भरपूर करो॥ ६॥

० भजन वृज वन की ०

वृज वन की लताओं में घनश्याम तुम को देखूं।
घन घोर घटाओं में घनश्याम तुम को देखूं ॥
यमुना का किनारा हो, चन्दा का उजियारा हो।
नित रास रचाते हो, घनश्याम तुम को देखूँ ॥१॥वृज०
तिरछे खड़े हो नटवर, तिरछा मुकट हो सिर पर।
होठों पै धरे मुरली, घनश्याम तुम को देखूं ॥२॥वृज०
घर घर में गिरधारी हो, वन वन में बनवारी हो।
जिस रूप में निहारू, धनश्याम तुम को देखूं ॥३॥
दिन हो या अन्धेरा हो, सन्ध्या हो सवेरा हो।
सो जाऊं तो सपने में, घनश्याम तुमको देखूं ॥४॥वृज०
इस भवसागर में भगवन, नैया मेरी डगमग।
पतवार लिए कर में, घनश्याम तुम को देखूँ ॥५॥वृज०

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

० भजन-ब्रह्म मेरे साथ है ०

रचइता---श्री धर्मदेवजी आचार्य (देवमुनि) वानप्रस्थ आश्रम
आनन्द कुटीर, ज्वालापुर (हरिद्वार)

ब्रह्म आगे ब्रह्म पीछे, ब्रह्म मेरे साथ है ।
अब दिखाई दे मुझे सर्वत्र हरि का हाथ है ।। १ ।।
ब्रह्म देता कान्ति मुझको, ब्रह्म देता शान्ति मुझको ।
सर्व रोगों का निवारक ब्रह्म अद्भुत क्वाथ है ।। २ ।।
ब्रह्म मां मंगलमयी मम, ब्रह्म मेरा तात है ।
मोह पातक शोक नाशक, ब्रह्म का शुभ पाथ है ।। ३ ।।
हो गया निश्चिन्त हूं मैं, खो गया भय शोक है ।
अब से यह अनुभव हुआ नित ब्रह्म मेरे साथ है ।। ४ ।।

० मेरा सत् चित् आनन्द ०

मेरा सत् चित् आनन्दरूप कोई कोई जाने रे ।
द्वैत वचन का मैं हूं सृष्टा मन वाणी का मैं हूं दृष्टा ।
मैं हूं साक्षी भूप कोई कोई जाने रे ।। मेरा ।। १ ।।
पंच कोष से मैं हूं न्यारा, तीन अवस्था से भी न्यारा ।
अनुभव सिद्ध अनूप कोई कोई जाने रे ।। मेरा ।। २ ।।
सूर्य चन्द्र में तेज मेरा है, अग्नी में भी ओज मेरा है ।
मैं अद्वैत स्वरूप कोई कोई जाने रे ।। मेरा ।। ३ ।।
जन्म मरण मेरे धर्म नहीं हैं पाप पुण्य कुछ कर्म नहीं है ।
अज निर्लेपी रूप कोई कोई जाने रे मेरा ।। ४ ।।
तीन लोक का मैं हूं स्वामी, घट घट व्यापी अन्तर्यामी ।
ज्यों माला में सूत कोई कोई जाने रे ।। मेरा ।। ५ ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सत्संगी निज रूप पहिचानों, जीव ब्रह्म का भेद न जानों।
तू है ब्रह्म स्वरूप कोई कोई जाने रे ।। मेरा ।। ६ ।।

० मनुष्यता के लक्षण ०

सत्यता पवित्रता चरित्रता विवेक क्षमा,
सभ्यता सुशीलता सुमति शान्ति समता ।
धीरता गम्भीरता उदारता गुरुत्व व्रापा,
मृदुलता मनोज्ञता मधुरता सरसता ।
वीरता विनम्रता अदैन्य सम दम दया,
पर उपकारिता सरलता विमलता ।
इतने सुअङ्ग यदि मिले मानव में मित्र,
उसमें समझलो कि भरी है मनुष्यता ।।

० भजन---मनुष्यता मिली नहीं ०

स्वतन्त्रता मिली अभी मनुष्यता मिली नहीं,
मलय समीर चल रहा, प्रभात रवि निकल रहा ।
दिशायें हो रहीं विमल, गगन भी है बदल रहा,
मगर हृदय कमल कली अभी तलक खिली नहीं ।।१।।स्वतन्त्रता
निशा तो कब की गत हुई मयंक भी चला गया,
मगर वह चेतना जिसे कि काल था सुला गया ।
जगा जगा के थक गये अभी तनिक हिली नही ।।२।।स्वतन्त्रता
विहंग वृन्दा गा रहे वसन्त की शुभागमन,
मगर न स्वार्थ की हटी कलंक कालिमा सघन ।
विषाक्त वासना समस्त है अभी टली नहीं ।।३।।स्वतन्त्रता
अभी नया खिला कुसुम हरी हरी सी पात में,
लगे अशेष किन्तु क्रूर कीट प्राण घात में ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

गुलामियों की हाय रे अभी चिता जली नहीं ।।४।।स्वतन्त्रता ।।
कही सुदूर लक्ष्य है निमित्त यह स्वतन्त्रता,
न भूल जा पथिक तुझे अभिष्ट है मनुष्यता ।
बिना मनुष्यता कहीं स्वतन्त्रता फली नहीं ।।५।।स्वतन्त्रता ।।

योग बिना जीवन क्या ?

बिना जीवन क्या बन्दे । ध्यान समाधि लगाये बिना ।। टेक ।।
है निःसार जगत में, प्रभु के चरणों में आये बिना ।। योग०।१।
का नाम हृदय से जपता, आत्म ज्ञान हो जाता है ।
ब्रह्म समझे है स्वयं को, अखंड समाधी पाता है ।।
परम-पद पाये न कोई, योगेश्वर को रिझाये बिना ।।योग०।२।
श्वर विश्वगुरु हमारे, सद्गुरु योगाधार हैं ।
ओं के गुरुदेव यहाँ पर, पूर्ण कृपा आगार हैं ।।
त्याग सके ना कोई, प्रभु चरणों में आये बिना ।। योग०।३।
मन अब मान ले आज्ञा, प्रभु चरणों की छाया में ।
से नेह लगा ले रे बंदे, मत भटके तू माया में ।।
ों की रज नहीं मिलेगी, योग वृष्टि बरसाये बिना ।। योग०।४।

--:००:--

ॐ

जयति ॐ ध्वज व्योम विहारी ।
विश्व ध्वजा की महिमा प्यारी ।।
सुधा बरसाने वाला, प्रेम लता सरसाने वाला ।
सुमन बरसाने वाला, विश्व विमोहक भव भय हारी ।
जयति ॐ ध्वज व्योम बिहारी ।। १ ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी।
जयति ओंम ध्वज व्योम बिहारी ॥ २ ॥

इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हो, प्रेम तरंग बहें सुखकारी।
जयति ओंम ध्वज व्योम विहारी ॥ ३ ॥

इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊँच नीच का भेद भुलाकर।
मिले विश्व मुद मंगलकारी, पन्थाई मत भेद विसारी।
जयति ओंम ध्वज व्योम विहारी ॥ ४ ॥

इस ध्वज को लेकर हम कर में, भरदें वेद ज्ञान घर-घर में।
सुभग शान्ति फैले घर घर मै, मिटे अविद्या की अंधियारी।
जयति ॐ ध्वज व्योम विहारी ॥ ५ ।

विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन ज्योति जगावें, त्याग पूर्ण हो वृत्ति हमारी।
जयति ओंम ध्वज व्योम विहारी ॥ ६ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

◈ श्री : सत्‌गुरु देव जी की आरती ◈

आरती सत्‌गुरु देव की कीजै,
तन मन धन सब अर्पण कीजै ।।टेक।।
ज्ञान--प्रेम की मूरति स्वामी,
समदर्शी उर अन्तर्यामी ।।
निरखत नैन सफल कर लीजै,
आरती सत्‌गुरु देव की कीजै ।।आरती।।१।।
अति उत्तम वाणी की शोभा,
जाको सुनत मेरा मन लोभा ।।
होत विमल मति भव दुःख छीजै,
आरती सत्‌गुरु देव की कीजै ।।आरती।।२।।
राम ब्रह्म विभु जो श्रुति गाये,
सोई सत्‌गुरु रूप बनाये ।
झरत सदा अमृत भर पीजै,
आरती सत्‌गुरु देव की कीजै ।।आरती।।३।।
कर जोड़े सब भक्त मनावें,
बार बार यह विनय सुनावें ।
भक्ति अनन्य प्रभो नित दीजै,
आरती सत्‌गुरु देव की कीजै ।।आरती।।४।।

—◈◈—

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

श्री कृष्ण वन्दना

वंशी विभूषित करान्नव नीरदाभात,
पीताम्वरादरुण बिम्ब फला धरोष्ठात्।
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादरविन्द नेत्रात्,
कृष्णात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ॥

श्री कृष्ण भगवान जी की आरती

आरती कृष्ण भगवान् की कीजै, तन-मन-धन सब अर्पण कीजै।
रवि शशि कौटि वदन की शोभा, ताहि निरखि मेरा मन लोभा।
श्याम रूप मुख निरखत रीझे, हरी स्वरूप नयन भर पीजै।
कंचन थाल कपूर की वाती, जग मग ज्योति जले दिन राती।
वाँकी छवि अरु नयन विशाला, रतन सिंहासन बैठे गोपाला।
मोर मुकट कर मुरली सोहे, योगेश्वर देखत मन मोहे।
गीता ज्ञान दिया हित कारी , भक्ति मुक्ति दायक सुखकारी।
श्री पुरुषोत्तम गिरिवर धारी, आरती करत सकल नर नारी।
सत्य सन्तोष शील मोहि दीजै , मोंरे दोष दूर सब कीजै।
यही कामना मन में स्वामी, पूरण कर प्रभु अन्तर्यामी।
बार बार विनवहुँ कर जोरी, परमानन्द विनय सुन मोरी।

—:(०):—

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अथ चरित्र निर्माण

हेपूरण परमात्मा. पावन हों जीवात्मा ।
विश्व बने धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ।।

संत—वाणी—रवि—रश्मि

संत—वाणि रवि रश्मि विमल का।
जब जग में होता विस्तार ।
'समता'—प्रेम—'ज्ञान' का तब,
होता शुभ शीतल शुभ्र प्रचार ।।
'सत्य'—'अहिंसा की आभा,
उज्जवल से सुख पाता संसार।
'भक्ति'-त्याग' , शुचि 'शांति'-ज्योति से,
मिटता अघ तम हाहाकार ।।

बाल चेतावनी

खेल ही में बाल जो दिन काटता वह है बुरा,
शोक अपने हाथ है वह मारता उर में छुरा ।
बालपन से लाभ पहुंचाना उचित है लोक को,
क्या प्रकट करता नहीं बालेन्दु निज आलोक को।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

★ श्री जगदीश्वर की आरती ★

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे ॥
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे ॥ ॐ ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनसै मनका ॥ स्वामी ॥
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तनका ॥ ॐ ॥
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी ॥ स्वामी ॥
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ स्वामी ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ स्वामी ॥
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राण-पती ॥ स्वामी ॥
किस विधि मिलूँ दयामय तुमको मै कुमती ॥ ॐ ॥
दीनबन्धु दुख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे ॥ स्वामी ॥
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ स्वामी ॥
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

◈ माता मंदालसा की पुत्र को शिक्षा ◈

० श्लोक ०

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि ।
संसार माया परिवर्जितोऽसि ॥
संसार स्वप्नस्त्यज मोह निद्रां ।
मन्दालसा वाक्यमुवाच पुत्रम् ॥१॥

हे पुत्र ! तू शुद्ध बुद्ध और निरंजन, संसार-रूपी माया से रहित है, अतः इस संसार को स्वप्नवत् समझ कर मोहनिद्रा का परित्याग कर, एवं मन्दालसा स्वपुत्रों को ज्ञान का उपदेश इस भाँति देती थी ।

शुद्धोऽसि रे तात न तेऽस्ति नाम ।
कृतं हि तत् कल्पनयाधुनैव ॥
पंञ्चात्मकं देहमिदं न तेऽस्ति ।
नैवास्य त्वं रोदषि कस्य हेतोः ।.२॥

हे तात् ! तू शुद्ध स्वरूप है तेरा कोई नाम नहीं है, यह तेरा नाम अभी कल्पना से रखा गया है, ये पंचभौतिक शरीर न तेरा है न तू उसका है, फिर तू क्यों रोता है ।

भूतानि भूतैः परिदुर्बलानि ।
वृद्धि समायान्ति यथेहः पुंसः ॥
अन्नाम्बुपानादिभिरेव तस्मात् ।
न तेऽस्ति वृद्धिर्न च तेऽस्ति हानिः ॥३॥

हे पुत्र, जैसे भूत भूतों करके वृद्धि तथा क्षीणता को प्राप्त होते हैं एवं पुरुष अन्न जलादि भोजन से वृद्धि तथा क्षीणता को

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्राप्त होते हैं। अतः इनसे न तेरी वृद्धि है न हानि है।

तातेनि किञ्चित् तनयेति किञ्चित।
अम्बेति किञ्चिद् दयियेत किञ्चित्॥
न ममेति किञ्चिन्न ममेति किञ्चित्।
त्वं भूतसंघं बहुमान येथा ॥४॥

हे पुत्र, इस संसार में कोई पिता है, कोई पुत्र है, कोई स्त्री है, कुछ मेरा नहीं है, कुछ मेरा नहीं है, इस प्रकार भूतों के समुदाय को ही तूने मन से मान रक्खा है, परमार्थ में तेरा इनसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

त्वं कञ्चूके शीर्यमाणो निजेऽस्मिन्।
तस्मिन् देहे मूढता मा ब्रजेथाः॥
शुभाशुभैः कर्मभिर्देहमेतत्।
मृदादिभिः कञ्कचुन्ते पिनद्धः ॥५॥

हे पुत्र, यह मेरा शरीर शुभ अशुभ कर्मों से उत्पन्न हुआ पृथ्वी आदि से व्याप्त है। हाड़, मांस रूप इस विनश्वर शरीर रूपी कञ्चुक में आत्म बुद्धि करके तू मूढ़ता को मत प्राप्त हो। तुम इस शरीर से पृथक हो, यदि देह में ही आत्म बुद्धि करोगे तो और इससे बढ़कर अधिक मूर्खता क्या होगी, अतः पंच कोशातीत नित्य, शुद्ध बुद्ध स्वात्मस्वरूप को जानो।

इस प्रकार मन्दालसा ने ७ पुत्रों को ज्ञान की लोरी देते हुए ज्ञानी बना दिया था। आठवें 'अलर्क' नाम वाले पुत्र को उसने राजा की आज्ञा से ही राज्यनीति आदि की शिक्षा देकर १२ वर्ष में उसे राज्य देकर दोनों राजा रानी बन में तपस्या करने चले चये। यही अलर्क निर्मोही राजा के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

प्रसिद्ध की कथा इस प्रकार है कि एक दिन निर्मोही राजा का राजकुमार श्यामसुन्दर वन में भ्रमण करने गया। प्यास लगने पर "हरिसत" ऋषि के आश्रम पर पहुंच कर प्रणाम किया, जलपानादि के अनन्तर ऋषी ने पूछा कि तुम किसके पुत्र हो, तब वह बोला कि मैं निर्मोही राजा का पुत्र हूं, यह सुन ऋषी बोले, राजा और निर्मोही ! यह तो प्रकाश और अंधकारवत् परस्पर विरुद्ध हैं राजा लोग तो महा मोहग्रस्त होते हैं, कुमार बोला "ऋषि वर" आप राजा की परीक्षा कर सकते हैं। एवं ऋषि ने राजकुमार को स्वआश्रम में छोड़ कर राजा की सपरिवार परीक्षा ली, वह इस प्रकार है ॥

ऋषिवर्यः—राजा के महल में जाकर सर्व प्रथम दासी से इस प्रकार बोले।

—:कथन ऋषि का दासी से:—

दोहा:—तू सुन चेरी श्याम की, वात सुनाऊँ तोहि।
कुमर विनास्यो सिंह ने, आश्रम पर्‌यो मोहि ॥

:—उत्तर दासी का:—

दोहा:—ना मैं चेरी श्याम की, ना कोई मेरा श्याम।
प्रारब्ध बस यह योग हैं, सुनहु ऋषी अभिराम ॥

० कथन ऋषि का कुमार पत्नी से ०

दोहा:—तू सुन चातुर सुन्दरी, अबला यौवन वान।
देवी वाहन दल मल्यो, तुम्हरो श्री भगवान ॥

—:उत्तर—कुमार पत्नी का:—

दोहा:—तपिया पूर्व जन्म की, क्या जानत है लोग।
मिले कर्म वस आन हम, अब विधि कीन्ह वियोग ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

० कथन ऋषि का राजसुता से ०

दोहाः—राज सुता सुन बात मम, करे जो दिल को सोर।
कुमर विनास्यो सिंह ने, आश्रम पर्‌यो मोर॥

० उत्तर बहिन का ०

दोहाः—वन में मरते जीव बहु, रचे जो ईश अनन्त।
शोक करूँ मैं कौन का, जाओ कुटी तुम सन्त॥

० कथन ऋषि का माता से ०

दोहाः—रानी तुमको विपति अति, सुत खायो मृगराज।
हमने भोजन नहीं कियो, तिसी मृतक के काज॥

० उत्तर माता का ०

दोहाः— एक वृक्ष डालें घनीं, पक्षी बैठे आय।
जब पाटी पीरी भई, उड़ि उड़ि चहुंदिशि जाँय॥

० कथन ऋषि का राजा से ०

दोहाः—राजा मुख से राम कहु, पल पल जात घड़ी।
सुत खायो मृगराज ने, मेरे पास पड़ी॥

० उत्तर राजा का ०

दोहाः—तपिया तप क्यो छाँड़ियो, यहाँ पलक नहीं सोग।
बासा जगत सराय का, सभी मुसाफिर लोंग॥

० कथन ऋषि का राजकुमार से ०

हे राजपुत्र ! मैं जब तेरे राज्य में गया तो ज्ञात हुआ कि किसी राजा ने भारी आक्रमण करके सभी को मार दिया तथा तेरे मारने के लिये सेना यहीं आ रही है, तू छिपजा।

० उत्तर—राजपुत्र का ०

हे ऋषिवर्य ! यह आत्मा अजर अमर अविनाशी है आप

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

मुझे क्या डराते हैं। मेरी माता ने यह शिक्षा मुझे प्रदान की है तथा कहा भी है कि—

पद्य:—है देह मर देही अमर श्रुति भगवती चिल्ला रही ।
देही अनश्वर देह नश्वर गीत गीता गा रही ।।

ऋषि उसका विचार सुनकर परम प्रसन्न होकर बोले।

"धन्य है माता की चरित्र शिक्षा"

० मनहर—छन्द ०

माता का सिखाया पुत्र पूरण विद्वान होत ।
माता का सिखाया सुत सपूत और शूर है ।।
माता का सिखाया ब्रह्मचारी बलवान होत ।
माता का सिखाया पुत्र कायर और क्रूर है ।।
माता का सिखाया फंसे अठारहुं ब्यसनों में ।
माता का सिखाया सारे दुर्गुणों से दूर है।।
कहैं तेजसिंह इससे माता ही है कारण मुख्य ।
इसीलिए पुत्रियों की शिक्षा भी जरूर है ।।

किन्तु धार्मिक होनी चाहिये, जैसी कि माता मंदालसा की।

० माता मन्दालसा का प्रण ०

प्रण कीन दृढ़ मन्दालसा मम गर्भ में जो आयगा ।
निश्चय करूँगी मुक्त सो नहिं जन्म दूजा पायगा ।।
भव से निकाले पुत्र को नहिं दूसरा फिर जन्म हो ।
निज पुत्र की हितकारिणी, हो मातु तो ऐसी ही हो ।।

० माता जीजी बाई का शिवाजी के प्रति—कवित्त ०

ढङ्ग अवरङ्ग का बना है रङ्ग भंग कारी ।
धार्मिक स्वतन्त्रता फंसी हैं शाह कारा में ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जीजीया का पूत है सपूत रे शिवाजी तू तो।
सोच क्या रहा है खड़ा वाहिनी किनारा में॥
भटका न मन व्यर्थ चिन्तन में भीरु बन।
अटका न चित्त सुत धन धाम दारा में॥
अङ्ग में उमङ्ग ले भवानी खङ्ग सङ्ग में ले।
कूद जगधारा में या डूब गङ्गधारा में॥

० माता का शिवाजी के प्रति ०

भारी भीति पाती हुई विकल विचारी हो के।
प्यारी मातृ भूमि तेरी ओर है निहारती॥
भीरुता भगाती हुई आगे बढ़ने के लिये।
देख ललकारती है भूषण की भारती॥
देर करना है व्यर्थ शिक्षा ले समर्थ से तू।
देश अर्थ माँ भी तेरा मोह है बिसारती॥
जय माल धारे हुए आते देख प्यारे तुझे।
यही माँ उतारेगी दुलारे तेरी आरती॥

० कवित्त:—शिवाजी—वेद राखे विदित ०

वेद राखे विदित पुराण राखे सारे युत,
राम नाम राख्यो अति रसना सुघर में।
हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की,
कांधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में॥
मीड़ि राखे मुगल मरोरि राखे पातशाह,
बैरी पीसि राखे वरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेग बल शिवराज,
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

० कवित्त—कुमति से यश जाय ०

कुमति से यश जाय गर्व से लक्षण जाय,
कुनारी से कुल जाय योग जाय सङ्ग से।
भूख से मर्याद जाय लढ़ाये से पुत्र जाय,
सोचने से शरीर जाय शीतलता कुसंग से ॥
कपट से धर्म जाय लोभ से बढ़ाई जाय,
मांगने से मान जाय पाप जाय गङ्ग से ।
क्रोध से तपस्या जाय अनीति से राज जाय,
वंश की प्रशंसा जाय वीर से मुरे जङ्ग से ॥

प्रेमी-पाठकों ! बाल-वालिकाओं की सहशिक्षा नहीं होनी चाहिए अलग अलग ही पढ़ाना चाहिये ।

जीवन सादा और विचार उच्च होने चाहिये, यह सभी जानते हैं लेकिन करते क्या हैं ? आगे पढ़िये

० कवित्त:—तीसरी किलास में ०

तीसरी किलास में लिबास छोड़ ग्राम हूं को,
चौथी में बहारदार धोती लटकाई है ।
पाँचवी छटी में लयो मुन्ना ने घुटन्ना पहिन,
सातवीं में सार बाँधी हाथ की कलाई है ।
आठवीं नवीं में बाल आठ-आठ नौ-नौ- इंच,
दसवीं किलास करी मूछों की सफाई है ।
कहैं हरिदास देखें मात पिता बार-बार,
पुत्र की तो फैशन कुछ और बनि आई है ॥

वस्त्र अवश्य पहिनो किन्तु शरीर रक्षा के लिये सादा ताकि व्यय भी कम होगा । चाय, तम्बाकू आदि व्यसन छोड़ देने चाहिये

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तम्बाकू से स्वास्थ्य, द्रव्य तथा पारमार्थिक सभी हानि होती हैं।

श्लोकः—तम्बाकू भङ्ग मद्यानि, ये पिबन्ति नराधमाः।
तेषां न नरके वासो, यावद्ब्रह्मा चतुर्मुखः॥

अर्थ : जो अधम प्राणी तम्बाकू भांग, व अन्य किसी मदिरा का सेवन करते हैं उनको ब्रह्मा की आयु पर्यन्त नर्क भोगना पड़ता है।

◈ ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें ◈

० मरण विन्दुपातेन जीवनं वीर्यरक्षणात् ०

अर्थ— वीर्य ही शरीर का राजा है, वीर्य की रक्षा करना ही जीवन तथा वीर्य का पालन न करना ही मृत्यु (Death) है।

◈ परस्त्री प्रसंग से हानियां ◈

काया से गाम जाय गाँठि हू से दाम जाय,
हित हू से वाम जाय रूप जाय अङ्ग से।
उत्तम सब कर्म जाँय कुल को सब धर्म जाय,
गुरुजन की शर्म जाय आपनि मति गङ्ग से।
सुर पुर को वास जाय भक्ति को निवास जाय,
जप तप की आशा जाय मदन की तरङ्ग से।
पंचसों प्रतीति जाय गुण रंग रीति जाय,
धीति और प्रतीति जाय पर तिय प्रसंग से।
स्त्रियों को समझ लेना चाहिये पर पुरुष संग से यह दोष हैं॥

० देवियां फैशन छोड़ें, सादगी अपनाये : कवित्त ०

पढ़ती अखबार और सिगार का उड़ाती धुँआ,
करती हैं श्रृंगार भी पामेड पाउडर से।
क्लब और सिनेमा जाती पराये पुरुषों के साथ,
दाई पर बच्चे का उतार भार सिर से।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

पति से मंगाती जल खाती खुद होटलों में,
बक्तृता सुनाती पुरुषों को तार स्वर से ॥
मित्रों सङ्ग घूमती हैं जाती चाय पार्टियों में,
आती हैं बाजार में निकल कर घर से ॥

श्रेष्ठ स्त्रियों के कर्त्तव्य

स्वच्छ रखती हैं घर द्वार को बुहार सदा,
धान कूट लेती और चक्की भी चलाती हैं।
सूत कातती हैं और माखन बिलोतीं कर,
भोजन विशुद्ध निज हाथ से बनाती हैं ॥
करती सिलाई हैं लड़ाती लाड़ लाड़िले को,
पाठ करती हैं निज पति को जिमाती हैं।
आय और व्यय का हिसाब लिखती हैं,
हरि कथा सुनती हैं पुण्य जीवन बिताती हैं ॥

सभी बाल व बालिकाओं को अपने चरित्र की शिक्षा इस दृष्टान्त से ग्रहण करनी चाहिये:—

मातृ देवो भव पितृ देवो भव

सन्तान का प्रथम गुरु माता, दूसरा गुरु पिता, अतः माता पिता की आज्ञा का पालन सेवा करना परम धर्म है।

चौपाई—गुरु पिता मातु स्वामि हित वानी। विनहि बिचार करिय भल जानी॥ उचित कि अनुचित किये विचारू। धर्म जाय सिर पातक भारू ॥

माता पिता गुरु की हित रूप वाणी को पालना चाहिये बिना ही विचारि किये। (किन्तु हित रहित वाणी को प्रहलादकी तरह त्याग देना चाहिये) अतः माता पिता की आज्ञा पालन करना तथा सेवा करना परम धर्म है।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

गीता श्लोक:---स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह ॥

अर्थ—अपने धर्म में मर जाना भी अच्छा है पराया धर्म भय का देने वाला है। जैसे कि—कौशिक ऋषि का।

दृष्टान्त—कौशिक ऋषि अपने धर्म रूप वृद्ध माता पिता को छोड़ कर एक बन में जाकर नदी के किनारे तपस्या करने बैठ गये बहुत काल ध्यान करते करते समाधि लग गई जटा जूट व डाढ़ी इतनी बढ़ गई कि कुछ दीखते हो नहीं थे। वर्षों बीत गये इतने में एक चिड़िया का जोड़ा घोंसला की खोज में अन्डे रखने के लिये उधर आया और कौशिक ऋषि के सिर पर बैठ गया महात्मा ध्यान में बैठे ही थे जटायें चौंच से इधर उधर हटा कर घोंसला वना लिया और समय पाकर अण्डे भी रख लिये उसी में बच्चों की परिवरिश की फिर उन बच्चों ने भी उसी में बच्चे रखे इस प्रकार महात्मा की जटाओं में चिड़ियाओं के कई परिवार बस गये। वे समझते थे कि यह कोई वृक्ष का सूखा हुआ ठूँठ है। उन्हीं पर खेलते तथा बीठ आदि करते रहे। एक दिन ऋषि की समाधी जगी नेत्र खोले, त्यो ही जो चिड़िया का जोड़ा ऊपर बैठा था बीट करदी। ऋषि ने ज्यों ही क्रोध भरी दृष्टि से देखा चिड़ियाँ का जोड़ा जल कर भस्म हो गया। ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, बोले अब हमारी तपस्या सफल हो गई, जिसकी ओर क्रोध की दृष्ठि से देख देंगे बिना ही अग्नि के भस्म हो जावेगा। ज्यों ही आसन से उठे त्योंहीं भूख लगी, तो बोले—

पद—बना ईश ने पेट आपत्ति डाली,
　　　　भरो शाम को हो सवेरे ही खाली।
　　भला ज्ञान भक्ती करूँ कौन भातीं,
　　　　अरे हाय योंही चली आयु जाती ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अतः भिक्षा के लिये नगर में पधारे। किनारे पर ही एक वृद्ध गृहस्थ का गृह था "नारायण हरी" शब्द किया, घर से स्त्री देवी ने कहा ठहरिये महाराज लाती हूं, किन्तु उसका पति रोगी था। उसको दवा पिलाने में लगी थी। बहुत देर के बाद जब समय मिला तब भिक्षा लेकर बाहर आई। कौशिक जी को खड़े हुए कई घन्टे हो गये थे क्योंकि यह नियम है कि घर से ठहराने का शब्द न आये तो तीन मिनट के पश्चात् दूसरे घर चला जाना चाहिये, यदि भिक्षा लाते हैं यह शब्द आजावे तो वहीं ठहरना चाहिए चाहे कितने ही घन्टे हो जावें। खड़े खड़े शाम हो गई थी मन में बड़े दुखित हो रहे थे। ज्यों ही वह बाई भिक्षा लेकर आई त्यों ही क्रोध भरी दृष्टि करके बाई को बोले तुझे पता नहीं था कि कितने समय से सन्त खड़े हुए हैं। वह बोली महाराज पता था किन्तु पति देव रोगी थे अतः सेवा में देरी हो गई अपराध क्षमा कीजिये।

दोहा:—क्षमा बड़ेन को चाहिए, छोटेन को उत्पात ।
कहा विष्णु को घटि गयो, जो भृगु मारी लात ।।

देवी ने बहुत कुछ कहा किन्तु फिर भी उनका क्रोध शान्त नहीं हुआ, तब तो उस स्त्री ने कहा कि महाराज अधिक तेजी काहे को लाते हो मैं वह चिड़िया का जोड़ा नहीं हूं जो देखते ही भस्म हो जाऊँगी। इतना सुनते ही कौशिक सन्न रह गये। बोले वहां पर तो मैं अकेला ही था इसको कैसे पता चल गया, प्रतीत होता है इसको दिव्य दृष्टि प्राप्त है। कौशिक बोले देवी तेरे को यह दिव्य दृष्टि कैसे प्राप्त हुई इसका कारण समझा कर बतला। देवी बोली महाराज मेरे पति देव बीमार है मुझे अवकाश नहीं है,

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अतः आप यदि कारण जानना ही चाहते हो तो धर्मव्याध के पास जाओ। कौशिक चल पड़े सोचा धर्मव्याध कोई बड़ा पुरुष होगा जो कि यहीं से पता बतला रही है। जाकर देखा धर्मव्याध के स्थान में महान दुर्गन्ध आ रही है। मरे हुये पशु लाये जा रहे हैं, चर्म उधेड़ा जा रहा है, मांस काटा जा रहा है, गृध कौवे, घूम रहे हैं, मक्खियें भनभना रही हैं, हड्डियों के ढेर लगे पड़े हैं, मांस इकट्ठा हो रहा, है दुर्गन्ध का ठिकाना नहीं, धर्म व्याध माँस बेच रहा है। कौशिक जैसे तैसे नाक बन्द करके गये, देखते ही धर्म व्याध बोला, पधारिये आपको उस पतिव्रता स्त्री ने भेजा होगा। यह सुनते ही कौशिक सन्न रह गये, बोले इसको कैसे पता चल गया, प्रतीत होता है इसे भी दिव्य दृष्टि प्राप्त है। अब ! स्त्री वाला प्रश्न तो एक ओर रहा और सोचा कितना निकृष्ट कार्य करने पर भी इतनी दिव्य दृष्टि कैसे प्राप्त हो गई जो पहले ही जान गया कि अमुक स्त्री ने भेजा है। विस्मयपूर्वक धर्मव्याध से पूछा? धर्म व्याध बोला ठहरिये, दुकान का कार्य समाप्त करके आपसे बात करूँगा। बारह बजे दिन के दुकान बन्द करके घर गया। जाकर जो वृद्ध माता पिता थे उन्हें विधि पूर्वक स्नान कराया, धुले हुये वस्त्र पहिनाये, पहने हुये वस्त्रों को धोकर सुखा दिया। पुनः दो थाल परोस कर भोजन कराके आचमन कराया, पुनः पलंग बिछाकर विश्राम करा दिया। विधिवत सेवा करने के उपरान्त कौशिकजी से पूछा, कहिए आपका क्या प्रश्न है ? कौशिक बोले, प्रथम तो उस स्त्री को यह दृष्टि कैसे प्राप्त हो गई, जो कि मुझको इतनी तपश्चर्या करने पर भी प्राप्त नहीं है ? उत्तर-धर्मव्याध ने

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कहा, वह अपने स्वधर्म का पालन करती है। स्त्री का धर्म है —

चौं०—एक ही धर्म एक व्रत नेमा ।
काय वचन मन पति पद प्रेमा ॥

उस पतिव्रत धर्म के पालने का ही प्रभाव है। कौशिक बोले, तृतीय प्रश्न है कि--तुमको भूत भविष्य का ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ, कर्म तो बहुत ही घृणित करते हो। उत्तर में-धर्म व्याध बोला, मैं भी अपने स्वधर्म का पालन करता हूं। मातृ देवो भव, पितृ देवो भव। अतः माता पिता की सेवा से ही यह दिव्य दृष्टि प्राप्त है। तब तो कौशिक बड़े प्रसन्न हुए और बोले कि यह भी बताओ कि मैंने इतनी कठिन तपश्चर्या की, किन्तु मेरे को यह दृष्टि प्राप्त क्यों नहीं हो सकी। तब तो धर्मव्याध ने विचार करके कहा कि आप अपने माता पिता को छोड़कर चले आये हो जो कि असमर्थ और असहाय हैं, तथा नेत्रों से भी अन्धे हो गये हैं, शरीर पर एक भी वस्त्र नहीं है, भूख से व्याकुल और महान दुःखी हैं, कभी कोई भोजन दो चार दिन में दे देता है इससे मरते भी नहीं हैं। उनकी दुखभरी आहें तुम्हारी तपस्याको सफल नहीं होने देतीं, नहीं तो तुम्हें भी दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाती। अतः धर्म व्याध ने कौशिक से कहा जाओ और माता पितां की सेवा करो। कौशिक उसी समय घर आये, देखा माता पिता की ठीक वैसी ही दीन दशा है, जैसी कि धर्मव्याध ने बतलाई थी। आकर माता पिता के चरणों में प्रणाम किया, माता पिता बड़े प्रसन्न हुए और बोले कौन है? कौशिक ने कहा आपका ही अधम पुत्र कौशिक है, मुझे क्षमा कीजियेगा। क्षमा प्रार्थना करके तुरन्त जाकर वस्त्र लाया तथा जल लाकर स्नान कराया वस्त्र पहिनाये। पुनः भोजन कराया

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

फिर चरण सेवा की इसी भांति बहुत समय तक माता पिता की सेवा करते रहे। अन्ततोगत्वा माता पिता की सेवा रूप स्वधर्म को पालने से कौशिक ऋषि को दिव्य दृष्टि प्राप्त हो गई और अन्त में अन्तः करण निर्मल होकर वह शुभ गति प्राप्त हुई जो स्वधर्म के त्याग रूप (परधर्मो भयावह) पराये धर्म से नहीं हुई थी।

अतः माता पिता आदि की सेवा करना परम धर्म है। भगवान श्रीराम भी करते थे।

चौपाई-प्रातः काल उठि के रघुनाथा। माता पिता गुरु नावहिं माथा॥

मनु महाराज भी मनुस्मृति में कहते हैं।

श्लोक—अभिवादनशीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारितस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोवलम्॥

अर्थ—जो अपने वृद्धमाता पिता आदि की सेवा पूजा करता है, प्रणाम करता है उसको एक उत्तम आयु दूसरे उत्तम विद्या तीसरे यश कीर्ति चौथे उत्तम बल प्राप्त होता है अतः स्वधर्म रूप माता पिता आदि की सेवा करनी चाहिये।

◈ पाठ ईश्वर प्रेम का ◈

१-जब बाल था मैं अज्ञ तब दे दूध बहलाने लगे।
ठहरी नजर दीखे पदारथ नाम सिखलाने लगे॥
यह माय है यह बाप यह भाई चिरंजी नाम का।
सब कुछ पढ़ाया, नहीं पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का॥

२-चलने लगा जब पाँव तब गुण दोष दिखलाये गये।
टट्टी तथा पेशाब के सब ठौर दिखलाये गये॥
रह दूर ही मत छू इसे यह छी नहीं कुछ काम का।
सब कुछ पढ़ाया, नहीं पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

३-जब और भी आयु बढ़ी तो तर्क मैं करने लगा।
मानूँ न कोई बात घुड़की सहूं पिटने लगा ॥
दीन्हा सबक कुछ दण्ड का कुछ भेद सामरुदाम का।
सब कुछ पढ़ाया, नहीं पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का ॥
४-जब सातवीं में मैं पड़ा तब मदरसे भेजा गया ॥
घर खेल दोनों छुट गये अत्यन्त मैं व्याकुल भया ॥
कुछ मार से कुछ प्यार से पढ़ना जचा आराम का।
सब कुछ पढ़ाया, नहीं पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का ॥
५-शिक्षक सिखाये वर्ण पीछे अङ्क सिखलाये गये।
लिखना सिखाया बाद पोथी पाठ रटवाते भये ॥
विद्या सिखाई गणित की नकशा दिखाया ग्राम का।
सब कुछ पढ़ाया, नहीं पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का ॥
६-घोड़े गधे पशु पक्षियों के पाठ बहु रटवा दिये।
सब काल की गिनती कराई देश भी बतला दिये ॥
दीना पढ़ा इतिहास तिब्बत चीन अरुआसाम का।
सब कुछ पढ़ाया, नहीं पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का ॥
७-शिक्षा पढ़ी ए,बी,सी,डी, की डबल एम.ए. कर लिया।
जाकर विदेशों में पढ़ा इंग्लैंड रिटर्न भी हो गया ॥
आकर वहां से फिर यहां संग्रह किया धन धाम का।
सब कुछ पढ़ाया, नहीं पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का ॥
८-मेरे कई साथी पढ़े संस्कृत बनारस जाय के।
ज्योतिष पढ़े या व्याकरण या न्याय चित्त लगायके ॥
आकर वहाँ से फंस गये मुख देखि नारि ललाम का।
सब कुछ पढ़ाया, नहीं पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

९-घर नारि आई नित नये ही पाठ सिखलाने लगी।
झगड़ा कराया मातु पितु से रार करवाने लगी॥
किंकर बनाया काम का लोभी महा धन धाम का।
सब कुछ पढ़ाया, नहीं पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का॥
१०-खाईं बहुत सी ठोकरें दिन रात दुख भोगा किया।
पाया नहीं आराम तो कुछ चित्त सब से हट गया॥
सद्गुरु मिले आड़ा हुआ कुछ पुण्य पिछले जन्म का।
सिर हाथ धरि गुरु ने पढ़ाया पाठ ईश्वर प्रेम का॥
११-मिथ्या जगत है ब्रह्म सत निश्चय सहित बतला दिया।
है ब्रह्म सोई आत्म है श्रुति वाक्य से जतला दिया॥
कौशल्य जब कीन्हा मनन अनुभव हुआ तब आत्म का।
सद्गुरु कृपा से अब पढ़ा मैं पाठ ईश्वर प्रेम का॥

◈ सत्गुरु की आवश्यकता व महत्व ◈

श्लोक—यावद्गुरुर्न कर्तव्यो तावन्मुक्तिर्न लभ्यते।
तस्मात् गुरुश्चकर्तव्यो गुरुं विना न सिद्धयति॥

भावार्थ—हे नारदजी जब तक गुरु नहीं किया जाता, तब तक मुक्ति नहीं मिलती। इसलिए गुरू अवश्य करना चाहिए, बिना गुरु के किसी भी कर्म में सिद्धि नहीं होती।

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके (शंकराचार्य)

प्रश्न—संसार में दुर्लभ क्या है क्या है ?

उत्तर---सद्गुरु की प्राप्ति दुर्लभ है।

० शिव पार्वती सम्वाद ०

कैलास शिखरे रम्ये भक्ति साधन हेतवे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

प्रणम्य पार्वती भक्त्या शंकरं परिपृच्छति ।।

अर्थ—कैलाश के रमणीक शिखर पर गुरु भक्ति सेवा के पावन के लिये पार्वती शंकरजी को भक्ति पूर्वक प्रणाम करके पूछती है ।

केन मार्गेण भो स्वाम्नि देही ब्रह्ममयी भवेत् ।
तत्कृपां कुरुमें देव नमामि चरणं तव ।।

अर्थ—हे मेरे स्वामी कौन मार्गसे जीव ब्रह्म मय हो जाता है । हे देव कृपा करके वह मार्ग मुझ से कहो मैं आपके चरणों मै नमस्कार करती हूं ।

गु शब्दस्त्वंधकारोऽस्ति रुशब्दस्तन्निरोधकः ।
अन्धकार विरोधित्वाद्गुरित्यभिधायंते ।।

अर्थ—गु शब्द अन्धकार रूप है, रु शब्द अन्धकार को दूर करने वाला है जो अन्धकार को अथवा अज्ञान को दूर कर देते हैं वो ही सतगुरु देव हैं ।

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः ।
गुरुर्ज्ञानात्परंतत्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

अर्थ—हे पार्वती सत्गुरु से अधिक कोई तत्व नहीं और सत्गुरु से अधिक कोई तप नही है सत्गुरुदेव के ज्ञान से और कोई परम तत्व का ज्ञान नही है इसलिये ऐसे सत्गुरुदेव को मेरा प्रणाम है ।

शैव शक्त्यागमादीनि सन्ति बहुमतानि च ।
अपभ्रंशेत्समस्तानां जोवानां भ्रात चेतसाम् ।।

अर्थ—शैव शाक्त्य आगम मत पंथ मजहब सम्प्रदायों में बहुत से मत पँथ हैं । हे प्रिया पार्वती यह पंथ जीव को भ्रम में ही

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

डालने वाले हैं। एक सत्‌गुरु के सिवाय छुड़ाने वाला इस संसार में कोई नही है।

गुरोः कृपा प्रसादेन ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः।
सामर्थ्यं तत्प्रसादेन केवलं गुरु सेवया ॥

अर्थ—हे प्रिया देवी ब्रह्मा विष्ण और महेश्वर ये भी सद्गुरु की कृपा दृष्टि से पैदा हुए हैं और सद्‌गुरु देव की सेवा करने से इनको सामर्थ्य प्राप्त हुई है।

सप्तसागर पर्यन्तं तीर्थस्नानादिकैः फलम्।
गुरुपादोदकस्यापि सहस्रांशेन दुर्लभम् ॥

अर्थ—हे पार्वती सुनो सात सागर पर्यन्त तीर्थ स्नानादिक का फल सत्‌गुरुदेव के चरणोदक के हजारवें अंश के बराबर नहीं है इसलिये सत्‌गुरु देव का चरणोदक दुर्लभ है।

गुरुदेव जगत्सर्वं ब्रह्मा विष्णु शिवात्मकम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्संपूजयेत् गुरुम् ॥

अर्थ—हे प्रिया देवी सत्‌गुरुदेव का आत्मा ब्रह्मा विष्णु शिव में हैं, और सब जगत की आत्मा है सो इससे सत्‌गुरुदेव की आत्मा सब आत्माओं से श्रेष्ठ आत्मा है। इसलिये सब प्रकार से सत्गुरु-देव का पूजन करें और सेवा तथा आज्ञा का पालन करें।

गुरू सेवा परतीर्थमन्यतीर्थं निरर्थकम्।
सर्व तीर्थानि देवेशि सद्‌गुरोश्चरणाम्बुजे ॥

अर्थ—हे प्रिया महादेवी सत्‌गुरु सेवा परम तीर्थ है, अन्य तीर्थ निरर्थक हैं कोई फल नहीं प्राप्त होता है। हे देवेश्वरि सत्‌गुरुदेव के चरण कमल सर्व तीर्थ हैं।

सर्व तीर्थफफं देवि पादांगुष्ठे च वर्तते।
अतः पूर्वंमया देवी न कस्य कथितं प्रिये।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अर्थ—हे महादेवी सद्गुरु के पैर के अंगूठे में सब तीर्थों का फल विराजमान है। जो अंगूठे को माथे में और नेत्रों में लगाते हैं उनको सब तीर्थों का फल मिलता है। और नेत्रों में प्रकाश, हृदय में प्रकाश होता है, हे महादेवी मैंने यह पहले किसी से नहीं कहा है।

गुरोः पादोदकं पीत्वा गुरोरुच्छिष्ट भोजनम्।
गुरुमूर्तेः सदाध्यानं गुरुस्तोत्रं सदा जपेत्॥

अर्थ—हे प्रिय पार्वती सत्गुरु के चरणामृत को पीकर और सत्गुरु देव का बचा हुआ भोजन करे और सत्गुरु मूर्ति का ध्यान सदा करे और सदा ही सत्गुरुदेव के सोलह मन्त्रों को जपे।

काशी क्षेत्र निवासी च जाह्नवी चरणोदकम्।
सत्गुरु विश्वेश्वरः, साक्षात्तारकं ब्रह्मनिश्चितम्॥

अर्थ—सत्गुरु का चरणामृत काशी का निवास है और श्री गंगाजी का साक्षात् चरणामृत है। हे प्रिय पार्वती सत्गुरु देव निश्चित विश्वेश्वर साक्षात् अथवा साकार रूप तारण वाला ब्रह्म है।

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं। न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं॥
शिवशासनतः शिवशासनतः। शिवशासनत शिवशासनतः॥

अर्थ—महादेवो ये निश्चय करलो, मेरे उपदेश से सत्गुरु से कोई अधिक नहीं है। और शिव के उपदेश से सत्गुरुदेव से बढ़कर कोई नहीं है। और शिव के उपदेश से हे प्रिय पार्वती सत्गुरु से अधिक तीनों लोक में कोई नहीं है। और शिव के उपदेश से पूरा निश्चय करना चहिये. कि सत्गुरु के सिवाय अन्य कुछ भी उपासना नहीं है, विश्वास करो विश्वास करो। विश्वास करो।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

एवं श्रुत्वा महादेवि गुरुनिन्दाँ करोति यः ।
स याति नरकं घोरं यावच्चन्द्रदिवाकारौ ॥

अर्थ—हे प्रिय पार्वतीजी जो इस प्रकार सुनकर गुरु की निन्दा करता है वह जब तक सूर्य और चन्द्रमा है तब तक घोर नरक में जाता है ।

श्लोक—येषां स्मरणात्पुंसां, सद्यः शुध्यन्ति वै गृहाः ।
कि पुनदर्शनस्पर्श, पाद शौचासनादिभिः ॥
(भागवत १/१९/३३)

अर्थ—मुनिवर आप जैसे महात्माओं के स्मरण मात्र से ही गृहस्थों के घर तत्काल पवित्र हो जाते हैं । फिर दर्शन, स्पर्श, पाद प्रक्षालन और आसनादि को प्रदान करने का सुअवसर मिल जाय, तब तो कहना ही क्या है ?

प्रश्न—क्या स्त्रियां भी गुरु धारण कर सकती हैं ?

या स्त्री भर्त्तुं वियुक्ताऽपि, स्वाचारे संयुताशुभा ।
साच मन्त्रान्प्रगृह्णातु, सा भर्त्री मदनुज्ञया ॥
(भविष्य पुराण उ० पर्व ४/१३/६२-६३)

उत्तर—उत्तम आचरण वाली विधवा स्त्रियाँ वेद मंत्रों को गुरुद्वारा ग्रहण करें और सधवा स्त्रियां अपने पति की अनुमति से ग्रहण करें क्योंकि बिना गुरू के ज्ञान नहीं होता, ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं ।

॥ श्रुति—ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ॥

० ज्ञान नहीं गुरु बिन किसी ठौर पाइये ०

० मनहर छन्दः ०

जप में लगावो मन, तप में तपाओ तन,

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

इन्द्रिय करो दमन, पूजन कराइये ॥
विधान से करो यज्ञ, पंडित कहावो सुज्ञ,
मन्त्र से मिटाय विघ्न, मोद मन लाइये ॥
इष्ट देव हों प्रसन्न, स्वर्ग माँहि हो सदन,
शत्रु सब हों दमन, फल फूल जाइये ।
तो भी आत्मज्ञान बिन, सब कुछ होय शून्य,
ज्ञान नहीं गुरू बिन, किसी ठौर पाइये ॥१॥

पूर्ण होय धन धान, राज ठाठ खान पान,
गुणिन मांहि सम्मान, विद्वर कहाइये ।
क्षमा क्षमा की पुकार, करत हैं चोपदार,
साथ सरदार शिर छतर धराइये ॥
छोटे बड़े सर्व जन, प्रेम से करें नमन,
नृत्य ज्ञान प्रति दिन, उत्सव मनाइये ।
तो भी आत्मज्ञान बिन सब कुछ होय शून्य,
ज्ञान नहीं गुरू बिन, किसी ठौर पाइये ॥२॥

जल पूर्ण नदी पास, सुन्दर बना निवास,
वाटिका सुवास घास गलीचा बिछाइये ।
सुन्दरी को लेय संग, उमंग से अंग अंग,
प्रेम रंग के तरंग, भीजिये भिजाइये ॥
फीका इन्द्र का सदन, लज्जित नन्दन वन,
शीतल बहे पवन, आनन्द मनाइये ।
तो भी आत्मज्ञान बिन, सब कुछ होय शून्य,
ज्ञान नहीं गुरू बिन, किसी ठौर पाइये ॥३॥

या तो देश परदेश, विचरा करें हमेश ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स्वदेशी विदेशी सब, भाषायें स्वाधीन हैं।
योग यन्त्र मन्त्र जान, टोना तन्त्र पहिचान,
ऋद्धि, सिद्ध, वृद्धि, बुद्धि सब में प्रवीण हैं।
भाई बन्धु मानें बात, जग में पूरे विख्यात,
अनुकूल योग साथ, पूर्ण आयु पाइये ॥
तो भी आत्मज्ञान बिन, सब कुछ होय शून्य,
ज्ञान नहीं गुरू बिन, किसी ठौर पाइये ॥

पद्य--सबका ही अपना, बिना कल्पना, ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता।
निज को नहिं जाने, सब पहिचाने, प्राज्ञ अज्ञ बन जाता॥
चर्णोदक लेवे, सद्गुरू सेवे, तब अज्ञान नशावे।
इस विधि कर शुद्धी, मिटा अशुद्धी, निज में निज मिल जावे।

० रामायण में गुरु महिमा ०

वंदउँ गुरुपद पद्म परागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा॥
श्री गुरुपद नख मणि गण जोती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हित होती॥
गुरुपद रज मृदु मंजुल अंजन। नयन अमिय दृग दोष विभंजन॥
जोगुरुचरण रेणु सिर धर हीं। ते जन सकल विभव वस करहीं॥

० गुरु कीजै जानकर, पानी पीजै छानकर ०

यों तो गुरुबहुत हैं प्रथम तो माता, पिता, शिक्षक, तथा यज्ञोपवीत कराने वाले, तथा विवाह व कुल परम्परागत गुरू, किंतु सर्वोपरि होते हैं ज्ञानी गुरू, इनके बिना अन्य गुरू मुक्ति दायक नहीं होते। गुरूश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ व तरन तारन हों॥

सन्त—तीन प्रकार के होते हैं १ तो तरन, यानी जो कि आप अपना ही कल्याण करके तर जावे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

२—तारन-उनके उपदेश से और भले ही तर जाँय किन्तु
यं अपने आचरण में न लाने के कारण न तर सकें।।
३—तरन-तारन जो स्वयं तर जावें और दूसरों को भी तार
दें, ऐसे तरन तारन सन्तों को ही सद्गुरू धारण करें।।

श्लोक—दुर्जना सज्जनः भूयात् , सज्जनः शांति माप्नुयात् ।
शान्तो मुच्येत बंधेभ्यो, मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत् ।।

अर्थ—दुर्जन सज्जन हों, सज्जनों को शान्ति प्राप्त हो, शान्त
पुरुष बन्धन से मुक्त हों, और मुक्त पुरुष दूसरों को भी मुक्त करें।

पद्य—यदि स्वार्थ अपना मान कर ज्ञानी लगेंगे ध्यान में।
दुखार्त जन को कौन फिर ले जाय पथ कल्याण में ।।
सुख शान्ति लहते आप देते और को सुख शांति हैं।
ऐसे विवेकी ही कहाते साधु अथवा सन्त हैं।।

ऐसे सन्तों की शरण ग्रहण कर श्रद्धा पूर्वक गुरू मंत्र
धारण करें, क्योंकि श्रद्धा रहित मंत्र फल नहीं देता।

० राजा का दृष्टान्त ०

एक राजा ने एक बड़ा सुन्दर बगीचा लगवाया जिसमें देश विदेश के सुन्दर-सुन्दर फल लगवाये। किन्तु जब उसमें फल आने लगे तो कोई रात्रि में ही तोड़ ले जाया करे। राजा ने परेशान होकर पहरा लगवाया, किन्तु चोर का पता नहीं लगा, तब राजा ने नगर में गुप्तचरों को भेजा, तब पता लगा कि एक आदमी के द्वार पर फलों के छिलके पड़े मिलते हैं। हो सकता है कि वही फलों का चोर है, अस्तु राजा ने उसे पकड़ बुलाया और उससे पूछा कि इतने पहरे में तुम फलों की चोरी कैसे करते हो। तब उसने कहा मेरी पत्नी बड़ी हठी है, उसी के कारण मैं फलों को

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

मन्त्र द्वारा तुड़वा के मंगवा लेता हूं। तब राजा ने कहा कि उस मंत्र में इतनी शक्ति है, तो वह मंत्र मुझे बतादे मैं तेरे को छोड़ दूँगा। उसने भय के कारण राजा को मंत्र बतला दिया और कहा कि इसे २१ बार जपकर बाईसवीं बार बोलने से फल आजायेंगे। राजा ने ऐसा ही करके झोली फैलाई कि फल आजायें, किन्तु क्या मक्खी भी नहीं आई तब राजा ने क्रोधित होकर कहा कि मंत्र ठीक नहीं है। किन्तु मंत्री समझदार था उसने कहा राजन् विना श्रद्धा के मन्त्र फल नहीं देता। अतः आप इन्हें श्रद्धायुक्त विधिपूर्वक गुरू मानकर मंत्र ग्रहण करें राजा ने ऐसा ही किया। अबकी बार राजा ने २१ बार बोलकर, बाईसवीं बार ज्योंही झोली फैलाई तो राजा की गोद तुरन्त फलों से भर गई। राजा चकित होकर बोला, "धन्य है गुरु तथा श्रद्धा की महिमा"।

० स्वागत्-सन्त या सद्गुरु के आने पर ०

(प्रेषक:—कमलेश शर्मा सहारनपुर)

आज मेरा मन अति हर्षाये,
आज मेरे घर सत्गुरू आये ॥ टेक ॥

बहुत दिनों से आस लगाई,
आज धन्य भई दर्शन पाये ॥ आज मेरा मन ॥१॥

चरण परस कर करूँ बन्दना,
किरपा करि मोहि चरण लगाये ॥ आज मेरा मन ॥२॥

रोम रोम पुलकित भयो मेरो,
आज मैंने प्रभु दर्शन पाये ॥ आज मेरा मन ॥३॥

कमला करे विनती कर जोरी,
सत्गुरू मोहि ना दियो भुलाये ॥ आज मेरा मन ॥४॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

दृष्टान्त

साधू आवे द्वार पर, चरणों पड़िय धाय,
ना जाने किस भेष में, नारायण मिल जाँय ॥

पद्य—बड़े प्रेम से मिलना सबसे दुनियां में इन्सान रे।
ना जाने किस वेष में बाबा मिल जावें भगवान रे ॥

० सत्संग की महिमा ०

पद्य—शंकर सुखद सत्संग की महिमा महान अपार है।
अवसर निकल जाये न फिर मिलना बड़ा दुश्वार है ॥

श्लोक—चन्दनं शीतलं लोके, चन्दनादपि चन्द्रमा।
चन्द्राच्चन्दनाच्चैव, शीतला साधु संगतिः ॥

० सन्तों से प्राप्त भगवत् प्राप्ति के अनुभूत उपाय ०

१०—धृतिः छमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रह ॥
धोर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ॥ मनु ॥

९—श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥(श्रीमद्भागवत)

८—यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा, ध्यान,
समाधयोऽष्टावाङ्गानि ॥ (पातञ्जलि)
यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा,
ध्यान, समाधि।

७—इस असार संसार में सात वस्तु हैं सार।
संग, भजन, सेवा, दया, ध्यान, दैन्य, उपकार ॥

६—संध्या पूजा यज्ञ तप दया सुसात्विक दान।
इन छः के आचरण से निश्चय हो कल्यान ॥

५—गायत्री गोविन्द गौ गीता गंगा स्नान।
इन पांचो की कृपा से शीघ्र मिलें भगवान ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

४—संयम, सेवा, साधना, सत्पुरुषों का संग।
ये चारों करते तुरत मोह निशा का भंग॥ (योगवाशिष्ठ)

३—सत्य वचन, आधीनता, परतिय मातु समान।
इतने पै हरि ना मिलें, तुलसीदास जमान॥

२—दो बातों को भूल मत, जो चाहे कल्याण।
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान॥

१—सर्वं धर्मान्परित्यज्य मामेकंशरणं व्रज॥
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः॥ गीता॥

० तितिक्षा की शक्ति कहां से ? ०

एक बार मैं और सुदर्शन सिंहजी 'चक्र' दौनों अति साधारण रीति से कैलाश आश्रम ऋषिकेश की एक कुटिया में रह रहे थे। रात्रि के दस बजे लघुशङ्का के लिये बाहर निकलने पर पांव में, बिच्छू डंक मार गया। पहाड़ी बिच्छू बड़े-बड़े काले-काले भयंकर और विषैले होते हैं मैंने सोचा कि यह बात यदि साधुओं को बतला दी जायेगी तो उन्हें कष्ट होगा। सुदर्शनजी को चिकित्सा के लिये मनाकर दिया और कह दिया कि तुम प्रेम से सो जाओ, मैं भी सोता हूं। मैं पद्मासन बाँधकर बैठ गया और तीन घन्टे तक स्थिर बैठे रहने पर नींद आ गई। चक्रजी को यह घटना याद है और उन्होंने अपने संस्मरण में लिखी है।

परन्तु मेरे अन्दर उस बिच्छू के डंक के विष को सहने की शक्ति कहां से आई, यह उन्हें आजतक मालूम नहीं है। बात यह थी कि उस समय से कुछ मास पूर्व मैं और मेरे मित्र जे० सिंह- दोनों गंगा तट पर एक महात्मा के दर्शन करने गये। वे महात्मा अद्वैतनिष्ठा-सम्पन्न थे और खप्पर वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध थे। पहले भी एक दो बार हम उनका सत्संग कर चुके थे। इस

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

बार जब हम उनके पास बैठे, तो वे कुछ अस्वाभाविक-सें लगे। नेत्रों में लाली और वाणी में भी लड़खड़ाहट। पूछने पर उन्होंने बताया कि बीत जाने वाली रात्री में जब वे जंगल में वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान कर रहे थे, एक विच्छू उनके शरीर पर चढ़ आया और नौ जगह डंक मार गया। अब तक बीस घण्टे बीत चुके थे, न तो उन्होंने किसी से कहा था और न कोई चिकित्सा ही की थी। हम लोगों ने बहुत आग्रह किया कि उपचार करें, परन्तु उन्होने स्वीकार नहीं किया। वे केवल एक लङ्गोटी पहिनते थे और रात्रि में बिना किसी विस्तार के धरती पर ही सोते थे। वे थोड़े दिनों में स्वस्थ हो गये और हमारे गाँव के पास आकर दो-चार दिन रहे। केवल माँग कर खाते थे।

उस दिन जब मुझें कैलास आश्रम में बिच्छू डंक मार गया मैं पद्मासन लगा कर बैठा तो उनका स्मरण हो आया और उनकी सहन शक्ति का ध्यान करने से मुझ में भी सहन शक्ति का संचार हो गया और तीन घण्टे में सारी पीड़ा निवृत होकर नींद आ गई यह घटना सन् १९३२-३३ की है—स्वामी अखंडानन्द जी सरस्वती ॥

० परोपकार की महिमा कवित्त ०

धन्य प्यारे जन्म उसका दूसरों के काम आवे।
मरता और जीता है पराये उपकार में ॥
राम काज हेतु हनुमान सिन्धु पार गये।
रावण मार लङ्का को विभीषण अधिकार में ॥
मिलते हैं अनेकों उदाहरण पूर्व पुरुषों के।
शिवी ने तन काट दिया कबूतर के प्यार में ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मसल है मशहूर दूसरों की भलाई के लिये।
हिन्दू पुत्र प्यारे जन्म धारें संसार में॥

० परोपकार की महिमा- दृष्टान्त ०

थोड़े से भी परोपकार का महान फल है। एक नगर में एक बड़ा पापी रहता था। जीवन में उसने कोई अच्छा कार्य नहीं किया था।

उस नगर के एक रास्ते में कुछ कीचड़ पड़ता था, सभी यात्री उसी कीचड़ में पैर रखकर निकलते थे। उस पापी के मन में अच्छा विचार आया और कहींसे एक पत्थर लाकर के उस कीचड़ में रख दिया। अब सभी जाने वाले उस पत्थर पर पैर रखकर जाने लगे, सभी को बड़ा आराम हो गया, जब उस पत्थर रखने वाले की मृत्यु हुई, तब यमदूत उसे नरक ले गया। तब यमराज ने कहा यह बड़ा परोपकारी है। इसे स्वर्ग में ले जाओ, इसने महान पुण्य किया है। जिसनें एक पत्थर रखकर रास्ता साफ किया था उसे १ हजार वर्ष का स्वर्ग सुख उस परोपकार का फल मिला, और जो अधिक पुण्य करते हैं, उन्हें महान फल मिलता है।

प्रमाण—जो सन्त के लिये कुटिया बनवाता है वह दस हजार वर्ष स्वर्ग सुख भोग करता हैं और जो अपनी या पूर्वजों की दी हुई जमीन या मकान पर कब्जा करता है, वह दस हजार वर्ष तक विष्ठा का कीड़ा बनता है।

श्लोक—स्वदत्तां परदत्तां वा, यो हरेच्च वसुन्धराम।
दशवर्ष सहस्राणि, विष्ठायां जायते कृमिः॥

पद्य—जो पराये काम आता धन्य है जग में वही,

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

द्रव्य ही को जोड़ कर कोई सुयश पाता नहीं ॥
पास जिसके रत्न राशि अनन्त और अशेष है,
क्या कभी वह सुरसरी के सम हुआ शलिलेश है ॥

✓ ॐ सात्विक दान की महिमा ॐ

दृष्टान्त—एक बार कुम्भ के मेले में बहुत धनी लोग, महन्त आदि सभी गये। सबने बड़े-बड़े अन्नक्षेत्र लगाये बड़ा भारी पुण्य किया। एक गरीब घास खोदने वाले के मन में भी आया, कि मैं आज भोजन नहीं करूँगा, आज की घास का पैंसा मैं भी दानकर दूं। बस घास बेची तो चार आने पैसे आये, यही उसकी पूरे दिन की आमदनी थी, चार आने में तो आता ही क्या ? स्नान करके चार आने के चने लिये और एक भूखे को खिला दिये। जब सभी दानी लौटे तो साथ वह भी था, चार आने वाला दानी। जब तो कड़ी धूप पड़ रही, थी पुण्य के प्रताप से बादल की छाया सबके साथ ऊपर चलने लगी, सभी बड़े प्रसन्न होकर बोले हमारा दान सफल हो गया, परमात्मा ने छाया करदी है। इतने में उस गरीब को प्यास लगी और पीछे पानी पीने रह गया, छाया भी बादल की जो साथ चल रही थी उसी के ऊपर रह गई। सभी धूप में चलने लगे सबने सोचा कि, किसी हवा में अनुकूल होने से छाया दूर चल रही थी। करवट बदलने से छाया दूर चली गई है। किन्तु जब वह चार आने वाला दानी पानी पीकर आया तो छाया उसके साथ फिर आ गई और साथ साथ चलने लगी, तब तो सब समझ गये कि इस भक्त की ही महिमा हैं, क्योंकि छाया इसी के साथ चलती है, सभी उससे पूछने लगे, तुमने ऐसा क्या दान किया है, जो छाया तुम्हारे साथ चलती है, तब भक्त ने

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कहा-महाराज दान तो आपने किया हैं। मुझ गरीब के पास क्या है। आज चार आने की घास के पैसों के चने दे दिये हैं एक भूखे को, और तो कुछ किया नहीं, बस उसी का फल हैं।

"धन्य है दान की महिमा"

◈ गौओं की पुकार व उत्तराखण्ड का सन्देश ◈

कटती गौऐं करें पुकार, बन्द करो ये अत्याचार।
जनजन की है यही पुकार, बन्द करो गौवध व्यापार ॥

आपको विदित है ? कि आज देश में दैनिक तीस हजार के अनुमान से गौवध हो रहा है, जिससे देश दूध, दही और मक्खन जैसे शक्तिदायक पदार्थों से हीन जैसा हो गया है, तथा गौ माता तो बड़ी उपकारी हैं कहा भी है कि—

० गौ के उपकार---सवैया ०

गौ के उपकार कहा वरणों, जिसके ऋण से ये ऋणीय मही है।
पय देत हमें, घृत देत हमें, बल देत मनोहर मातु वही है॥
अन्न देत हमें, धन देत हमें, सुख देत हमें, दुःख भोग रही है।
तन से घन से अरु कर्महु से, करिलेंउ सहाय स्वधर्म यही है ॥

अतः हम गौमाता की रक्षा के लिये प्रयत्न करें। दिलीप ने तो गौ रक्षा के लिये प्राण भी अर्पण कर दिये थे।

० गौ के लिये दिलीप की प्राण भेंट— कवित्त ०

अरे सिंह प्रबल हुआ तू छल कौशल से,
मेरा बल मुझको जवाब दिये जाता है।
समय के फेर ने किया है जेर वीर को भी,
घेर गाय नन्दिनी को हाय तू सताता है॥
किन्तु रख ध्यान जब तक कि प्राण तन में हैं,

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गौ का एक बाल भी न बाँका कर पाताहै।।
त्राण करने में गौमाता के दिलीप आज,
भेंट तुच्छ प्राण की ले तुझको चढ़ाता है।

अतः हमारा समस्त जनता से नम्र निवेदन है, कि गौ रक्षा के निमित्त इस मंत्र का जप, जब तक कि गौवध बन्द न हो तब तक अवश्य करें। क्योंकि समष्टी का संकल्प ही, भगवान का संकल्प हुआ करता है। सफलता अवश्य मिलेगी, मंत्र यह है—

० गौरक्षा के लिये (उत्तरखण्ड का) महामन्त्र ०

ओ३म् त्राहि गां कृष्ण हे। ओ३म् त्राहि गाँ राम हे ॥
ओ३म् त्राहि गां पशु पतेः ॥

० प्रार्थी विश्वगुरुजी महाराज ०

० भगवान श्रीकृष्ण की १६ कलायें ०

-दृष्टिकला—बैठे-बैठे गुप्त पदार्थों को दूर से देख लेना--
-अदृष्टिकला—देखते-देखते छिप जाना।
-स्पर्शिनीकला—अदृश्य रूप से दूसरे के शरीर और मन पर ...से काबू करना।
-आकर्षिणीकला—दूर वस्तु को पास में खींच लेना।
-बहुरूपिणी—अनेक रूप बनाकर ब्रह्मा को अपनी माया दिखाना
-रसिनीकला—बिना बनाये हुये सब रसों से पेट भर देना। ...दी के यहाँ साग पत्ता खाकर दुर्वासादिकों का पेट भर देना।
-करणीकला—मनुष्य जिस काम को न कर सके उसको कर ...ना। जैसे कालिया नाग के फणों पर नाचना। अंगुली पर ...को उठाना।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

८—गमिनीकला—संकल्प करते ही जहाँ तहां पहुंच जाना। भरी सभा में द्रौपदी की लाज बचाना।

९—उत्पादिनीकला—नई चीजें पैदा कर लेना। नये बछड़े नये ग्वाल बाल बना लेना।

१०—वाचिनीकला—जैसा मुँह से बोल दिया वैसा ही होना। अवतारों में ये कलायें स्वभाव सिद्ध होती हैं।

११—श्रावणीकला—दूर की बात सुन लेना—द्वारिका में बैठे-बैठे ही पुकार को सुन कर दौड़ पड़ना।

१२—जलतरंगिणी—जल में तैरना—कालीदह में नाग से लड़कर बाहर आना।

१३—अनुमानिनीकला—संकल्प मात्र से तीनों कालों का ज्ञान हो जाना।

१४—बलनीकला—बालकपन में पूतना को मार देना—शकट—गाड़ी को उल्ट देना यमलार्जुन का उद्धार करना।

१५—सत्य संकल्पिनी—संकल्प करते ही उसका सत्य होना।

१६—स्वतन्त्रिणीकला—यह कला ईश्वर और योगियों में रहती है। युधिष्ठर से झूठ बुलाई। फल स्वरूप धर्मराज युधिष्ठिर को नरक देखना पड़ा। भगवान कृष्ण का कुछ नहीं बिगड़ा। इस तरह भगवान का सोलह कलाओं से परिपूर्ण अवतार है।

श्री १०८ क्यों ?

नाम के आगे श्री १०८ लिखते हैं अथवा माला में भी १०८ ही दाने होते हैं। इसका कारण यह है कि यह पवित्र संख्या है प्राचीन पद्धति से स्वर १६ तथा व्यंजन ३६ छत्तीस हैं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उदाहरणार्थः—स्वर गणना १६

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ए	ऐ	ऌ	ॡ	ओ	औ	अं	अः

उदाहरणार्थः—व्यंजन गणना ३६

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३५
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	श्र	त्र	ज्ञ

सीताराम, राधिकाकृष्ण आदि पावन नामो में १०८ ही हैं। सीता इसमें ५४, राम में ५४ मिलाकर १०८ है।

जैसे—राधिका में ५४, कृष्ण नाम में मिलाकर १०८ हैं।

★ उदाहरणार्थ सीताराम के १०८ ★

स्वर और व्यञ्जनों के नम्बर तालिका में मिलाइये, सन्धि विच्छेद करके।

स + ई + त + आ = सीता के नम्बरों का	
३२ + ४ + १६ + २ = योग = ५४	सीता राम का
र + आ + म = राम के नम्बरों का	योग १०८ है।
२७ + २ + २५ = योग ५४	

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

० उदाहरणार्थ राधिका कृष्ण ०

र + ा + ध + ि + क + ा = राधिका का	
२७ + २ + १९ + ३ + १ + २ = योग ५४	राधिका कृष्ण
क + ऋ + ष + ण = कृष्ण के नम्बरों का	का योग =
१ + ७ + ३१ + १५ = योग = ५४	१०८ है।

० उदाहरणार्थ ब्रह्म १०८ ०

ब	र	ह	म	ब्रह्म
२३	२७	३३	२५	योग = १०८

इसलिये पावन नामों में १०८ की गणना होने से श्री १०८ लिखा जाता है। तथा माला में भी १०८ दाने होते हैं।

० अष्ट सिद्धियों के नाम ०

१–अणिमा २–महिमा ३–लघिमा ४–गरिमा ५–प्राप्ति ६–प्राकाम्य ७–ईशित्व ८–वशित्व ।

० सप्त पुरियों के नाम ०

श्लोकः—अयोध्या मथुरा माया, काशी काञ्ची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती ज्ञेया, सप्तैता मोक्ष दायकाः ॥

१–अयोध्या २–मथुरा ३–मायापुरी (हरिद्वार में) ४–काशीपुरी ५–काञ्चीपुरी ६–उज्जैन ७–द्वारिकापुरी।

० मुख्य चारों धामों के नाम ०

१–बद्रीनारायण २–सेतुबन्ध रामेश्वरम् ।
३–जगन्नाथधाम ४–द्वारिकाधाम ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० चारों महावाक्यों के नाम व मठ ०

(१) अहं ब्रह्मास्मि (यजुर्वेद) श्रंगेरी मठ (रामेश्वर में)
(२) प्रज्ञानं ब्रह्म (ऋग्वेद) गोवर्धन मठ (जगन्नाथपुरी में)
(३) अयमात्मा ब्रह्म (अथर्व वेद) ज्योतिर्मठ (बद्रिकाश्रम)
(४) तत्त्वमसि (सामवेद) शारदा मठ (द्वारिका)

◈ राकेट के विषय में प्राचीन प्रमाण ◈

० वायु पुराण का श्लोक ०

...कया क्रोश दशैकमश्वः सुकृत्रिमो गच्छति चरुगत्या।
...ुं ददाति व्यजनं सुपुष्कलंवा, बिना मनुष्येण चलत्यजस्रम् ।।

० संज्ञा राशी नामों में तपस्वी की विजय ०

...-संज्ञा राशी समानर्थौ, स्नेह भाजौ क्वचित् क्वचित् ।
पर द्वेष्यन्तौ च सन्दृष्टौ, तयोर्हीना प्रवादते ।। १ ।।

...र्थ—संज्ञाराशी व समान अर्थ वालों में कहीं-कहीं प्रेम देखा ...ा है। कहीं एक दूसरे से बैर करते देखे जाते हैं, दोनों में ...ोर का नाश होता है।

...—तपस्वी विजय नित्यं, यथैव बलि बावनौ ।
महादेवश्च मदनो, विख्यातौ राम रावणौ ।। २ ।।

...र्थ—तपस्वी की नित्य विजय होती है, जैसे बलि व बावन में ...की। महादेव व मदन में महादेव तथा राम रावण में तपस्वी ...की विजय हुई।

...—कृष्ण कसौ पुष्प वन्तौ, कौमुदी कुमुदावपि ।
एवं गान्ध्यादयोऽप्यन्ये बर्धमानाः युगे-युगे ।।

...र्थ—जैसे कृष्ण व कंस में तपस्वी कृष्ण की विजय हुई,

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

पुष्पवन्त कौमुदी व कुमुद में कुमुद की, इसी प्रकार वर्तमान युग में गाँधी व गवर्नमेंट गाँधीजी की क्योंकि गाँधी जी तपस्वी थे। किन्तु समान राशि जवाहर लाल व जिन्हा में किसी की भी जीत नहीं हुई, क्योंकि दोनों में एक भी तपस्वी नहीं था अतः बराबर ही रहे। अब आगे यदि विजय चाहते हो तो पूर्व ऋषियों की भाँति तपस्वी व संयमी बनो ॥

० परमात्मा की अनेक रूपता ०

इन्द्रों मायावी पुरुरूप ईयते (ऋग्वेद मण्डल ६ सूत्र ४७ मंत्र १८)

भावार्थ—सर्वश्रेष्ठ परमात्मा माया से अनेक रूप से प्रतीत होता है।

० स्वयं ब्रह्मरूपता ०

आना जाना छोड़ मोड़ कर मन सुख पाओ।
मैं सब में भरपूर ब्रह्म तुम निज में पाओ॥
सम्पद् विपद् समीप दूर के शूल निकालो।
जीवन वन रजमरज एक से फूल बनालो॥
स्वयं ब्रह्म परिपूर्ण तुम आना जाना कुछ नहीं।
मस्त रहो क्यों व्यस्तता क्रय करने जाते कहीं॥

—अखण्डानन्दजी सरस्वती

सिद्धान्त

० तस्माद् आत्मज्ञं ह्यर्चयेद् भूतिकामः ०

१—कल्याणकामी पुरुष को आत्मज्ञानी महात्मा की पूजा करनी चाहिये, क्योंकि उसके संकल्प के अनुसार सब कुछ होता है

२—जिस धारणा को धारण करने से ध्येय की प्राप्ति हो उसी का नाम धर्म है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तुम्हारा मार्ग अनदेखा और साजन अनमिला है। उसके लिये चलना और उसका मिलना तबतक असम्भव है, जब तक कि कोई तुम्हें उसका पता न बदला दे।

अन्तःकरण के चार प्रकार की प्रवत्तियों का बोध होना ही वेद ज्ञान हैं।

मन सहित पांच ज्ञान इन्द्रियों के विषय को समझ लेना ही षष्ट शास्त्र बोध है। और इनके तीन गुणों के अनुसार अठारह प्रकार की जो प्रवृत्तियां हैं, उनको जान लेना ही पौराणिक ज्ञान है।

अनेक प्रकार के भेदों का अन्त हो जाना ही वेदान्त बोध है।

सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये।

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

सत्य की धारणा से परिपूर्ण हो स्वयं को समर्पित करना ही ईश्वर शरणागति है।

जो स्वयं पूर्ण रहकर औरों को पूर्ण बनाने में समर्थ है, वही ईश्वर है।

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

जब मानव हृदय को सभी कामनायें समाप्त हो जाती हैं, तब वह मर्त्यधर्मा प्राणी अमर बन जाता है।

श्लोकः = अहिंसा परमोधर्मस्तथाऽहिंसा परं तपः।
अहिंसा परमं सत्यं, यतो धर्म प्रवर्तते ॥ (महाभारत)

अर्थः—अहिंसा ही परम धर्म है। अहिंसा परम तप है। अहिंसा धर्म की वृद्धि होती है, और धर्म से ही सुख शान्ति होती है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

प्राचीन ऋषियों की दिव्य रचना का श्लोक

रवेः कवेः किं समरस्य सारं,
कृषेर्भयं किं किमदन्ति भृङ्गा।
केषां भयंगभयमेव केषां,
भागीरथीतीरसमाश्रितानाम् ॥

इस श्लोक के आरम्भ के तीन चरणों में सात प्रश्न हैं। तथा अन्तिम चतुर्थ पाद में सातों प्रश्नों का उत्तर दिया है॥

प्रश्न	उत्तर
१–सूर्य का सार क्या है ?	(भा) यानी प्रकाश
२–कवि का सार क्या है ?	(गीः) यानी वाणी
३–युद्ध का सार क्या है ?	(रथ) यानी रथ
४–कृषिको किसका भय है ?	(ईती) यानी ईत, भीत
५–भौंरे क्या खाते हैं ?	(रसम्) यानी रस
६–भयभीत कौन है ?	(आश्रितानां) यानी पराधीन
७–अभय कौन है।	जोभागीरथके तीरपर आश्रितहैं

यानी-भागीरथी तीरसमाश्रितानाम्

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

१८ पुराणों के नाम व श्लोक संख्या

नाम पुराण	श्लोक संख्या
१—ब्रह्म पुराण	१००००
२—पद्म पुराण	५५०००
३—विष्णु पुराण	२३०००
४—शिवपुराण या वायुपुराण	२४०००
५—भागवत पुराण	१८०००
६—नारद पुराण	२५०००
७—मार्कण्डेय पुराण	९०००
८—अग्नि पुराण	१५४००
९—भविष्य पुराण	१४५००
१०—ब्रह्म वैवर्त पुराण	१८०००
११—लिंग पुराण	११०००
१२—वाराह पुराण	२४०००
१३—स्कन्द पुराण	८११००
१४—वामन पुराण	१००००
१५—कूर्म पुराण	१७०००
१६—मत्स्य पुराण	१४०००
१७—गरुण पुराण	१९०००
१८—ब्रह्माण्ड पुराण	१२०००
कुल योग चार लाख	४००००

० चरित्र निर्माण भाग समाप्त ०

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

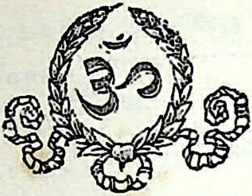

* विश्वगुरू कल्पतरु *

यन्त्रों के चमत्कार

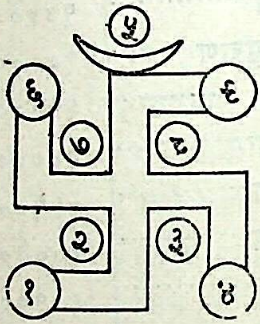

स्वस्तिक में बना हुआ बीसा यन्त्र ।
यह बीसा यन्त्र परम सिद्धि दायक है ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

✓◈ यंत्रों के चमत्कार ◈

० यन्त्र लिखते समय आवश्यक निर्देश ०

जिस यन्त्र को धारण करना हो उसे पहले एक बार चन्दन या आम की लकड़ी की बनी तख्ती पर कुंकुम से या सफेद कागजों पर लाल स्याही से, यन्त्र बड़ा हो तब कम से कम (१२५००) साढ़े बारह हजार और छोटा यन्त्र हो तब सवा लाख (१२५०००) अपने स्व हाथों से लिख लेना आवश्यक है। अगर यन्त्र कागजों पर लिखा गया हो तो इन यन्त्रों की गेहूं के आटे में गोलियां बनाकर समुद्र में डालनी चाहिये।

यन्त्र की साधना करते समय स्नान करके नये सफेद कपड़े पहनने चाहिये और पास में सुगन्धित धूप, दीप, इत्र रखे तथा सामने किसी चमत्कारिक देव अथवा तीर्थंकर का चित्र स्थापित करें। साधना पूरी हो जाने पर गुरु महाराज का शुभ आशीर्वाद लेकर भोजपत्र पर गुरु पुष्य- रवि पुष्य, मूल नक्षत्रों में और विशेष करके देवी देवताओं के जाग्रत अवस्था वाले दिनों में जैसे नव-रात्रि, विजया दशमी, काली चौदश दिवाली अथवा अपने नाम से निकाले हुये शुभ मुहूर्त के दिन श्रेष्ठ चन्द्रमा और शुभ समय में अष्टगंध, केसर हिंगलू या काली स्याही से लिखना चाहिये। यन्त्र लिखते समय धूप, दीप, फल, फूल, नैवेद्य, अक्षत द्रव्य, वस्त्र, इत्र व जल पास में लेकर बैठें, जब यन्त्र पूरा लिख लेवें तब उस यन्त्र को एक बड़ी थाली में स्थापित करके सब सामग्री यन्त्र के सामने चढ़ा देनी चाहिये।

लिखे यन्त्र को स्वर्ण के ताबीज में डालकर रखना विशेष अच्छा

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

होता है। अगर इतनी शक्ति न हो तो फिर दूसरे में चाँदी की ताबीज जो सोने का तुस लगा हो या तांबे की तावीज काम में लावें। ताबीज में यन्त्र डालकर लाख से ढक्कन मजबूत पैक करें तथा पैक करते समय लोहे की वस्तु तावीज को न छूने पावे। इस बात का पूरा ध्यान रखें।

५—तावीज प्रथम तो गले में ही धारण करना चाहिये। गले में धारण किया हुआ विशेष फलदाई होता है। मगर कइयों को शर्म प्रतीत होती है सो भुजा पर भी बाँधा जा सकता है अथवा जेब में भी रखा जा सकता है।

६—जिस यन्त्रकी आपने साधना की है, उस यन्त्र को समय निकाल कर सप्ताह में एक बार या मास में एक बार १०८ बार अवश्य ही लिख लेना चाहिये। यह क्रिया चालू नहीं रखने से साधना की शक्ति शनैः शनै क्षीण होती जायगी।

७—सिद्ध किये यन्त्र दूसरो को भी लिखकर देने से धारणकर्ता को लाभ मिलता है और साधक परोपकार का भागीदार भी बनता है, जिसके लिये यन्त्र बनाया गया है उस व्यक्ति का नाम आयु और गोत्र यन्त्र के नीचे अवश्य लिखें।

८—जिस दिन आपने यन्त्रको पूर्ण किया है उस दिन की मिति वार तारीख संवत आदि लिख लेना चाहिये, धारणकर्ता का नाम ग्राम, स्थान, आयु, गोत्र, आदि सभी लिखना चाहिये। लिखने के समय १ मास पूर्व से तथा लिखने के १ मास पश्चात् तक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।

—:○:—

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० मन्त्र विचार ०

मन्त्रों के आराधना में इन बातों का ध्यान रखना जरूरी है। प्रथम तो मन्त्र पर पूर्ण श्रद्धा हो। शरीर स्वस्थ हो। मन में विकार भाव न हों, शान्त चित्त हो। जपते समय मन्त्र में पूरा ध्यान रहे। इधर उधर मन को जाने से रोके। जगह जगह फैलावे नहीं। मैं अमुक काम के लिये अमुक मन्त्र जप रहा हूं ऐसा कहता न फिरे। एकान्त स्थान हो, शुद्ध जगह हो। जहाँ मन्त्र जाप करे वहां पूरा होने तक दूसरा काम न करे। शुरू से विधान समाप्ति तक वही धूपदान वही दीपक, वही माला चौकी वगैरह जो काम में आ रहे हों, वही रखे। उतने समय तक ब्रह्मचर्य से रहे। एक समय शुद्ध भोजन करे। जमीन या तख्त पर सोवे। जाप की धोती, दुपट्टे, बनियान कोरे धुले गये हों शुभ मिती समय में प्रारम्भ करें। आनन्दपूर्वक पूरा होने पर ७ या ११ श्रावकों को प्रीतिभोज करावे। दीन गरीबों को दान करे। मन्दिर में पूजा पाठ करावे। धूप कुटी हुई बाजार की न लेवे। स्वयं साफ कर कूटे। घी का दीपक बराबर जलता रहे।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

). In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

★ यन्त्रों का चमत्कार ★

० महा प्रभाविक शत्तारिशय यन्त्र ०

२५ ह	८० र	क्षि	१५ हुं	५० हः
२० स	४५ र	प	३० सुं	७५ सः
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
७० ह	३५ र	स्वा	६० हुं	५ हः
५५ स	१० र	हा	६५ सुं	४० स

किसी समय व्यंतर ने श्री संघ में उपसर्ग चालू कर दिया था उस उपसर्ग का निवारण करने के लिए श्रीमानद्रेवसूरिजी ने महा प्रभाविक विजयपहुत्त स्तोत्र की रचना की।' इस स्तोत्र में १७० अरिहंत भगवन्तों की स्तुति है अतः इस स्तोत्र में वर्णित अक्षरों द्वारा जो यन्त्र बनता है उसे शत्तरीशय अर्थात् १७० के यन्त्र से पहिचाना जाता है और कई स्थानों पर सर्वतोभद्र के नाम से भी विख्यात है। यह यन्त्र बड़ा ही प्रभाविक है प्रायः जिन्हें मन्त्र विद्या या यन्त्र के चमत्कारों का पूरा ज्ञान नहीं होता है वे लोग केवल इसी यन्त्र से अपने मनोवांच्छितों को पूर्ण करते देखे गये हैं तथा कितने ही व्याधियों उपाधियों से मुक्त होते देखे गये हैं अगर इस यन्त्र को यन्त्र

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

...ट भी कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि यह ...बहुगुणी तथा हर कार्य में सफलता प्राप्त करवाने में उत्तम ...ों वाला और १७० जिन की स्तुति वाला विशेष चमत्कारिक ...महा प्रभाविक यन्त्र है।

यह यंत्र, भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, व्यन्तर तथा ...ब दृष्टि के देवों से रक्षा के लिये अष्टगन्ध से किसी अच्छे ...में नक्षत्र में या नाम राशि से देखे गये मुहूर्त्त में भोज पत्र पर ...दीप, नैवेद्य, फल, फूल, वस्त्र, मुद्रा, अक्षत, ईत्र के साथ पूर्व ...की तरफ मुख रखकर इस शत्तरिशय यन्त्र को शुद्धता पूर्वक ...कर स्वर्ण के ताबीज में लाख से पैक कर गले में धारण करना ...हिए।

कई प्रकार के रोगों के निवारण के लिए इस पूरे यन्त्रको चाँदी ...थाली या कांसे की थाली में अष्टगन्ध से लिखकर फिर उस यन्त्र ...प्रक्षाल कराकर वह जल रोगी को पिलाने से कई प्रकार के ज्वर ...की, सिर दर्द, पेट का दर्द, घबराहट, वायु प्रमाद इत्यादि ...से ही छोटे मोटे रोगों में लाभ मिलता है। यंत्र महिमा छंद ...में कहा गया है कि—

सत्तरीसयनो महिमा अनंत।
तुच्छ बुद्धि किम जाणे तंत॥

अतः इस यंत्र के गुणों का वर्णन मनुष्य बुद्धि के लिये तो ...तो मुश्किल ही है।

६४ योगिनी यन्त्र

यह यन्त्र चौसठ योगिनियों के नाम से विख्यात है, इस यन्त्र

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

के प्रत्येक कोठे में १ योगिनीं की स्थापना की गयी है। इस यन्त्र की बड़ी पूजन विधि भी अलग है। जिसके पूजन करने से ऋद्धि सिद्धि समृद्धि का आगमन होता है तथा यह दोषों और दूसरे तांत्रिक मांत्रिक प्रभावोंको नष्ट करके पूजनकर्ता को वैभवशाली बनाता है। वह पुस्तक यन्त्र विषय की होने से यहाँ केवल यन्त्र का ही प्रभाव लिखा गया है।

इस यन्त्र को धारण करने से भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, व्यंतर तथा क्रूर प्रकृति के और मैली विद्याओं के देवों का दूषित प्रभाव अथवा दृष्टि दोष नहीं होते हैं।

शरीर की दुर्बलता, पुराने ज्वर, आकस्मिक नये प्रकार के रोग और किसी भी प्रकार की शारीरिक व्याधि के लिये सात बार रोज नित्य चाँदी की थाल में अष्टगंध से लिखकर पिलाने से उपरोक्त रोगों में पूर्णतया लाभ मिलता है।

इस यन्त्र को सोने, चाँदी या ताम्बे के पतरे के ऊपर खुदवा करके घर मैं पूजन करने के लिये रखा जा सकता है। पूजन में रखने के बाद नित्य धूप, दीप, करने का नियम रखना जरूरी है।

यन्त्र लिखते समय अगर योगिनियों के नामों को भी लिखना हो तो नीचे ६४ योगिनियों के नाम लिखे जा रहे हैं जिन्हें अनुक्रम से अर्थात् यन्त्र में जहाँ १ लिखा है वहाँ पहली योगिनी का नाम लिखना चाहिए इसी प्रकार २ अङ्क में दूसरी और ३ के अङ्क में तीसरी इस तरह ६४ खानों में ६४ नाम लिखने चाहिए।

यह यन्त्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी रविवार या चतुर्दशी रविवार को लिखना चाहिये।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० ६४ यीगिनियों की स्थापना का यन्त्र ०

१	१	६१	६१	६०	५९	७	८
९	१०	५४	५३	५२	५१	१५	१६
४८	४७	१९	२०	२१	२२	४२	४१
४०	३९	२७	२८	२९	३०	३४	३३
३२	३१	३५	३६	३७	३८	२६	२५
२४	२३	४३	४४	४५	४६	१८	१७
४९	५०	१४	१३	१२	११	५५	५६
५७	५८	६	५	४	३	६३	६४

० ६४ योगिनियों के नाम ०

१ दिव्य योगिनी
२ महा योगिनी
३ सिद्ध योगिनी
४ योगीश्वरी
५ प्रेताक्षी
६ डाकणी
७ काली
८ काल रात्री
९ नीसाचारी
१० हुंकारी
११ सिद्ध बेताली
१४ काली काली
१३ भूत डामरी
१४ उर्द्ध कोशी
१५ विरु पाक्षी
१३ रक्तांगी
१७ नर भोजनी
१८ प्रेत कारी
१९ वीर भद्राक्षी
२० धुम्रांक्षी
२१ कलह प्रिया
२२ राक्षसी
२३ घोर रक्ताक्षी
२४ विरुपाक्षी
२५ भगंकरी
२३ सेवेरी
२७ कोंपमुखी
२८ चंडीं

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

२९ वाराही	३० मुंड धारनी
३१ भैरवी	३२ बज्रणी
३३ क्रोधी	३४ दुमुंखी
३५ प्रेतवाही	३६ कंटकी
३७ दीर्घ लुम्बी	३८ मालिनी
३९ मंद योगिनी	४० कालाग्नि
४१ मोहनी	४२ चक्री
४३ कंकाली	४४ भुवनेश्वरी
४५ कुण्डली	४६ बालकी
४७ लक्ष्मी	४८ यमदुती
४९ करालीनी	५० कौसीकी
५१ यक्षणी	५२ लक्ष्मी
५३ कुमारी	५४ यंत्र वाहिनी
५५ विलाषी	५६ कामुकी
५७ व्याघ्रो	५८ यक्षणी
५९ डाकिनी	६० दुर्जय
६१ विकट	६२ धोरी
६३ कपाली	६४ वृषलीणो

० दिशाशूल विचार ०

शनिवार व सोमवार को पूर्व दिशा में, वृहस्पितिवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम में, मंगलवार व बुद्धवार को उत्तर में दिशाशूल होता है।

नोट—जिस दिन जिस दिशा में दिशाशूल हो उस दिन उस दिशा में गमन न करें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० लक्ष्मी प्रदायक मण्त्र ०

—०:: यन्त्रा ::०—

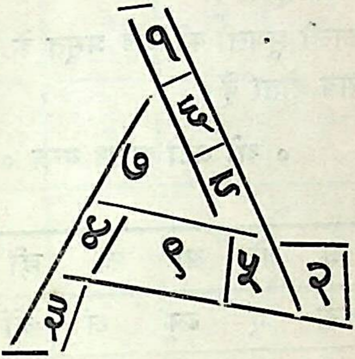

मन्त्र :—ओं ह्रीं श्रीं क्लीं क्ल अहं नमः
विधि:—धूप दान में खेते हुए मन्त्र को ८ बार बोले । बसने
ो वदलने के दिन बही खातों पर खिसी केशर या हल्दी से यन्त्र
त्र को लिखे ।

० सुख पूर्वक संतानोत्पत्ति का यन्त्रा ०

	३०	३०	३०	
३०	१६	२	१२	३०
३०	६	१०	१४	३०
३०	८	१८	४	३०
	३०	३०	३०	

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उपर्युक्त "३०" के यन्त्र को लिखकर गर्भिणी को दिखाने से सुख पूर्वक बालक होगा।

अथवा काली मूसली की जड़ प्रसूत के हाथ में रखने से भी सुख पूर्वक प्रसव होता है।

यन्त्रः— ० श्री घटा करण यन्त्र ०

ब्लूं	क्षं	ओं	आं	क्रौं	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ऐं
श्रीं	क्लीं	ऐं	ब्लूं	क्षं	ओं	आं	क्रौं	ह्रीं
आं	क्रौं	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ऐं	ब्लूं	क्षं	औं
ऐं	श्रीं	क्लीं	ॐ	ब्लूं	क्षं	ह्रीं	आं	क्रौं
ह्रीं	आं	क्रौं	ऐं	श्रीं	क्लीं	ॐ	ब्लूं	क्षं
ओं	ब्लूं	क्षं	ह्रीं	आं	क्रौं	ऐं	श्रीं	क्लीं
क्रौं	ह्रीं	आं	क्लीं	ऐं	श्रीं	क्षं	ओं	ब्लूं
क्षं	औं	ब्लूं	क्रौं	ह्रीं	आं	क्लीं	ऐं	श्रीं
क्लीं	ऐं	श्रीं	क्षं	ओं	ब्लूं	क्रौं	ह्रीं	आं

विधिः—रात्री समय में भोज पत्र पर यन्त्र लिखकर १०८ बार अग्नि में अष्ट गन्ध खेय यन्त्र को धूनी दिखावे।

ओं ह्रीं घन्टाकर्ण नमोस्तु ते ओं नर वीर ठः ठः स्वाहा।

इस घंटाकर्ण मन्त्र को १०८ बार बोले।

फलः—लक्ष्मी प्राप्तिं सन्तान लाभ एवं आकर्षण के लिये।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० मङ्गल यन्त्र मन्त्र ०

ॐ	ह्रीं	श्री	न	मि	ऊँ	ण
[illegible]	अ	रि	हं	सि	द्धा	[illegible]
[illegible]	से	सा	हू	णं	य	[illegible]
[illegible]	ले	[illegible]	मः	ह्रीं	रि	[illegible]
[illegible]	कि	[illegible]	[illegible]	श्रीं	ए	[illegible]
[illegible]	य	य	ज्झा	व	उ	[illegible]
[illegible]	ग	य	भु	ल	रू	[illegible]

०मङ्गल मन्त्र०

ॐ ह्रीं श्रीं नमि ऊण असुर सुर गरूल भुयङ्ग परि बंदिए गय किले से अरिहं सिद्धयरिए उवज्झाय सव्व साहूणं ह्रीं श्रीं नमः।

इस महा प्रभावक कल्याणीकारी मन्त्र के यन्त्र को ताम्बे के या भोजपत्र पर लिखकर सिंहासन में विराजमान कर मन, वचन, काय शुद्धिपूर्वक ब्राह्म मुहूर्त काल (सूर्योदय से प्रथम) में १०८ बार जप

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

करें। घर में सब प्रकार से सुख शान्ति मंगल लाभ हो, दुख दारिद्र संङ्कट का विनाश हो।

० श्रेष्ठ योग ०

श्रेष्ठ योगः—नन्दा तिथि के शुक्रवार होने पर भद्रा को बुद्धवार, जया को मंगल, रिक्ता को शनि, पूर्णं को बृहस्पति पड़ने पर सिद्धि योग गिना जाता है।

इस योग में किये गये सभी अच्छे कार्य फलप्रद होते हैं। नीचे दिये गये चक्र से ठीक प्रकार से समझ लीजिए कि किस तिथि और कौन से वार को श्रेष्ठ योग होता है। मृत्यु योग वाले खाने में जो बार लिखे हैं यदि उन तिथियों के दिन वे वार हों तो वे मृत्यु योग के सूचक हैं। यह अशुभ योग है। इसलिये कोई भी अच्छा कार्य इन दिनों प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

तिथियां			शुभ योग	मृत्यु योग
१	६	११	शुक्र	रवि, मंगल
२	७	१२	बुद्ध	सोम, गुरु
३	८	१३	मंगल	बुद्ध
४	९	१४	शनि०	शुक्र
५	१०	१५	गुरु०	शनि०

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० सर्व कार्य साधक मन्त्र ०

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः

इस मन्त्र को मन वचन कार्य की शुद्धि पूर्वक प्रातःकाल सायंकाल १०८ बार जाप करने से सब प्रकार के कार्य स्वयं सिद्ध होते हैं।

◈ तिथि भेद ◈

१	६	११	नन्दा
२	७	१२	भद्रा
३	८	१३	जवा
४	९	१४	रिक्ता
५	१०	१५	पूर्णा

० मनवांछित फलकारक मन्त्र ०

मन्त्रः—ॐ ऐं ह्रीं श्री ओं कुरू कुरू स्वाहा।

अर्थः—ऐ (ज्ञान विद्यागुन) ह्रीं (देवता की सिद्धि) श्री (लक्ष्मी की वृद्धि) ओं (पंच परमेष्ठी) कुरुकुरु (करो करो)

विधिः—दो माह तक प्रातः काल सायं काल अग्नि में धूप खेते हुए ब्रह्मचर्य पूर्वक शुद्ध वस्त्रा धारण कर सवा लाख जप एकाग्र मन होकर करे।

फलः—राज दरबार में सम्मान, दुश्मन मान क्षय हो, मन की इच्छा पूरी हो।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

० शांतिकारक मन्त्र ०

ओं ह्रीं परम शांति विधायक श्री शांति देवाय नमः

इस मन्त्र को प्रतिदिन जपने से सव प्रकार से शान्ति मिले।

० माला ०

माला जाप के समय दाहिने हाथ में लेवे। प्रसन्न मन हो मन्त्र के उच्चारण में पूरा ध्यान रखते हुये अंगूठे और अंगूठे से जो तीसरा अंगुली (मध्यमा) हैं इन दोनों से माला फेरना चाहिए। दूसरी (तर्जंजनी) अंगुली से भूलकर भी माला न फेरना चाहिये। माला फेरते समय हाथ को हृदय के पास स्पर्श करते हुए रखना चाहिए। माला में जो सुमेरु होता है उसे लांघना ठीक नहीं यदि दूसरी माला फेरनी हो तो वापस माला बदल कर फेरें।

० सरस्वती मन्त्र ०

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुटठबुद्धीणं (मन्त्र] ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्रः हं सं थ था थः ठः ठः सरस्वती भगवती विद्या प्रसादं कुरू कुरू स्वाहा।

(विधि) २१ दिन तक प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि-मन्त्र को श्रद्धा सहित जपने से बहुत शीघ्र विद्या आती है।

० सर्प कीलने का मन्त्र ०

(ऋद्धि) ॐ ह्री अर्हं णमो बीज बुद्धीणं (मन्त्र) ॐ ह्री हं सं श्रां श्री क्रौं क्लीं सर्वदुरित सङ्कट क्षुद्रोपद्रवकष्ठ निवारणं कुरू कुरू स्वाहा।

(विधि) २१ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि मन्त्र भाव सहित जपने से किसी प्रकार का विष नहीं चढ़ता। तथा कंकरी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

को १०८ बार मन्त्रित कर सर्प के सिरे पर मारने से सर्प कीलित हो जाता है।

० सर्व विघ्न नाशक मन्त्र ०

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादाणु सारिणं

(मन्त्र) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा ! ॐ ह्रीं लक्ष्मण रामचन्द्र देव्य नमः स्वाहा ।

(विधि) २१ दिन तक प्रतिदिन श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्र का जाप करने से सब प्रकार के अरिष्ट मिट झाते हैं।

० आवाहन==बुलाने का मन्त्र ०

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धीणं (मन्त्र) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं कुमति निवारिणयै महामयायै नमः स्वाहा।

(विधि) श्रद्धा सहित २१ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि मन्त्र जपने से जिसे बुलाने की उत्कंठा हो वह आ सकता है।

० जादू मूठ भय निवारक मन्त्र ०

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं (मन्त्र) ओं ह्राँ ह्रीं ह्रं ह्रं ह्रः जक्ष ह्रीं वषट् नमः स्वाहा।

(विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धिमन्त्र को १०८ बार जपने से अपने ऊपर प्रयोग किये गये दूसरे के मन्त्र जादू टोना टोटका मूठ उच्चाट-नादि का भय नही रहता।

० भूत पिशाच भय नाशक मन्त्र ०

(ऋद्धि) ओं ह्रीं अर्हं णमो आगसगामिणं (मन्त्र) ओं णमो गौरेही जूं भय २ मोहय २ स्तम्भय २ अवधारणं कुरू २ स्वाहा।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

(विधि) श्रद्धा सहित हल्दी की गांठ को मन्त्रित कर चबाने से डाकिनी शाकिनी भूत पिशाच चुडैलादि भाग जाते हैं।

० प्रेत बाधा नाशक मन्त्र ०

(ऋद्धि) ओं ह्रां अर्हं णमो आसीबिसाणं (मन्त्र) ओं नमो भगवती जयावती मम समीहितार्थं मोक्ष सौख्यं कुरू स्वाहा।

(विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्र को १०८ बार जपकर अपने शरीर की रक्षा करें। पश्चात इसी मन्त्र से झाड़ने पर प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

० गर्भ रक्षक मन्त्र ०

(ऋिधि) ओं ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहितपत्ताणं

(मन्त्र) ओं णमो ह्रीं श्री क्लींऐं ह्मौं पद्मावत्यै नमौ नमः स्वाहा।

(विधि) श्रद्धा सहित ऋद्धि मन्त्र द्वारा कच्चे धागे को मन्त्रित कर कमर में बाँधने से असमय में गर्भ का पतन नहीं होता,

यन्त्र चमत्कार समाप्त

njGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विश्वगुरु कल्पतरू

योगासन भाग

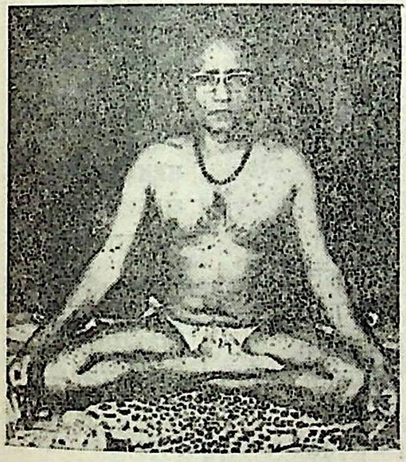

नित्य प्रार्थना

हे पूरण परमात्मा, पावन हों जीवात्मा।
विश्व बने धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जीवन विज्ञान (चरित्र निर्माण पत्र)

योगेश्वर विश्वगुरु मुनीशानन्द जी द्वारा विरचित

योग की देन	भोग की देन	योग की देन	भोग की देन
गुण	अवगुण	ब्रह्मचर्य	काम
सन्मार्ग	कुमार्ग	शक्ति	निर्बलता
सत्संग	कुसंग	स्फूर्ति	आलस्य
सुविचार	कुविचार	स्वास्थ्य	रोग
सद्भावना	कुभावना	सौंदर्य	कुरूपता
सुमति	कुमति	साहस	कायरता
श्रद्धा	अश्रद्धा	सावधानी	असावधानी
शरणागति	विमुखता	सामर्थ्य	असामर्थ्य
साधना	असाधना	सामंजस्य	असामंजस्य
सतोगुण	तमोगुण	सहानुभूति	असहानुभूति
शुद्धता	अशुद्धता	सहृदता	असुहृदता
सत्य	झूठ	सहनशीलता	असहनशीलता
सन्तोष	तृष्णा	श्रेष्ठता	निकृष्टता
शीलता	कठोरता	स्थिरता	अस्थिरता
सकोच	निःसंकोच	स्नेह	घृणा
सदाचार	भ्रष्टाचार	निर्मलता	मलीनता
शिष्टता	अशिष्टता	निर्दोषता	दोष
सभ्यता	असभ्यता	निरभिमान	अभिमान
सौम्यता	असौम्यता	नम्रता	अहंकार
सरसता	कर्कशता	नित्यता	अनित्यता
समता	विषमता	निर्वैरता	वैरभाव
स्वाधीनता	पराधीनता	निर्भयता	भय
सरलता	कुटिलता	निर्मोहता	मोह
सेवा	असेवा	निर्लोभी	लोभी
समन्वय	असमन्वय	धीरज	अधीरता
सज्जनता	दुर्जनता	धर्म	अधर्म

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भोग की देन	योग की देन	भोग की देन
असफलता	परोपकार	स्वार्थपरता
असिद्धि	प्रेम	कलह
अशान्ति	एकता	अनेकता
ग्रहण	लज्जा	निर्लज्जना
लोलुप	अक्रोध	क्रोध
अदृढ़ता	अपरिग्रह	संग्रही
क्रूरता	अनासक्त	आसक्त
दण्ड	असंगता	संगी
कृपणता	इन्द्रियनिग्रह	इन्द्रिय
अकुशलता	त्याग	ग्रहण
अविश्वास	ध्यान	चंचलता
अविद्या	ज्ञान	अज्ञान
उद्दण्डता	चैतन्यता	जड़ता
अविवेक	जीवन्मुक्ति	वंधन
राग	अमरत्व	मृत्यु
अबोध	पूर्णता	अपूर्णता
हिंसा	परम सुख	अल्प सुख
चोरी	परम आनन्द	क्षणिक आनन्द

भवतापेन तप्तानां योगोहि परमौषधम्

संसार के तापों से तपित प्रणियोंके लिये योगही श्रेष्ठ औषधि है।

योगोभवति दुःखहा

योग ही दुःखों को दूर करने वाला है।

यह भली भांति विचार पूर्वक भोगों से अरुचि करके अनन्त ... विभूषित योगेश्वर विश्वगुरू श्री मुनीशानन्द सरस्वतीजी महा-राज द्वारा योगाभ्यास सीखकर विश्व के जीवन को सुखी शांन्तिमय ... आनन्दमय बनाओ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

० योग ही जीवन व भोग ही मृत्यु है ०

चरित्र निर्माण के लिये योग की परम आवश्यकता है।

० धर्मार्थकाम-मोक्षाणामारोग्यं मूल मुत्तमम् ०

अर्थात्—धर्म अर्थ काम मोक्ष के लिये उत्तम जड़ आरोग्यता है। इसलिये महापुरुषों ने कहा है :—

० "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ०

निश्चय ही धर्म का मुख्य साधन शरीर है।

महर्षि चरक तो यहाँ तक कहते हैं—

० सर्वमन्यत्परित्यज्य शरीरमनुपालयेत् ०

अर्थात अन्य सभी को छोड़कर शरीर को ठीक करें।

अतः—उच्चतम दिव्य जीवन और बुद्धिमानी के लिये योग का अभ्यास कीजिये।

अथ योगानुशासनम ॥ १ ॥

अर्थात् अब योग की शिक्षा प्रारम्भ करते हैं।

सूत्र—यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधयोऽष्टाङ्गानि (२।२९)

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि, यह योग के आठ अङ्ग हैं।

अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ॥ ३० ॥

१—यम—अर्थात्-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, यह यम हैं, इनके द्वारा व्यवहारिक जीवन को दिव्य बनाना होता है।

शौच संतोषतपःस्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः ॥ ३२

२—नियम—अर्थात्-शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, और ईश्वर प्रणिधान

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नियम हैं, इनसे अन्तर व बाह्य के मल दूर होते हैं ।

स्थिर सुखमासनम्

आसन—अर्थात् जो स्थिर और सुखदाई हो वह आसन है इनसे शरीर निरोग व दिव्यता आती है ।

ततो द्वन्द्वा नभिघातः—द्वन्द्व की चोट नहीं लगती **तस्मिन् सतिश्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः ।**

प्राणायाम—अर्थात्—तस्मिन् सति...इस आसन के सिद्ध हो जाने पर श्वास और प्रश्वास को गति की रोकना प्राणायाम है, इससे शरीर की आन्तिरक गति सात्त्विक और दिव्य बनती है ।

स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्यस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः ॥ ५४ ॥

प्रत्याहार का अर्थ है पीछे हटना, उलटा होना यानी विषयों से विमुख होना । इसमें इन्द्रियाँ बहिर्मुख विषयों से हटकर अन्तर्मुख व दोष रहित होती हैं ।

देशबन्धश्चित्तस्य धारणा ॥ १ ॥

धारणा—अर्थात—देश विशेष यानी नाभि, भ्रूमध्य आदि अथवा बाह्य चन्द्रादि में वृत्ति का ठहरना धारणा है यानी रजोगुण से हटाकर सतोगुण रूपी एक लक्ष्य में स्थिर करना ।

तत्र प्रत्ययैकतानताध्यानम् ॥ २ ॥

ध्यान—उसमें, प्रत्यय==वृत्ति का, एकतानता==एक सा बना रहना ध्यान है ।

तदेवाथमात्र निर्भास स्वरूपशून्यमिव समाधिः ।

समाधि=तदेव=वही ध्यान, अर्थमात्र निर्भासम्=अर्थमात्र से भासने वाला स्वरूपशून्यमिव=स्वरूप से शून्य जैसा हो जाय,

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यानी वह ध्यान ही समाधि कहलाता है, जब उसमें ध्येय अर्थमात्र से भासे और उसका (ध्यान का) स्वरूप शून्य जैसा हो जाय, अर्थात् ध्यान ध्येय रूप में पक जावे।

श्लोक:—धौतिर्वस्तिस्तथा नेतिनौ लिकिस्त्राटकस्तथा।
कपालभातिश्चैतानि षट् कर्माणि समाचरेत्।। (गौरक्ष सहिता)

धौति, वस्ति, नेति, नौली, त्राटक और कपालभाति इन छः कर्मो को शरीर-शोधन के निमित्त करें।

१—धौति=तीन प्रकार की होती है-वारि धौति ब्रह्म दातौन और वास धौति। वारि धौति अर्थात् कुंजर क्रिया इसे गजकरणी भी कहते हैं इसके करने से अन्य धौति करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

विधि—खाली पेट लवणयुक्त गुनगुना पानी पीकर छाती हिलाकर तथा तालु से ऊपर छोटी जिह्वा को सीधे हाथ की दो उगलियों से दबाकर पानी का वमन कर देवे यह सभी क्रियायें किसी अनुभवी से सीख लेनी चाहिये।। संख प्रच्छालन प्रथम भाग में है उसे अन्तधौंति भी कहते हैं ।।

२—वस्ति=वस्ति कई हैं उनमें सरल है पवन वस्ति इसे स्थल वस्ति व शुष्क वस्ति भी कहते हैं।

विधि—भूमि पर पश्चिमोत्तान होकर लेट जायें, फिर अश्विनि मुद्रा दास धीरे-धीरे वस्ति का चालन करें अथवा गुदामार्ग का आकुञ्चन और प्रसारण करें।

लाभ—जठराग्नि प्रदीप्त होकर उदरगत आमवात गैस आदि रोग नष्ट होते हैं ।।

३—नेति=जल नेति, सुत्रनेति, कपाल नेति तीनों में सर्व सुलभ है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

—मुख में पानी भरकर नासिका छिद्रों से निकाल दें तथा नासिका छिद्र द्वारा पानी पीने से भी वही लाभ होता है।

—नौली भी करने में कठिन है उसका कार्य उड्डियान से चलाना चाहिये।

विधि—दोनों घुटनों पर हाथ रख कर खड़े हो या सिद्धासन से बैठकर नासिका द्वारा वायु निकाल कर पेट को भली भाँति अन्दर की ओर खींचो पुनः श्वास लो समय १ से २ मिनट तक। इस भाँति ३ बार करें ।।

—त्राटक तीन हैं—वाह्य, मध्य व आन्तर त्राटक इनमें आन्तर त्राटक सरल व उपयोगी है।

विधि—नेत्र बन्द करके भ्रूमध्य, नाभि, नासिकाग्र आदि आन्तरिक स्थानों में देखते रहना चाहिये।

—कपाल भांति=सिद्धासन से बैठ कर दोनों नासिका पुटों से वायु अन्दर खीचें और निकाले तथा द्वितीय विधि—

विधि—बायें नथुने से बल पूर्वक श्वास को अन्दर खींचे और बिना रोके तुरन्त ही दाहिने नथुने से पूरी श्वास निकालदें।

—प्राय तीन होते हैं उड्डियान-बन्ध, मूल बन्ध, जालन्धर बन्ध उड्डियान बन्ध की विधि पहले दी जा चुकी हैं, प्रथम भाग में मूलबन्ध की विधि देते हैं।

बैठकर गुदा तथा मूत्रेन्द्रिय को ऊपर खींचने का अभ्यास करे।

लाभ—स्वप्न दोष का नाश तथा हृदय व मस्तिष्क बलवान होते हैं।

जालन्धर बन्ध इसे कंठबंध भी कहते हैं।

विधि—मेरुदण्ड को सीधा रखकर ठुड्डी (चिबुक) को कंठ में बल से लगायें। इससे स्मरण शक्ति तीव्र होती है। ध्यान करने से

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पूर्व ये तीनों बन्ध अवश्य करने चाहिये । अब कुछ आसन सम्बन्धी चर्चा करेंगे आसन करने में कभी जबरदस्ती नहीं करनी चाहिये सरलता पूर्वक आराम से करने चाहिये तथा बिना गुरु के सीखे भी नहीं करें, नहीं तो उल्टी हानि हो जाती है कहा है—देखा देखी साधे योग, छीजे काया बाढ़े रोग ।

श्लोक—पुष्टं सुमधुरं स्निग्धं सर्वधातु-प्रयोषणम् ।
मनोभिलषितं योग्यं योगी भोजन माचरेत् ।।

आसन करने वाले पुष्टि कारक, मधुर, स्निग्ध, गौ दुग्धं, घृत आदि मिश्रित, धातुओं का पोषण करने वाला रुचिकर तथा अपनी प्रकृति के अनुसार भोजन करें, तेज़ खटाई, राई, लाल मिर्च, पत्थर के कोयले व स्टोव का भोजन व चाय सेवन न करें ।।

◈ अत्यन्त उपयोगी कुछ आसन ◈

◈ सिद्धासन ◈

सिद्धासन सभी आसनों का राजा कहा गया है । साधकों के

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लिये यह आसन परमोपयोगी सिद्ध हुआ है। इसकी विधि तथा क्रिया इस प्रकार से है:—

विधि—पहले साधारण रूप से अपने आसन पर शान्ति पूर्वक बैठ जावें। पश्चात् अपने बायें पैर की एड़ी गुदा और अण्डकोष के बीच में लगावे और दाहिने पैर की एड़ी मूत्रेन्द्रिय के ऊपरी भाग पर रखें तथा दोनों पैरों के पन्जे जाँघ और पिंडलियों के बीच में स्थिर करें। पश्चात् अपने दोनों हाथों की उँगलियों को आपस में बाँधकर मुद्रा रूप में सामने एड़ी के ऊपर रखें, अथवा 'हाथों को घुटनों पर भी रख सकते हैं। तदनन्तर मेरुदण्ड (रीढ़) को सीधा रखके दृष्टि को भौंहों के बीच स्थिर कर शान्ति पूर्वक बैठें।

लाभ—इससे शीघ्र शान्ति का अनुभव होता है। जिन्हें अखण्ड ब्रह्मचर्य की रक्षा करनी हो उन्हें नित्य ही यह आसन करना चाहिये। यह ध्यान रहे कि यह आसन तीन घन्टे तक बैठने से सिद्ध होता है।

◈ पद्मासन ◈

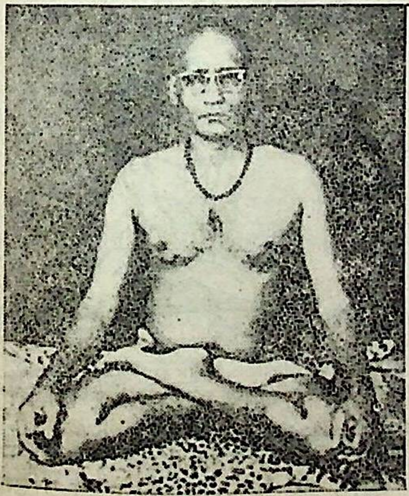

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विधि—यह आसन करते समय पहले दाहिने पैर को वायीं जाँघ पर सटा कर रखें। दोनों पैरों के तलुवे दोनों जाघों पर समान रूप से आजावें। इसके पश्चात् अपने दाहिने हाथ को दाहिने घुटने पर और बांये हाथ को बाँये घुटने पर रखें मेरुदण्ड तथा सिर को समान रूप से सीधा करके बैठें। अपनी नेत्र--दृष्टि को भौंहों के बीच अथवा नासिका के अग्र भाग में स्थिर करें।

लाभ—इस आसन से पैरों की नस-नाड़ियाँ बिल्कुल शुद्ध हो जाती हैं और पेट के सभी विकार दूर हो जाते हैं। पाचन शक्ति बढ़ जाती है। वात रोग दूर हो जाता है। मस्तिष्क की स्मरण शक्ति ठीक होने में सहायता प्राप्त होती है। इससे विचार-शक्ति की वृद्धि होती है।

× बद्ध पद्मासन ×

विधि—इस आसन में, अपने दाहिने पैर को बाँयें पैर की जाँघ पर रखें और बाँये पैर को दाहिने पैर की जाँघ पर रखें। पैर रखते समय यह ध्यान रहे कि दोनों पैरों की एड़ियां पेट के नीचे

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

...से सटी रहें। इतना करने के पश्चात् अपने दोनों हाथ पीछे ...जावें और अपने दाहिने हाथ से दाहिने पैर का अंगूठा और बायें ...से बाँये पैर का अंगूठा पकड़ें। फिर ठोड़ी को कण्ठमूल में ...वें। दृष्टि भृकुटी में स्थिर करें।

लाभ—इस बद्ध पद्मासन के अभ्यास से शरीर की बहत्तर ...र नाड़ियाँ खुल जाती हैं। रक्त का भली प्रकार संचालन होने ...ता है और नस नाड़ियों में रुका हुआ जो ज़हरीला माद्दा है ...नष्ट हो जाता है और रक्त का प्रवाह तीव्र हो जाता है। इससे ...सम्बन्धी अनेक रोग, जैसे—पेट का फूलना, बदहजमी, पेट का ..., वायु विकार, कब्ज, खट्टीं डकारें, गैस बनना आदि दूर हो ...ते हैं। इस आसन को कम से कम पांच मिनट से लगातार ...घण्टा तक किया जा सकता है और देर तक करने से अधिक ...भ हो सकता है।

❖ गर्भासन ❖

विधि—पद्मासन लगाकर दोनों घुटने और जंघाओं के बीच ...से दोनों हाथ बाहर निकालें पुनः दोनों कानों को पकड़ें। समय ...से ३ मिनट।

लाभ—आंतों के विकार, पेट की वृद्धि दोष दूर होते हैं, भूख ...ती है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

◈ पादांगुष्ठासन ◈

विधि—पाँव की एडी को गुदा अंडकोष के बीच में लगाकर उसी पर बैठें और दूसरा पाँव घुटने पर रक्खें। यही पादांगुष्ठासन है। इसे कन्द पीडनासन भी कहते हैं।

लाभ—गुदा और अण्डकोष के बीच में वीर्य की नाड़ियां हैं उनको एड़ी से दबाने से वीर्य का प्रवाह नीचे की ओर होना बन्द हो जाता है। इसी से यह आसन वीर्यदोष नष्ट करने में अत्यन्त उपयोगी है। स्त्रियों के लिये यह आसन वर्जित है। इस आसन से स्वप्न दोष भी नष्ट हो जाता है इस आसन को एक मिनट से लेकर पाँच मिनट तक करनेका अभ्यास करना चाहिये।

पश्चिमोत्तानासन

विधि—जमीन पर बैठ कर अपने पैरों को सीधा फैलावें। पश्चात् दोनों हाथों से दोनों पैरों के अंगूठे पकड़ लें। तदनन्तर नासिका के द्वारा वायु खींचकर दोनों पैरों को ताने। फिर धीरे

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नासिका से वायु निकालकर अपने सिर को दोनों घुटनो के
में रक्खें । इसे महामुद्रा व जानुसिरासन भी कहते हैं ।
प्रारम्भिक अवस्था में इसका धीरे धीरे अभ्यास करना
ए। जिनका पेट बड़ा हो, अथवा हड्डियाँ कड़ी हों, उन्हें
भ में केवल अंगूठे पकड़ने का ही अभ्यास करना चाहिये ।
लाभ—पावों के स्नायुओं पर अधिक खिचाव आने से उनकी
यां शुद्ध हो जाती हैं, तथा पेट व कमर की नस नाड़ियों को
बनाता है पेट की चर्बी कम करता है। धरण टलने को
ता है तथा अजीर्ण को दूर करता हैं ।
इसके निरन्तर अभ्यास से कुण्डलिनी-शक्ति जाग्रत करने में
धिक सहायता मिलती है । और नाद का मार्गखुलने लगता है ।

० उत्तानपादासन (सर्वाङ्गासन :) ०

विधि—जमीन पर लेट कर स्नायु ढीले करें और बहुत धीरे-
अपने दोनोपैरों को ऊपर उठावें । जितनी अधिक मंदगति से
ऊपर उठेंगे उतना ही अधिक बल पैरों के स्नायुओं और
तों पर पड़ेगा । यूँ तो पैरों को शीघ्रता से पैरों को ऊपर ले
में बड़ा ही सरल है किन्तु अति मंदगति से, एकदम ऊपर ले
में बड़ा ही परिश्रम होता है । और तभी अधिक लाभ होता
जब पैर जमीन से लगभग एक बालिश्त ऊँचाई तक पहुच

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जावे, तब पैरों को रोक दें और जितनी अधिक देर तक ऊपर रोक सके, उतनी देर तक रोके रहें। जब अधिक कष्ट प्रतीत होने लगे, तो फिर उसी मंदगति से नीचे की ओर पैर उतार लावें। एक दम शीघ्रता से पैर नीचे नही लाने चाहिये।

लाभ—इस आसन से आतों को शुद्ध करने में बड़ी सहायता मिलती है। पेट की स्थूलता (मोटापन) कम हो जाती है। पेट समान अवस्था में आ जाता है। एक पैर को नीचे रखकर दूसरे पैर को ऊपर उठाने से अर्द्ध उत्तानपाद आसन होता है। स्त्रियां भी कर सकती हैं।

◈ हलासन (सर्बाङ्गासनः ३) ◈

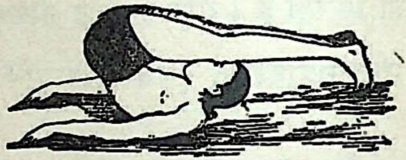

विधि—पृथ्वी पर सीधे लेटकर अपने दोनों पैरों को उठाकर सिर के पीछे जमीन पर लगावें केवल पैरों के पंजे जमीन को छूते हुये रहें, बाकी भाग बिल्कुल सीधा रहे घुटने झुकने न पावें। हाथ पीठ की ओर जमीन पर ही सीधे फैले रहने चाहिये, पीठ को रोकने के लिये हाथों से सहायता भी ले सकते हैं।

लाभ—इस आसन से जठराग्नि प्रदीप्त होती है। रक्त वहने वाली नाड़ियों में जो दूषित रक्त जमा हो जाता है, वह इस आसन से दूर हो जाता है।

◈ सर्पासन ◈

विधि—भूमि पर पेट के वल लेट जावें तथा दौनों हाथों को

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

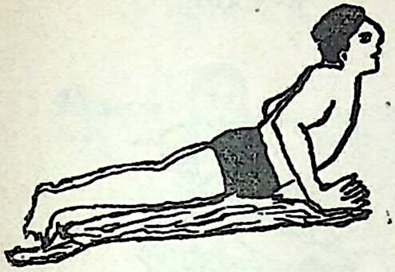

हथेलियों को पेट के आस पास जमीन पर रखें। पश्चात् छाती को आगे की ओर तानते हुए अपनी छाती व सिर को साँप के फन की भाँति ऊपर उठावें। यही सर्पासन है।

लाभ—यह पेट व हृदय को लाभ प्रद है।

◈ धनुरासन ◈

विधि—पेट के बल जमीन पर लेट कर पैरों को ऊपर उठावें तथा अपने हाथों से पैरों के अंगूठों को पकड़ कर सिर की ओर खींचने का प्रयत्न करें। इस प्रकार करने से शरीर की आकृति धनुष की भाँति बन जाती है, इसी से इसका नाम धनुरासन है।

लाभ—इस आसन के करने से गुरदों का दर्द शान्त हो जाता है तथा जाँघों को भी काफी बल पहुँचाता है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मत्स्येन्द्रासन

विधि—अपने दांयें पैर का पंजा बाँयें पैर के मूल स्थान में इस प्रकार रखें कि उसकी ऐड़ी तोंदी से लगी रहें किन्तु पैर बाहर खसकने न पावें तत्पश्चात् बायें पैर का पंजा उठाकर दाहिनें पैर के घुटनों के बांहर जमीन पर रक्खें। फिर दाहिना हाथ बाये पैर के घुटनों के बाहर से डाल कर बाये पैरका अँगूठा पकडें। फिर बाये हाथ को पीठ की ओर से घुमाकर उससे दाहिने पैर की एड़ी पकड़ें और अपना मुख तथा गर्दन आदि पीछे की ओर फेरें तथा दृष्टि को नासाग्र में रक्खें, इस आसन का नाम मत्स्येन्द्रासन है।

हाथ पैर के अदल बदल से यह आसन दोनों ओर करना चाहिये।

लाभ—इस एक ही आसन के करने से शरीर के कई अङ्गों पर एक साथ ही काफी प्रभाव पड़ता है। पीठ, पेट, बाहु, पैर, कमर, जांघ तथा छाती के सारे स्नायुओं का एक साथ ही काफी खिंचाव होने लगता है। इससे पेट का शूल, आमवात तथा आँतो में होने वाले सभी रोगों का पूर्ण निराकरण हो जाता है। स्वास्थ्य की वृद्धि करने में इस एक ही आसन से अत्यधिक सहायता मिलती है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

◈ मयूरासन ◈

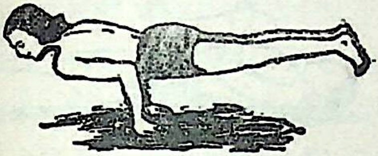

विधि—इस आसन के करते समय पहले अपने आसन पर नों के बल बैठ जावें । फिर अपने दोनों हाथ हथेली के बल मीन पर रक्खें और कोहनियाँ अपनी तोंदी के दोनों ओर आस स सटी हुई लगावें । हाथों के अंगूठे एक समान रखने चाहिये । श्चात कोहनियों पर अपने सारे शरीर का पूरा भार सम्हाल कर धीरे पहले अपने पैरों को पीछे की ओर सीधा लम्बा करके ऊपर ओर उठावें और साथ ही सिर व छाती को भी ऊपर उठावें । ति अपने सारे शरीर का भार कोहनियों पर रखकर शरीर सीधा करे । इस प्रकार करने से शरीर की आकृति मयूर जैसी जावेगी । इसी का नाम मयूरासन है ।

लाभ—मयूरासन से अनेक लाभ होते हैं । जिस प्रकार मोर रीले और विषैले सापों को खा जाता है । किन्तु मोर पर उनके का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता इसी प्रकार मनुष्य भी यदि आसन का पूर्ण अभ्यास कर ले तो उस पर भी विष का कोई व नहीं पड़ सकता । इसके अतिरिक्त जठराग्नि का प्रदीप्त ना, भूख का बढ़ना आदि अनेक लाभ होते हैं । उदर सम्बन्धी ों का शासन करने के लिए यह आसन बहुत ही उत्तम है । आदि तो आसानी से ही दूर किये जा सकते हैं ।

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

◈ पवन मुक्तासत ◈

विधि—अपने आसन पर शान्ति पूर्वक चित्त लेट जावें और एक पैर को घुटने से मोड़कर पेट की ओर लावें फिर अपने दोनों हाथों की उँगलियों को आपस में बाँधकर घुटनों को हाथों से पेट की ओर खूब दबायें। पश्चात् सांस भर कर पड़े हुये पैर को थोड़ा सा उठाकर तानने का प्रयत्न करें और हाथों से दबे हुए पैर को सिर की ओर तानें। फिर सिर को थोड़ा सा उठाकर पूरे शरीर को खूब तानें। थोड़ी देर बाद धीरे-धीरे वायु को निकालते हुये पुनः शांतिपूर्वक लेट जावें। यही क्रिया दूसरे पैर से भी करनी चाहिए। इस प्रकार कम से कम तीन बार यही क्रिया करें। जिन लोगों को शौच साफ न होता हो, उनको चाहिए कि वे प्रातः काल शौच के पूर्व जीभ-तालु साफ करके चुल्लू से कम से कम एक पाव से आधा सेर तक पानी पियें। पानी पीने के कुछ मिनट बाद इस आसन को करें। शीघ्र लाभ चाहें तो दायें बायें करवट बदलते रहें।

लाभ—इस आसन से पेट पर तथा विशेषतया निचली आंतों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। पेट में वायु भरकर शरीर को तानने से बड़ी आंतों का मल नीचे खिसकने लगता है और शौच साफ होता है। बड़ी आंत मजबूत हो जाती हैं। इस आसन को स्त्रियां भी कर सकती हैं। किन्तु गर्भावस्था में करना वर्जित है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शीर्षासन के महत्वपूर्ण लाभ

लाभ—यह आसन सभी आसनों का शिरोमणि है। विधि पूर्वक यह आसन प्रति दिन नियम पूर्वक करने से शरीर के सभी रोगों को नष्ट कर देता है। जैसे मन्दाग्नि, बद्ध, कोष्ठता, प्रमेह, स्वप्नदोष, रक्त विकार, नेत्र विकार, जुकाम, सिर दर्द, बाल सफेद होना, बवासीर, बहुमूत्र आदि सर्वथा दूर हो जाते हैं, हृदय तथा फेफड़े बलवान बनते हैं। जिनकी नाभि नीचे को टल जाती हो उसे भी यह आसन लाभ करता है। बुद्धि तथा जीवन शक्ति की वृद्धि होती है और दीर्घ आयु प्राप्त होती है।

शीर्षासन

विधि—प्रारम्भ में यह दीवाल के सहारे या किसी की सहायता करना चाहिए, प्रथम कपड़े की इंडुरी या गुदगुदी गद्दी पर दोनों हाथों की कोहनी टेकें और इंडुरी को चारों ओर से हाथों के

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भीतर करलें उसमें अपने मस्तिष्क को रखें। माथे के बल करने से विशेष लाभ होता है। पुनः हाथों पर पूरा बल देकर छाती पेट पैर आदि सभी शरीर धीरे धीरे आसमान की ओर उठायें जल्दी न करें, फिर सधते सधते ऊपर पैर सीधे कर दें शीर्षासन के बाद उतनी ही देर तक दोनों हाथ ऊपर करके सीधा खड़ा होना चाहिए। समय अधिक से अधिक आजकल के समय में २ से ५ मिनट तक कर सकते हैं। अधिक करने से नेत्रों को हानि होती है। शीर्षासन के अभ्यासी मक्खन खायें। इनके अतिरिक्त और भी आसन हैं बिस्तार भय से नहीं दिये गये हैं॥

◈ शुभ सूचना ◈

अनेक प्रकार के अन्य आसन भी है जिनकी जानकारी विश्वगुरुजी महाराज से प्राप्त करें।

संघ प्रच्छालन क्रिया, जलनेती, बस्त्रधौती, जलधौती, वस्ती, भस्त्रिका प्राणायाम षट्चक्र भेदन आदि क्रियायें गुरुदेव जी से सीखें क्योंकि बिना गुरु के सीखे उल्टी हानि हो जाती है। कहा है —

◈ देखा देखी साधे योग, छीजे काया बाढ़े रोग ◈

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन १५मई व जून के मध्य में एक या दो साधन सप्ताह रखा जाता है, निश्चित तिथि पत्र द्वारा ज्ञात करलें छपा हुआ कार्य क्रम भेज दिया जायगा।

◈ ध्यान की विधि अवश्य सीखिये ◈

प्रशिक्षण स्थान व पत्र का पता

प्रशिक्षणाचार्य अनन्त श्री विभूषित
विश्व गुरुजी महाराज महामण्डलेश्वर
वेद निकेतन धाम विश्व गुरु नगर
पोस्ट स्वर्गाश्रम, ऋषि केश (हिमालय) फोन २७८

◈ आसन भाग समाप्त ◈

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ॐ

नित्य प्रार्थना

हे पूरण परमात्मा, पावन हों जीवात्मा ।
विश्व बनें धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ।।

उपासना एवं मनोयोग

(तथा)

षट चक्र वेधन, प्राणायाम

दोहा—

मन अपने को मारले, करले योगाभ्यास ।
जिससे ये दस इन्द्रियां बनीं रहें निज दास ।।
मन की गति है अटपटी, झटपट लखे न कोय ।
जो मन की खटपट मिटे, चटपट दर्शन होय ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नित्य प्रार्थना का अर्थ और भावना

हे पूरण परमात्मा, पावन हों जीवात्मा।
विश्व बनें धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ॥

अर्थ—हे परिपूर्ण परमात्मा हमारे जन्म जन्मान्तर के सभी सभी जीवात्मा पवित्र हों, तथा सभी विश्व धर्मात्मा बन जाय, एवं सभी आत्मायें सुखी रहें ॥

प्रश्न—परमात्मा पूर्ण कैसे है ?

उत्तर—परमात्मा की परिपूर्णता में वेद का प्रमाण—

ओ३म पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।

अर्थ—वह ईश्वर पूर्ण है, यह जीव स्वरुप भी पूर्ण है, पूर्ण पूर्ण से पैदा होता है, उस पूर्ण से ही यह पूर्ण (जीव) आया है। यदि उस पूर्ण में से यह पूर्ण निकाल भी लिया जाय तो भी पूर्ण ही शेष रहता है।

ओंकार की उपासना एवं व्याख्या

श्लोक—ओंकार विन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ओ३म्काराय नमो नमः ॥

अर्थ—विन्दु संयुक्त ओंकार का योगी नित्य ध्यान करते हैं। यह कामनाओ की सिद्धि तथा मोक्ष देने वाला है, अतः ओंकार के लिये नमस्कार है नमस्कार है।

तस्य वाचकः प्रणवः=उस ईश्वर का ही बोधक नाम ओ३म् है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते ।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् । (मुण्डक २।४)

प्रणव (ओ३म्) धनुष है आत्म बाण है ब्रह्म लक्ष्य है । सावधानी से उसे बींधना चाहिये । बाण के सदृश (अभ्यासी अपने लक्ष्य ब्रह्म में) तन्मय हो जाय ।

✓ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ।। (गीता ८।१३)

जो पुरुष ॐ इस एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ, और उसके अर्थ स्वरूप परमात्मा को चिन्तन करता हुआ, शरीर को त्याग कर जाता है , वह पुरुषपरम गति को प्राप्त होता है ।

उस ओंकार का जप व अर्थ रूप ईश्वर की भावना करें ।

✓ सोऽयमात्माध्यक्षरमोङ्कारोऽधिमात्रं पादा मात्रा ।
मात्राश्च पादा अकार उकारो मकार इति (माण्डूक्य ८)

वह यह आत्मा अक्षर दृष्टि से मात्राओं वाला ओ३मकार है । ये ही मात्रा है, मात्रा ही पाद है, वे मात्रायें अकार, उकार, मकार । चौथा पाद मात्रा रहित है उसमें कोई व्यवहार नहीं है ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ॐ कार वृहद् व्याख्या

समष्टि ॐ की चार मात्रायें	१-उकार	२-उकार	३-मकार	४-अर्धमात्रा
समष्टि ॐ का अधिष्ठाता	विराट	हिरण्यगर्भ	ईश्वर	शुद्धब्रह्म
ॐ का समष्टि शरीर	स्थूलजगत	सूक्ष्म जगत	कारण जगत	०
व्यष्टि ॐ का अभिमानी	विश्व	तैजस	प्राज्ञ	साक्षी(कूट
व्यष्टि ॐ के शरीर	स्थूल	सूक्ष्म	कारण	अशरीर
ॐ की अवस्था	जाग्रत	स्वपन	सुषुप्ति	तुर्या
ॐ के गुण	रजोगुण	सतोगुण	तमोगुण	निर्गुण
ॐ के रंग	लाल	श्वेत	कृष्ण	रंगरहित
ॐ के देवता	ब्रह्मा	विष्णु	शिव	सर्वरूप
ॐ के कर्म	उत्पत्ति	पालन	संहार	अक्रिय
ॐ के स्थान	दायां नेत्र	कंठ	हृदय	रोमरोम
ॐ के भोग	स्थूल	सूक्ष्म	आनन्द	अभोक्ता
ॐ की वाणी	वैखरी	मध्यमा	पश्यन्ति	परा
वाणी के स्थान	मुख	कंठ	हृदय	नाभि
बुद्धि	वाह्य प्रज्ञा	अन्तप्रज्ञा	विज्ञानघन	अप्रज्ञा
ॐ की उपाधि	व्यष्टि-समष्टि	व्यष्टि-समष्टि	व्यष्टि-समष्टि	निरोपाधिक

उत्पत्ति—शुद्धब्रह्म से ईश्वर—ईश्वर से हिरण्यगर्भ—हिरण्यगर्भ से विराट लय—विराट् को हिरण्यगर्भ में, हिरण्यगर्भ को ईश्वर में, ईश्वर को शुद्धब्रह्म में लय करें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

—ॐ किसे कहते हैं ?

—दोहा—जग जा में कल्पित दिखे, सो जग का अधिष्ठान ओइम्
नाम है तासु को, कंठ की श्रुति प्रणाम ॥

दोहा—ब्रह्म वाक्य ओइम् वाचक, वाचक वाच्य अभेद ।
एक अखण्ड अद्वितीय है, ऐसा गावें वेद ॥२॥

मन्त्राणां प्रणवः सेतुः

ओंकार समस्त मंत्रों का सेतु है, तथा मनोवाञ्छित फल की प्राप्ति के लिए प्रत्येक मंत्र को ॐ के साथ उच्चारण किया जाता है। ॐ का बीज मंत्र भी है जो कि गुप्त है वह शीघ्र फल देता है जिज्ञासु ..न पत्रव्यवहार करें अथवा मिलें । उपासना की विधि आगे लिखेंगे ।

कुण्डलिनी योग व षट् चक्र वेधन

शरीर के मर्म स्थलों में मेरुदण्ड (रीढ़ की हड्डी) का प्रमुख स्थान है। यह शरीर की आधार शिला है। यह मेरुदण्ड छोटे-छोटे तैंतीस अस्थिखण्डों से मिलकर बना है। इस प्रत्येक खण्ड में तत्व ..त्तियों को ऐसी विशेष शक्तियाँ परिलक्षित होती हैं, जिनका सम्बन्ध दैवी शक्तियों से है देवताओं में जिन शक्तियों का केन्द्र होता है, वे शक्तियां भिन्न-भिन्न रूप से मेरुदण्ड के इन अस्थि खण्डों में पाई जाती हैं, इसलिए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि मेरुदण्ड तेतीस देवताओं का प्रतिनिधित्व करता है। आठ वसु, बारह आदित्य, ग्यारह रुद्र, इन्द्र और प्रजापति इन तेतीसों की शक्तियां उसमें बीज रूप से उपस्थित रहती हैं।

इस पीले मेरुदण्ड में शरीर-विज्ञान के अनुसार अनेकों नाड़ियां हैं और वे विविध कार्यों में नियोजित हैं। आंध्यात्म विज्ञान के

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अनुसार उसमें तीन प्रमुख नाड़ियां हैं—(१) इड़ा, (२) पिंगला, (३) सुषुम्ना । यह तीन नाड़ियां मेरुदण्ड को चीरने पर प्रत्यक्ष रूप में आँखों द्वारा नहीं देखी जा सकती, इनका सम्बन्ध सूक्ष्म जगत से है। यह एक प्रकार का बिद्युत-प्रवाह है, जैसे बिजली से चलने वाले यन्त्रों में नैगेटिव और पाजेटिव, ऋण और धन धाराएँ दौड़ती हैं और उन दोनों का जहां मिलन होता है, वहीं शक्ति पैदा हो जाती है। इसी प्रकार इड़ा को नैगेटिव, पिंगला को पाजेटिव कह सकते हैं। इड़ा को चन्द्रनाड़ी और पिंगला को सूर्य नाड़ी भी कहते हैं। मोटे शब्दों में इन्हें ठण्डी और गरम धाराएँ कहा जा सकता है। दोनों के मिलने से जो तीसरी शक्ति उत्पन्न होती है, उसे सुषुम्ना कहते हैं। प्रयाग में गङ्गा और यमुना मिलती हैं। इस मिलन से एक तीसरी सूक्ष्म सरिता और विनिर्मित होती हैं, जिसे सरस्वती कहते हैं। इस प्रकार दो नदियों से त्रिवेणी कर जाती हैं। मेरुदण्ड के अन्तंगत भी ऐसी आध्यात्मिक त्रिवेणी है। इड़ा पिंगला की दो धाराएँ मिलकर सुषुम्ना की सृष्टि करती हैं और एक पूर्ण त्रिवर्ग बन जाता है।

इड़ा भागीरथी गङ्गा पिंगला यमुना नदी ।
तयोर्मध्यगता नाड़ी सुषुम्णाख्या सरस्वती ॥
त्रिवेणीसंगमो यत्र तीर्थराजः स उच्यते ।
तत्र स्नानं प्रकुर्वीत सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥
(ज्ञान संकलिनी-तन्त्र)

इड़ा को गङ्गा और पिंगला को यमुना तथा इन दोनो के मध्य में जाने वाली नाड़ी सुषुम्ना को सरस्वती कहते हैं। इस त्रिवेणी का जहां संगम है, उसे तीर्थराज कहते हैं, इसमें स्नान करके सारे पापों से मुक्त हो जाते हैं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तदेव हृदयं नाम सर्वं शास्त्रादिसम्मतम् ।
अन्यथा हृदि किंचास्ति प्रोक्तं यत् स्थूलबुद्धिभि ॥(योगस्वरोदय)

यही अर्थात् आज्ञावाचक ही सर्वशास्त्र-सम्मत हृदय है। स्थूल बुद्धि वाले ही अन्य स्थूल स्थान को हृदय कहते हैं।इसी आज्ञाचक्र को त्रिकुटी तथा भ्रुवोर्मध्य भी कहते हैं तथा उपरोक्त त्रिवेणी भी इसी मस्तिष्क के मध्य केन्द्र से तथा ब्रह्मरन्ध्र(सहस्रारकमल)से सम्बन्धित है, और नीचे मेरुदण्ड का जहाँ नुकीला अन्त है, वहां—लिङ्ग मूल और गुदा के बीच के 'सीवन' स्थान की सीध में पहुंच कर रुक जाती है, वह इस त्रिवेणी का आदि अन्त है ॥

सहस्रदल-सूक्ष्म लोकों से, विश्वव्यापी शक्तियों से सम्बन्धित है रेडियो-ट्रान्समीटर से ध्वनि ग्राहक और ध्वनि विस्तारक तन्तु फैलाये जाते हैं, जिन्हें 'एरियल' कहते हैं । इन तन्तुओं के द्वारा सूक्ष्म आकाश में ध्वनि को फेंका जातां है और बहती हुई तरङ्गों को पकड़ा जाता है। मस्तिष्क का 'एरिएल भी सहस्रार कमल है, उसके द्वारा परमात्म-सत्ता की अनन्तों शक्तियों को सूक्ष्म लोक में से पकड़ा जा सकता है।

कूर्म से ब्रह्मनाड़ो के गुन्थन स्थल को आध्यात्मिक भाषा में 'कुण्डलिनी' कहते हैं। जैसे काले रङ्ग के आदमी का नाम कलुआ भी पड़ जाता है , उसी प्रकार कुण्डलाकार बनी हुई इस आकृति को 'कुण्डलिनी' कहा है ।

इस कुण्डलिनी की महिमा, शक्ति और उपयोगिता इतनी अधिक है कि उसको भली प्रकार समझाने में मनुष्य की बुद्धि लड़खड़ा जाती है ।

जिस प्रकार आज परमाणु की शोध में प्रत्येक देश के वैज्ञानिक व्यस्त हैं, उसी प्रकार पूर्वकाल में आध्यात्मिक विज्ञान वेत्ताओं ने, तत्वदर्शी

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ऋषियों ने, मानव शरीर के अन्तंगत एक बीज परमाणु की अत्यधिक शोध की थी। दो परमाणुओं को तोड़ने, मिलाने या स्थानान्तरित करने का सर्वोत्तम स्थान कुण्डलिनी केन्द्र में होता है, क्योंकि अन्य सब जगह ही चैतन्य परमाणु गोल और चिकने होते हैं, पर कुण्डलिनी में यह मिथुन लिपटा हुआ है जैसे यूरेनियमऔर प्लेटोनियम धातु में परमाणुओं का गुन्थन कुछ ऐसे टेढ़े-तिरछे ढंग से होता है कि जिनका तोड़ा जाना अन्य पदार्थों के परमाणुओं की अपेक्षा अधिक सरल है, उसी प्रकार कुण्डलिनी स्थित स्फुल्लिग परमाणुओं की गतिविधि को इच्छानुकूल सचालन करना अधिक सुगम है। इसीलिए प्राचीनकाल में कुण्डलिनी जागरण की उतनी ही तत्परता से शोधें हुई थी, जितनी कि आजकल परमाणु विज्ञान के बारे में हो रही हैं। इन शोधों, परीक्षणों और प्रयोगों के फलस्वरूप उन्हें ऐसे कितने ही रहस्य भी करतलगत हुऐ थे जिन्हें आज "योग के चमत्कार" नाम से पुकारते हैं।

कुण्डलिनी की गति एक सैकण्ड में ३४५००० मील है। पाश्चात्य वैज्ञानिक इसे "स्प्रिट फायर" अथवा "सरपेन्टलपावर कहते हैं। इस सम्बन्ध में सर जान वुडरफ ने बहुत विस्तृत विवेचन किया है।

कुण्डलिनी को गुप्त शक्तियों की तिजोरी कहा जा सकता है। बहुमूल्य रत्नों को रखने के लिए किसी अज्ञात स्थान मेंरख परिस्थितियों में तिजोरी रखी जाती है और उसमें कई ताले लगा दिए जाते हैं ताकि घर या बाहर के अनाधिकारी लोग उस खजाने में रखी हुई सम्पत्ति को न ले सकें। परमात्मा ने हमें अनन्त शक्तियों का अक्षय भण्डार देकर उसमेंछै ताले लगा दिए हैं। ताले इसलिए लगा दिये हैं कि जब पात्रता आजाय, धन के उत्तरदायित्व को ठीक प्रकार समझने लगे तभी वह सब प्राप्त हो सके। उन छहों तालों की ताली मनुष्य

njGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

…ी ही सौंपदी गई है, ताकि वह आवश्यकता के समय तालों को खोलकर …चित लाभ उठा सके।

यह छः ताले जो कुण्डलिनी पर लगे हुये हैं, छै चक्र कहलाते …। इन चक्रों का वेधन करके जीव कुण्डलिनी के समीप पहुंच …कता है और उनका यथोचित उपयोग करके जोवन लाभ प्राप्त …र सकता है। सब लोगों की कुण्डलिनी साधारणतः अवस्था में …ड़ी रहती है। पर जब उसे जगाया जाता है तो वह अपने स्थान …र से हट जाती है और उस लोक में प्रवेश कर जाने देती हैजिसमें …रमात्म शक्तियो की प्राप्ति हो जाती है। बड़े-बड़े गुप्त खजाने जो …ाचीन काल से भूमि में छिपे पड़े होते हैं उन पर सर्प की चो-…कीदारी पाई जाती है। खजाने के मुख पर कुण्डलीदार सर्प बैठा …हता है और चौकीदारी किया करता है। दैवलोक भी ऐसा ही …खजाना है जिसके मुख पर षट्कोण कूर्मकी शिला रखी हुई है और …शिला से लिपटी हुई भयकर सर्पिणी कुण्डलिनी बैठी है यहस र्पिणी …अधिकारी पात्र की प्रतोक्षा में बैठी होती है। जैसे ही कोई अधिका-…री उसके समीप पहुंचता है वह उसे रोकने या हानि पहुंचाने की …अपेक्षा अपने स्थान से हटकर उसको रास्ता दे देती है और उसका …कार्य समाप्त हो जाता है।

मस्तिष्क के ब्रह्मरन्ध्र में बिखरे हुये सहस्रदल भी साधारणतः …इसी प्रकार प्रसुप्त अवस्था में पड़े रहते हैं जैसे कि कुण्डलिनी सोया …करती है। इतने बहुमूल्य यन्त्रों और कोषों के होते हुए भी मनुष्य …साधारणतः बड़ा दीन, दुर्बल, तुच्छ, क्षुद्र विषय विकारों का गुलाम …बनकर कीट पतङ्गों जैसा जीवन व्यतीत करता रहता है और दुखदारिद्र …की दासता में बँधा हुआ फड़फड़ाता रहता है। पर जब वह इन यन्त्रो

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

और रत्नागारों से परिचित होकर उनके उपयोग को जान लेता है, उन पर अधिकार कर लेता है तो वह परमात्मा के सच्चे उत्तराधिकारी की समस्त योग्यताओं और शक्तियों से सम्पन्न हो जाता है। कुण्डलिनी जागरण से होने वाले लाभों के सम्बन्ध में योग शास्त्रों में बड़ा विस्तृत और आकर्षक वर्णन है। उस सब की चर्चा न करके यहाँ इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि कुण्डलिनी शक्ति के जागरण से इस विश्व में जो कुछ है वह सब कुछ मिल सकता है, उसके लिए कोई वस्तु अप्राप्य नहीं रहती।

षट्चक्रों का वेधन

कुण्डलिनी के शक्ति मूल तक पहुंचने के मार्ग में छै फाटक हैं अथवा यों कहना चाहिए कि छः ताले लगे हुए हैं। यह फाटक या ताले खोल कर ही कोई जीव उस शक्ति केन्द्र तक पहुंच सकता है। इन छै अवरोधों को आध्यात्मिक भाषा में 'षट्चक्र' कहते हैं।

सुषुम्ना के अन्तंगत रहने वाली तीन नाड़ियों में सबसे भीतर स्थित ब्रह्मनाड़ी से यह छै चक्र सम्बन्धित हैं। माला के सूत्र में पिरोए हुए कमल पुष्पों से इनकी उपमा दी जाती है। आगे दिए हुए चित्रमें पाठक यह देख सकेंगे कि कौन सा चक्र किस स्थान पर है। मूलाधार चक्र योनि की सीध में, स्वाधिष्ठान चक्र पेडू की सीध में, मणिपुर चक्र नाभि की सीध में, अनाहत चक्र ह्रदय की सीध में, विशुद्धाख्य चक्र कंठ की सोध में, और आज्ञा चक्र भकुटि के मध्य में स्थित है। इनसे ऊपर सहस्त्रार कमल है।

सुषुम्ना तथा उसके अन्तर्गत रहने वाली चित्रणी आदि नाड़ियाँ इतनी सूक्ष्म हैं कि उन्हें साधारण नेत्रों से देख सकना कठिन है। फिर उनसे सम्बन्धित यह चक्र तो और भी सूक्ष्म है, किसी शरीर को

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

र-फाड़ करते समय इन चक्रों को नस नाड़ियों की तरह स्पष्ट रूप नहीं देखा जा सकता, क्योंकि हमारे चर्मचक्षुओं की तीक्ष्ण शक्ति तक ही सीमित है। शब्द की तरंगे, वायु के परमाणु तथा रोगी के कीटाणु हमें आखों से दिखाई नहीं पड़ते तो भी उनके अस्तित्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। इन चक्रों को योगियों ने अपनी योग दृष्टि से देखा है और उनका वैज्ञानिक परीक्षण करके महत्वपूर्ण लाभ उठाया है और उसके व्यवस्थित विज्ञान का निर्माण करके योग मार्ग के पथिकों के लिए उसे उपस्थित किया है।

'षटचक्र' एक प्रकार की सूक्ष्म ग्रन्थियाँ हैं जो ब्रह्मनाड़ी के मार्ग में बनी हुई हैं। इन चक्र ग्रन्थियों में जब साधक अपने ध्यान को केन्द्रित करता है तो उसे वहाँ की सूक्ष्म स्थिति का बड़ा विचित्र अनुभव होता है। ग्रन्थियाँ गोल नहीं होतीं वरन् उनमें इस प्रकार कोण निकले होते हैं, जैसे पुष्प में पंखड़ियाँ होती हैं। इन कोण या पंखड़ियों को 'पद्मदल' कहते हैं। यह एक प्रकार के तन्तु गुच्छक हैं।।

ब्रह्मनाड़ी की पोली नली में होकर जब वायु का अभिगमन होता है तो चक्रों के सूक्ष्म छिद्रों के आघात से उसमें एक वैसी ही ध्वनि होती है, जैसी कि वंशी में वायु का प्रवेश होने पर छिद्रों के आघात से ध्वनि उत्पन्न होती है। हर चक्र में एक सूक्ष्म छिद्र की वंशी के स्वर छिद्र की सी प्रति क्रिया होने के कारण स, रे, ग, म, जैसे स्वरों का एक विशेष ध्वनि प्रवाह होता है, जो यँ, लँ, रँ, हँ, ॐ, जैसे स्वरों में सुनाई पड़ता है। इसे चक्रों का बीज कहते हैं।

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

षट् चक्र

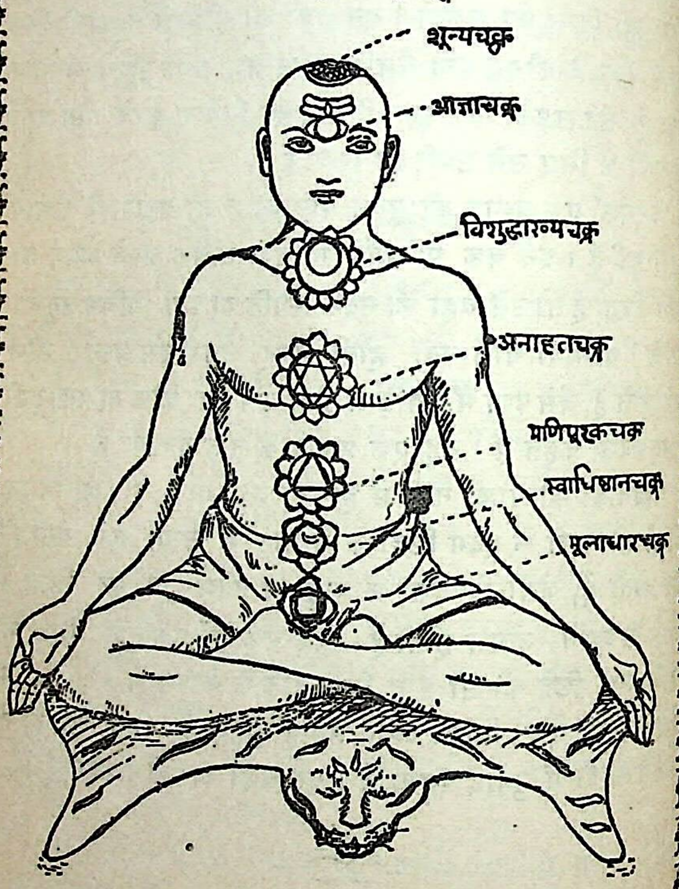

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

संख्या	चक्रों के नाम	उनके स्थान	देवता	लोक	तत्त्व	देवी	रंग	बीज अक्षर	
७	ब्रह्मरन्ध्र सहस्त्रादल चक्र	शिखा के पास							
६	आज्ञा चक्र	भ्रू मध्य में	परमशिव	तप:	मन	हाकिनी	सफेद	ओ३म्	२ हं क्षं
५	विशुद्ध चक्र	कंठ मुद्रा	सदाशिव	जन:	आकाश	शाकिनी	नीला	हं	१६स्वर अकार से अ: तक
४	अनहद चक्र	हृदय में	ईश	मह:	वायु	काकिनी	धुंधला	यं	१२ ककार से ठकार तक
३	मनीपूरक चक्र	नाभि में	विष्णु	स्व:	अग्नि	लाकिनी	लाल	रं	१०डकार से फ़कार तक
२	स्वाधिष्ठान चक्र	नाभि से नीचे	ब्रह्मा	भुव:	जल	राकिनी	सफेद	वं	६ वकार से लकार तक
१	मूलाधार चक्र	गुदा	गणेश	भू:	पृथ्वी	डाकिनी	पीला	मं	४ पंखड़ी व स ष श

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

षट्चक्रों के ध्यान का फल

१—मूलाधार चक्रके ध्यान का फल—वक्ता, मनुष्यों में श्रेष्ठ सर्वं विद्या, विनोदी, आरोग्य, आनन्द चित्त तथा कवि बनना।

२—स्वाधिष्ठान चक्रका फल-अहंकारादि विकारों का नाश, श्रेष्ठ योग तथा मोह निवृत्ति।

३—मणि पूरक चक्र का फल—संहार व पालन की शक्ति, वचन सिद्धि।

४—अनाहत चक्र का फल—स्वामित्व, योग सिद्धि, ज्ञान जागृत, इन्द्रिय जय, परकाया प्रवेश।

५—विशुद्ध चक्र का फल—चित्त शान्ति, त्रिकाल दर्शित्व, दीर्घ जीवन, तेजस्विता, सर्वहित परायणता।

६—आज्ञा चक्र का फल—सर्वार्थ साधन

षट चक्रों में उपरोक्तों छः चक्र ही आते हैं। परन्तु सहस्रार कमल या सहस्र दल को भी कोई योगी सातवाँ शून्य चक्र मानते हैं। उसका भी वर्णन नीचे किया जाता है।

७—शून्य चक्र के घ्यान का फल—भक्ति, अमरता, समाधि, समस्त ऋद्धि-सिद्धियों का करतलगत होना।

पाठक जानते हैं कि कुण्डलिनी शक्ति का स्रोत है, वह हमारे शरीर का सबसे अधिक समीप चैतन्य स्फुलिंग है, उसमें बीज रूप से इतनी रहस्यमय शक्तियाँ गर्भित हैं, जिनकी कल्पना तक नहीं हो सकती। कुण्डलिनी शक्ति के इन छः केन्द्रों में, षटचक्रों में भी उसका काफी प्रकाश है। जैसे सौर मण्डल में नौ ग्रह हैं, सूर्य उनका केन्द्र है और चन्द्रमा मङ्गल आदि उससे सम्बन्ध होने के कारण सूर्य की परिक्रमा करते हैं। वे सूर्य की उष्मा, आकर्षणी, विलयिनी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

...दि शक्तियों से प्रभावित और ओत-प्रोत रहते हैं। वैसे ही कुण्ड-...नी की शक्तियाँ चक्रों में भी प्रसारित होती रहती हैं। एक बड़ी ...जोरी में जैसे कई छोटे-छोटे दराज हैं, जैसे मधु मक्खी के ... बड़े छत्ते में छोटे-छोटे अनेक छिद्र होते हैं और उनमें भी कुछ ... भरा रहता है वैसे ही कुण्डलिनी की कुछ शक्ति का प्रकाश ...ों में भी होता है। चक्रों के जागरण के साथ साथ उनमें सन्निहित ...तनी ही रहस्यमय शक्तियाँ भी जाग पड़ती हैं। उनका संक्षिप्त ... संकेत ऊपर चक्रों में ध्यान के फल में बताया गया है। इनको ...स्तार करके कहा जाय तो यह शक्तियाँ भी आश्चर्यों से किसी ...कार कम प्रतीत नहीं होंगी।

चक्रों का वेधन

षटचक्रो को वेधन करते हुए कुण्डलिनी तक पहुँचना और उसे ...गृत करके आत्मोन्नति के मार्ग में लगा देना यह एक महाविज्ञान ...। ऐसा ही महाविज्ञान-जैसा कि परमाणु बम का निर्माण एवं ...सका विस्फोट करना एक अत्यंत उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य है। इसे ...ही अपने आप केवल पुस्तक पढ़कर आरम्भ नहीं कर देना चाहिये ...न् किसी अनुभवी पथ प्रदर्शक की संरक्षता में यह सब किया ...ना चाहिये।

चक्रों का वेधन ध्यान शक्ति के द्वारा किया जाता है। यह ...भी जानते हैं कि हमारा मस्तिष्क एक प्रकार का बिजलीघर है ...र उस बिजली घर की प्रमुख धारा का नाम—'मन' है। मन की ...ति चञ्चल और बहुमुखी होती है। वह हर घड़ी चञ्चलता मग्न ...र सदा उछल-कूद में व्यस्त रहता है। इस उथल पुथल के कारण ... विद्युत पुञ्ज का एक स्थान पर केन्द्रीकरण नहीं होता, जिससे

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कोई महत्वपूर्ण कार्य सम्पादन हो, इस अभाव में जीवन के क्षण यों ही अस्त-व्यस्त नष्ट होते रहते हैं। यदि उस शक्ति का एकत्रीकरण हो जाता है, उसे एक स्थान पर संचित कर लिया जाता है तो आतिशी शीशे द्वारा एंकत्रित हुई सूर्य किरणों द्वारा आग की लपटें उठने लगना, जैसे दृश्य उपस्थित हो जाते हैं। 'ध्यान' एक ऐसा सूक्ष्म विज्ञान है, जिसके द्वारा मन की बिखरी हुई बहुमुखी शक्तियाँ एक स्थान पर एकत्रित होकर एक कार्य में लगती हैं। फल स्वरूप यहाँ असाधारण शक्ति का स्रोत प्रवाहित हो जाता है। ध्यान द्वारा मनः क्षेत्र की केन्द्रीभूत इस बिजली से, साधक षट्चक्रो का वेधन कर सकता है।

षट्चक्र वेधन की साधना करने के लिए अनेक ग्रन्थों में अनेक मार्ग बताये गये हैं। इसी प्रकार गुरु परम्परा से चली आने वाली साधनायें भी विविध प्रकार की हैं। इन सभी मार्गों से उद्देश्य की पूर्ति हो सकती हैं, सफलता मिल सकती है, पर शर्त यह है कि उसे पूर्ण विश्वास, श्रद्धा निष्ठा और उचित पथ-दर्शक की संरक्षता में किया जाय॥

◈ चक्र वेधन विधि ◈

पहली विधि—प्रातः काल स्नानादि द्वारा शुद्ध पवित्र होकर सिद्धासन, पद्मासन लगाकर मेरुदण्ड को सीधा करके बैठे। केवल रेचक द्वारा जहाँ तक जा सके श्वांस को बाहर ले जाँय। बिना रोके हुए वहाँ से पूरक द्वारा जहाँ तक जा सके अन्दर ले जायें। यह एक प्राणायाम हुआ। इस प्रकार ११, १५, २०, इत्यादि की संख्या में बिना कुम्भक किये हुए केवल रेचक, पूरक देर तक करते रहने से स्वयं दीर्घ और सूक्ष्म होकर दोनों श्वास-प्रश्वास की गतियों का स्वयं ही अभाव हो जाता है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दूसरी विधि—ओ३म् के मानसिक जापके साथ यह भावना करें कि 'ओ' से श्वास अन्दर आ रहा है और 'अम्' से बाहर निकल रहा है। इस क्रम से श्वास-प्रश्वास द्वारा ओम् का माननिक जाप करते रहें अर्थात् बाह्यप्रदेश तथा आभ्यन्तर प्रदेश हृदय, नाभि आदि तक जहाँ तक श्वास जाये वहाँ तक उसकी गति को आलोचनपूर्वक दीर्घकाल तक ओ३म् का इस विधि से जप करें तो स्वयं श्वास-प्रश्वास दीर्घ और सूक्ष्म होते-होते निरुद्ध हो जायगा।

तीसरी विधि—नासिका-अग्रभाग, भृकुटी, ब्रह्मरन्ध्र अथवा अन्य किसी चक्र पर भावना से ओ३म् का मानसिक जाप करें कि 'ओ' से उसी प्रदेश में श्वास अन्दर आ रहा है और 'अम् से बाहर निकल रहा है। इस प्रकार उस विशेष स्थान का श्वास प्रश्वास का केन्द्र बनाये हुये जाप के निरन्तर अभ्यास से श्वास--प्रश्वास की गति दीर्घ और सूक्ष्म होते हुए स्वयं निरुद्ध हो जाती है

चौथी विधि —ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करते हुए श्वास-प्रश्वास की गति में ऐसी भावना करना कि 'ओ' से श्वास मेरुदण्ड के भीतर सुषुम्ना नाड़ी में होता हुआ मूलाधार तक जा रहा है और 'अम्' के साथ वहाँ से ब्रह्मरन्ध्र तक लौट रहा है।

चक्रभेदन में इस प्राणायाम का अभ्यास—इसी प्रकार निचले चक्रों—मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक इत्यादि में ध्यान करते हुए 'ओ' से श्वास और अम से प्रश्वास की गति की भावना करते हुए उसको ऊपर के चक्रो में आलोचन करने से किया जाता है।

बाहर और अन्दर के विषय के अर्थात् रेचक और पूरक को त्यागने वाला चौथा प्राणायाम है उसकी विधि निम्न प्रकार होगी—

पाँचवीं विधि—मूलाधार, आज्ञा, ब्रह्मरन्ध्र आदि किसी चक्र

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अथवा नासिका-अग्रभाग आदि किसी स्थान को बिना रेचक-पूरक के श्वास–प्रश्वास की गति बनाते हुए अर्थात् ऐसी भावना करते हुए कि 'ओ' से उसी विशेष स्थान पर श्वास आ रहा है और 'अम्' से छूट रहा है, ऐसा ओम् का मानसिक जाप करें। उसके निरन्तर अभ्यास से श्वास-प्रश्वास की गति का निरोध हो जाता है। इस विधि को सबसे प्रथम स्थान देना चाहिये। चक्रभेदन में इस विधि से शीघ्र सफलता प्राप्त हो सकती है (समाधिपाद वि० व० सूत्र ३४)

यदि उपर्युक्त रीति से जाप करने में कठिनाई प्रतीत हों तो उस विशेष स्थान पर केवल मानसिक ओ३म् का जाप करें, अथवा ऐसी भावना करें कि वहाँ ओ३म का जाप हो रहा है या ओ३म शब्द को सुन रहे हैं। मुख्य बात यह है कि उस विशेष ध्येय स्थान पर मन ठहरा रहे। ओंकार उपासना की भी यही विधि है।

स्वस्थ चित्त से सावधान होकर एक मास तक, एक ही साधन करने से यह प्रस्फुटित हो जाता है। ध्यान में उसके लक्षण अधिक स्पष्ट होने लगते हैं और चक्र के स्थान पर उससे सम्बन्धित मातृकाओं, ज्ञानेन्द्रियों में अचानक कम्पन, रोमांच, प्रस्फुरण, उत्तेजना, दाद, खुजली जैसे अनुभव होते हैं, यह इस बात के चिन्ह हैं कि चक्रों का जागरण हो रहा है। एक मास या न्यूनाधिक काल में इस प्रकार के चिन्ह प्रकट होने लगें, ध्यान में चक्र का रूप स्पष्ट होने लगे तो उससे आगे बढ़कर इससे नीचे की ओर दूसरे चक्र में प्रवेश करना चाहिये। फिर उसे पार करके दूसरे में जाना—इस प्रकार प्रत्येक चक्र में लगभग एक मास का समय लगता है। जब साधना पक जाता है, तो एक चक्र से दूसरे चक्र में जाने का द्वार खुल जाता है। जब तक साधन कच्चा रहता है—तब तक द्वार रुका रहता

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

साधक का मन आगे बढ़ना चाहे तो भी द्वार नहीं मिलता और उसी चक्र के तन्तु जाल की भूल भुलैयों में उलझा रह जाता है। जब साधना देर तक नहीं पकती और साधक को आगे का नहीं मिलता तो उसे अनुभवी गुरु की सहायता की आवश्यकता ती है, वह जैसा उपाय बतावे वैसा उसे करना होता है। इसी कार धीरे-धीरे क्रमशः छहों चक्रों को पार करता हुआ साधक धार में स्थित कुण्डलिनी तक पहुंचता है और वहाँ उस ज्वालामुखी कराल काल स्वरूप, महाशक्ति—सर्पिणी के विकराल रूप दर्शन करता है। महाकाली का प्रचण्ड स्वरूप यहीं दिखाई ता है। कई साधक इस सोते सिंह को जगाने का साहस करते काँप जाते हैं।

कुण्डलिनी को जगाने में उसे पीड़ित करना पड़ता है, छेड़ना ता है, जैसे परमाणु का विस्फोट करने के लिए उसे बीच में से ड़ना पड़ता है, उसी प्रकार सुप्त कुण्डलिनी को गतिशील बनाने लिए उस पर आघात करना होता है। इसे आध्यात्मिक भाषा कुण्डलिनी पीड़न कहते हैं। इससे पीड़ित होकर क्षुब्ध कुण्डलिनी फुंकारती हुई जाग पड़ती है और उसका सबसे प्रथम आक्रमण न में लगे हुए जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों पर होता है। वह संस्कारों को चबा जाता हैं। मन की छाती पर अपने शस्त्रो सहित चढ़ बैठती हैं और उसकी स्थूलता, मायापरायणता को नष्ट कर स्वभाव में परिवर्तित कर देती है।

इन चक्रों का क्रम नीचे से इसलिये दिया गया है कि इन चक्रों के मुँह नीचे की ओर हैं, उन्हें नीचे ही खोलना पड़ता है तब वे सभी सीधे होकर मस्तिष्क में जो अमृत है, उसे ग्रहण करने लग जाते हैं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गर्मियों में आज्ञाचक्र (भ्रकुटि) में ध्यान करने से मस्तिष्क में अधिक उष्णता हो तो ध्यान से पूर्व व पश्चात् घृत में कपूर मिलाकर मस्तिष्क पर मालिश करें। तथा शीतली प्राणायाम अवश्य करें। इतने पर भी गर्मी प्रतीत हो तो उन दिनों चार महीने नीचे के चक्रों पर एक-एक मास तक ध्यान का अभ्यास करें।

षट्चक्र की साधना करते समय प्रतिदिन ब्रह्मनाड़ी में प्रवेश करके चक्रों का ध्यान करते हैं। यह ध्यान पाँच मिनट से आरम्भ करके तीस मिनट तक पहुँचाया जा सकता है। एक बार में इससे अधिक ध्यान करना हानिकारक है, क्योंकि अधिक ध्यान से बढ़ी हुई अधिक ऊष्मा का सहन करना कठिन हो जाता हैं। ध्यान समाप्त करते समय उसी मार्ग पर वापिस लौट कर मन को त्रिकुटी में लाया जाता है और फिर ध्यान को समाप्त कर दिया जाता है।

यह कहने की तो आवश्यकता ही नहीं कि साधनाकाल में ब्रह्मचर्य से रहना, एक बार भोजन करना, सात्विक खाद्य पदार्थ ग्रहण करना, एकान्त सेवन करना, स्वस्थ वातावरण में रहना, दिनचर्या को ठीक रखना अनिवार्य है, क्योंकि यह साधनाओं की प्रारम्भिक शर्तें मानी गई हैं।

षट्चक्रों के वेधन और कुण्डलिनी के जागरण से ब्रह्मरन्ध्र में ईश्वरीय दिव्य ज्योति के दर्शन होते हैं और अनेकों गुप्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं। योग भी एक भारी विज्ञान है इससे भी अनभिज्ञ नहीं रहना चाहिये, आधुनिक विज्ञान वालों को भी अवश्य लाभ लेना चाहिये। विशेष जानकारी के लिये पूज्यपाद गुरुदेव श्री विश्वगुरुजी महाराज महामण्डलेश्वर से इसी पुस्तक में छपे हुए पते पर बन्द जवाबी लिफाफा भेज कर पत्र व्यवहार कीजिये अथवा स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में या कहीं अन्यत्र मिलिये।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

◈ ध्यान (एवं) मनोयोग ◈

प्रश्न—मनोयोग की आवश्यकता क्यों ?

जितने समय में हम मनोयोग करें, ध्यान करें, उपासना करें उतने समय में यदि और कोई [Work] कार्य करें, ट्यूशन करें, व्यापार के और कोई भी उत्पादन का कार्य करें तो विशेष लाभ होगा ।

उत्तर—प्रिय आत्माओं !

आपको विशेष लाभ चाहिये ! किन्तु विशेष लाभ विशेष शक्ति से होता है अंग्रेजी में जिसे [Power] पावर कहते हैं । जरा ध्यान देकर विचारिये यह शक्ति [Power] हमको कहां से मिलती है । [Science] विज्ञान की दृष्टि से समझिये, जब हम कोई भी कार्य [Work] करते-करते विशेष थक जाते हैं तो क्या चाहिये [Rest] विश्राम; कोई भी सुन्दर पदार्थ देखना, या खाते रहना या संग्रह करते रहना अच्छा मालूम नहीं देता, झुँझलाहट आती है, और विश्राम करने को बाध्य कर देती है । पुनः विश्राम [full Rest] करने के उपरान्त हमारे अन्दर पुनः कार्य करने की शक्ति विश्राम से आ जाती है । तो यह शक्ति कहां से आई? आप कहेंगे पूर्ण विश्राम से, तो वह पूर्ण विश्राम ही मनोयोग है जो तुम्हें विशेष कार्य करने को विशेष शक्ति देगा ।

क्योंकि पूर्ण विश्राम वह है जहाँ, तन स्थिर, मन स्थिर, प्राण स्थिर हो जावें । श्वांस भी विश्राम पावे इसकी विधि आगे लिखी जावेगी ।

गीता में भी कहा है कि—

प्राणापानौ समौ कृत्वानासाभ्यन्तर चारिणौ

अर्थात—नासिका में विचरने वाले प्राण और अपान को सम

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

करे। क्योंकि शरीर में सबसे कीमती वस्तु है प्राण (श्वास) अर्थात श्वास ही जीवन है। यह श्वास कैसे खर्च होती है यह जानिये और श्वास के संयम से दीर्घ जीवी बनिये।

बैठत बारह, चलत १८, सोवत में ३६ तथा मैथुन, मद्य पानादि में ७२।

यानी बैठने में १ मिनट में १२, और चलने में १ही मिनट के अन्दर १८ और सोने के समय १ मिनट में ३६ और मैथुन में ७२ और शराब आदि पीने में भी विशेष ब्यय होती हैं।

अतः महर्षि पतञ्जलि ने कहा है कि—

योगश्चित वृत्ति निरोधः

अर्थात्—चित्त की वृत्तियों के निरोध का ही नाम योग है, भजन है, उपासना है।

जिसका जितना मन एकाग्र होगा उसकी बुद्धि उतनी ही सूक्ष्म होगी। और सूक्ष्म बुद्धि वाला ही बड़े-बड़े आविष्कार या बड़े से बड़ा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अतः योग करने की आवश्यकता प्रत्येक विद्यार्थी को, वकील को, किसान को, भोजन बनाने वाले को सभी को है। क्योंकि विद्यार्थी की चित्त की वृत्तियों का निरोध नहीं है, मन काबू में नहीं है तो क्या पढ़ेगा, वकील का मन बुद्धि जितनी ठीक और सूक्ष्म होगी वह उतनी ही तेज वकील होगा। क्योकि बिना मन बुद्धि के सहारे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं होता।

श्लोक—मन एवं मनुष्याणा, कारणं बन्धमोक्षयो।
बन्धञ्च बिषयासक्तं, मुक्तं निर्विषयैस्मृतम्॥

अर्थात्—मन ही मनुष्य के बन्धन और मुक्ति (यानी) उत्थान और पतन का मुख्य कारण है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पद्य—मन ही गृहस्थी जाय बन घर मानले संसार को।
धारण करे वैराग्य मन ही त्याग दे व्यवहार को ॥
मन लाभ हानि व सुख दुःख के जानता सब काल को।
कोई सन्तजन ही जानते इस तीव्र मन की चाल को ॥

अतः अब आप समझ गये होंगे कि शरीर में सबसे मुख्य वस्तु है श्वास का संयम और मन का निरोध [Mind Control] क्योंकि बिना श्वास और मन के कोई भी कार्य नहीं होता। इस पुस्तक में आगे वह विधि लिखी जायगी जिससे आप श्वास का संयम करके दीर्घ जीवी और मन का संयम करके भारी बुद्धिमान बनेंगे। अच्छा अब आओ, थोड़ा मन की गति पर विचार करलें ? मन की स्वाभाविक गति आधोगामिनी है [As Water] पानी की तरह, जैसे पानी स्वभाव से नीचे स्थान में बह जाता है वैसे ही मन बुरी बातों में स्वभाव से ही दौड़ कर चला जाता है।

श्लोक—मनो हि द्विविधं प्रोक्त, शुद्धञ्चाशुद्धमेव च।
अशुद्धं कालसंकल्पं, शुद्धं कामविर्वाजतं ॥

अर्थ—यानी एक ही मन के दो भेद है (१) शुद्ध मन (२) अशुद्ध मन। कामी मन अशुद्ध, और काम रहित मन शुद्ध है। शुद्ध मन तो मोक्ष का देने वाला है, किन्तु विपरीत मन तो बन्धनकारी ही है।

◈ मन शुद्ध दाता मोक्ष का, विपरीत मन बन्धन करे ◈

★ विपरीत मन की दशा ★

तिय तन चुम्बक मेंलोहसो लगत दौरि,
हरि ध्यान धरिबे में उजहत कपूर सो।
ज्ञान धुनि दुन्दुभी सुनत कम्पै कायर ज्यों,
नारि नैन सायक विशिषि सहै शूर सो ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

काम की कथानन को पीवत पीयूष जैसे ,
राम धुनि नाद लागे माहुर धतूर सो ॥
स्वारथं में सावधान "प्रेमसखी" रोज ,
परमारथ में लागे मन पकरों मजूर सो ॥

पद्य—मन का कहा मत मानिये, ये मन बड़ा ही धूर्त है ।
मन के कहे में आनकर, उलटा टंगे अवधूत है ॥
हर वक्त सब के सामने, जाकर कभी एकान्त में ।
उलटी पढ़ावे पट्टियां, जिनसे नरक हों अन्त में ॥

विषय ५ हैं, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ।

पद्य—जब-जब मन विषयों में जावे, तब-तब यों समझावे ।
विषय भोग की बता तुच्छता परमारथ में लावे ॥
विषय भोग सब नाशवन्त है आते हैं फिर जाते ।
धिक् धिक् उनका जीवन है जो इनमें चित्त लगाते ॥

विषय सुख की तुच्छता कवित्त

इन्द्राणी श्रंगार करि चन्दन लगायो अंग,
ताहि देखि इन्द्र अति काम बस भयौ है ।
सूकरी हु कर्दम के चहले में लोटि कर,
आगे जाय सूकर को मन हरि लयो है ।
जैसो सुख सूकर को तैसो सुख इन्द्र को है,
वैसो ही सुख नर पशु पक्षी हू को दयो है ।
सुन्दर कहत जाके भयो ब्रह्मानन्द सुख ,
सोई साधु जगत में जीतकर गयो है ॥

मन विषय भोग में जावे तो क्या करे ?

जब-जब मन विषयों में जावे, तब-तब उसको रोके ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

परम पुनीत कृपालु ईश के, चरण कमल रत होके ।।

मन को वश में करने के साधन

(१)जप (२)उपासना (६) मनोयोग आदि हैं ।

◈ जप का अर्थ ◈

जकारो जन्म विच्छेदः, पकारः पाप नाशकः ।
तस्माज्जप इति प्रोक्तो, जन्म पाप विनाशकः ।।

अर्थात्—'ज' से जन्म का विच्छेद, 'प' से पाप नाश करता है, व पापों का नाश करने वाला होने से जप कहते हैं ।

◈ जप विधि ◈

श्लोक—विधि यज्ञाज्जप यज्ञो, विशिष्टो दशभिर्गुणैः
उपांशुः स्याच्छत गुणः, साहस्रो मानसः स्मृतः ।।
(मनुस्मृति अ० २/८५)

भावार्थ—विधि यज्ञ अर्थात,(अग्नि होत्रादि)से जप यज्ञ दस गुना कर है तथा(दूसरे को सुनाई न दे इस प्रकार उच्चारण किये वाले जप को, उपाशु जप कहते हैं) यह उपांशु जप, जप यज्ञ सौ गुना बढ़कर है तथा (जिस जप में बाणी और ओष्ठ भी हिले उसे मानस जप कहते हैं) यह मानस जप, उपांशु, जप से हजार गुना अधिक फलदायक है अतः मानसिक (यानी मन से जाने वाला) जप ही करना चाहिये यह विधि उत्तम है । राम, कृष्ण, शिव, विष्णु ओं३मकार आदि किसी के भी मन्त्र कर सकते हैं । जप ईश्वर के अर्पण कर देने से निष्काम कर्म बन शीघ्र अन्तः करण शुद्ध करके ज्ञान का अधिकार बना देता है : भगवदार्पण कर देवे ।

उपासना का अर्थ

उप =समीपे=उपासना इति कथ्यते ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रभु के समीपत्व में मन की स्थिति करना उपासना है यह उपासना दोप्रकार की है (१) साकार (२) निराकार साकार=यानी आकार के आधार पर मन को टिकावे यह सरल है और जब अभ्यास बढ़ जावे तब निराकार=यानी आकार रहित प्रभु में स्थिति सर्व व्यापक भाव से करें।

पद्य—जो यह निर्गुण ध्यान नह्वै तो सगुण रूप कर मन को धाम।
सगुण उपासना हूं नहिं ह्वै है तो निष्काम कर्म भज राम॥

कोई मुमुक्षु जब ध्यान या उपासना करने लगा तो प्रश्न किया, कि किस राम की करें क्योंकि राम तो कई हैं, वह इस प्रकार बोला।

एक राम का सभी पसारा, एक राम त्रिभुवन से न्यारा।
एक राम घट घट मुंह बोले, एक राम दशरथ घर डोले॥

उसने भेद बुद्धि से ४ राम बतलाये तब किन्ही सन्त महापुरुष ने समझाया कि इन चारों रूपों में कोई अन्तर नहीं है, सभी में एक उसी राम का रूप है। कहा भी है कि—

उसी राम का सभी पसारा, वही राम सब जग से न्यारा।
वही राम घट घट मह बोलें, वही राम दशरथ घर डोलें॥

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए श्री गीता जी में कहा है कि—

श्लोक—अजोऽपि सन्नव्ययात्मा: भूतानामीश्वरोऽपिसन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय, सँभवाम्यात्ममयया ॥

अर्थात—मेरा जन्म प्राकृत मनुष्यों के समान नहीं है "जन्म कर्म च मे दिव्यम्" मेरे जन्म कर्म दिव्य हैं। अविनाशी स्वरूप और अजन्मा होने पर भी तथा सभी भूत प्राणियों का ईश्वर होने पर भी अपनी प्रकृति (माया) को आधीन करके योगाभ्यास से प्रकट होता है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नाम रूप में रम रहा, अस्ति भाँति प्रिय रूप।
सार असार विचार कर, समुझ एक ही रूप ॥

मेरे नाम की महिमा तो सदा पूर्ण ही है। इस उदाहरण से समझिये।

दोहा—नाम चतुर्गुण पञ्चयुत, द्विगुण करव बसु शेष।
सियाराम सब जगत में, तुलसी यह उपदेश ॥

चौ०—नाम के अक्षर चौगुन कीजै। पांच मिलाय द्विगुण करिलीजै ॥
आठ का भाग देवो हर बार, शेष रहे सो रामाधार ॥

उदाहरण

किसी के भी नाम के अक्षर गिन लो। मेरे ही नाम के गिनलो नी, शा, न, न्द, पाँच हुए और चौगुने कीजे ५×४=२० हुए, पांच मिलादो, २०+५=२५ हो गये मिलने पर फिर दुगने करलो २५×२=५० हो गये दुगने करने पर उसमें ८ का भाग दे दीजिये ५० ÷ ८ शेष रा, म, यही २ अक्षर रहेंगे।

भाजक, भाज्य, भजनफल,

८) ५० (६
४८
———
२ शेष रहे अतः राम ही शेष

रहता है इसी प्रकार आप किसी के भी नाम के अक्षरों को हिसाब लगाकर देखलें दो ही अक्षर बचेंगे यह है नाम की एक रूपी व्यापकता, अतः एक ही रूप समझ कर उपासना करो तथा भक्ति के जो बाधक हैं उनसे बचो।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भक्ति के बाधक कवित्त मन को मनोरथ

मन को मनोरथ महीपति मन्त्री भयो,
मोह को मुहर्रिर मेरी करत नित ख्वारी है ॥
अहंकार अहलमद क्रोध भयो कोतवाल,
चिन्ता चपरासी की तो दस्तक नित जारी है ॥
तृष्णा तहसीलदार पिछले पाप पेशकार,
भक्ति में मुकदमा मिसिल जिन बिगारी है ॥
कहत राधेश्याम डिगरी दीन पै न होय नाथ,
अरजी तो हमारी पीछे मरजी तिहारी है ॥

यहां पर बाधकों में मन को सबका राजा और मन के मनोरथ (यानी संकल्प विकल्पों) को मन्त्री कहा गया है क्योंकि अन्य मोह, तृष्णा, अहंकार, क्रोध, चिन्ता आदि से हटकर उपासना, (भजन) ध्यान में बैठे भी, तो मन बड़ा परेशान करता है। मन से तंग आकर रहीम जी ने तो भगवान को अपना मन ही दे दिया ।

श्लोक—रत्नाकर स्तव गृहं गृहणी च पद्मा ।
किं देयमस्ति भवतां जगदीश्वराय ॥
आभीरवामनयनाहृतमानसाय ।
दत्तं मनो यदुपते कृपया गृहाण ॥

भावार्थ—हे भगवान रत्नाकर समुद्र आपका घर है । लक्ष्मी जी आपकी पत्नी हैं। आप स्वयं जगदीश्वर हैं आपको क्या दूं ? वहां आपके पास में मन नहीं है, क्योंकि ? वह गोपियों ने चुरा लिया है और मेरे पास मन फालतू है अतः हे यदुपते मैं आपको अपना मन ही देता हूं कृपया गृहण कीजिये ।

—◈◈◈—

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मन का प्रकरण (हरिगीत छन्द)

१—मन ही गृहस्थी जाय बन घर मान ले संसार को।
धारण करे वैराग्य मन ही त्याग दे व्यवहार को ॥
माला पकड़ ले काठ की समझे पकड़ ली ढाल को।
कोई सन्त जन ही जानते हैं धूर्त मन की चाल को ॥
२—साधू बना कर दे दिये डंडे कई के हाथ में।
अरु सैकड़ों ही कर दिये हैं रंडियों के साथ में ॥
यह नाम से भगवान के खाता तरावट माल को।
कोई सन्तजन ही जानते हैं धूर्त मन की चाल को ॥
३—ईर्षा तथा क्रोधाग्नि में दिन रात जलता है यही।
शान्तिः सुधारसपान कर सुख नींद सोता है यही ॥
यदि वेग से देता रहे चक्कर बजाकर ताल को।
कोई सन्तजन ही जानते इस धूर्त मन की चालको।
४—क्यों मन नहीं तू मानता बहु भांति मैं समझावता।
विषमय विषय है जानता फिर भी उन्हीं में धावता।
तू शेर है गीदड़ बना उच्छिष्ट तुझ को भावता ॥
ज्यों खर खरी पीछे लगा तैसे ही लातें खावता ॥
५—दुख देख कर रोवे बहुत मस्तक धुनें पछिताय है।
पुनि पुनि विषय सेवन करे सौगन्ध झूंठी खाय है ॥
आवें विषय जब सामने तब मोहि उनमें जाय है।
जो जानि गढ्डे में गिरे निश्चय ही सो दुख पाय है ॥
६—ज्यों चील टुकड़े माँस ऊपर दूर से है धावती।
त्यों ही विषय लखि दौड़ता लज्जा तुझे नहिं आवती ॥
अंजान भी जाता समझ बहुकाल समझाते गया।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पाषाण भी जाता पिघल पर तू न टस से मस भया॥
७—अत्यन्त बाँका चोर है तू छल कपट बहु जानता।
जो दाव तुझ को याद है नहिं चोर भी पहिचानता॥
नहिं चोर ही डाकू महा हथियार लाखों धारता।
अध्यात्म धन को लूटता निर्धन हमें कर मारता॥
८—करके हजारों कामना हर कार्य में घुस जाय है।
स्वाधीन करके और को तू आप ही फंस जाय है॥
दुःख पाय है सकुचाय है चिल्लाय है पछिताय है।
करता प्रतिज्ञा आज कल ही भूल उसको जाय है॥
९—सोजाय पूजा पाठ में सुख का सदन न सुहाय है।
हित बात जो इस कान में उस कान से उड़ जाय है।
दिन रात गप सप में गंवा आनन्द जी में मानता।
लज्जित हुआ बहु बार अब निर्लज्ज तज निर्लज्जता॥
१०—है कार्य किसका शेष कितना काल यह न विचारता।
आकर अचानक बाज सम नर नारि को है मारता॥
विकराल डाढ़ों मध्य सब ही जीव जन्तु दबावता।
तब तक दया है काल की जब तक तुझे नहिं मारता॥
११—है मूर्ख मन दिन रात यह व्यवहार तुझको दीखता।
बहुबार धोखा खा चुका फिर भी नहीं है सीखता॥
आसक्त विषयों में हुआ बहु भाँति दुःख उठाय है।
जो मूर्ख कूटे है भुसी चावल कहाँ से पाय है॥
१२—मिथ्या विषय सुख मानरे मन आस उसकी छोड़ दे।
नहिं स्वप्न में भी सुख जगत में पाश जगकी तोड़दे॥
तू आश जिनकी कर रहा सब काल के हैं गाल में।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पुत्रादि दुःख की मूल हैं नहिं सुख यहाँ त्रय काल में ।।
१३—रे मन फिरे क्यों फूलता क्यों भूलता ईश्वर चरण ।
यमदूत आ घोटें गला तब जायगा किसके शरण ।।
जो इष्ट हो हित आपका नहिं चाहता हो कष्ट तू ।
ईश्वर हृदय में है उसी को ले बना निज इष्ट तू ।।
१४—रे दुष्ट तजदे दुष्टता सत्संग कर सुख प्राप्त कर ।
सत्शास्त्र पढ़ उपदेश सुन भ्रमत्याग दुख का अन्तकर ।।
पाँचों विषय भोगा किया बहु जन्म धारण कर चुका ।
अबभी हुआ नहीं तुप्त सबही योनियों में फिर चुका ।।
१५—रे मन विवेकी बन जगत से मोड़ मुख, सत्संग कर ।
उपदेश सच्चा मान ले स्व-स्वरूप में अनुराग कर ।।
आपत्ति से छुट जायगा निजतन्त्र तू हो आयगा ।
कौशल्य पाकर परमपद फिर गर्भ में नहिं जायगा ।।
१६—हे चपल अब तेरी सभी चालाकियाँ मैं जानता ।
अब वश न तेरा चल सके मैं तुच्छं तुझको मानता ।।
ऐसी कवच विज्ञान की सद्गुरु कृपा पहिनी सही ।
नहिं चोट तेरी लग सके तू टूट जावे आप ही ।।
१७—दे छोड़ सब चालाकियाँ अब शुद्ध होजा हे छली ।
मैं जानता बलवान था पर तू नहीं कुछ भी बली ।।
बलवान था तू दीखता मेरी ही सत्ता पाइके ।
जो मैं न दूँ सत्ता तुझे मर जाय है कुम्हिलायके ।।
१८—स्वाधीन रखने को तुझे चाबी मुझे है मिल गई ।
कल्याण तेरा होय अब प्रारब्ध तेरी खुल गई ।।
हूं वस्त्र तेरे फंकता फिर तू कहाँ रह जायगा ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कौशल्य छल को जानकर फिर कौन धोखा खायगा ॥
१९—रे दुष्ट मन अवगुण भवन छण-छण उछलता कूदता ।
किस भाँति तुझको बसकरूँ नहिं यत्न कोई सूझता ॥
होगी सजा मन को अगर कानून हो सरकार में ।
मन की बताकर चोरियाँ नालिश करूँ दरबार में ॥
२०—जो चोर पकड़ा जाय तो वह जेलखाने जाय है ।
सरकार कैसे दे सजा तू हाथ ही नहीं आय है ॥
मैंने बहुत की युक्तियाँ हे मन हराने को तुझे ।
नहिं काम आई एक भी आश्चर्य अति ही है मुझे ॥
२१—जब-जब लड़ा तुझ से गिरा अब युद्ध करना छोड़ता ।
रे दुष्ट मन पीछ न पड़ मैं हाथ तुझको जोड़ता ॥
ले-ले तुझे जो चाहिये हट सामने मेरे न आ ।
दिखला मुझे मत मुख कभी ले मान अब मेरा कहा ॥
२२—जो तू नहीं है मानता सम्बन्ध तुझ से छोड़ दूँ ।
उपदेश गुरु का याद कर सिर पैर तेरा तोड़ दूँ ॥
सम्बन्ध जब मन से तजा मन की मिटी सब दुष्टता ।
सिर पर चढ़ा था जो कभी सो पैर पर अब लोटता ॥
२३—अत्यन्त ही जो शूर था कायर वही अब दीखता ।
था अवगुणों से युक्त जो अब सोहि सद्गुण दीखता ॥
जो कल विषय आकार था सो आज ब्रह्माकार है ।
कौशल्य था जो श्वान सम सो विश्व का सरदार है ॥
२४—दुःख पाय बोला जीव रे मन तू बड़ा ही दुष्ट है ।
शठ संग से तेरे मुझे होता बहुत ही कष्ट है ॥
नहिं बात मेरी मानता अपनी ही उलटी तानता ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अन्धे कुँए में गिर मुझे, भी कीच में हैं सानता ॥
२५—कहलाय तू मेरा हितू देता मुझे ही कष्ट है ।
करता न हित की बात तू पापी महा निष्कृष्ट है ॥
जितनी सजा मैं दूँ तुझे उतनी सजा थोड़ी तुझे ।
नहिं चालबाजी छोड़ता आश्चर्य अति ही है मुझे ॥
२६—कहने लगा मन वाह तू देता मुझे क्यों दोष है ।
दिन रात हित तेरा करुँ इसका तुझे नहिं होश है ॥
मुझ से ही तब अस्तित्व है मुझ से ही है तू जीवता ।
हितकारी को दोषी बताना क्या नहीं यह ढीटता ॥
२७—मुख से ही मिट्ठू बन भले, अपनी बड़ाई कर घनी ॥
तुझ में कहाँ है शक्ति तेरी शक्ति सब मुझ से बनी ॥
मैंने कहा था आप से कब संग मेरा कीजिये ।
संगी बनाया भोग हित अब दोष मुझ को दीजिये ॥
२८—झुँझलाय बोला जीवरे है भोग केवल नाम का ।
जिसमें भरा हो दुःख ऐसा भोग है किस काम का ॥
दुःख जन्म में दुःख मृत्यु में दुःख बीच में भी पावता ।
ले चल शरण में ईश की, अब भोग मैं नहिं चाहता ॥
२९—खींचे विषय में है मुझे इससे ही तू मन दुष्ट है ।
ले जाय ईश्वर शरण में तो तू हितू है श्रेष्ठ है ॥
सच्चा हितू सन्मित्र हो ईश्वर भजन में दे लगा ।
आभार तेरा हो बहुत जब जीव यों कहने लगा ॥
३०—मन ने कहा तैयार हूं क्या आश तूने छोड़ दी ।
क्या भोगकी नही लालसा क्या प्रीति जग की तोड़ दी ॥
क्या पूर्ण अब वैराग्य है क्या ईश में अनुराग है ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सुत दार का घर बार का पूरा किया क्या त्याग है ॥

३१—त्यागी हुआ जब जीव तो मन मित्रता करने लगा ।
भव मार्ग से उसको हटा सन्मार्ग में चलने लगा ॥
कौशल्य सम्यक् शुद्ध होकर एक दोनों हो गये ।
आनन्द परमानन्द में लवलीन होकर सो गये ।

चित्त (मन) की पाँच अवस्थायें

(१) मूढ़ (२) क्षिप्त (३) विक्षिप्त (४) एकाग्र (५) निरुद्ध

१—मूढ़ावस्था में तमोगुण प्रधान होता है, आलस्य, निद्रा, प्रमाद आदि होते हैं। स्थिति=नीच मनुष्यों की होती है।

२—क्षिप्तावस्था में रजोगुण प्रधान होता हैं, चंचलता, तथा संसार कार्यों में प्रवृति होती है। स्थित= साधारण संसारी मनुष्यों की।

३—विक्षिप्तावस्था में सतोगुण प्रधान होकर सात्विक वृत्तियाँ उदय होती हैं किन्तु सात्विक वृत्तियों राजसी वृत्तियों से चलायमान होती रहती हैं। (वृत्ति:—एकाग्रता का प्रारम्भ) स्थित=ऊँचे मनुष्यों की जिज्ञासुओं की। गुण =श्रद्धा, उत्साह आदि—

४—एकाग्र अवस्था- अभ्यास और वैराग्य द्वारा जब सर्वथंता का निरोध होता है, तब तमस् तथा रजस् के दबने से सत्त्व के प्रकार में वस्तु का यथार्थ ज्ञान कराने वाली एकाग्रता (सम्प्रज्ञात-समाधि) उदय होती हैं। (गुण वृत्ति = तटस्थता) स्थित—योगियों की।

५—निरुद्ध अवस्था— पर वैराग्य द्वारा आसक्ति की निवृत्ति होने पर सभी वृत्तियों का निरोध रूप, निरुद्ध (असम्प्रज्ञात समाधि) है। गुण वृत्ति=स्वरुप स्थित, स्थित— ऊँचे योगियों की होती है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आज भी ऐसे व्यक्ति है जो घर बैठे ही समाधि (ध्यान) का आनन्द ले रहे हैं।

भजन—यह कौन कहता हैं कि तू घर बार तज कर भाग रे।
निज धर्म कर उत्साह से मत दीन हो मत मांग रे ॥
अपना न कुछ भी मान तू विश्वेश का सब मान रे।
मत राग कर मत द्वेष कर मत देह का अभिमान रे ॥
मन मार सुरत को डाट लो घर बैठे बनो फकीर ॥

(mind control) मन को निग्रह करने के लिये सर्व प्रथम

★ मन को वश में करने का मुख्य उपाय ★

गीताजी में कहे अनुसार स्थान व आसन ग्रहण करें।

श्लोक— शुचौ देशे प्रतिष्ठाय स्थिरमासनमात्मनः।
नात्युच्छ्रितंनातिनीचं, चैलाजिन कुशोत्तरम् ॥ (गीता अ० ६। ११)

लीपी पुती बैठक मांहि प्यारे, ऊनी कुशा आसन को बिछा रे।
आसन जमा सीधा बैठ जारे, दोनों करों को अपने मिलारे ॥

◈ प्रश्न—ऊन का आसन क्यों ? ◈

उत्तर—शरीर के अन्दर बिजली होती है वह ध्यान करने से और भी बढती है तथा पृथ्वी के अन्दर आकर्षण शक्ति विशेष होने से पृथ्वी उस (Power) शक्ति को खीच लेती है। किन्तु ऊन का आसन होने से नही खीचती। प्रमाण (X-Rays) एक्सरे में अन्दर का फोटो उतारा जाता है, किन्तु यदि ऊनी कपड़ा पहनलो तो अन्दर का फोटो नही आयेगा। सूती कपड़े चाहे कितने ही पहने रहो इस साइन्स (Science) के प्रमाण के आधार पर भी ऊनी आसन की आवश्कता है धार्मिक प्रणाली वाले तो मानते ही है।

◈ प्रश्न—दोनों हाथों को क्यों मिलावें ◈

उत्तर—हाथों के अन्दर भी विद्युत (बिजली) है वह भी बाहर

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

निकलती है और यदि हाथों का कनक्शन (सम्बन्ध) मिला रहेगा तो वह भी अपने अन्दर रहेगी। इसीलिये प्रणाम भी हाथ जोड़कर ही करें। सिद्धासन, पद्मासन या सहज से बैठ जाइये। सिद्धासन लगाने की विधि-बांये (Left) पैर को पंजावीभाषा में जिसे खब्बा पैर तथा मध्य प्रदेश में दाँवा पैर कहते हैं, उस पैर को मल त्याग करने की और मूत्र त्याग करने की, दोनों इन्द्रियों के बीच में जो खाली जगह है उस पर दृढ़ता के साथ जमायें और सीधे पैर को पंजाबी में सज्जे (Right) पैर को बायें पैर की जंघा पर रख लें यह सिद्धासन की विधि है। सिद्धासन से बैठना महान लाभप्रद है प्रमेह तक बन्द हो जाता है। यदि किसी कारण वश इन आसनों से नहीं बैठ सकें तो कुर्सी आदि पर भी सीधे बैठ जाइये, अथवा यदि इतना भी न कर सकें तो, दण्डासन से सीधे लेट जाइये, सिर के नीचे कुछ न रखिये जमीन पर या तख्त पोश पर, सबसे पहले योग मुद्रा और कंठ मुद्रा ५ मिनट कर लेनी चाहिये।

◈ पहाड़ पर अभ्यास की उपयोगिता क्यों ! ◈

समुद्र के धरातल की अपेक्षा उससे ऊंचे स्थान पहाड़ आदि में वहाँ के रहने वाले कार्बोनिक एसिड गैस कम व्यय करते हैं इसलिए पहाड़ तपस्या और अभ्यास के लिये अधिक उपयोगी समझे जाते हैं।

◈ जलाशय के किनारे ध्यान की उपयोगिता क्यों ◈

पृथ्वी के उस भाग में जहाँ नमी अधिक हुआ करती है वहाँ के रहने वाले सूखे भाग में रहने वालों की अपेक्षा कार्बोनिक एसिड गैस कम खर्च करते हैं। इसलिये उन्हें भूख भी कम तकलीफ देती है। मनुजी ने भी धर्मशास्त्र में जलाशय के किनारे भजन साधन करने को लिखा है।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

◈ गुफाओं में रहकर अभ्यास की उपयोगिता क्यों ? ◈

पुराने योगी, माँद में रहने वाले पशुओं की भांति गुफाओं में रहा करते थे क्योंकि जितना भी बाहर का शीतोष्ण प्राणियों के भीतरी शीतोष्ण के निकट होगा उतनी ही भूख कम लगेगी। कारण स्पष्ट है कि ऐसे बाह्य शीतोष्ण में शीत की मात्रा अधिक नहीं हो सकती इसीलिये भूमध्य रेखा के समीपवर्ती प्राणियों की अपेक्षा ध्रुव देश के समीपवर्ती प्राणियों को भूख कम इच्छा अधिक हुआ करती है। एक बात और भी हैं और वह यह कि जो स्थान चारों ओर से घिरे होते हैं जैसे गुफा, उनमें रहने वाले, कारबोनिक एसिड गैस उन स्थानों में रहने वालों की अपेक्षा जो चारों ओर से खुले रहते हैं, कम खर्च करते हैं। इसीलिये उन्हें भूख भी कम सताती है। इन कारणों से योगियों को छोटे द्वार वाली गुफाओं में रहना अधिक रुचिकर होता है।

◈ कम बोलना अथवा मौनावलम्बन क्यों ? ◈

यदि मनुष्य चुप रहे तो उसकी अपेक्षा नियत समय में बोलने वाले अधिक कारबोनिक एसिड गैस व्यय करते हैं। इसीलिये योगी मौन रहना अपने लिये अच्छा समझते हैं। इससे भी वे भूख की चिन्ता से मुक्त रहते हैं।

◈ कण्ठ मुद्रा की विधि ◈

मुँह की ठोड़ी को गर्दन के नीचे जहां से गर्दन शुरू होती है एक गढ्ढा होता है। उस गड्ढे में ठोड़ी जमानी चाहिये यह कण्ठ मुद्रा है, इसे कंठ बन्ध व जालन्धर बन्ध भी कहते हैं।

◈ योग मुद्रा की विधि ◈

सिर के पीछे भाग को पीठ पर जहाँ से गर्दन आरम्भ होती है

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वहाँ लगाने को योग मुद्रा कहते हैं, तथा योग मुद्रा की और भी विधि है। इसी पुस्तक में देख लें।

सर्दी के दिन हों तो भस्त्रि का क्रिया और गर्मी हो तो शीतली या सीत्कारी प्राणायाम कर लेना चाहिये इसकी विधि मुझ से या किसी अन्य महापुरूष से प्रैक्टीकल (Practical) सीखलें। अब तन, मन, प्राण तीनों को स्थिर करने के लिये यानी (Full Rest) के लिये गीता में कहा है कि—

समं काय शिरो ग्रीवं, धारयन्नचल स्थिरः।(गीताअ० ६ श्लोक १३)

काया, गर्दन सिरा को सीधा करके जिससे मेरुदण्ड बिल्कुल सीधा रहे अचल भाव से स्थिर बिना हिले-झुले तीन घंटे तक बैठने या लेटने का अभ्यास करें। जब तन स्थिर हो जाय तब आसन सिद्ध हो जाता है उसे जकेंतो कहते है। लाभ क्या है ततो द्वन्दा न विधाता, उसे द्वन्द कम सताते हैं।

पुनःमन को एकाग्र करने के लिये कोई एक ऐसा भगवान का चित्र लो जो आपको विशेष आकर्षक मालूम दे उसे लेकर सामने रखो नीचे से लेकर ऊपर तक देखो। इस प्रकार ३ या ४ दिन देखने के बाद आपको उसे देखने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उसका दृश्य मन में उतर आवेगा फिर फोटो हटा दीजिये।और उसी रूप को दोनों भोंहो के बीच के भाग में, जिसे त्रिकुटी कहते हैं जहाँ पर कि तिलक की बिन्दी लगाई जाती है ध्यान करिये तथा खेचरी मुद्रा लगाने से ध्यान अच्छा लगता है। जीभ को ऊपर उलट कर तालु के स्थान में लगाना, खेचरी मुद्रा है।

प्रयाणकाले मनसाचलेन, भक्तया युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्रणमावेश्य सम्यक् स तंपरंपुरूषमुपैतिदिव्यम्।।गीताअ०८।१०

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

योग बल से दोनों भोंहों के मध्य में प्राणों को स्थिर करे तथा दृष्टि को भी ऊपर उलट कर पुतली ऊपर चढ़ा कर भोंहों के मध्य भाग में देखे। यह साधन पांच-पांच मिनट बढ़ाना चाहिये। यदि आंखों में और माथे में दर्द हो तो मक्खन और कपूर मिला कर मालिस कर लेनी चाहिये। उकता कर साधन नहीं छोड़ना चाहिये, इससे दृष्टिअन्तमुंख होती है और दूसरे मन रुकता है क्योंकि संकल्प विकल्प दिमाग (Mind) मस्तिष्क से ही उठते हैं यानी सिर के पीछे के भाग से, और फिर ब्रह्मरन्ध्र में होकर (जहां शिखा होती है उसके पास ही ब्रह्मरन्ध्र है उसमें होकर) त्रिकुटी, जिसे आज्ञा चक्र भी कहते हैं, जिसका कि स्थान दोनों भोहों के वीच में है। वहां होकर मन के संकल्प बाहर आते हैं, अतः उसी मन के मार्ग को अन्तर्मुखी दृष्टि करके दोनों भोहों के बीच ही पुतलियां उलट कर रोक देवे अभ्यास की गति धीरे-धीरे बढ़ावे। पुनः प्राण स्थिर करने के लिये गीता में भी कहा है कि—

✓स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुचैवान्तरे भ्रुवोः ।
प्राणापानौ समौ कृत्वा, नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥(गीता अ ० ५।२७)

भावार्थ—बाहर के विषय भोगों को न चिन्तन करता हुआ बाहर ही त्याग कर, और नेत्रों की दृष्टि को भृकुटी के बीच में स्थिर करके (तथा) नासिका में विचरने वाले प्राण और अपान वायु को सम करे। प्राणों को सम करने की पूरक, कुम्भक रेचक, आदि और भी विधियां हैं किन्तु, "सर्वोत्तम विधि यह है" कि—स्वास के आने जाने की क्रिया की ओर ध्यान पूर्वक सुरति रखने से (कि अब स्वास आया अब बाहर गया) प्राण स्थिर होकर के ध्यान जम जाता है। अथवा राम मन्त्र या सोऽहं मन्त्र या ओ३म् मन्त्र को दो खण्डों में

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विभाजित करके स्वास के आने जाने की क्रिया के साथ, बिना जीभ व होंठ हिलाये, नासिका से श्वास लेते हुए, केवल मन से हीं उच्चारण कीजिये। यानी श्वास के अन्दर खीचने के समय 'रा' और बाहर छोड़ने के समय 'म' का उच्चारण मन ही मन करते रहिये, इसे अजपा, जाप कहते हैं। यानी, उठे स्वास तब 'रा' उच्चारो निकसत बोलो 'म' वाणी। अथवा 'सोऽहं मन्त्र को भी, उठे श्वास तब 'सो' उच्चारो निकसत बोलो 'ऽहं, वाणी, अथवा ओ३म मन्त्र को उठे श्वास तब 'ओऽ, उच्चारो निकसत बोलो 'अम्, वाणी। इस प्रकार स्वास की क्रिया के आगे, जाने के साथ मन्त्र का लक्ष्य करो। लगातार तीन घंटे साधन करने केअभ्यास से मन रुक जाता है तथा स्वास की गति बहुत धीमी बाल जैसी सूक्ष्म हो जाती है, फिर बहुत समय तक स्थिर रहने लगती है तब तन, मन, प्राण भी पूर्णतया स्थिर हो जाता है तथा प्राण व मन की गति अत्यन्त सूक्ष्म होकर रुक जाने पर—

वाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखममक्षयमश्नुते ॥ (गीता अ० ५।२१)

बाहर के विषयों से आसक्ति रहित शुद्ध अन्तःकरण वाला पुरुष या स्त्री कोई भी हो, अन्तःकरण के ही अन्दर जो भजन व ध्यान जनित आनन्द है, जिसको निजानन्द, स्वात्मानन्द, या परमानन्द कहते है, वृत्ति के अन्तर्मुख हो जाने से विशेष अनुभव करता है, महान ही आनन्द की प्राप्ति होती है। संसार में ऐसा कोई भी आनन्द नहीं जिसकी उपमा दी जा सके। इस अभ्यास को सूर्योदय के पूर्व करना चाहिये, साधक को अभ्यास की गति धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिये। विशेष कथन यह है कि ध्यान में प्रायः दो इन्द्रियां बाधा देती है। एक तो कान और दूसरे नेत्र, क्योंकि कानो में जहाँ कोई शब्द पड़ा

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ों ही आंखे खोल ओर देखनें लग जाती है। अतः इन दोनों विघ्नों
ा उपाय यह हैं कि नेत्रो की पुतली उलट कर ऊपर देखें बाहर
 देखें। और कानों को बन्द करने के लिये एकान्त सेवन करे किन्तु
र्णतया एकान्त तो बनों में भी नही मिलता कुछ न कुछ शब्द तो पशु
पक्षियों का वहाँ भी होता ही रहता हैं, तो फिर कहाँ जायें, कैसे करें
या करें, कर्ण इण्द्रिय के लिये ?

उपाय कपास की रुई लेकर देशी शहद में जो मोम निकलता है उस मोम को गरम करके रुई को उस गरम मोंम में डाल दो फिर सूखने पर उस रूई की गोली बना लो इतनी बड़ी जितनी कि कान में अन्दर आ सके ऊपर हल्का कपड़ा चढ़ा कर सिलाई कर कुछ धागे उसमें ऐसे टाँके कर लटका दो, कि जिन्हें पकड़ कर कान के अन्दर से गोलियाँ बाहर खीची जा सकें? बस अब इन रुई की गोलियों को कान के अन्दर लगा कर बैठ जाओ अब धर में भी एकान्त मिल जायेगा, बाहर के कोलाहल का शब्द बाधा नही पहुंचायेगा किसी भी प्रकार का विध्न प्रतीत होने पर साधक को त्यागना नहीं चाहिए। सफलता अवश्य होगी, ब्रह्मचर्य का पूरा पालन होना चाहिये।

प्रश्न—योग कितने प्रकारके हैं ?

उत्तर—योग चार प्रकार के हैं, (१) राजयोग। (२)लययोग। (३) मन्त्रयोग। (४) हठयोग।

(राजयोग—ज्ञानयोग को भी कहते हैं।

(२) लययोग—कार्यकारण भाव यानी कांर्य को कारण मे लय करने को लंय योग कहते हैं।

मन्त्रयोग—मन्त्र इत्यादिक के सेवन करने को मन्त्रयोग कहते हैं।

(४) हठयोग—यम, नियम, आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान, समाधि, इस अष्टांग योग को हठ योग कहते हैं।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यह हठ योग के आधार पर निर्विकल्प समाधि (ध्यान के एकाग्र) करने की विधि है। राजयोग के आधार पर आगे ज्ञान कांड में वेदान्त प्रकरण में लिखेंगे।

यहां पर जो हठ योग के आधार पर विधि बताई गयी है यह स्वतन्त्र संकल्प समाधि की विधि है, इसमे स्वयं संकल्प से ही प्राण क्रिया रुक कर स्वयं ही सचारित हो जाती है, यह गुरुदेवजी का अनुभूत प्रयोग है इसका अभ्यास अवश्य कीजिये। इसमें किसी भी प्रकार का सन्देह न कीजिये। ओर कहा भी है कि—

दोहा—प्रभु में ध्यान दृष्टि भृकुटी में, सुरति श्वास के माहि।
साँची करके मान्ये। आत्म शान्ति सुख पाहि।

+ ध्यान की अन्य सरल विधि +

भजन में मन चंचल न हो और शरीर न हिले इसके लिएपहले पाँच मिनट तक अनन्तसमापत्ति करो। अर्थात शेषनाग की गोद में भगवान विष्णु हैं और सिर पर पृथ्वी। यदि सिर हिले तो पृथ्वी हिलकर नष्ट हो जायगी भगवान को भी विश्राम में बाधा होगी। इसलिये वे शान्त और स्थिर हैं। शेष भगवान का यही ध्यान अनन्तसमापत्ति कहलाता हैं। अपने हृदय में ऐसा ध्यान करने से आसन अचल हो जाता है।

मन की—एकाग्रता के लिये चार बातें अपेक्षित हैं- प्राणायाम इन्द्रियसंयम, सत्संग और स्वाध्याय। प्राणायाम की चर्चा आगे करेंगे। भजन में मन लगाने के लिये प्रयत्न शैथिल्य आवश्यक है। बैठने के पूर्व यह संकल्प करो कि अब तो हम भगवान के साथ बैठ रहें हैं। वे जब कहेंगे कि अब उठो, तो उठ जायगे, नही तो बैठे रहेंगे। और यदि कहेंगे कि मेरे धाम में चले चलो तो उसके लिये भी तैयार हैं।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ध्यान के समय नेत्रों की स्थित की दूसरी विधि

[१]पुतली स्थि र हों अपने स्थान पर, जोर नही लगाना चाहिये, जैसे दो गुलाब के फूल रखे हों।

[२]नींद आती हो तो नेत्र खुले रहनें चाहिये। इसे उपनिषद में पूर्णा दृष्टि कहते हैं।

[३] मन चंचल होता हो तो नेत्र बन्द कर लेने चाहिये। इसका नाम है अमादृष्टि।

[४] निन्द्रा, आलस्य और चंचलता से रहित मन होने पर, अर्धोन्मीलित नेत्रो से ध्यान करना चाहिये नींद और चंचलता दोनों का प्रकोप हो, तब भी यही दृष्टि उपयोगी है, यह प्रतिपद् दृष्टि है।

[५]नेत्र खुले हों , बन्द हों या अधखुले, लक्ष्य अन्तर्देश मे ही होना चाहिये। पुतली और पलकें दोनों ही स्थिर होनी चाहिये।

शास्त्र में कहा है कि जिसकी दृष्टि लक्ष्य के बिना, प्राण निरोध के बिना और वृत्ति आलम्बनके बिना स्थिर है, वह योगी पूज्य एवं गुरु हैं।

छन्द—निश्चिन्त होके कर ध्यान प्यारे, आगे बढ़ेंजा घबरा न जा रे।
अष्टांग पूरा करना पड़ेगा, सीढ़ी ही सीढ़ी चढ़ना पड़ेगा ॥
धीरे धीरे कर योग पूरा, अच्छा नहीं है रहना अधूरा।
विश्वेश तेरे सिर पर खड़ा है, क्यों सोचता है डर क्यों रहा है॥
है साथ तेरे जगदीश प्यारा, होता कभी भी तुझसे न न्यारा।
कल्याण होगा नहि तू गिरेगा, विश्वेश तेरा कर कार्य देगा।

यह मन बड़ा ही चंचल है, गीता में भी कहा है कि:—

श्लोक—चञ्चलं हि मनः कृष्ण, प्रमाथि बलबद्दृढ़म्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये, वायोरिव सुदुष्करम् ॥ (गीता अ० ६।३४)

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हे कृष्ण मन चञ्चल हठी बलवान है दृढ़ है घना।
मन साधना दुष्कर दिखे जैसे हवा का बाँधना॥

अर्जुन बोला—भगवान! ये मन बड़ा ही चञ्चल है, बलवान तथा दृढ़ है, इस मन का तो निग्रह करना, वायु की भांति बड़ा कठिन ही है। तब भगवान बोले कि:—

श्लोक—असंशयं महाबाहो-मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय, वैराग्येण च गृह्यते॥(गीता अ० ६।३५)

चंचल असंशयं मन महाबाहो! कठिन साधन घना।
अभ्यास और वैराग्य से पर पार्थ! होती साधना॥

भावार्थ—हे अर्जुन! निःसंशय यह मन बड़ा भारी चंचल है और कठिनता से काबू में आने वाला है, तो भी अभ्यास और वैराग्य के द्वारा इसको वश में किया जा सकता है।

महर्षि पतञ्जलि ने भी यही कहा है कि:—

अभ्यास वैराग्याभ्यान्तन्निरोधः
(सूत्र पातञ्जलि योगदर्शन)

अर्थात्—अभ्यास और वैराग्य के द्वारा मन का निरोध करे ध्यान ह्येयास्तद्वृत्तयः (पातञ्जलि योग द०)

श्लोक—यतो यतो निश्चरति, मनश्चञ्चमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यै दतात्मन्येव वंश नयेत्॥ (गीता अ०६।२६)

यह मन चपल अस्थिर जहां से भागकर जाये परे।
रोके वहीं से और फिर आधीन आतमा के करे॥

हे अर्जुन! यह चञ्चल और अस्थिर मन जहां जहां जावे, वहां वहाँ से हटाकर अपने आप ही में लगावें।

क्योंकि जिन योगियों का मन शान्त हो जाता है उनके लिये कहा है कि—

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।(गीता अ० ६।२७)
हे अर्जुन भली प्रकार शान्त मन वाले योगियों को उत्तम सुख अर्थात् अपार आनन्द की प्राप्ति होती है।

इन ग्रन्थ में बतलाई हुई विधि से अभ्यास अवश्य कीजिये मन ...न में लगने लगेगा। अब आगे प्राणायाम की चर्चा करते हैं ।।

प्राणायाम

प्राणायाम की महिमा लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। ...वान श्री कृष्ण जी ने भी गीता में बहुत कुछ लिखा है, वह सब ... विस्तार भय से नहीं देना है, जैसा आंधी नगर की दूषित वायु ...चरा उड़ा के स्वच्छ कर देती है। वैसे ही प्राणायाम की तीव्र ...ु रूपी आंधी से समस्त दोष दूर हो जाते हैं, अतः गीता जी में कहा है कि

"प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः" (गीता)

❖ ततःक्षीयते प्रकाशावरणम् ❖ (पातञ्जलि)

प्राणायाम से प्रकाश का आवरण नष्ट हो जाता है। शरीर में दो ...र हैं, एक सूर्य स्वर (गर्म) दाहिना, दूसरा चन्द्र स्वर (शीतल) ...ां, (जैसे बिजली की भी दो शक्ति होती है, नेगेटिव, पाजेटिव) ...स्वर सारे शरीर तक भिन्न हैं, उदाहरण लकवा में एक ओर का शरीर ही कार्य करना बन्द कर देता है, अतः शरीर के स्वरों स्वच्छ रखना परमावश्यकीय है।

प्राणायाम में निम्नाङ्कित त्रुटियां नहीं होनी चाहिये।

१—प्रथम त्रुटि—आहार का, सात्विक, पौष्टिक, स्निग्ध, ...वन युक्त) न होना।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

२—द्वितीय त्रुटि—संयम का अभाव व बिना सीखे प्राणायाम करना।

३—तृतीय त्रुटि—अपनी शीत, उष्ण, प्रकृति के अनुकूल का प्राणायाम न करना।

४—चतुर्थ—आसन व बन्धों के ज्ञान का न होना, तथा मेरूदण्ड का सीधा न रखना।

५—श्वास को कुम्भक में बलपूर्वक अधिक देर तक रोकना।

६—किसी भी रोग में प्राणायाम करना।

श्लोक—प्राणापान समायोगः प्रणायाम इतीरितः ।
प्राणायाम इति प्रोक्तो रेचक पूरक कुम्भकैः॥ (योगियाज्ञवल्क्य६।२)

प्राण और अपान वायु के मिलाने को प्राणायाम कहते हैं। प्राणायाम कहने से रेचक, पूरक और कुम्भक की क्रिया समझी जाती है।

प्राणायाम में बन्धों का प्रयोग—स्थिरासन में खेचरी मुद्रा के साथ नेत्रों को बन्द करके प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। सिर, गर्दन और मेरूदण्ड सीधे रहें, झुके न रहें। शरीर को तान कर नहीं रखना चाहिए, बल्कि ढीला छोड़ देना चाहिए। मूलबन्ध आरम्भ से अन्त तक तीनो प्राणायामों में लगा रहना चाहिये। उड्डीयन को भी लगाये रखने का प्रयत्न करें। रेचक में पूरा उड्डीयान करके पेट को पीठ से मिला देना चाहिये। पूरक और कुम्भक के समय पेट की नाड़ियों को फुला कर आगे की ओर नहीं बढ़ाना चाहिये, एवं सिकोड़ कर ही रखना चाहिये।

सिद्धासन या पद्मासन से, ऊन और कुशा के आसन पर बैठ कर प्रथम पेट की सारी वायु नासिका द्वारा बाहर निकाल देनी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चाहिये। तत्पश्चात् बाँया और दाहिना जो भी स्वर चलता हो उससे दूसरी ओर के स्वर को अँगूठा से बन्द करते हुये धीरे-धीरे वायु भरते हुये पूरक करना चाहिये। शनैः शनैः वायु भरते हुये पेट के निचले भाग में तथा मध्य में और ऊपर हृदय तक पूरक कर लेने की भावना कर लेनी चाहिये फिर जैसे कुम्भ जल से ऊपर तक पूरा भर लिया जाता है, उसी प्रकार सर्वांग में वायु भर जायेगी। इसलिये इस भरने की क्रिया को पूरक और भर कर स्थित हो जाने की क्रिया को कुम्भक, व छोड़ने को रेचक कहते हैं। चित्त में घबड़ाहट न पैंदा होने पावे इसलिये शक्ति के अनुसार पूरक रेचक करना चाहिये। इसका क्रम यह है कि पूरक करते हुये जितना समय लगे अथवा जितने बार मन्त्र जपा जाये उससे चौगुने समय तक कुम्भक होना चाहिये और पूरक से दूने समय तक रेचक (वायु निकालना) करना चाहिए। इस प्रकार पूरक, कुम्भक, रेचक इन तीनो को करने से एक प्राणायाम होता है! कम से कम सभीसाधकों को उपयुंक्त विधि से तीन प्राणायाम अवश्य ही करने चाहिए। यह प्राणायाम की विधि बिलकुल सरल है। इसे सभी लोग सभी ऋतुओं में कर सकते है। साधकों को इससे कोई हानि की सम्भावना नहीं।

प्राण रोकना	भरना	रोकना	निकालना	बाहर रोकना
प्राणायाम	पूरक	कुम्भक	रेचक	बाह्य कुम्भक
॥१॥ कनिष्ठ	४	१६	८	४ सकण्ड
॥२॥ माध्यम	६	३३	१२	६ सेकण्ड
॥३॥ उत्तम	८	५०	१६	८ सेकण्ड
साधारणअनुपात	१	४	२	१ सेकण्ड

ai Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्राणायाम के भेद

श्लोक—सहितः सूर्य भेदश्च उज्जायी शीतलीं तथा ।
भस्त्रिका भ्रामरी मुर्छा केवली चाष्ट कुम्भकाः ॥

सहित, सूर्यभेदी, उज्जायी, शीतली, भस्त्रिका, भ्रामरी, मूर्छा और केवली भेद से कुम्भक आठ प्रकार कां है । हठ योग प्रदीपिका में (प्लाविनी) को आठवाँ माना है ।

१—सहित-सगर्भ (सबीज) प्राणायाम की विधि—पूरक का बीजमन्त्र 'अ' है कुम्भक का 'उ' और रेचक का 'मं' है । इस प्रकार सहित प्राणायाम को प्रणवात्मक समझ कर उसमें 'प्रणव' की उपासना की भावना करतेहुए पूरक में 'अं' का, कुम्भक में 'उ' का और रेचक में 'मं' का जाप करते हुए अथवा पूरक, कुम्भक और रेचक तीनों को अलग-अलग प्रणवात्मक जान कर उनमें 'प्रणव' की उपासना की भावना करते हुए तीनों में 'ओम्, की निश्चित मात्रा से जाप करना सबीज अथवा सगर्भ प्राणायाम हैं ।

सहित साधारण—किसी सुखासन से विधि के अनुसार बैठकर उस नाड़ी की धड़ कन को १ से ४ तक गिनते हुए पूरक, १ से १६ तक गिनतेहुए आभ्यन्तर कुम्भक, १ से ८ तक गिनते हुए रेचक और १ से ४ तक गिनते हुए बाह्य कुम्भक करें । यह १ प्राणायाम हुआ, इस प्रकार तीन प्राणायाम करें । मात्रायें इसी क्रमानुसार यथाशक्ति बढ़ाते जायें । इसी प्रकार अनुलोम-बिलोम रीति से यह प्राणायाम किया जा सकता हैं ।

फल— मन की एकाग्रता तथा बिना तार के तार वालें यन्त्र (Wireless Telegram) अथवा रेडियो (Radio) के सदृश दूर,दूर स्थानों में बैठ हुए दो मनुष्य एक निश्चित समय पर इस प्राणायाम द्वारा तालयुक्त होकर अपने विचार की तरंगे (धारें) एक दूसरे तक पहुंचा सकते हैं ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दूसरी विधि—उपर्युक्त विधि के परिपक्व होंने पर सातों चक्रों पर क्रमानुसार ध्यान करते हुए इस प्राणायाम को करें।

मूलाधार चक्र—पूरक में ऐसी भावना करे कि श्वास उस स्थान में अन्दर आ रहा है। आभ्यन्तर कुम्भक के पश्चात रेचक में ऐसी भावना करे कि श्वास वहाँ से बाहर निकल रहा है। फिर बाह्य कुम्भक करे। इस प्रकार तीन प्राणायाम करें। इसी प्रकार क्रमानुसार स्वाधिष्ठान चक्र, मणि पूरक चक्र, अनाहत चक्र, विशुद्ध चक्र, आज्ञाचक्र तथा ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करते हुए प्राणायाम करे।

फल—चक्रभेदन में सहायता, शरीर के किसी विशेष अङ्ग के विकारी होने पर उस स्थान पर इस प्राणायाम द्वारा प्राण को भर कर विकार का हटाना।

२-सूर्य भेदी कुम्भक बलपूर्वक सूर्यनाड़ी अर्थात् दाहिने नासिकापुट से धीरे-धीरे आवाज के साथ पूरक करें,(प्राणवायु को पूर्णतया कोष्ठ में भरकर नख से शिखापर्यन्त फैलाकर) बलपूर्वक जब तक वायु को रोक सकें कुम्भक करें। इसके पश्चात् चन्द्रनाड़ी अर्थात् वाम नासिकापुट से धैर्य के साथ आवाज करते हुए वेगपूर्वक रेचक करें। यह एक प्राणायाम हुआ। आरम्भ में इस प्रकार पाँच प्राणायाम करें। यह एक प्राणायाम हुआ। आरम्भ में इस प्रकार पांच प्राणायाम करे, शनैःशनैः शक्ति के अनुसार संख्या बढ़ाते जाय इस प्राणायाम में पुनः पुनः केवल सूर्यनाड़ी से ही पूरक और वाम नाड़ी से ही रेचक किया जाये।

फल—सूर्यभेदी प्राणायाम से शरीर में उष्णता तथा पित्त की वृद्धि होती हैं। वात और कफ से उत्पन्न होने वाले रोग, रक्तदोष,त्वचा-दोष उदर-कृमि आदि नष्ट होते है, जठराग्नि बढ़ती है और कुण्ड-

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लिनी शक्ति के जागरण करने में सहायता मिलती है। इस प्राणायाम का अभ्यास गर्मी के दिनों में तथा पित्त प्रधान प्रकृति वाले पुरुष के लिये हितकर नहीं है।

चन्द्रभेदी प्राणायाम सूर्यभेदी प्राणयाम से बिलकुल उल्टा अर्थात चन्द्रस्वर [बायें नासिकापुट] से पूरक और सूर्यस्वर [दाहिने नासिकापुट] से रेचक करने से चन्द्र भेदी प्राणायाम होता है। इससे थकावट और शरीर की उष्णता दूर होती है !

३–उज्जायी कुम्भक—मुख को किसी कदर झुकाकर कण्ठ से हृदयपर्यन्त शब्द करते हुये दोंनो नासिकापुटों से [अथवा दाहिने नासिकापुट से] शनैः शनैः पूरक करें। कुछ देर तक कुम्भक करते पश्चात् बायें नासिकापुट से इसी प्रकार रेचक करें। यह एक प्राणायाम हुआ। इस प्राणायाम में कुम्भक पूरक रेचक स्वल्प परिणाम में किये जाते हैं। कुम्भक में वायु हृदय से नीचे नहीं जाना चाहिये। रेचक में जितना हो सके शनैः शनैः वायु को विरेचन करना चाहिये। इसमें पूरक में नासिका-छिद्र द्वारा वायु को बाहर से खींच कर मुख में, मुख से कण्ठ में और कण्ठ से लेजाकर हृदय में धारण किया जाता हैं। फिर यथाक्रम रेचक में हृदय से कंठ में, कण्ठ से मुख में और मुख से वायु को बाहर निकाला जाता हैं। पांच से आरम्भ करके शनैः शनैः यथाशक्ति संख्ता बढ़ाते जायँ।

फल—कफ-प्रकोप, उदर-रोग आमवाप, मन्दाग्नि, प्लीहा आदि का दूर होना, अग्नि का प्रदीप्त होना एवं कण्ठ, मुख और फेफड़ो की स्वच्छता।

४—शीतली कुम्भक— काक के चोंच की आकृति मे जिह्वा को ओष्ठ से बाहर निकाल कर वायु को शनैः शनैः पूरक करे। धीरे-धीरे पेट को वायु से पूर्ण करके सूर्य भेदी प्राणायाम के सदृश

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कुछ देर कुम्भक करते समय खेचरी मुद्रा लगालें पश्चात् दोनो नासिका पुटों से शीघ्रतापूर्वक रेचक करें पुनः पुनः इसी प्रकार करें।

फल—अजीर्ण, पित्त से उत्पन्न होने वाले रोग, रक्त पित्त, रक्त विकार, पेचिस, अम्लपित्त, प्लीहा तृषा आदि रोग इससे दूर होते बल और सौन्दर्य की वृधि होती हैं। कफ प्रकृतिवाले मनुष्यों के लिये तथा शीतकाल में इस प्राणायाम का अभ्यास हितकर नहीं हैं।

निम्नलिखित प्राणायामों को शीतली के अन्तर्गत समझना चाहिये। इनकी विधि तथा फल भी लगभग उसी के समान हैं। शरीर में ठंड पहुँचाने तथा क्षय [थाइसिस Phthisis] राज्यक्ष्मा आदि रोंगों के नाश करने में अति उपयोगी होते हैं।

(क) शीतकारी—जिह्वा को ओष्ठों से बाहर निकालकर और उसका विलकुल अगला भाग दोनों दातों की पंक्ति एवं औष्ठों से साधारण हल्का दबाकर छिद्रों से वायु को शीत्कारपूर्वक अर्थात् सीत्कार की आवाज उत्पन्न करते हुए पूरक करें, अन्य सब विधि शीतली के समान है।

(ख) काकी प्राणायाम—इसमें ओष्ठों को सिकोड़ कर काक की चोंच के समान बनाकर वायु को शनैः शनैः पूरक किया जाता अन्य सब बिधि शीतली के समान है।

(ग) कवि प्राणायाम—दोनों दातों की पंक्तियों को दबाकर उनके छिद्रों द्वारा वायु को शनैः शनैः पूरक करें अन्य सब विधि पूर्ववत्। वाणी का मीठा और कण्ठ का सुरीला होना यह इसमें विशेषता है।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

५—भस्त्रिका-कुम्भक—भस्त्रिका प्राणायाम कई प्रकार से किया जाता है। इसके मुख्य चार भेद हैं—मध्यमभस्त्रिका, वामभस्त्रिका दक्षिणभस्त्रिका और अनुलोम बिलोम भस्त्रिका।

(क) मध्यम भस्त्रिका—जैसे लुहार की धौंकनी से वायु भरी जाती है, इसी प्रकार दोनों नासिका-पुटों से वायु को आवाज के साथ धीरे-धीरे लंबा, दीर्घ और वेगपूर्वक मूलाधार तक पूरक करें। बिना कुम्भक किये इसी प्रकार दोनों नासिकापुट से रेचक करे। इस प्रकार बिना आभ्यन्तर और बाह्य कुम्भक के आठ बार पूरक रेचक करके यथाशक्ति कुम्भक करके दसवी बार उसी प्रकार धीमे--धीमे दोनों नासिकापुट से रेचक करे। यह प्राणायाम एक हुआ। इस प्रकार तीन प्राणायाम करे।

(ख) वामभस्त्रिका—दक्षिण नासिकापुट को बंद करके उपर्युक्त रीति से वाम नासिकापुट से मूलाधार तक के आठ बार पूरक रेचक करके नवी बार पूरक करके यथा शक्ति कुम्भक करें। तत्पश्चात उपर्युक्त विधि अनुसार दक्षिण नासिकापुट से रेचक कर दे। यह एक प्राणायाम हुआ।

(ग) दक्षिणभस्त्रिका—वामनासिका पुट बंद करके दक्षिण नासिकापुट से आठ बार बिना आभ्यन्तर और बाह्य कुम्भक के उपर्युक्त विधि- अनुसार पूरक रेचक करने पश्चात् नवीं बार पूरक करके यथाशक्ति कुम्भक करे। तत्पश्चात् वाम नासिकापुट से रेचक करे। यह एक प्राणायाम हुआ।

६—भ्रामरी कुम्भक—इस प्राणायाम में पूरक और रेचक की विशेषता है। पूरक वेग से और भौंरे के शब्द के सदृश शब्द युक्त होता है। और रेचक भृङ्गी (भंवरी) के सदृश मन्द-मन्द शब्द से युक्त होता है। रेचक का महत्त्व अधिक है, इसलिए इसका नाम भ्रामरी रखा गया है। इसमें मूल व उड्डियान बन्ध लगाये रखें।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

फल—इस प्राणायाम से वीर्य का शुद्ध होकर उर्ध्वगामी होना, रक्त एवं मज्जातन्तुओं का शुद्ध होना और मन का एकाग्र होना हैं।

७—मूर्छा कुम्भक (षण्मुखी सर्व द्वार बंद मुद्रा)—इस प्राणायाम में पूरक रेचक भ्रामरी प्राणायाम के सदृश किया जाता है। उसमें इसमें केवल इतनी विशेषता है कि यह दोनो कान, नेत्र, नासिका और मुंह पर क्रमशः दोनों हाथों के अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा और अनामिका तथा कनिष्टिका को रख कर किया जाता है। पूरक के समय नासिका पुट पर से मध्यमा को किंचित ऊपर उठाकर पूरक किया जाता है। इसके पश्चात नासिका पुट को मध्यमा से दबाकर कुम्भक किया जाता हैं। कुम्भक की समाप्ति पर फिर नासिकापुट से मध्यमा को शिथिल करके रेचक किया जाता हैं। यह प्राणायाम अनुलोम विलोम रीति से भी उपर्युक्त विधि अनुसार किया जा सकता हैं।

फल—इससे मन मुर्छित और शांत होता हैं, अतः इसका नाम मुर्छा है।

८—(अ) पलवनी कुम्भक—यथाविधि आसन से बैठ कर दोनों नासिका पुटों से पूरक करें। नाभि पर मन को एकाग्र कर सब शरीर मात्र की वायु को उदर में भर कर पेट को चारों ओर से मशक या रबड़ के गोले सदृश फुला कर ऐसी भावना करे कि शरीर की वायु पेट में एकत्र हो गया है, और शरीर के किसी अङ्ग-प्रत्यङ्ग में वायु नहीं रहा है। यथाशक्ति इस स्थिति में कुम्भक करके दोनों नासिका से शनैः शनैः रेचक कर दें।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grar

फल—प्राणवायु पर पूर्णतया अधिकार, पेट के सब प्रकार के रोग कोष्ठवद्धता आदि का नाश, अपानवायु की शुद्धि, जठराग्नि की शुद्धि, वीर्य तथा रक्त की शुद्धि, जल में सुखपूर्वक तैरना इत्यादि।

(८) (ब) केवल कुम्भक—केवल कुम्भक बिना पूरक-रेचक किए हुए एकदम श्वास-प्रश्वास की गति को जहाँ का तहाँ रोक देने से होता हैं।

यद्यपि—सभी प्राणायाम नीरोगता, जठराग्नि, दीर्घ आयु मन की स्थिरता के लिए अति उपयोगी हैं, और सभी की जानकारी उपयोगी है पर सबके अभ्यास के लिए पर्याप्त समय मिलना कठिन है, इसलिए राजयोग के साधक तो, चतुर्थ प्राणायाम तथा राजयोग द्वारा केवल कुम्भक ही करें। यह सब गुरु की अनुमति द्वारा ही करें।

बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपीचतुर्थः ।।५।।

वाहर अन्दर के विषय को फेंकने वाला तथा आलोचना करने वाला चतुर्थ प्राणायाम हैं। विशेष विधि षटचक्र वेधन, कुण्डलिनी जागरण, मन को वश करने के उपाय में दी गई है।

केवल कुम्भक की विधि राजयोग द्वारा—श्वास-प्रश्वास की गति में प्रणव उपासना की भावना करे, अर्थात् हर समय यह भावना रहे कि श्वास में 'अ' और प्रश्वास में 'अम्' रूप से प्रत्येक श्वास-प्रश्वास का जाप हो रहा है, इस ओम् के अजपा जाप को केवल कुम्भक में परिणित करने की विधि यह है कि 'ओ' से श्वास लेकर जितनी देर तक शान्तिपूर्वक रोक सके रोकें, उसके पश्चात् 'अम्' से छोड़दें। क्रमशः कुम्भक का अभ्यास बढ़ता रहे। इसका अभ्यास नासिका-अग्रभाग, भृकुटि, ब्रह्मरन्ध्र आयि स्थानों पर गुरु आज्ञानुसार करना चाहिये। 'ओ' और 'अम्' के उच्चारण की आव-

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

...ता नहीं है। केवल अपने नियत स्थान पर श्वास-प्रश्वास की ...पर इस भावना से ध्यान देना होता है।

◈ अक्षरों के उच्चारण से लाभ ◈

१—ऊंचे स्वर से ॐ का उच्चारण करने से सभी अन्तः इन्द्रिय ...विशेष कर मस्तिष्क, हृदय और अन्नाशय को विशेष बल ...लता है।

२—ह्लांङ् के उच्चारण से मस्तिष्क, हृदय, पेट, श्वासनलिका ...और फेफड़ों में शक्ति का संचार होता है।

३—ह्लीङ् के उच्चारण से कंठ, हृदय, श्वासनलिकाएं और ...नेन्द्रिय बलवान बनती हैं।

४—ह्लङ् से यकृत, तिल्ली, आमाशय, आंते, उदर और उपस्थ ...गर्भाशय को बल मिल जाता है।

५—ह्लैङ् के उच्चारण से मूत्राशय शुद्ध हो जाता है।

६—ह्लौङ् का उच्चारण मूत्राशय, पक्वाशय, और आमाशय ...रों को बल प्रदान करता है, कोष्ट-बद्धता की शिकायत नहीं ...ती है।

ह्लः से छाती, गला, और अन्ननलिका सुदृढ़ बन जाती है।

◈ ध्यान व कुण्डलिनी जागरण के सहायक साधन ◈

१—भस्त्रिका, कपालभाति, सूर्यभेदी, प्राणायाम, नाड़ी शोधन।

२—महाबन्ध, महावेध, महामुद्रा, खेचरी मुद्रा, अश्विनी मुद्रा, ...नि मुद्रा, शक्तिसंचालिनी मुद्रा, योग मुद्रा।

३—खेचरी मुद्रा-जिह्वा को ऊपर की ओर घुमाकर तालू के ...स कंठ के छिद्र में लगायें और दांतो को दबाये रखें, यह खेचरी ...द्रा है। यदि जीभी कम लम्बी हो तो गौ का घी लगाकर दोहन ...रने की भाँति खींचे।

४—महाबन्ध—विधि-बांएं पैर की एड़ी को गुदा और लिङ्ग

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

के मध्यभाग में जमाकर बायीं जङ्घा के ऊपर दाहिने पैर को रखें, समसूत्र में हो, वाम अथवा जिस नासारन्ध्र से वायु चल रहा हो उससे ही पूरक करके जालन्धर बन्ध लगावे। फिर मूलद्वार से वायु का ऊपर की ओर आकर्षण करके मूलबन्ध लगावे। मन को मध्य नाड़ी में लगाते हुए यथाशक्ति कुम्भक करे। तत्पश्चात् पूरक के विपरीत वाली नासिका से धीरे-धीरे रेचन करे। इस प्रकार दोनों नासिका से अनुलोम-विलोम-रीति से समान प्राणायाम करे।

फल—प्राण का ऊर्ध्वगामी होना, वीर्य की शुद्धि, इड़ा पिङ्गला और सुषुम्णा का सङ्गम प्राप्त होना बल की वृद्धि इत्यादि।

५—महावेध विधि—महाबन्ध की प्रथम विधि के अनुसार मूलबन्ध पूर्वक कुम्भक करके, दोनों हाथो की हथेली भूमि में दृढ़ स्थिर करके हाथों के बल ऊपर उठकर दोनों नितम्बों (चूतड़) को शनैः शनैः ताड़ना देवे और ऐसा ध्यान करे कि प्राण इड़ा, पिङ्गला को छोड़कर कुण्डलिनी शक्ति को जगाता हुआ सुषुम्णा में प्रवेश कर रहा है। तत्पश्चात वायु को शनैः शनैः महाबन्ध की विधि के अनुसार रेचन करे।

फल—कुण्डलिनी शक्ति का जाग्रत होना, प्राण का सुषुम्णा में प्रवेश करना। महाबन्ध, महावेध और महामुद्रा तीनों को मिला कर करना अधिक फलदायक है।

६—महा मुद्रा मूलबन्ध लगाकर बायें पैर की एड़ी से, जौवन (गुदा व अंडकोष का मध्य भाग) दबाये और दाहिने पैर को फैला कर उसकी अँगुलियों को दोनों हाथों से पकड़े। पाँच घषण करके बायीं नासिका से पूरक करे और जालन्धर बन्ध लगाये। फिर जालन्धर बन्ध खोलकर दाहिनी नासिका से रेचक करे। यह वामाँग

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मुद्रा समाप्त हुई इसी प्रकार दक्षिणाङ्ग में इसी मुद्रा को रना चाहिए ।

फल—मन्दाग्नि, अजीर्ण आदि उदर के रोगों तथा प्रमेह का श, क्षुधा की वृद्धि और कुण्डलिनी का जाग्रत होना ।

—अश्विनी मुद्रा—सिद्ध अथवा पद्मासन से बैठकर योनिमण्डल अश्व के सदृश पुनः पुनः सिकोड़ना अश्विनी मुद्रा कहलाती है ।

फल—यह मुद्रा प्राण के उत्थान और कुण्डलिनी शक्ति के ग्रत करने में सहायक होती है । अपान-वायु को शुद्ध और वीर्य ही स्नायुओं को मजबूत करती है ।

८—शक्तिचालिनी मुद्रा—सिद्ध अथवा पद्मासन से बैंठकर यों की हथेलियां पृथ्वी पर जमा दे । बीस-पचीस बार शनैः शनैः नों नितम्बों को पृथ्वी से उठा-उठाकर ताड़न करे । तत्पश्चात् बन्ध लगाकर दोनों नासिकाओं से अथवा वाम से अथवा जो र चल रहा हो उस नासिका से पूरक करके प्राणवायु को अपान यु से संयुक्त करके जालन्धर-बन्ध लगाकर यथाशक्ति कुम्भक रे । कुम्भक के समय अश्विनीमुद्रा करे अर्थात गुह्यप्रदेश का कर्षणविकर्षण करता रहे । तत्पश्चात जालन्धर बन्ध खोलकर दि दोनों नासिकापुट से पूरक किया हो तो दोनों से अथवा पूरक विपरीत नासिकापुट से रेचक करे और निर्विकार होकर एकाग्र-पूर्वक बैठ जाय ।

फल—सर्वरोग नाशक और स्वास्थ्यवर्द्धक होने के अतिरिक्त डलिनी शक्ति को जाग्रत करने में अत्यन्त सहायक है । इससे धक अवश्य लाभ प्राप्त करें ।

९—योनिमुद्रा—सिद्धासन से बैठ सम-सूत्र हो षण्मुखी मुद्रा कार अर्थात दोनों अँगूठों से दोनों कानों को, दोनों तर्जनियों

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

से दोनों नेत्रों को, दोनों मध्यमाओं से नाक के छिद्रों को बन्द करके और दोनों अनामिका एवं कनिष्ठकाओं को दोनों ओठों के पास रखकर काकी मुद्रा द्वारा अर्थात जिह्वा को कौए की चोंच के सदृश बनाकर उसके द्वारा प्राणवायु को खींचकर अधोगत अपानवायु के साथ मिलावे। तत्पश्चात ओ३म का जाप करता हुआ ऐसी भावना करे कि उसकी ध्वनि के साथ परस्पर मिली हुई वायु कुण्डलिनी को जाग्रत करके षट्चक्रों का भेदन करते हुए सहस्रदल-कमल में जा रही है। इससे अन्तर्ज्योति का साक्षात्कार होता है।

१०—योगमुद्रा—मूलबन्ध के साथ पद्मासन से बैठकर प्रथम दोनों नासिका पुटों से पूरक करके जालन्धर बन्ध लगावे, तत्पश्चात् दोनों हाथों को पीठ के पीछे ले जाकर बायें हाथ से दायें हाथ की और दाये हाथ से बायें हाथ की कलाई को पकड़े, शरीर को आगे झुकाकर पेट के अन्दर एड़ियों को दबाते हुए सिर को जमीन पर लगादे। इस प्रकार यथाशक्ति कुम्भक करने के पश्चात सिर को जमीन से उठाकर जालन्धर बन्ध खोलकर दोनों नासिकाओं से रेचक करें।

फल— पेट के रोगों को दूर करने और कुण्डलिनी-शक्ति को जाग्रन करने में सहायक होती है।

(११) शाम्भवी मुद्रा—मूल और उड्डीयान बन्ध के साथ सिद्ध अथवा पद्मासन से बैठ कर नासिका के अग्रभाग अथवा भ्रमध्य में दृष्टि को स्थिर करके ध्यान जमाना शाम्भवी कहलाती है।

(१२) तड़ागी मुद्रा—तड़ाग (तालाब) के सदृश कोष्ठ को वायु

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भरने को तड़ागी मुद्रा कहते हैं। शवासन से चित्त लेट कर जिस नासिका का स्वर चल रहा हो उससे पूरक करके तालाब के समान पेट को फैला कर वायु से भर ले। तत्पश्चात कुम्भक करते हुए वायु को पेट में इस प्रकार हिलावे जिस प्रकार तालाब का जल हिलता है। कुम्भक के पश्चात् सावधानी से वायु को शनैः शनैः रेचक कर दें, इससे पेट के सर्वरोग समूल नाश होते हैं।

(१३) उन्मुनि मुद्रा—किसी सुख आसन से बैठ कर आधी खुली और आधी बन्द आखों से नासिका के अग्रभाग पर टिक टिकी लगा ई कर देखते रहना, यह उन्मुनि मुद्रा कहलाती हैं। इससे मन एकाग्र होता हैं।

(१४) नीचे के चक्रों की अपेक्षा आज्ञाचक्र, ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करना सर्वोत्तम है। सिद्धासन गृहस्थियों को हानि नहीं करता हैं।

विशेष सूचना——और भी बन्ध, प्राणायाम तथा मुद्रायें हैं। पूज्य गुरुदेवजी से जानकारी प्राप्त करने के लिये लिखें व मिलें।

पत्र व्यवहार का स्थायी पता

अनन्त श्री विभूषित योगेश्वर विश्वगुरुजी महाराज सरस्वती,
वेद निकेतन धाम, विश्वगुरु नगर पो० स्वर्गाश्रम
ऋषिकेश [हिमालय[फोन २७९

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

साधना के कुछ आवश्यक नियम

१—कोई भी साधना आसन, प्राणयाम आदि बिना सीखे न करें।
२—ब्रह्मचर्य का पूर्णतया पालन करें (अष्ट मैथुनों) से बचें।
६—नित्य प्रातः काल चार बजे, रात्रि को दस बजे सो जायें।
४—सर्वोत्तम आपार है दूध व फल, इसके अभाव में हाथ चक्की का मोठा आटा बिना छना, लकड़ी से सिकी रोटी, दलिया घृत देशी खाँड, छिलके सहित दाल, हरी सब्जी आदि।
५—स्वाद भूख में है 'भोजन मै नही' अतः जब खूब भूख लगे तव खाये।
६—साधना में—चाय काफी, खटाई, लाल मिर्चे, तेल, राई, माँस अण्डे' लहसन, प्याज, तथा मादक वस्तुए भंग आदि सेवन न करे।
७—सादगी, अपरिग्रह, इच्छाऔं का दमन व इन्द्रिय संयम रखें।
८—प्रतिदिन एक सार्वजनिक कार्य अवश्य करे।
९—अपनी आय का दसवाँ भाग धार्मिक कार्यों में दान करें।
१०—सतसंग तथा धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय अवश्य करैं।
११—नित्य नियम दृढ़ता पूर्वक तथा समय पर ही करें।
१२—एकादसी, अमावस्या या पूर्णिमा किसी का व्रत अवश्य करें।
१३—प्रतिवर्ष गर्मियों मे श्री वेदनिकेतन धाम स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश) मे सतसंग करें तथा ध्यान, आसन, प्राणायाम आदि अवश्य सीखें।

उपासना, मनोयोग व प्राणायाम भाग समाप्त

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ॐ

॥ विश्वगुरु, प्रार्थना ॥

नित्य प्रार्थना

हे पूरण परमात्मा, पावन हों जीवात्मा ।
विश्व बनें धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ॥

॥ अथ वेदान्त-सन्देश ॥

(१)

वेदान्त की चर्चा महा थी, गुप्त अति ही काल से ।
अब तो लुटाई जा रही बाजार में कुछ साल से ।
पढ़ते पढ़ाते नित्य जो लाते इसे व्यवहार में ,
पाते परम पद, ठोकरैं खाते नहीं संसार में ॥

(२)

सतावेगी न माया नहीं काल ग्रासेगा ।
सुखी ही सुखी हो सदानन्द भासेगा ॥
तिहुं ताप नाशेंगे मिटेगा मैल उर का ।
करो पाठ "विश्वगुरु कल्पतरु" का ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

◈ वेदान्त हमें क्या सिखाता है ◈

१—वेदान्त हमें अमर बनाना सिखलाता है मरना नहीं। वह मृत्यु को भी जीवन देता है।

२—वेदान्त हमें स्वर्ग के दिव्य भोगों की लालसा नहीं देता वह स्वर्ग को पृथ्वी पर उतार देता है।

३—वेदान्त संसार को दुःख और पाप की राशि नहीं बतलाता और न निराशावाद ही सिखाता है, बल्कि संसार को आनन्द मय बना देता है।

४—वेदान्त जीवन को संयमी, संतोषी, निरंहकारी और कर्त्तव्यशील बनाता है, वह जड़ता और प्रमाद को सर्वथा नष्ट कर डालता है।

५—प्रतिकूलता, निन्दा तथा अपमान मैं प्रसन्न रहना ही आनन्द की खोज है।

६—अपने आपको वस्तुतः पूर्णत : तथा यथावतः जानना ही अध्यात्म है।

पद्य—उत्साह से हो जा खड़ा हे मित्र हिम्मत बाँध के।
वे भी मनुज तुझसे ही थे जो मुक्त पहले हो चुके॥

◈ श्रुति माता की चेतावनी ◈

इहचेदवेदीदथसत्यमस्ति न चैदिहावेदीन्महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति॥

श्रुति माता हमको उपदेश करती है कि हे जीवो तुमने ! यदि (इह) इस मनुष्य जन्म में ही अपने आत्म स्वरूप को जान लिया तो तुम्हारा मानव जीवन धारण करना (सत्य) सफल हो गया। यदि (चेत्) तुमने इस मनुष्य शरीर में अपने स्वरूप को नहीं जाना तो ? 'महती विनष्टिः' बड़ी भारी हानि कर बैठे। अतःएव (धीराः) विवेकी जन ब्रह्मा से लेकर चींटी पर्यन्त सभी भूत प्रणियों में, अपने आत्मस्वरूप का साक्षात्कार करके तथा इस अहं ममरूप मिथ्या अहंकार से छुट्टी पाकर अमर हो जाते हैं।

◈ अथातो ब्रह्म जिज्ञासा ◈

(वेदान्त दर्शन सूत्र १)

अतः— इसलिएं (अथ) इसके (साधन सम्पन्नता के) उपरान्त ब्रह्म को जानने की इच्छा करें।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादायपूर्ण मेवावशिष्यते । ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥
[शुक्ल यजुर्वेद ईश बृहदा०]

पूर्ण है, यह पूर्ण है, उस पूर्ण से ही यह पूर्ण आया है ।यदि उस पूर्ण में से पूर्ण निकाल भी लिया जाये तो भी पूर्ण ही शेष रहता है ।

ॐ शान्तिः शान्तिः

That is full. This is full. From that full this full has come. Even if this full is taken from that full, it always remains full.

OM Shanti Shanti Shanti.

सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवाव हैं ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषाव हैं ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

(कृष्ण यजुर्वेद तैति०२।१।१)

हिन्दी अर्थ—ब्रह्महम शिष्य और आचार्य दोनों की रक्षा करें ।हम दोनों साथ-साथ आनन्द भोगें । हम दोनों साथ-साथ स्वयं प्रकाश ब्रह्म का अध्ययन करें। हम दोनों एक दूसरे से द्वेष न करें ।

May Bramha protect us both . May (Bramha) enjoy us both. May we work together, May the self luminous Bramha be studied by us. May we not hate each other .

OM Peace. Peace Peace

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं, यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं, मुमुक्षुवैं शरणमहं प्रपद्ये ॥ ॐ शान्तिः शान्तिःशान्तिः

(यजुर्वेद श्वेताश्वतर उपनिषद् ६।१८)

जो आरम्भ में संसार की रचना करता है, वेद जिसका यशोगान करते है उस ब्रह्मा की मैं दृढ़ श्रद्धा और विश्वास से शरण ग्रहण करता हूं. कि मेरी बुद्धि उसके ज्ञान से प्रकाशित हो उठे । ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

He who creates the universe in the beginning & He whom the vedas gloriously praise and sing about, in Him I take

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

refuge in the firm faith and belief that my intellect may shine with knowledge of bramha .

OM Peace, Peacc, Peace.

नन्दितानि दिगन्तानि, यस्या नन्दाम्बु विन्दुना ।
पूर्णानन्यं प्रभु बन्दे, स्वानन्दैक स्वरूपिणम् ॥
सर्व वैदान्त सिद्धान्त, गोचरं तम गोचरन् ।
गोविन्द, परमानन्द ,सद्गुरु प्रणतोऽस्म्यहम् ॥

प्रिय आत्माओं?

आज मानव ने (Science) विज्ञान द्वारा प्रकृति की गोद में वह आविष्कार निकाले है कि हर देखने वाला हैरान रह जाता है । लेकिन मानव ने यह सव कुछपा लेने के वाद भी मानवता को अभी तक नहीं समझा, और अव तक अज्ञान के अन्धकार में , भय के जंगल में, मोह और वासना के भँवर में ठोकरें खा रहा है । विज्ञान ने उसे सुख तो वहुत दिया है लेकिन मानसिक अशांति को वढ़ा दिया है, क्योंकि मानव नेअपने मूल्य को, अपने स्वरूप को नहीं जाना । दूसरे शब्दों में विज्ञान पाकर अपना ज्ञान खो वैठा है । और इस भौतिक वाद और भोगवाद की आग में सुलग रहा है । इस लिये जव तक मानव अपने मूल्य को न समझेगा और अपने स्वरूप का ज्ञान न होगा उसे शांति नसीव न होगी । विज्ञान, ज्ञान के विना विनाश का कारण वन रहा है । आज के युग में विज्ञान और ज्ञान का मिलाप ही मानव को शांति दे सकता है । इस सत्य और सिद्धान्त का विदेशीय विद्वानों पर भी प्रभाव पड़े विना नही रहा वे भी इस वेदान्त सिद्धान्त की मुक्त कंठ से प्रशसा करते हैं ।

डाक्टर गोल्डस्टकर (Dr. Goldstuker) कहते है —

"The vedant is the sublimest machinery set in motion by oriental thought'

अर्थात् वेदान्त सवसे ऊंचे दर्जे का यन्त्र है जिसे पूर्वीय विचार धारा ने प्रवृत्त किया है ।

शोपेनहर (Scho Penhauer) का कथन है —

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

In the world there is no study······so beneficial & so elevating as that of vedant philosophy.······Vedant is a product of the highest wisdom, it is destined sooner or later to become the faith of the people.

अर्थात सारे संसार में ऐसा कोई स्वाध्याय नहीं है जो वेदान्त दर्शन के समान उपयोगी और उन्नति की ओर ले जाने वाला हो। वेदान्त उच्चतम बुद्धि की उपज है आगे या पीछे एक दिन ऐसा होना ही है, कि यही जनता का धर्म होगा। तथा और भी अन्य मतावलम्बियों ने इस सिद्धान्त का अनुमोदन किया है, जैसे कि मंसूर, सर्मद, फैजी दाराशिकोह आदि। वेदान्त का मुख्य लक्ष्य है आत्म ज्ञान की प्राप्ति करना, क्योंकि कि बिना आत्मज्ञान के यदि सब कुछ भी जान लिया जाये तो भी कुछ नहीं जाना क्यों कि कहा है कि—

कवित्त: जिन आत्मज्ञान जाना है

पढ़े छहों शास्त्र और अठारहों पुराण देखे,
वेदों को भी आदि से ले अन्त तक छाना है।
पढ़ी शिल्प विद्या अरु ज्योतिष को भली भांति,
जाना है अनेक भांति कलों का घुमाना है॥
वैद्यक के न्यारे-न्यारे जाने हर एक अंग,
नाड़ी पहिचानना अरु नस्तर का लगाना है,
इतना है जाना जिन खाक नहीं जाना उन,
जाना है उन्हीं ने जिन आत्म ज्ञान जाना है॥

वास्तविक ज्ञान अपने को जानना ही है। जिसने आत्म ज्ञान प्राप्त नहीं किया संसार के सभी भोग प्राप्त कर लिये किन्तु उसने कुछ भी नहीं किया। कहा है कि—

कुछ भी नहीं तुमने किया : छन्द

१—मोटर फिटन पर की सवारी, अश्वग़ज पर चढ़ चुके।
देशों दिशावर में फिरे, आकाश में भी उड़ चुके॥
छाना किये हो खाक अब तक जन्म निष्फल ही गया।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पहुंचे नहीं यदि आत्मपुर, तो कुछ नहीं तुमने किया ॥
२—ऊँचे चुनाये महल सुन्दर, बाग बगीचे लगा ।
हथियार लेकर हाथ में, रण से दिये शत्रु भगा ॥
दे दान या कर यज्ञ, यश चारों तरफ फैला दिया ।
नहिं प्राप्ति कीन्हा आत्मयश, तो कुछ नहीं तुमने किया ॥
३—मीठे सुरीले राग कानों, में सदा पड़ते रहे ।
इतिहास कविता संहिता, सारी उमर सुनते रहे ॥
किस्से कहानी रात दिन, सुन व्यर्थ आयु गँवा दिया ।
चर्चा सुनी नहि आत्म की, तो कुछ नहीं तुमने किया ॥
४—आराम तकिये को लगा, सोये मुलायम सेज पर ।
तरुणी सदा करती रही, सेवा तुम्हारी जन्म भर ॥
नंगे पदों नहि भूमि ऊपर, एक पग भी धर दिया ।
नहिं स्पर्श आत्मा का किया, तो कुछ नहीं तुमने किया ॥
५—जा देश देशों वस्तुएँ, देखी हजारो रंग की ।
सुर देख जिनको मोहते, ऐसे निराले ढंग की ॥
यदि पद्मिनी या अप्सरायें, देखलीं तो क्या हुआ ।
देखी नहीं छवि आत्म की, तो कुछ नही तुमने किया ॥
६—आसक्त होकर स्वाद में, व्यंजन अनेकों खालिये ।
खाते रहे मिष्ठान तीखे, चटपटे भोजन किये ॥
जितने पदारथ हैं जगत के, स्वाद सबका ले लिया ।
चाखा नही यदि आत्मरस, तो कुछ नहीं तुमने किया ॥
७—आसक्त होकर गन्ध में, बागों बगीचों में फिरे ।
सुन्दर लगाई वाटिका, जो इन्द्र का भी मन हरे ॥
इत्रादि वस्त्रों में लगा, घर वाह्य सब महका दिया ।
नहिं गन्ध सूंघी आत्म की, तो कुछ नही तुमने किया ॥
८—क्रीड़ा करी बरसों तलक, नव युवतियों के साथ में ।
ज्यों इन्द्र भोगे क्या, भोग आया तुम्हारे हाथ में ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जनमें हजारों योनियों में, काल फिर-फिर खालिया ।
क्रीड़ा करी नही आत्मा से तो कुछ नहीं तुमने किया ॥
९—षट् शास्त्र का कीन्हा पठन, भाषा बहुत ही जानते ।
संगीत विद्या राग रागिनी, ताल स्वर पहिचानते ॥
करके सभा में वाद, लाखों पर विजय भी पा लिया ।
कीर्तन किया नहि आत्म का, तो कुछ नही तुमनें किया ॥
१०—क्रीड़ा करो तो आत्म से, चर्चा सुनो तो आत्म की ।
पूंजा करो तो आत्म की, नहि अन्य पूजा काम की ॥
कौशल्य छल को जानकर, मुख मोड़ यदि सबसे लिया ।
पहिचान लीना आत्म को, तो कार्य सब तुमने किया ॥
(आत्म ज्ञान को प्राप्त करना ही कर्त्तव्य की पराकाष्ठा है।
क्योंकि आत्मज्ञान के बिना अविचल शान्ति नही मिलती ॥)

◈ नहिं शान्ति अविचल पाइये ◈

१—विद्या, प्रतिष्ठा प्राप्त हो, सन्मान हो जहँ जाइये ।
विद्वान्, पंडित शूरमा, दानी गुणी कहलाइये ॥
कीजै खुशामद राज की तमगे कई लटकाइये ।
जब तक न आत्म बोध हो, नहिं शाँति अविचल पाइये ॥
२—आचार में चातुर्यता, व्यवहार में कौशल्यता ।
धन पूर्ण कुल की श्रेष्ठता, पुत्रादि की बाहुल्यता ॥
आरोग्य तन पूरी उमर, सौ वर्ष तक जी जाइये ।
जब तक न आत्म बोध हो, नहिं शांति अविचल पाइये ॥
३—धर्मादि हित धन खर्चिये, मन अर्पिये, तनु तोड़िये ।
हित चितवन मे जाति के, दिन रात ही सिर फोड़िये ॥
संसार उन्नति के लिये, बहु मूल्य आयू गवाँइये ।
तब तक न आत्म बोध हो, नहिं शाँति अविचल पाइये ॥
४—स्वर्गादि पाने के लिये, पूजा भजन सब कुछ करो ।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

यश कीर्ति फैलाओ घनी, शतयज्ञ, चाहे कर मरो।
तजि देह चँवरादिक सहित, चढ़ि दिव्य वाहन जाइये।
जब तक न आतम बोध हो, नहिं शांति अविचल पाइये ॥
५—कवि होय लिखिये लेख रोचक, दिव्य चित्र बनाइये।
सब ठौर होवे वाह! वा! बहु भांति मान बढ़ाइये ॥
स्वामी, महात्मा, सिद्ध, मुनि,योगी यती बना जाइये।
जब तक न हो आतम बोध हो,नहिं शांति अविचल पाइये ॥
६—हो मान्य सारे लोक में नेता बनो या चौधरी।
दुःख दर्द मेटो दुःख सहो, या धर्म की धारो धुरी ॥
मन्दिर बनाओ धर्मशाला, खोल पुण्य कमाइये।
जब तक न आतम बोध हो, नहिं शाँति अविचल पाइये ॥
७—धन धान्य पुत्र सुपात्र हो, नारी सुशीला सुन्दरी।
शारद विशारद नीतिवित् बुद्धी सकल गुण मन्दिरी ॥
शुभ कर्म करिये आयु भर, विद्वान साधु जिमाइये।
जब तक न आतम बोध हो, नहि शांति अविचल पाइये ॥
८—सुख भोग होवे स्वर्ग का, सेवा करें सुर अप्सरा।
हो सैर नन्दन बाग की, नहिं कार्य कुछ तो भी सरा ॥
करि भोग पूरा अन्त में गिर कर यहाँ ही आइये।
जब तक आतम बोध हो नहिं शाँति अविचल पाइये ॥
९—हो दास दासी सैकडों, हो राज्य सारी भूमि का।
मिल राज्य जावे स्वर्ग का, फिर भी नही कुछ काम का ॥
पाताल से आकाश तक, अपना हि हुक्म चलाइयै।
जब तक न आतम बोध हो, नहिं शाँति अविचल पाइयं॥
१०—सब विधि प्रतिष्ठा से रहित, निर्धन दरिद्र अपंग हो।
दुर्गन्धि युत हो कुष्ट से, भोजन रहित नग्नाँग हो ॥
हो बोध जिसको आत्म का- कौसल्य सोहि सराहिये।
जब तक न आत्म बोध हो, नहि शाँति अविचल पाइये ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अविचल शान्ति के लिये आत्म ज्ञान प्राप्त करना जीवन का मुख्य लक्ष्य है। महर्षि याज्ञवल्क्यजी भी मैत्रेयी के प्रति वृहदारण्यक उपनिषद् में यही कहते हैं कि—

आत्मा वा अरे द्रष्टव्य; श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य: ।

(वृहदारण्यक् ४ ब्रह्माण श्रुति ५)

अर्थात् आत्मा को ही देखे, आत्मा का ही श्रवण करे, मनन करे तथा आत्मा का ही निदिध्यासन करे। और ज्ञान का बैरी तो काम है उसे जीते। गीता में भी अर्जुन से कहा है कि:—

श्लोक;—काम एष क्रोध एष, रजोगुणसमुद्भव: ।
महाशनो महापाप्मा, विद्धयेनमि वैरिणम् ।। (गींता अ० ३/३७)

पद्य—पार्थ रजोगुण जनित काम यह, यही क्रोध है ले पहिचान ।
महा अशन अतिशय पापी यह, बैरी यहाँ इसे तू जान ।।

१—है काम बैरी ज्ञान का, बलवान के बल को हरे
नर धीर ऐसा जान कर, क्यों भोग की इच्छा करे ।।
जो आज है कल ना रहे, प्रत्येक क्षण में क्षीण हो ।
ऐसे विनश्वर भोग में, कैसे भला फिर दीन हो ।।

२—सब प्राणियों में आपको, सब प्राणियों को आप में ।
जो प्राज्ञ मुनि है जानता, कैसे फ़ंसे फिर पाप में ।।
अक्षय सुधा के पान में, जिस संन्त का मन लीन हो ।
सो काम वस क्यों हो विकल, कैसे भला फिर दीन हो ।।

(काम क्रौध लोभ मान मद आदि के रहते हुए जीव परमपद अर्थात् शान्ति का अनाधिकारी है, कहा है—)

उसको परमपद सैंकड़ो लाखों ही कोसों दूर है

१—है गर्व विद्या का जिसे, कुल का जिसे अभिमान है।
जग में प्रतिष्ठा मान हो, जिस मूर्ख को यह ध्यान है ।।
सुन निज प्रशंसा हर्षता, धन के नशे में चूर है ।
उसको परमपद सैकडों, लाखों ही कोसों दूर हैं ।।

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

२—है स्नेह जिसको जाति में, आसक्ति घर भंडार मे।
है देह में ममता अधिक, अति प्रेम सुत वित दार मे॥
निज भरण पोषण की जिसे, चिंता लगी भरपूर है।
उसको परम पद सकड़ो, लाखों ही कोसों दूर है॥
३—इस लोक की उस लोक की, लाखों करोड़ों कामना।
शिर पाप की गठरी धरी, कर माल मिथ्या भावना॥
शास्त्रार्थ करने में निपुण, वकवाद में अनि शूर है।
उसको परम पद सैकड़ों लाखों ही कोसों दूर है॥
४—जो मन्त्र सिद्धी में लगा, या योग सिद्धी में फंसा।
अत्यंत रागी लोभ वश, छल छिद्र से होवे ग्रसा॥
अगुआ बने पंचों विषे, पर ज्ञान में घन मूढ़ है।
उसको परम पद सैकड़ों, लाखों ही कोसों दूर है।
५—भक्ति नहीं गुरु ईश की, नहीं वेद में विश्वास है।
ऐश्वर्य ही मुक्ति समझ कर, आस का जो दास है॥
बनता भगत जग को ठगत, तनु विप्र मनका शूद्र है।
उसको परम पद सैकड़ों, लाखों ही कोसों दूर है॥
६—विषयी विषय प्रिय धूर्त, कामी नारि का जो शिष्य है।
पुत्रादि का किंकर सदा, कंचनहि माने मुख्य है॥
ज्यों बैल घानी में जुता रहना जिसे मंजूर है।
उसको परम पद सैकड़ो, लाखों ही कोसों दूर है॥
७—मोहांध शून्य विवेक से, मतिमन्द मत्सर युक्त है।
शत्रु दया अरु धर्म का, नहिं दान में अनुरक्त है॥
वाणी मधुर, छाती निठुर, शुभ वेश भीतर क्रूर है।
उसको परम पद सैकड़ों, लाखों ही कोसों दूर है॥
८—गाड़ी चढ़न, वाड़ी फिरन, लाड़ी रमण भावे जिसे।
भूषण वसन, पूरण व्यसन, सम्बन्ध गाढ़ा गन्ध से॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अनुराग इतना राग में सुधि देह की जाती रहे।
उसको परम पद सैकड़ों, लाखों ही कोसों दूर है॥

९—जम सींग आवें सिंह सिर, सुत बांझ का दूल्हा बने।
चेंटी उदर से होय हाथी, अश्वनी बछिया जने॥
पर मुक्त नहिं हो अज्ञकी, श्रुति वाक्य यह मशहूर है।
उसको परम पद सैकड़ों, लाखों ही कोसों दूर हैं॥

प्रश्न—तो परम पद की प्राप्ति के लिए क्या साधन करें ?

उत्तर—परम पद की प्राप्ति के लिए ज्ञान की आवश्यकता है क्योंकि
॥ ऋते ज्ञानान्न मुक्ति = बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं मिलती ॥

बिना ज्ञान के मुक्ति कभी भी न पावे: भुजंगी छन्द

१—किये कर्म नाना, हुए जन्म नाना।
नहीं मुक्ति का है कहीं भी ठिकाना॥
भला मैल से मैल कैसे नशावे,
बिना ज्ञान मुक्ती कभी भी न पावे॥

२—करोड़ों कमाओ, नहीं मुक्ति पाओ।
न दे पुत्र मुक्ति यहीं लौट आओ॥
न ऐश्वर्य ही मृत्यु से है बचावे।
बिना ज्ञान मुक्ती कभी भी न पावे॥

३—उपासो सदा इष्ट ना द्वैत टूटे।
नहीं दीनता जाय ना भेद छूटे॥
न भूखे रहे मूल अज्ञान जावे।
बिना ज्ञान मुक्ती कभी भी न पावे॥

४—वृथा ब्रह्मचर्या वृथा है गृहस्थी।
वनोवास सन्यास से हो न स्वस्थी॥
कहा वेद ने क्यों न विश्वास लावे।
बिना ज्ञान मुक्ति कभी भी न पावे॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

५—कभी धर्म चाहा कभी अर्थ पाया ।
कभी काम में चित्त पापी लुभाया ॥
मथे मूर्ख पानी न घी हाथ आवे ।
बिना ज्ञान मुक्ती कभी भी न पावे ॥
६—नहीं राग छोड़ा बना है विरागी ।
तजे कर्म और अग्नि, ना आश त्यागी ॥
अघोरी बने कान चाहे फटावे ।
बिना ज्ञान मुक्ती कभी भी न पावे ॥
७—बने वैष्णवी हैं नहीं विष्णु देखे ।
कहे जांय शैवी नहीं शम्भु पेखे ॥
न जाने बिना शक्ति कैसे मनावे ।
बिना ज्ञान मुक्ती कभी भी न पावे ।,
८—चहे ज्ञान के शब्द लाखों उचारे ।
पढ़े शास्त्र चाहे सभा में पुकारे ॥
रुकें इन्द्रियाँ प्रेम के गीत गावे ।
बिना ज्ञान मुक्ती कभी भी न पावे ॥
९—जटा धार ले या मुंडा शीश लेवे ।
कुटुम्बी त्रिया पुत्र भी त्याग देवे ॥
सहे शीत उष्णादि देहो गलावे ।
बिना ज्ञान मुक्ती कभी भी न पावे ॥
१०—नहीं तर्क कौशल्य ! है काम आती ।
न खाये बिना है कभी भूख जाती ॥
बंधा आप क्या दूसरे को छुड़ावे ।
बिना ज्ञान मुक्ती कभी भी न पावे ॥

प्रश्न—ब्रह्म ज्ञान से क्या लाभ है ?

उत्तर—ब्रह्म ज्ञान से संचित, क्रियमाण सभी कर्म दग्ध हो जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पद्य—पचास यज्ञ कीजिये हजार कष्ट पाइये
भले ही स्वर्ग लोक जाय इन्द्र होय जाइये ॥
छुटे न जन्म पास कृष्ण चन्द्र यों पुकारता ।
अनेक जन्म पाप पुंज ब्रह्मज्ञान जारता ॥

॥ यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ॥ इत्यादि—गीता ॥

प्रश्न—ज्ञान की प्राप्ति के लिए किस भाँति व्यवहार करें ?

उत्तर—ज्ञान प्राप्ति के लिए हित कारक उपदेश यह है ।

◈ हितोपदेश : हरिगीत छन्द ◈

१—हो तीव्र इच्छा ज्ञान की तो त्याग लज्जा दीजिये ।
लज्जा जगत् की है दुःखद नहिं भूल लज्जा कीजिये ।
सीधे सरल मन कर्मवाणी छल कपट से मुक्त हो ।
संसार की जड़ काट के निज आत्म में अनुरक्त हो ॥

२—माता-पिता बूढ़े बड़े गुरु पूज्य हैं सन्मानिये ।
वाधा करें परमार्थ में तो त्याज्य पाँचों मानियें ॥
हो तीव्र इच्छा मोक्ष की माता पितादिक छोड़ियें ।
निज आत्म के कल्याण हित नाता सभी से तोड़िये ॥

३—धन धाम अरु व्यवहार जग निर्वाह हित व्यापार हैं ।
जो विघ्न डाले मुक्ति में तीनों हि सिर के भार है ॥
बाधक तुझे हो दीखते तों शत्रु उनको मार कर ।
दे त्याग जल्दी से उन्हें निज आत्म का कल्याण कर ॥

४—पूरा न हो वैराग्य यदि कल्याण की नहिं आश हो ।
तो त्याग मत जब तक तुझे नहिं आत्म में विश्वास हो ॥
नहि बुद्धि अपनी काम दे तो शरण गुरु की लीजिये ।
निज बुद्धि का परित्याग कर विश्वास उन पर कीजिये ॥

५—कल्याण हो यदि इष्ट तो मत बात जग की मानिये ।
सन्मार्ग का उपदेशकर्ता एक सदगुरु जानियें ॥
जग के कुटुम्बी जगत् में फंसना तुम्हें बतलाय है ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कहते अहित को परमहित हित को अहित बतलाय हैं ।।
६—काशी नही हैं दूर कुछ कुत्ता बहुत ही तेज है ।
दिन तीन मैं जावे पहुंच यात्रा अगर करना चहै ।।
पर जाति भाई अन्य कुत्ते मार्ग उनका रोकते ।
जाने नहीं देते उसे, हैं देखते ही भौंकते ।।
७—मारें लड़े घायल करें, दो पैर भी जाने न दे ।
रोटी मिले सो छीन लें, पानी तलक आने न दें ।।
यात्रा करे कैसे भला चलने हि नहिं जब पाय हैं ।
दुर्भाग्य यों परतंत्र हो, रस्ते हिं में मर जाय हैं ।।
८—जिस जाति से जिस देश से, जिस अर्थ से जिस मित्रसे ।
कल्याण अपना हो नही तज दो उसे ही दूर से ।।
प्रिय ! साथ उनका छोड़िये, सम्बन्ध उनसे तोड़िये ।
सदगुरु चरण की ले शरण, शुचि प्रेम उनमें जोड़िये ।।
९—कीड़े नरक के नरक में, सुख मानि आयु बिताय हैं ।
"आओ नरक में आप भी, सब को यही सिखलायहै ।।
निन्दा करें या लोभ दे, मत कान उस पर दीजिये ।
नहिं श्रेय जिसमें आपका, क्यों कार्य ऐसा कीजिये ।।
१०—इस देह का अभिमान यह बन्धन बड़ा मजबूत है ।
तोड़े उसे उसके लिये संसार कच्चा सूत है ।।
कौशल्य ! उसको तोड़ दे, नहिं देर का कुछ काम है ।
टूटा जहाँ तहें जान ले, तू आप ही सुख धाम है ।।

◈ मुमुक्षु का कर्त्तव्यतः हितोपदेश ◈

१—जो पात्र हैं अविवेक के मत संग उनका कीजिये ।
संयोग वश यदि संग हो तो त्याग सत्वर दीजिये ।।
भाषण अधिक अच्छा नहीं, नहिं निष्प्रयोजन भाषिये ।
नहिं खिलखिला हँसिये कभी, मुख बंद अपना राखिये ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

२—व्यवहार या परमार्थ का जो कार्य तुम को प्राप्त हो।
उत्साह से सब कीजिये तन मन लगा चित स्वास्थ हो ॥
सत् रूप निज उद्देश्य क्षणभर विस्मरण मत कीजिये।
सत् की विरोधी वृत्ति आवे तो न आने दीजिये ॥
३—निन्दा पराई से कभी जिह्वा न दूषित कीजिये।
अपनी प्रशंसा कान से सुन ध्यान ही मत दीजिये ॥
परमार्थ या व्यवहार में जो पुस्तकें नहिं काम की।
उनका पठन करिये नही यद्यपि मिले बिन दाम की ॥
४—आलस्य वश कर्त्तव्य से मुख कभी मत मोड़िये।
जो कार्य होवे आज का कल पर उसे मत छोड़िये ॥
अवगुण सभी तज दीजिये शुभ गुण सदा ही धारिये।
नहि अन्य को उद्वेग हो ऐसे बचन उच्चारिये ॥
५—छोटी बड़ी अच्छी बुरी जो बात रखनी गुप्त हो।
मुख पर उसे मत लाइये कितना ही चाहे कष्ट हो ॥
ओंडी उदर में राखिये नहि थाह कोई ला सके।
हो शत्रु अथवा मित्र हो नहि भेद रंचक पा सके ॥
६—मोहक पदारथ देखकर मोहित नहीं हो जाइये।
धर धैर्य चित को रोकिये मत क्षोभ मन में लाइये ॥
करिये न ऐसा चिन्तवन सुखशांति जिसमें भंग हो।
कीजे दिवस निशि यत्न यहि, मन शुद्ध सूक्ष्म असंग हो ॥
७—ऐश्वर्य हो जो प्राप्त तो मत हर्ष किंचित् कीजिये।
प्रारब्ध वश दुःख प्राप्त हो तो भोग सुख से लीजिये ॥
नित चित्त अपना शांत रखिये कीजिये शुभ आचरण।
निन्दा तथा स्तुति वेग को बढ़ने न दीजे एक क्षण ॥
८—राजा, धनी, कवि, पंडितों, देवादि से सम्मान हो।
हो दुर्जनों से दुःख पीड़ा, या अधिक अपमान हो ॥
दोनों समझ कर एक से मन मत विकारी कीजिये।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

निज भाग्यवश शुभ या अशुभ जो होय होने दीजिये ॥
९—चंदर बदनि, पिक वयनि, गुण संपन्न, तरुणी सुन्दरी ।
सुन्दर वसन आभूषणों से युक्त शोभा मन्दिरी ॥
शूकर मृतक तनु-श्वपच घर त्योंहि अपावन मानिये ।
दर्शन न उसका कीजिये द्वारा नरक का जानिये ॥
१०—अच्छे वसन आभूषणों से प्रेम को मत जोड़िये ।
चाँदी, कनक, रत्नादि से सम्बन्ध अपना तोड़िये ॥
तृण, मृत्तिका पाषाण सम कौशल्य! उनको जानिये ।
इतना हि उनका मूल्य है, इससे अधिक मत मानिये ॥

किस मुमुक्षु का जीवन सफल तथा धन्य है

१—धन पाय मन में गर्व नहिं, दारिद्र में नहिं दीनता ।
नहिं मित्र से ही मित्रता, नहिं शत्रु से ही शत्रुता ॥
आपत्ति सम्पत्ति एक सी, सम चित्त नित्य प्रसन्न है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वहि धन्य है ॥
२—कामिनी रसीले नयन लखि नहिं क्षोभ मन में लाय है ।
सोते समय, नहिं स्वप्न में भी ध्यान उसका आय है ॥
गुरुभक्ति शम दम आदि शुभ गुण से सदा सम्पन्न है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वहि धन्य है ॥
३—पाँचों विषय विष जानकर, जो दूर से ही त्यागता ।
धन पुत्र अरु परिवार में नहिं भूलकर अनुरागता ॥
सुख को नहीं सुख मानता दुख में नहीं मन खिन्न है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वहि धन्य है ॥
४—इच्छा नहिं स्वर्गादि की, नहिं द्वेष कुछ नरकादि से ।
कीटादि से ब्रह्मा तलक, हैं दीखते मिथ्या जिसे ॥
जल में कमल जल से अलग, संसार से त्यों भिन्न है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वही धन्य है ॥
५—निन्दा प्रशंसा एकसी, नहिं हर्ष ही न विषाद ही ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नहिं मान नहिं अपमान कुछ है नित्य आत्म प्रसाद ही ॥
निर्द्वन्द्व जिसकी दृष्टि में, नहिं पाप है नहिं पुण्य है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वहि धन्य है ॥
६—सत् वस्तु क्या है असत् क्या अच्छी तरह से जानता ।
आशा असत् की त्याग कर सत् में परम रति मानता ॥
तजि कर अनातम भाव सब में आत्म भाव अनन्य है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वहि धन्य है ॥
७—मैं, तू तथा वह भेद यह है त्रिपुटी में ही भासता ।
रहती नहीं जब त्रिपुटि तब अद्वैत एक प्रकाशता ॥
ऐसा समझ त्रिपुटि परे निज रूप में संलग्न है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वहि धन्य है ॥
८—करता श्रवण निज आतम का निज आतम का हि विचार है ।
है ध्यान हरदम आतम का, दूजा नहिं आचार है ॥
मन आत्म में, चित्त आत्म में, मति आतम सुख में मग्न है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वहिं धन्य है ॥
९—गुरु वाक्य सुनि, मन माँहि गुनि देखे अखिल अद्वैतता ।
मेटे असम्भव दोष, नाशे मूल ले विपरीतता ॥
निश्चय करे अपने सिवा नहिं ब्रह्म कोई अन्य है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वहि धन्य है ॥
१०—कौशल्य! नरतनु पाय के भव कीच में क्यों जाय है ।
द्विज देह, गुरु पूरण कृपा, बड़ पुण्य से नर पाय है ॥
अवसर मिले चूके नहीं सो ही पुरुष जग मन्य है ।
जीवन उसी का है सफल, वहि धन्य है! वहि धन्य है ।

प्रश्न—मुमुक्षु किसे कहते हैं ।

उत्तर—जन्म मरण संसार से, कैसे छुटि हैं मित्ते ।
सो मुमुक्षु कहिये करत, यह विचार निज चित्त ॥

[मोक्षस्य इच्छा अस्ति यस्य स मुमुक्षुः]

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

◈ मुमुक्षु की चिन्ता ◈ हरिगीत छन्द ◈

१—"परमात्म" सर्वाधार है, सत्शास्त्र कहते सन्त भी।
सबसे वड़ा अति ही प्रकट, नहिं गुप्त होता है कभी॥
तो भी मुझे नहीं दीखता, वह शोक अचरज है वड़ा।
रे हाय मेरी बुद्धि पर, यह कौन सा पत्थर पड़ा॥

२—सब नाम जपते ईश का, सब भक्ति उसकी कर रहे।
क्या वे विना जाने हुए, ही ध्यान उसका धर रहे॥
सब शक्तियाँ है ईश में, संसार भर यह मानता।
है क्यों नहीं निश्चय मुझे, मैं क्यों उसे नहीं मानता॥

३—चर होय अथवा हो अचर, है ईश सब में एक सा।
समदर्शि करुणा सिन्धु है, सब में रमाँ सब में वसा॥
मेरी ही होगी भूल तो भी चाहिये, था दीखना।
जाना न ईश्वर आज तक निष्फल हुआ सब सीखना॥

४—नहिं रूप है नहिं रंग तो कैसे भला देखूँ उसे।
नहिं इन्द्रियों का ही विषय पकड़ूँ उसे किस भाँति से॥
इक वार भी यदि दीख जावे फिर नहीं छुपता कभी।
झूँठी नहीं है वात यह, ऋषि सिद्ध कहते हैं सभी॥

५—क्या आंख पर उनके लगा कोई विलक्षण काँच है।
पुतली ही उनकी और है या और ही कुछ आँख है॥
जाना जिन्होंने तत्व को संतुष्ट हैं वे नित्य ही।
मैं भी रहूँ सन्तुष्ट, ऐसा भाग्य क्या मेरा नहीं॥

६—है ज्योंतियों का ज्योंति तो आता नहीं क्यों दृष्टि में।
मैं देख सकता हूं सभी जो ज्योतियाँ हैं सृष्टि में॥
नहीं दीखता क्या इसलिये तारीफ की भरमार है।
सबसे वड़े को दे छुपा वह कौन ऐसी आड़ है॥

७—नहीं दीखंता है तो नहीं, मिथ्या ही ऐसा है कथन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नहिं झूंठ कोई कर सके है, शास्त्र सन्तों के वचन ॥
कहते असत् जिस जगत को, सो सामने है दीखता ।
जिस ब्रह्म को सच्चा कहें, उसका नहीं लगता पता ॥
८—इस भाँति मन में सोचता, जिज्ञासु एक भटका किया ।
खाई बहुत सी ठोकरें, बहु काल सिर पटका किया
अन्तःकरण था मलिन तब तक तत्व नहिं भासा इसे ।
दर्पण मलिन में साफ मुख दीखे भला, किस भाँति से ॥
९—सत्संग से कुछ काल में मन शुद्ध जब होने लगा ।
सद्गुरु कृपा उपदेश उसकी समझ में आने लगा ॥
स्वरूप का ज्ञाता हुआ, परमात्म भासा सृष्टि में ।
हटता नहीं अब एक क्षण, आता न था जो दृष्टि में ॥
१०—आतम कृपा विन गुरु कृपा नहिं काम में कुछ आय है ।
आसक्ति हो निर्मूल तब ही बोध सम्यक् पाय है ॥
चातुर्यता इस जगत् की नहिं बोध में कुछ काम की ॥
कौशल्य ! आतमबोध ही है वस्तु एक आराम की ।

प्रश्न—आतम बोध के सहकारी साधन क्या हैं ?

उत्तर—आतम बोध का सर्व प्रथम सहायक वैराग्य है ।

◈ वैराग्य प्रकरण ◈

१—सुन्दर बदन, तनु कांतिमय, सब अङ्ग दृढ़ आयुष् युवा ।
अनुकूल जन कुल श्रेष्ठतम जगमान्य सबसे ही सिवा ॥
चारों दिशा में गीत गाये जांय तेरे नाम के ।
रे हाय! मरने बाद तेरे ये सभी किस काम के ॥
२—ज्यों राजगृह गृह सज रहा सामग्रि अपरम्पार है ।
जागीर बीसों ग्राम की धन अन्नमय भंडार है ॥
मौजूद हैं जो चाहिए व्यापार सब आराम के ।
रे हाय ! मरने बाद तेरे ये सभी किस काम के ॥

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

३—आदर सभी तेरा करें कोई वचन नहीं टालते।
नौकर गुमाश्ते दास दासी हुक्म पर सब चालते॥
सुन्दर वगीचा वृक्ष वहु अमरूद जामन आम के।
रे हाय! मरने बाद तेरे ये सभी किस काम के॥

४—गजगामिनी, शुचि भामिनी, रंभा सदृश प्रिय भाषिणी।
चन्दरमुखी, मृगनयनि, शोभा खानि, चित्ताकर्षिणी॥
मीठे वचन मन भावने सुत पुत्रियों छवि धाम के।
रे हाय! मरने वाद तेरे ये सभी किस काम के॥

५—बूड़े वड़े सिर पर वने दुख दर्द तेरा टारते।
सन्मित्र आपत्ति काल में निज प्राण तक है वारते॥
है राज्य में भी मान्य, पूजें लोग सव ही ठाम के।
रे हाय! मरने वाद तेरे ये सभी किस काम के॥

६—रथ है, फिटन हैं, पालकी, गौ, अश्व, हाथी हैं घने।
डेरे तथा तम्बुन से महफिल हजारों ही बने॥
खोले मदरसे पाठशाला क्षेत्र अन्न तमाम के।
रे हाय! मरने वाद तेरे ये सभी किस काम के।

७—व्यापार फैला दूर तक वहु नाव आवें जाँय हैं।
इस शहर से उस शहर में सव वस्तुयें पहुँचाय हैं॥
चांदी कनक हीरे जवाहर लाल पूरे दाम के।
रे हाय! मरने वाद तेरे ये सभी किस काम के॥

८—पा दान वन्दी भाट जन नित उठ प्रशंसा गावते।
खोले अनाथालय जहाँ कितने ही भोजन पावते॥
नर नारि रहते आसरे क्या शहर के क्या ग्राम के।
रे हाय! मरने वाद तेरे ये सभी किस काम के॥

९—वाराणसी-शुचि क्षेत्र में योगादि शुभ क्षण पाय के।
दीन्हा विविध विधि दान विप्रन दुग्ध अन्न जिमाय के॥
चारों दिशा में घूम कीन्हें धाम जग विश्राम के।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रे हाय ! मरने बाद तेरे ये सभी किस काम के ॥
१०—ऐश्वर्य सब ही प्राप्त है नहिं शांति तो भी आवती ।
नहिं शोक मिटता है कभी चिन्ताग्नि चित्त जलावती ॥
कौशल्य ! सब शाकल्यकर होजा शरण घनश्याम के ।
रे हाय ! मरने बाद तेरे ये सभी किस काम के ॥

◈ संसार की अनित्यता ◈

१—जो वस्तुतः शोभन देह होता, कोई कभी भी मलता न धोता ।
धोवें मले हैं सजते इसे हैं, वस्त्रादि से दौषन को ढके हैं ॥
दुर्गन्ध वाला घर व्याधियों का, जीता मरा भोजन हिंसकों का ।
जो अन्त में ईंधन आग का है, तो देह मे शोभन वस्तु क्या है ॥
२—नारी सुशीला मिल गई है, पुत्र भी दो चार हैं ।
एकत्र धन बहु कर लिया, होते कई व्यापार हैं ॥
सुख भोग का आया समय, सब छोड़ लाला चल दिये ।
क्या सत् तथा क्या है असत्, दिन चार रहने के लिये ॥
३—जो था अतुल ऐश्वर्य युत सो अब चिता में जल रहा ।
वैभव न आया काम कुछ परिवार भी रोता रहा ॥
कल खेलते थे हंस रहे थे, गा रहे थे बाग में ।
ऐश्वर्य मद में चूर देखे आज जलते आग में ॥
४—कपिल कणादि पतंजलि गौतम व्यास आदि वर विज्ञानी ।
वामदेव नारद वशिष्ठ जिन आतम तत्त्व कथा जानी ॥
ये विज्ञ विवेक प्रवीण धरा पर हुए एक क्षण में क्षारा ।
ऐसा विचारि निज हृदय वीच तुम करो ज्ञानका विस्तारा ॥

वह देखो इसी प्रकार सभी तो चराचर प्राणी काल के ग्रास बने हुए हैं। [अतः] इस प्रकार संसार की असारता को देखकर के शीघ्र चेतो ! जल्दी दौड़ो ! [इस] माया के धधकते हुए दावानल से फौरन बाहर निकलो, कहा है कि—

पद्य—संसार जलती आग है, इस आग से झट भाग कर ।
आ शाँत शीतल देश में हो जा अजर होजा अमर ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

देखो, अग्नि की प्रलयकारी लाल लपटें. लपक कर जगत को धड़ाधड़ ग्रस रही है प्रचन्ड धुएँ से सभी दिशाएँ छा गयी हैं।

वह गया, दूसरा भी चला, अरे तीसरे को भी लपटों ने ले लिया। परन्तु हाय! तुम मूर्ख की तरह "किर्त्तव्य विमूढ़,, होकर पड़े हो। अरे अब की हमारी बारी आती है। यदि बचना चाहते हो तो तुरन्त सब का मोह छोड़कर बाहर निकल पड़ो। देखो, वह देखो, उस कृपालु छलकते हूए अमृत समुद्र के किनारे विशाल जहाज ठहराये उसका कप्तान बारबार सीटी बजाकर सब को बुला रहा है, पुकार रहा वह कह रहा हे क्या ?

◈ मल्लाह का कथन : श्री गीताजी के आधार ,पर ◈

श्लोक—अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापः कृत्तमः।
सर्वं ज्ञानप्लवेनेव वृजिनं सांतरिष्यसि ॥

पद्य—है यदि तू पातकी जगत का नेता सर्व श्रेष्ठ सरदार।
यद्यपि तूनें किय अनेकों पातक घोर दुप्ट आचार ॥
नरक जन्तु नक्रादि भयानक फल भुगताने को तैयार।
तो भी ज्ञान तरणि चढ़ि प्राणी हो जाता है भव से पार॥

◈ विज्ञान नौका पर बैठियेगा: इन्द्रवज्रा छन्द ◈

१—घोड़े सवारी करि आप लीन्ही, ऊँटो गजों पे चढ़ सैर कीन्ही।
जो शांति चाहो सब त्यागियेगा, विज्ञान नौका पर बैठियेगा॥
२—लाखों करोड़ों तुम जन्म पाये, जन्मे जहाँ ही दुख ही उठाये।
शारीर गाड़ी अब तोड़ियेगा, विज्ञान नौका पर बैठियेगा॥
३—अज्ञान शोषी श्रम शोक हारी, डूबे न टूटे त्रयलोक चारी।
है वेद साक्षी अवलोकियेगा, विज्ञान नौका पर बैठियेगा।
४—आनन्द रूपी निज बोध देनी, अच्छी सभी से भव दुख छेनी।
ऐसी सवारी मत छोड़ियेगा, विज्ञान नौका पर बैठियेगा॥
५—लेते कुटुम्बी तुम पर सवारी, मानो सुखारी पर हो दुखारी।
बोझा न ढोओ, शरमाइयेगा, विज्ञान की नौका पर बैठियेगा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

६—दानादि माया कृत जानियेगा, हैं सत्य ये ही मत मानियेगा।
दानादिक शुद्धि हित कीजियेगा, विज्ञान नौका पर बैठियेगा ॥
७—कुंचों गली में यह नाव नांहीं, नाहीं नदी या गिरि सिंधु मांही।
तत्त्वज्ञ सेवा करि पाइयेगा, विज्ञान नौका पर बैठियेगा ॥
८—क्यों भूलते हो तनु चाम का है, झूंठा भरोसा धन-धाम का है।
पीछे रहे तो पछिताइयेगा, विज्ञान नौका पर बैठियेगा ॥
९—शास्त्रों पुराणों चहुं वेद शाखा, है भेद याका अति गुप्त राखा।
हो दिव्य दृष्टि तब देखियेगा, विज्ञान नौका पर बैठियेगा ॥
१०—कौशल्य ! गोते मत खाइयेगा, मल्लाह ज्ञानी गुरु सेइयेगा।
संसार सिंधु तर जाइयेगा, विज्ञान नोका पर बैठियेगा ॥

मल्लाह की टेर: हरि गीत छन्द

१—मल्लाह कहता टेर कर नौका खड़ी तैयार है।
जल्दी करो आओ चढ़ो चढ़ते ही बेड़ा पार है ॥
अन्तिम घड़ी संजा पड़ी बेड़ा न फिर से आयेगा।
जो रह गया सो रह गया नहिं पार जाने पायेगा ॥
२—मल्लाह कहता टेर कर चेतो मुसाफिर मानवी।
जग यन्त्र है पर तन्त्र दुख की योनि दैवी दानवी ॥
जो नाव पर चढ़ जायेगा सौ नर सुखी हो जायेगा।
जो रह गया सो रह गया नहिं पार जाने पायेगा ॥
३—मल्लाह कहता टेर कर जग आश दुःख का ढेर है।
जन्मादि भोगे कष्ट जो सुनता न मेरी टेर है ॥
जो मुग्ध है संसार पर जन्मे मरे पछितायेगा।
जो रह गया सो रह गया नहिं पार जाने पायेगा ॥
४—मल्लाह कहता टेर कर बहु घंट शंख बजाय के।
मिथ्या जगत है ब्रह्म सत श्रुति शास्त्र कहते गाय के।
उपदेश नौका पर चढ़े सो ब्रह्म में मिल जायेगा।
जो रह गया सो रह गया नहिं पार जाने पायेगा ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

५—मल्लाह कहता टेर कर, संसार सर्व असार है ।।
सुख रूप आतम तत्व सो सब सार का भी सार है।
सद्गुरु चतुर मल्लाह है वहि सार तत्व लखायेगा।
जो रह गया सो रह गया, नहिं पार जाने पायेगा ।।
६—मल्लाह कहता टेर मेरी नाव पक्की एक है ।
हैं वेद चारों बल्लियाँ पतवार पूर्ण विवेक है ।।
दो पद उठा कर द्वन्द्व के वैठे वही तर जायेगा ।
जो रह गया सो रह गया, नहि पार जाने पायेगा ।।
७—मल्लाह कहता टेर जग की आस सब तज दीजिये ।
तन धन तथा सुत दार से मुख मोड़ अपना लीजिये ।।
देहादि की ममता जिसे फिर-फिर जगत में आयेगा ।
जो रह गया सो रह गया नहिं पार जाने पायेगा ।।
८—मल्लाह की सुनि टेरि संसारी नही है चेतता ।
चढ़ता नहीं है आज पामर बाट कल की देखता ।।
करता रहेगा आज कल यम आ अचानक खायेगा ।
जो रह गया सो रह गया नहिं पार जाने पायेगा ।।
९—मल्लाह की यह टेर सुन घबरा मुमुक्षू जाग है ।
संसार से पल्ला छुड़ाता डिगमिगाता धाय हैं ।।
मन में करे है सोच बेड़ा हाथ में कब आयेगा ।
जो रह गया सो रह गया नहिं पार जाने पायेगा ।।
१०—मल्लाह की यह टेर सुन सच्चा मुमुक्षू छोड़ सब ।
पहुंचा तुरत ही नाव पर मल्लाह ने कौशल्य तब ।।
लीन्हा चढ़ा गहि हाथ को ले पार पहुंचा नाव को ।
जो जीव था सो शिव हुआ पाया अनामय तत्व को ।।

जिसने मल्लाह की व जहाज के कप्तान की अथवा सदुपदेश-कर्त्ता सतगुरु की पुकार सुनकर उसकी ओर ध्यान दिया वह विश्व व्यापी अग्नि से बच कर दुःख रूप संसार सागर से तुरंत तर गया। इसी तरह तुम भी तर जाओगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अरे, निर्भय हो जाओगे—अमर हो जाओगे ! आओ आओ ! शीघ्रता करो., अन्यथा जलते हो, बार-बार जलोगे । चेतो ! शीघ्र चेतो ! !

माता उदर में आपको आगे न उल्टा टाँगिए ।
यह बात मेरी मान करके जागिए अब जागिए ।।

श्रुतिः—उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत । क्षुरस्य—
धारा निशिता दुरत्यया दुर्गंपथस्तत्कवयो वदन्ति ।
(कठ अ० १ वल्ली ३ मं० १४)

अतः उठो और जागो इस मोहमयी संसार से पार होने के लिए श्रेष्ठ सद्गुरु की शरण ग्रहण करके अपनी दलित आत्मा का उद्धार करो। क्योंकि यजुर्वेद के प्रथम अध्याय में कहा है कि—

असुर्या नाम ते लोका, अन्धेन तमसावृता ।
ताँस्तेप्रेत्याभिगच्छन्ति, येके चात्महनो जनाः ।।
(यजुर्वेद अ० १ मन्त्र ३)

भावार्थः = असुर्य नामक घोर अन्धकार से जो युक्त लोक हैं, जो कोई भी आत्मा का हनन करने वाले लोग हैं, वे मरने के अनन्तर उन्हीं में जाते हैं।

उद्धरेदात्मनात्मानं, नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।। (गीता अ० ६।५)

भावार्थः—आत्मा द्वारा ही अपनी आत्मा का उद्धार करे, अपनी आत्मा को अधोगति में न पहुंचावे ? क्योंकि अपना आत्मा ही अपना बन्धु और अपना आत्मा ही अपना शत्रु है । जो अपना आत्मा असार-संसार की और दौड़ कर अपना शत्रु बन रहा है, उसे संसार की असारता दिखाकर आत्म कल्याण में लगाओ ।

[अब संसार की असारता दिखाते हैं]

संसार की असारता

संसार माही कुछ सार नाही, क्यों डूबता है भव सिन्धु माहीं ।
माया जिसे ढूंढन ढूंढ सो रे, आयू वृथा ही मत मूढ़ खोरे ।।१।।
भाई भतीजे सुत वित्त दारा, झूँठा सभी है जग का पसारा ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चीजें यहाँ की रहती यहाँ ही, ना काम देतीं यमलोक माहीं ॥२॥
राजे करें राजन पै चढ़ाई, पृथ्वी हँसे है लखि मूर्खताई ।
हैं ये खिलौने यमराज के ही, तो भी लड़े हैं मम हेतु ये ही ॥३॥
हे देह जैसे मृत कुम्भ कच्चा, जाने उसे है नर मूढ़ सच्चा -
आये घने हैं मनु आदि राजा, सारे, हुए हैं यमराज खाजा ॥४॥
मेरे लिये मूढ करें लड़ाई, चचा भतीजे पितु पुत्र भाई ।
है भूमि मेरी नहिं अन्य की है, ऐसा कहै सो मतिमंद ही है ॥५॥
मेरी ही मेरी करते रहे हैं, ले साथ कोई न मुझे गये हैं ।
मैं तो यहाँ की रहती यहाँ ही, सबको मिलाती अपनी हीं माँही ॥६॥
यह दृश्य देखें सब ही सयाने, तो भी उसी पर रहते दिवाने ।
मैं भी उसी पर अब तक लुभाया, कर्त्तव्य अपना नहिं जान पाया ॥७॥
क्यों व्यर्थ मैंने नर जन्म पाया, क्यों बोझ ढोने जग माँहि आया ।
प्रारब्ध में था यदि भार ढोना, तो चाहिये था खर बैल होना ॥८॥
मैंने किया क्या नर जन्म पाके, भोगा किया भोग दिखा छिपाके ।
आयु वृथा भोगन में बिताई, निःश्रेय में बुद्धि नहीं लगाई ॥९॥
था मैं जगत में जिस हेतु आया, सो मैं अभी लो नहिं जान पाया ।
टोटै नफे को सब जानते हैं, पक्षी पशु भी पहिचानते है ॥१०॥
ना दान दीन्हा नहिं ध्यान कीन्हा, लोभी घमंडी कब दान कीन्हा ।
मैं दान देना जब चाहता था, पैसे तभी आ सुत मांगता था ॥११॥
ना दान दीन्हा नहिं घ्यान कीन्हा, संसार चक्की विच शीश दीन्हा ।
अमूल्य यह आयु योंही बिताई, कल्याण की बात नहीं सुनाई ॥१२॥

कर्त्तव्य

रे जीव क्यों तू जग माहि आया, भोगार्थ नाहीं नर देह पाया ।
स्वाराज्य तेरा छल से छिना है, लेन उसी को नर तू बना है ॥१॥
कर्त्तव्य तेरा रण जीतना है, क्यों मोह से कायर तू बना है ।
कर्त्तव्य से जो नर जी चुराता, ना स्वप्न में भी सुख शान्ति पाता ॥२॥
संसार है मोहक दुःख दाता, संसारियों को नित ही रुलाता ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वेदान्त सिन्धु सुख को दिखाता, ना आँख फूटा पर देख पाता ॥३॥
हैंगे घने साधन मोक्ष केरे, सत्संग है उत्तम सर्व से रे ।
हों सर्व ही साधन सिद्ध यासे, इच्छा सभी होंय निवृत्ति यासे ॥४॥
जो सर्व हारी हरि पाद ध्यावें, व्यापार दूजा न करें करावें।
तत्त्वज्ञ योगी समदर्शि ज्ञानी, हैं सेव्य वे सन्त निराभिमानी ॥५॥
कर्त्तव्य तेरा है यही चिन्ता करे मत अन्य की ।
शुभ आचरण की ले शरण आचार मत कर पाप की ॥६॥
जब तक न तव उद्धार हो चिन्ता करे मत अन्य की ।
भूखा स्वयं क्या दे सके है एक मुट्ठी अन्न की ॥
संसारियों में रम रहा सत्संग में ना जाय है ।
प्यारे लगें हैं भोग नाहीं योग लेश सुहाय हैं ॥७॥
शीतोष्ण का तन भान किंचित् भी सहा न जा सके ।
देहाभिमानी मूढ़ सो कैसे भला सुख पा सके ॥
सत्शास्त्र भोला पढ़ सदा सत्संग में जा नित्य रे ।
आसक्त मत हो भोग में कर सूक्ष्म निर्मल चित्त रे ॥८॥
मन शुद्ध देता मोक्ष है यह वेद का सिद्धान्त हैं ।
कर शुद्ध मन निःशंक कह अब चित्त मेरा शान्त है ॥

सहकार

१—सहकार विषयों से किया संसार का विष बढ़ गया ।
चमड़ी छिली हड्डी गली अरु चित्त चितातुर भया ॥
आँखें गई है फूटि पुनि-पुनि जाय गढ्ढे में गिरे ।
तो भी अरे करतार से सहकार क्यों तू ना करे ॥
२—जिस देह पर तू मुग्ध हैं मल मूत्र का भण्डार है ।
मल-मूत्र से सहकार कर बनता बड़ा हुशियार है ॥
दुःख दर्द देता देह यह सुख शान्ति को यह ही हरे ।
तो भी अरे करतार से सहकार क्यों तू ना करे ॥
३—क्यों बान्धवों के हेतु तू दिन रात बोझा ढोय हैं ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सिर फोड़कर देंगे जला जिनके लिये तू रोय है ॥
माता पिता सुत दार सब ही स्वार्थ अपने के खरे ।
तो भी अरे करतार से सहकार क्यों तू ना करे ॥
४—करतार की दरकार नहिं झगड़े सदा करता रहे ।
सरकार में दरबार में देखो जभी चढ़ता रहे ॥
करतार के दरबार में नहिं दे मदद घरबार में ।
तो भी अरे करतार से सहकार क्यों तू ना करे ॥
५—सत्संग से सहकार कर सत से उसी क्षण संग हो ।
मल दूर हों विक्षेप भागे आवरण भी भंग हो ॥
कौशल्य सद्गुरु के बिना नहिं शांति कोई पाय है ।
गुरुदेव से सहकार कर यदि शान्ति तुझको भाय है ॥

◈ सद्गुरु देव का ज्ञान ही संसार व्याधि का उपाय है ◈

१—पैसा जानि बलिष्ट देव जिससें हो दूर सारी बला ।
लाया देश विदेश से धन घना ना रोग तो भी टला ॥
देहरादून, मंसूरी मौन्ट शिमला खाई हवा जा कभी ।
शिक्षा मानि कुतुम्ब मित्र गणकी कीन्हे कई ब्याह भी ॥
२—ज्वाला कम न हुई न शान्त फिर भी विक्षिप्त सा घूमता ।
होता चित्त न स्वस्थ एक क्षण भी जाती नहीं दीनता॥
होता था न निदान ठीक ज्वर का देवे दवा काम क्या ।
जो हो ऊट पटांग औषधि भला तो होय आराम क्या ॥
३—रोगी चित्त मची महा खलबली भागी जगत वासना ।
नाशी चित्त मलीनता सफल कीं कोई रही आश ना ॥
जागी शुद्ध मुमुक्षुता हृदय में मालूम त्यों ही भया ।
है संसार कराल व्याधि जिसने है दीन दुःखी किया ॥
४—चारों साधन युक्त होय घर से सद्वैद्य की खोज में ।
भागा भाग्य हुआ सहाय गुरु से की भेंट दो रोज में ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

काया गो मन से गया शरण में की सद्गुरु ने दया।
दीन्हीं औषधि मुख्य वाक्य श्रुति की उत्साह से पी गया ॥
५—जा एकान्त बसा दवा नियम से सप्रेम पीया किया।
नाशी व्याधि समूल जन्म बहु की बीमार चंगा भया ॥
हो आरोग्य अखण्ड निर्भय भया नाशी सभी दीनता।
वा सच्चित् सुख रूप ग्राम वन में कौशल्य है घूमता ॥

◈ सदगुरु शरण ◈

भटक रहा क्यों वृथा रे दुखिया, इधर का आजा अमर कुटी में।
न सुखहै विद्वान बन के जाना,न कोरे मूरख पड़े रहो तुम ॥
न सुख हैं धनवान बन के जीना, न कोरे निर्धन बने रहो तुम।
न सुख है मोटा शरीर पाकर, न हाड़ पिंजर पड़े रहो तुम ॥
न सुख है स्त्री धनादि में ही, न सुख हैं घर बार त्यागने में ॥
न सुख है केवल प्र पंच में ही, न सुख है संन्यास धारने में ॥
किसी अवस्था में सुख नाहिं, तो सुख की दुनिया कहाँ मिलगी।
कृपा करेगा जो सन्त कोई, तो सुख की दुनिया यहीं मिलेगी ॥
न प्यारे हंस कर उड़ाओ हमको, हममें भी मस्ती का बालपन है।
हमारी मस्ती की गन्ध लेकर, जगत का कण-कण हुआ मगन है ॥
जो तुम भी चाहो ये गन्ध लेना, तो शीघ्र निज को पहचान प्यारे।
जो ज्ञान दृष्टि उसी से देखो, न चर्म दृष्टि वृथा लगारे।
रत होके हड्डी व चमड़े के तन में, न कोई निज को है जान पाता।
गुरु ही जानता है जिसको प्यारे, सोई उसे झट जान जाता ॥
है जान लेता जो निज को प्यारे, सो सिन्धु सुख के में नित नहाता।
जरा मरण भय से मुक्त होकर, आनन्द मुक्ति को नित्य पाता ॥
गे गान अनुभव के गा रहा हूं, रखा हैं क्या अब रटा रटीं में।
रे मूर्ख मनुआ जो चैन चाहे, तो सद्गुरू की शरण गहो तुम ॥
रतन है अनमोल शब्द मेरा ले मान प्यारे हमारा कहना।
आ शीघ्र प्यारे शरण में गुरू की, तो सुख की दुनिया अभी मिलेगी ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तथा श्री गीता जी में भी कहा है कि—

श्लोक—तद्विद्धि प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं, ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ।।

अर्थात हे अर्जुन ! भली भांति सेवा प्रणाम आदिक से किये हुए प्रश्न द्वारा उस ज्ञान को जान, वे तत्त्वदर्शी ज्ञानीजन तेरे को उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे ।

दोहा—ईश्वर से गुरु में अधिक, धारे भक्ति सुजान ।
बिन गुरु परम प्रवीन हूं, लहे न आतम ज्ञान ।।

अतः चारों साधनों से युक्त होकर सद्गुरु की शरण ग्रहण करे ।। चारों साधन नीचे लिखे जाते हैं ।

अथ साधन चातुष्य

दोहा—प्रथम विवेक विराग पुनि शमादि षट्सम्पत्ति ।
कही चातुर्य मुमुक्षुता, ये चव साधन सत्ति ।।

४ साधना—१ विवेक—२ वैराग्य—३ षट्सम्पत्ति—४ मुमुक्षुता ।

प्रश्न—विवेक किसे कहते हैं ?

उत्तर—अविनाशी आतम अचल जगताते प्रतिकूल ।
ऐसा ज्ञान विवेक है सब साधन का मूल ।।१।।

तथा और भी

दोहा—जगत प्रपंच अनित्य है, आतम नित्य बखान ।
सार असारहिं जानिवो, यह विवेक पुनि जान ।।२।।

भावार्थ—यानी एक आत्मा अविनाशी तथा अचल है और संसार चल तथा नाशवान है, ऐसा जो ज्ञान है उसे विवेक कहते हैं वही सब साधनों का मूल है ।

दूसरा अर्थ—यह जगत प्रपंच अनित्य है तथा एक आत्मा ही नित्य कहा है । इस प्रकार सार और असार के जानने को विवेक कहते हैं ।

प्रश्न— वैराग्य किसे कहते हैं ?

उत्तर—दोहा—ब्रह्मलोक लों भोग जे, चहे सबन को त्याग ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वेद अर्थ ज्ञाता मुनि, कहते ताहि वैराग ॥

प्रश्न—शमादि षट्सम्पत्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर दोहा—शम दम श्रद्धा तीसरी, समाधान उपराम ।
छटी तितिक्षा कहत हैं, भिन्न भिन्न यह नाम ॥

भावार्थ—१—शम २—दम ३—श्रद्धा ४—समाधान ५—उपराम और छटी तितिक्षा यह सब मिलकर १ साधन षट्सम्पत्ति बोला जाता है ।

प्रश्न—शम तथा दम किसे कहते हैं ।

उत्तर—मन विषयों से रोकना, शम तेहि कहत सुधीर ।
इन्द्रिय गण को रोकना, दम भाषत बुध वीर ॥

प्रश्न—श्रद्धा व समाधान किसे कहते हैं ?

उत्तर—सत्य वेद गुरु वाक्य हैं, श्रद्धा अस विश्वास ।
समाधान ताको कहत, मन विक्षेप का नाश ॥

भावार्थ—वेद और गुरु के वाक्य सत्य हैं इस भाँति विश्वास के होने को श्रद्धा कहते हैं और मन की चंचलता के नष्ट होने को अर्थात मन की एकाग्रता का नाम समाधान है ।

प्रश्न—उपराम किसे कहते हैं ?

उत्तर चौपाई—साधन सहित कर्म सब त्यागै,
लखि विष सम विषयन ते भागै ।
दृग नारी लखि ह्वै जिय ग्लाना,
सो लक्षण उपराम बखाना ।

प्रश्न—तितिक्षा किसे कहते हैं ?

उत्तर—आतप शीत क्षुधा तृषा, इन कर सहन सदभाव ।
ताहि तितिक्षा कहत हैं कोविद मुनिवर राव ॥

भावार्थ—गर्मी, सरदी, भूख, प्यास का सहन करना तथा धार्मिक कार्यों में कष्ट का सहन करना तितिक्षा है । ये ६ साधन षट्सम्पत्ति हैं तथा अन्य प्रकार से समझिये ।

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सवैया

वासना त्याग सदा सम है, दम इन्द्रिय वृत्त को निग्रह ठाने।
देखे निदोष विषे उपराम, तितिक्षा में दुख अरु सुख न माने॥
साधन वेद अचारज की, सुप्रमाण हिये श्रद्धा सो बखाने।
एक ह्वै चित्त समाधि वसे, इहि भांति शमादि छः साधन माने॥

प्रश्न—चतुर्थ साधन मुमुक्षुता किसे कहते हैं ?

उत्तर—जन्म मरण संसार से, कैसे छुटि हैं मित्त।
सो मुनुक्षु कहिये सदा, यहे विचारत चित्त॥

भावार्थ—जिसका चित्त यह विचार करता है कि हे मित्र जन्म मरण संसार से कैसे छूटें वही मुमुक्षु है, दूसरी रीति से और भी कहा है कि—

दोहा—ब्रह्म प्राप्ति अरु बंध की, हानिमोक्ष को रूप।
ताकी चाह मुमुक्षुता, भाषत मुनिवर भूप॥

टीका—ब्रह्म की प्राप्ति और अनर्थ की निवृत्ति, मोक्ष का स्वरूप है जिस की इच्छा का नाम मुमुक्षुता है तथा मुमुक्षुत्व मुमुक्षुता का परिचायक है इस प्रकार यह ४ साधन हैं।

अथ अन्तरंग अष्टसाधन

दोहा—चव साधन ज्ञान के, श्रवणादिक त्रायमेलि।
'तत् पद' त्वंपद' अर्थ को, शोधन अष्टम मेलि।

भावार्थ—चारों साधन पहले यानी (१) विवेक। (२) वैराग्य। (३) षट् सम्पत्ति। (४) मुमुक्षुता। तथा (१) श्रवण। (२) मनन। (३) निदिध्यासन। (४) 'तत्' पद और 'त्वं' पद का शोधन, इस प्रकार ४ पहले विवेक, वैराग्य आदि तथा ४ पिछले श्रवण, मननादि मिलकर ज्ञान के अन्तरंग साधन हैं।

अन्तरंग ये आठ हैं, यज्ञादिक बहिरंग।
अन्तरंग धारे तजे, बहिरंगन का संग॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अथ अधिकारी निरूपण

दोहा—मल विक्षेप जाके नहीं, किन्तु एक अज्ञान।
है चव साधन युक्त नर, सो अधिकृत मतिमान॥

भावार्थ—अन्तःकरण में तीन दोष हैं एक तो मल दूसरा विक्षेप (यानी मन की चंचलता) तीसरा दोष आवरण होता है। इन अन्तःकरण के तीनों दोषों की निवृत्ति का उपाय यह है कि—

१—निष्काम कर्म से अन्तः करण का मल दोष दूर होता है।

२—उपासना से विक्षेप दोष दूर होता है।

३—ज्ञान से आवरण दोष दूर होता है। जिसने कर्म व उपासना से मल, विक्षेप दोनों दोषों को हटा दिया है, तथा स्वरूप का अज्ञान चित्त में है और चारों साधनों से युक्त हैं सो पुरुष अधिकृत कहिये अधिकारी है।

अथ गुरुप्रपत्ति और प्रश्न विधि

उक्त साधन सम्पन्नस्तत्व जिज्ञासुरात्मनः।
उपसदेद्गुरुं प्राज्ञं यस्माद् बन्ध विमोक्षणम्॥

उक्त साधन चतुष्टय से सम्पन्न आत्म तत्व का जिज्ञासु पुरुष प्राज्ञ [स्थित प्रज्ञ] गुरु के निकट जावे. जिससे उसके भव बन्धन की निवृत्ति हो।

तमाराध्य गुरुं भक्त्या प्रन्ह्वप्रश्रम सेवनैः।
प्रसन्नं तमनुप्राप्य पृच्छेज्ज्ञातव्यमात्मनः॥

उन क्षत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरूदेव की विनीत और विनम्रसेवा से भक्ति पुर्वक आराधना करके, उनके प्रसन्न होने पर निकट जा कर अपना ज्ञातव्य इस प्रकार पूछे ;

कथं तरेय भव सिन्धुमेतं, कावा गतिमें कतमोऽस्त्युपायः।
जाने न किंचित्कृपयावमाँभो, संसार दुःख क्षति मातनुष्वः॥

मैं इस संसार समुद्र को कैसे तरूंगा? मेरी क्या गति होगी? उसका क्या उपाय है? यह मैं कुछ नहीं जांनता। प्रभो कृपया मेरी रक्षा कीजिये और मेरे संसार दुःख के क्षय का आयोजन कीजिये।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

श्लो०—को नाम वन्ध कथमेष आगतः, कथं प्रतिष्ठाय कथं विमोक्षः
कोऽसावनात्मा परमः क आत्मा, तयोर्विवेकः कथमेतदुच्यताम् ॥

वन्धन क्या है ? यह कैसे हुआ ? इसकी स्थिति कैसी है ? और इससे मोक्ष कैसे मिल सकता है ? अनात्मा क्या हैं ? परमात्मा किसे कहते हैं और उसका विवेक कैसे होता हैं कृपया यह सभी कहिये।

पद्य—हूं मैं कौन कहाँ से आया..................जाना मुझे कहाँ है।
क्या लाया था क्या ले जाना, क्या कर्तव्य यहाँ है॥
यह सव बातें बताओ, शरण आपकी आया ।
करदो भव से पार गुरुजी, करके पूरण दाया ॥

दोहा—शिष्य मुमुक्षु विचारि के वोले गुरु दयाल ।
वह कहता हूं जिसे सुन होय तत्काल निहाल ॥

दोहा—भूल गयो अज्ञान से अपनो आतम रूप ।
ताही को फिर जानिवो ज्ञान कहत कवि भूप ॥

हे शिष्य ! अज्ञान के कारण निज स्वरूप को भूलकर शरीरको ही मैं मान लिया है । उसी को पुनः जानना ज्ञान है । ज्ञान की महिमा में कहा है कि—

श्लोक—अनेक शंसयोच्छेदि, पेराक्षार्थस्य दर्शनम् ।
सर्वेषां लोचनं ज्ञानम् , यस्य नास्त्यन्धएव स ॥

अनेक शंसयों का उच्छेदन करने वाला यथा परोक्ष (गुप्त) अर्थ का दर्शाने वाला, सभी प्राणियों का नेत्र ज्ञान ही है।

जिसके यह ज्ञान रूपी नेत्र नहीं हैं वह परमार्थ दृष्टि से अन्धा ही है। तथा गीता जी में भी अर्जुन से कहा है "दिव्यं ददामि ते चक्षु" इत्यादि। यह ज्ञान नेत्र वेदान्त द्वारा प्राप्त होते हैं, कहा है कि—

श्लोक—तावद् गर्जन्ति शास्त्राणि जम्बुका विपने यथा ।
न गर्जति यथाशक्तिर्यावद् वेदान्त केसरी ॥

वन में गीदड़ तभी तक शब्द करते हैं, जब तक सिंह नहीं दहाड़ता । इसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तरह अन्य शास्त्र तभी तक गर्जन करते है, जब तक कि वेदान्त रूपी सिंह यथा शक्ति गर्जन नहीं करता। वेदान्त बतलाता है शरीर तीन हैं, स्थूल, सूक्ष्म, कारण तथा उनकी रचना निम्न प्रकार है।

स्थूल शरीर की रचना

यह पांच तत्त्व—आकाश, वायु अग्नि, जल, पृथ्वी से बनता है। पांच ज्ञान इन्द्रियां ओर पाँच कर्मेन्द्रियाँ, व पाँच प्राण तथा अन्तकरण आदि से युक्त हैं।

प्रश्न—हे गुरु देव ! इन्द्रियों के व प्राणों के सबके नाम क्या हैं।

उत्तर—नासिका, नैन, त्वचा, रसना, मिलि कानन इन्द्रिय ज्ञान बखानों।
वाक् रु पाणि व पाय, उपस्थ, पदौ मिलि पाँचहि कर्म निधानों ॥
प्राण अपान रु व्यान समान, उदान ये पाँचहुं प्राण पिछानो।
अहंकार मन बुद्धि औ चित्त, मिले सब अन्तःकरणहि जानो ॥

पुर्यष्टक [सूक्ष्म शरीर] वर्णन

श्लोक—वागादि पञ्च श्रवणादि पंच, प्राणादि पञ्चाभ्रमुखानि पञ्च।
बुध्याद्यविद्यापि च काम कर्मणी, पुर्यष्टकं सूक्ष्म शरीर-माहुः ॥

भावार्थः—यानी वागादि पाँच कर्मेन्द्रियाँ, श्रवणादि पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ प्राणादि पाँच प्राण, आकाशादि पाँच भूत, बुद्धि आदि अन्तःकरण चतुष्टय अविद्या तथा काम और कर्म यह पुर्यष्टक अथवा सूक्ष्म शरीर कहलाता है।

कारण शरीर वर्णन

इसकी अभिव्यक्ति अवस्था सुषुप्ति है, जिससे बुद्धि की सम्पूर्ण वृत्ति-लीन हो जाती हैं अर्थात् अज्ञान ही कारण शरीर है।

माया निरूपण

श्लोक—अव्यक्त नाम्नी परमेश शक्तिरनाद्य विद्या त्रिगुणात्मिकापरा।
कार्यानुमेया सुधियैव माया, यया जगत्सर्वमिदं प्रसूयते ॥

भावार्थ—जो अव्यक्त नाम वाली त्रिगुणात्मिका अनादि अविद्या परमेश्वर की परा शक्ति है। जिससे यह सारा जगत उत्पन्न हुआ है। बुद्धिमान जन इसके कार्य से ही इसका अनुमान करते हैं।

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अथ प्राण के धर्म

श्लोक—ऊच्चवासनिः श्वास विजृम्मणक्षुत्
प्रस्पन्द नाद्युत्क्रमणादिकाः क्रियाः।
प्राणादि कर्माणि वदन्ति तज्ज्ञाः प्राणस्य धर्याविशना पिपासे ॥

अर्थात्—श्वास प्रश्वास, जमुहाई, छींक, काँपना और उछलना आदि क्रिय.ओं को तत्त्वज्ञ प्राणदिक का धर्म बतलाते हैं।

प्राण दस हैं = पाँच प्राण + पाँच उपप्राण

श्लोक—प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः।
नागः कूर्मोऽथ कृकरो देवदत्तो धनंजय ॥ (गोरक्ष संहिता)

प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकर, देवदत्त और धनंजय ये दस प्रकार के वायु अर्थात् प्राण वायु हैं।

अन्तःकरण चतुष्टय

श्लोक—निगद्यतेऽन्तःकरणं मनोधी—रहंकृतिश्चित्तमितिस्ववृत्तिभिः।
मनस्तु संकल्पविकल्पनादिभिर्बु द्धिः पदार्थाध्यवसाय धर्मतः ॥
आभाभिमानादहमित्यहङ्कृतिः, स्वर्थानुसन्धान गुणेन चित्तम् ॥

भावार्थ—अपनी व्त्तियों के कारण, अन्तःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, और अहंकार [इन चारों नामों से] कहा गया है। संकल्प विकल्प के कारण मन, पदार्थ का निश्चय करने के कारण बुद्धि, 'अहं-अहं [मैं-मैं] ऐसा अभिमान करने से अहंकार और अपना चिन्तन करने के कारण चित्त कहलाता है।

अथ रजो गुण वर्णन

विक्षेप शक्ति रजसः क्रियात्मिका, यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।
रागादयोऽस्याः प्रभवन्ति नित्यं दुःखादयो ये मनसो विकाराः ॥

अर्थ—क्रिया रूप विक्षेप शक्ति रजो गुण की है, जिससे सनातन काल से समस्त क्रियायें होती चली आई हैं। और जिससे रागादि, दुःखादि जो मन कें विकार हैं सदा उत्पन्न होते हैं। उदाहरणार्थ जैसे—काम क्रोध, लोभ, दम्भ, असूया (गुणों में दोष ढूंढना) अभिमान आदि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अथ तमो गुण वर्णन

अभावना वा विपरीत भावना, सम्भावना विप्रितिपत्तिरस्याः ।
संसर्ग युक्तं न विमुञ्चतिध्रुवं, विक्षेप शक्तिः क्षपयत्यजस्रम् ॥

भावार्थ—इस तमोगुण जन्य आवरण शक्ति के संसर्ग से युक्त पुरुष को अभावना, विपरीत भावना असंभावना और विप्रतिपत्ति ये तमोगुण की शक्तियाँ नहीं छोड़ती और विक्षेप शक्ति से उसे निरंतर डांवाडोल ही रखती हैं। ब्रह्म नहीं है जिससे ऐसा ज्ञान हो वह अभावना कहलाती है। मैं शरीर हूं यह विपरीत भावना है। किसी के होने में सन्देह 'विप्रतिपत्ति' कहते हैं। प्रपंच का व्यवहार ही माया की विक्षेप शक्ति है। अज्ञान, आलस्य, जड़ता, निद्रा, प्रमाद, मूढ़ता, आदि तमोगुण जन्य दोष हैं।

अथ विशुद्ध सत्त्वगुण वर्णन

श्लोक—विशुद्धसत्त्वस्य गुणाः प्रसादः स्वात्मानुभूतिः परमा प्रशान्तिः ।
तृप्तिः प्रहर्षः परमात्म निष्ठा, यया सदानन्द रसं समृच्छति ॥

अर्थ—प्रसन्नता, आत्मानुभव, परमशाँन्ति, तृप्ति, आत्यन्तिक आनन्द और परमात्मा में स्थिति, ये विशुद्ध सत्व गुण के धर्म हैं, मुमुक्षु नित्यानन्द रस को प्राप्त करता है। अतः शुद्ध सात्विक आहार आदि से सत्व गुण की वृद्धि करके सत्वासंजायते ज्ञानम्, ज्ञान की वृद्धि करे।

अब अन्तःकरण की त्रिपुटि दर्शाते हैं

अन्तःकरण	देवता	कार्य
मन	चन्द्रमा	संकल्प विकल्प
बुद्धि	ब्रह्मा	निश्चय
चित्त	वासुदेव	चिन्तन
अहंकार	रुद्र	अहंपना

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अब तत्त्व कोष, प्राण, ऊर्मियाँ ज्ञानेन्द्रियाँ कर्मेन्द्रियाँ . आदि को दर्शाते हैं

संख्या	तत्त्व	प्राण	ज्ञान इन्द्रियाँ	देवता	बिषय	कर्म इन्द्रियाँ	देवता	पंचकोष	ऊर्मियाँ	उपवायु
१	आकाश	प्राण	कर्ण	दिशा	शब्द	वाक्	अग्नि	अन्नमय	क्षुधा	नाग
२	वायु	अपान	त्वचा	वायु	स्पर्श	हस्त	इन्द्र	प्राणमय	पिपासा	कूर्म
३	अग्नि	व्यान	नेत्र	सूर्य	रूप	पाद	वामनजी	मनोमय	हर्ष	कृकर
४	जल	समान	रसना	वरुण	रस	उपस्थ	प्रजापति	विज्ञानमय	शोक	देवदत्त
५	पृथ्वी	उदान	नासिका	अश्विनी कुमार	गन्ध	गुदा	यम	आनन्दमय	जन्म	धनंजय
६									मरण	

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रश्न—प्रलय में जीव कहाँ रहता है ?

उत्तर—प्रलय काल में जीव के रहने का स्थान महर्लोक है। क्योंकि नैमित्तिक प्रलय में त्रिलोकी का क्षय हो जाने पर भी यह स्थान महर्लोक बना रहता है, इसलिए इसे शेष भी कहते हैं।

प्रश्न—अध्यसा किसे कहते हैं ?

उत्तर—अवस्तु वस्तु प्रतीतिरध्यास: ।

अर्थात् जहाँ पर वस्तु न हो और उसकी प्रतीति होवे उसे अध्यास कहते हैं।

प्रश्न—अन्योन्याध्यास किसे कहते हैं।

उत्तर—अन्य की अन्य में प्रतीति का होना। अर्थात् जड़ की चेतन में और चेतन की जड़ में प्रतीति होने को अन्योन्याध्यास कहते हैं।

अधिष्ठान निरूपण

अधि+स्थान = अर्थात् विशेष स्थान को अधिष्ठान कहते हैं।

दोहा—ज्यों रस्सी में साँप का, होवे मिथ्या ज्ञान।
त्यों अविनाशी ब्रह्म में, होय जगत का भान ॥

◈ अपवर्ग यानी मोक्ष का निरूपण ◈

अपवर्गी मोक्ष:—अर्थात् अपवर्ग को ही मोक्ष कहते है। अविद्यमान: पवर्गो यत्र स अपवर्ग: ।

अर्थात् जिसमें पवर्ग (प, फ, ब, भ, म,) ये पांचों अक्षर न हों वह अपवर्ग कहलाता है।

यतो न यस्मिन् पतनं फलाशा, न बन्धनं चापि भयं न मृत्यु: ।
पवर्ग हीन पदमीप्सितं वै, ततोऽपवर्ग: कथितो मुनीन्द्रै: ॥

जिसमें प, न हो यानी प से पतन न हो, फकार से फलाशा, जिस मोक्ष धाम में किसी भी फल की इच्छा नहीं, ब का अर्थ है, जहाँ पर किसी भी प्रकार का बंधन व बैर भाव नहीं भ, का अर्थ है, जहां किसी प्रकार का भय नहीं, म का अर्थ है मृत्यु अर्थात मोक्ष होने पर मृत्यु का भय नहीं यह अपवर्ग का अर्थ है। प्रमाण—यद्गत्वा न निवर्त्तन्तेतद्धामं परममम। (गीता)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जहाँ पर जाकर प्राणी नही लौटता वह मेरा परम धाम है।

श्रुति—प्रमाण—न स पुनरावर्त्तते न स पुनरावर्त्तते ॥

◈ समुच्चय निरूपण ◈

यद्यपि वेदों में भी कहीं कहीं पर ज्ञान और कर्म का समुच्चय लिखा है। किन्तु समुच्चय के भी दो भेद हैं १ सम-समुच्चय २क्रम समुच्चय।

१—समसमुच्चय का अर्थ है कि ज्ञान के तो साधन है, श्रवण, मनन, निदिध्यासन, तथा कर्म काण्ड के साधन है अग्नि होत्रआदि इन सभी का एक ही काल में अनुष्ठान करने का नाम समसमुच्चय है।

क्रमसमुच्चय का अर्थ है कि प्रथम तो अन्तः करण की शुद्धि के लिए जिज्ञासा पर्यन्त कर्म करना पीछे कर्म की विधि का त्याग करके ज्ञान के ही साधन, श्रवण मनन आदि के द्वारा ज्ञान को सम्पादन करने का नाम ही क्रम समुच्चय है। अतः समसमुच्चय को त्याग कर क्रम समुच्चय ग्रहण करे।

अब षट् शास्त्रों का सिद्धान्त वर्णन करते हैं।

◈ अथ षट् शास्त्र सिद्धान्त वर्णन ◈

शास्त्र ६ हैं—१-पूर्व मीमाँसा २-उतर मीमांसा ३-न्याय शास्त्र ४-वैशेषिक ५-सांख्य ६-योग शास्त्र।

१—पूर्व मीमांसा शास्त्र के कर्ता जैमिनी ऋषि का कहना है कि जीव का अधिष्ठान कर्म है। उत्पत्ति स्थिति लय सब कर्मों के आधीन हैं। धनवान, भिखारी, सुखी, दुखी, सब कर्मों से ही होते हैं। ब्रह्मा विष्णु रुद्र, योगी ज्ञानी ऊँच नीच गति सभी कर्मों से प्राप्त होती हैं। इस लिए सबसे श्रेष्ठ कर्म ही है

२—उत्तर मीमांसा के कर्ता महर्षि वेदव्यास जी का कहना है कि सर्व शास्त्र कल्पित हैं। कर्म-समय--ईश्वर प्रकृतिपुरुष-रूप द्वैत कहना संभव नहीं है। एक अखंड ब्रह्म ही सबका अधिष्ठान है। द्रष्टा द्रष्य—दर्शक, ज्ञाता-ज्ञान, कर्ता क्रिया- कर्म, इत्यादि सर्व त्रिपुटियां माया रूप मिथ्या हैं। नित्य अनित्य समाधि-सर्व द्वैत कल्पना मात्र है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

३—न्याय शास्त्र के रचयिता महर्षि गौतम का कहना है कि कर्म काल सभी ईश्वर के आधीन हैं। क्योंकि वह सर्व शक्तिमान होने के कारण से राजा को दरिद्री और दरिद्री को राजा, वर्षा से धूप और धूप से वर्षा, ज्ञानी को अज्ञानी और अज्ञानी को ज्ञानी बनाता है। इसी लिये ईश्वर ही सर्वश्रेष्ठ है।

४—वैशेषिक दर्शन के कर्ता महर्षि कणाद का कथन है कि कर्म सभी निष्फल हैं, क्योंकि कर्म से प्राप्त गति से जीव च्युत होता है। इसलिए कर्म निष्फल हैं। बाल, युवा, वृद्धा अवस्था के कर्म सब समय पर ही हुआ करते हैं। उत्पत्ति-स्थित-लय ,अवतार तथा सिद्ध पुरुषों की उत्पत्ति सभी काल के समय के आधीन हैं। समय पर ही ऋतुएं अपना-अपना काम करती हैं। मानों समय पर रात दिन हुआ करते हैं। इसलिये काल ही सबसे श्रेष्ठ सबका अधिष्ठान है।

५—सांख्य शास्त्र के कर्ता कपिल मुनिजी का कथन है कि एक देशीय ज्ञान का अनुभव यह सब प्रकृति के आधीन है। भोग प्रकृति का कार्य है इस लिये योग कल्पित है। संसार की उत्पत्ति, लय, सर्व प्रकृति याने माया के आधीन है और वह अनित्य है। माया का खेल देखने वाला विभु साक्षी ब्रह्म सत्य है। ऐसा आप सिद्ध करते हैं।

६—योग शास्त्र के निर्माता महर्षि पतञ्जलि का कथन है। कि ईश्वर मानना अनुभव मात्र है, प्रत्यक्ष नहीं। हम योग मार्ग से प्राण चढ़ा कर प्रत्यक्ष चैतन्य ईश्वर का अनुभव करते हैं। योग बिना ज्ञान नहीं होता है: इसलिए योग ही सत्य है, तस्माद्योगीभव, सब मिथ्या है।

नोट—इस ग्रंथ में बताई हुई विधि से तो प्राण स्वतः ही उतर आते हैं सोये हुए से जग जाने की भांति उसमें अन्देशा नहीं किन्तु किसी की विधि अन्य प्रकार की हो और प्राण ब्रह्माण्ड से न उतरे तो विधि यह है कि तालू के स्थान पर थपकी देवें प्राण उतर आवेंगे।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दूसरी रीति यह है कि पुरुष हो तो दाहिनी कान में और स्त्री हो तो उसके वांये कान में, ओ श्याम आओ, यह जोर से कह दे वस प्राण उतर आवेंगे ।

तिरस्कार तेरा करे, कर उसका सत्कार ।
जो तुझ से घृणा करे, उससे कर तू प्यार ॥
काहू ते कड़वों वचन, कहो न कवहू जान ।
तुरत मनुज के हृदय को छेदत है जिमि वान ॥

० अथ षट् प्रमाण वर्णन ०

तात्पर्य का निश्चय करने में इन छः प्रमाणों की आवश्यकता पड़ती है । १. उपक्रमोपसंहार, यह दोनों का एक हुआ । २. अभ्यास । ३. अपूर्वता । ४. फल । ५. अर्थवाद । ६. उपपत्ति । प्रमाण भूत श्लोक दिया जाता है ।

श्लोक—उपक्रमोंपसंहारावभ्यासोऽपूर्वता फलम् ।
अर्थवादोपपत्तीच, लिङ्ग तात्पर्य निर्णये ॥

० वेदांग निरुपण ०

वेदों के छः अंग हैं । १–शिक्षा । २–कल्प । ३–निरुक्त । ४–व्याकरण । ५–छन्द । ६–ज्योतिप ।

श्रुतिः—शिक्षा कल्पो निरुक्तः व्याकरण छन्दो ज्योतिषामिति ।
(छान्दोग्य)

अथ षट् दर्शन सार चित्र दिखलाते हैं :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अथ षट् दर्शन (शास्त्र) दर्शक पत्रम्

विषय	पूर्व मीमांसा	उत्तर मीमांसा (वेदान्त)	न्याय	वैशेषिक	सांख्य	योग दर्शन
प्रकट कर्ता	जैमिनी	वेदव्यास	गौतम	कणाद्	कपिल	पतञ्जलि
प्रधान काण्ड	कर्म काण्ड	ज्ञान काण्ड	ज्ञान काण्ड	ज्ञान काण्ड	ज्ञान काण्ड	उपासना
प्रमाण	षट् [६]	षट् (६)	प्रत्यक्ष, अनुमान उपमान शब्द (४)	प्रत्यक्ष, अनुमान (२)	प्रत्यक्ष, अनुमान शब्द (३)	प्रत्यक्ष अनुमान शब्द (३)
ख्याति	अख्याति	अनिर्वचनीय	अन्यथा	अन्यथा	अख्याति	अख्याति
उपयोग	चित्तशुद्धि	तत्त्वज्ञान पूर्वक मोक्ष	मनन	मनन	'त्वं, पदार्थ शोधन	चित्त एकाग्र
वन्ध हेतु	निषिद्ध कर्म	अविद्या	अज्ञान	अज्ञान	अविवेक	अविवेक
मोक्ष साधन	वेदविहित कर्म	ब्रह्मात्मैक्य ज्ञान	इतरभिन्नात्म ज्ञान	इतरभिन्नात्म ज्ञान	प्रकृति पुरुष विवेक	निर्विकल्प समाधि पूर्वक विवेक

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

० चारों वेदों का सार वर्णन ०

वेद चार हैं। १–ऋग्वेद। २–यजुर्वेद। ३–सामवेद। ४–अथर्ववेद विषय की दृष्टि से इन वेदों के तीन भाग हैं। १–कर्म काण्ड। २–उपासना काण्ड। ३–ज्ञान काण्ड और तीनों काण्डों में एक लाख श्रुतियाँ हैं। जिनमें ८० हजार श्रुतियाँ कर्म काण्ड का प्रतिपादन करती है तथा १६ हजार श्रुतियाँ उपासना काण्ड की हैं। तथा केवल ४ हजार ज्ञान काण्ड बतला रही है।

वेदों के उस ज्ञान काण्ड को ही ब्राह्मण भाग अथवा वेदान्त कहते हैं। और उन चार हजार में भी मुख्य महावाक्य तो चार ही हैं।

महावाक्यों के नाम—[१] अहं ब्रह्मास्मि (यजुर्वेद)

[२] तत्त्वमसि (सामवेद)

[३] प्रज्ञानं ब्रह्म (ऋग्वेद)

[४] अयमात्मा ब्रह्म (अथर्ववेद)

हे शिष्य! अज्ञान के कारण ही यह जीव अपने निज स्वरूप को भूल गया है।

घटोद के बिम्बितमर्कविम्बमालोक्य मूढो रविमेव मन्यते।
तथा चिताभासमुपाधि संस्थं भ्रान्त्याहमित्येव जड़ोऽभिमन्यते।

भावार्थ—जिस प्रकार मूढ़ पुरुष घड़े के जल में प्रतिबिम्बित सूर्य बिम्ब को देखकर उसे सूर्य ही समझता है, उसी प्रकार उपाधि में स्थित चिदाभास (जीव) को ही अज्ञानी पुरुष भ्रम से अपना आप ही मान बैठता है और दुखी हुआ परवस हो जाता है।

सिंह के एक दृष्टान्त से समझाते हैं।

० सवैया ०

एक दिना वन में वसिकें, मृगराज की नारि ने नाहर जायो।
काहू गड़रिये के हाथ पड़ो, तिसने वाहि भेड़न बीच छिपायो॥
भूलि गयो कुल कर्म सबै, जब स्यानो भयो तब दूब चरायो।
ऐसे ही आतम ज्ञान बिना, नर भूलि के ब्रह्म से जीव कहायो॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दृष्टांत—एक दिन वन में किसी सिंहनी ने सिंह को जन्म दिया, उस बच्चे को किसी गड़रिये ने लेकर भेड़ों में रख लिया। अब वह संग दोष से अपने कुल कर्म छोड़कर भेड़ों का दूध पीने लग गया और बड़ा होने पर घास खाने लगा। और अपने को भेड़ ही समझ कर भैं, भैं करने लगा। इसी प्रकार यह जीव भी माया रूपी गड़रनी के वस पड़ा हुआ बिना आत्म ज्ञान के ब्रह्माभाव से जीव भाव को भ्रम से प्राप्त होकर अपने को जीव मान कर दुखी हो रहा है। यह सुन कर शिष्य बोला कि—

श्लोक—भ्रमेणाप्यन्यथावास्तु, जीव भावः परात्मनः।
तदुपाधेरनादित्वान्नानादेर्नाश इष्यते ॥

हे गुरुदेव! भ्रम से हो अथवा किसी अन्य कारण से परमात्मा को ही जीव भाव की प्राप्ति हुई है; और उसकी उपाधि अनादि है; तथा अनादि वस्तु का नाश हो ही नहीं सकता तो फिर मुक्ति कैसे होगी -

० गुरुरुवाच ०

श्लोक—न योगेन न सांख्येन, कर्मणा नो न विद्यया।
ब्रह्मात्मैकत्व बोधेन, मोक्षः सिद्धयति नान्यथा ॥

भावार्थ—हे शिष्य! मोक्ष न योग से सिद्ध होता है ओर न सांख्य से न कर्म से और न विद्या से। वह केवल ब्रह्मात्मैक्य बोध [ब्रह्म और आत्मा के ज्ञान] से ही सिद्ध होता है और किसी प्रकार नहीं।

० आत्मा का स्वरूप वर्णन ०

श्रुतिः—तदेजति तन्नैजति, तद्दूरे तद्वन्ति के।
तदन्तरस्य सर्वास्य, तदुसर्वस्यास्य वाह्यतः ॥
[यजुर्वेद अ० १ मन्त्र ५]

वह आत्म तत्व चलता है और नहीं भी चलता। वह दूर है और समीप भी है वह सबके अन्तर्गत है और वही इस सबके बाहर भी हैं। तथा हे सोम्य! आत्मा [ब्रह्म] सच्चिदानन्द स्वरूप है। सत् = जिसका तीनों काल में भी नाश नहीं होता। चित कहिये चैतन्य है और आनन्द यानी महान आनन्द का स्वरूप है। यह सुनकर शिष्य बोला—

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वार्तिक—विज्ञेयं किमुवस्त्वस्ति स्वात्मनात्वविपश्चिता।
तो फिर बुद्धिमान् पुरुष किस वस्तु को अपना आत्मा माने।

• ० आत्म निरुपण गुरुरुवाच ०

श्रुति—आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेवतु।
बुद्धि तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रह मेव च।
(कठ, अ० १ बल्ली ३।३)

हे शिष्य—त्वं पद के अर्थ रूप इस जीवात्मा (आत्मा) को रथ का स्वामी रथी जान, शरीर-रथ, बुद्धि सारथी तथा मन लगाम है।

श्रुति—इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँ स्तेषु गोचरान्।
आत्मेनन्द्रि यमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥
(कठोपनिषाद् अ० १ व० ३।४)

इन्द्रियाँ घोड़े हैं, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पांचों विषय (गोचरान्) मार्ग हैं। विद्वान् पुरुष इन्द्रिय और मन से युक्त आत्मा को भोगने वाला ऐसा कहते हैं।

श्लोक—सर्वे ये नानुभूयन्ते, यः स्वयं नानुभूयते।
तमात्मानं वेदितारं, विद्धि बुद्धया सुसूक्ष्मया॥

भावार्थ— हे शिष्य! ये सब जिसके द्वारा अनुभव किये जाते हैं, और जो स्वयं अनुभव नहीं किया जा सकता, अपनी सुक्ष्म बुद्धि के द्वारा उस सबके साक्षी को ही तू अपनी आत्मा जान अब तुझे महावाक्य के आधार पर समझाता हूं यह सभी वेद वेदान्त का सार है।

० अथ महावाक्य विचार ०

तत्त्वमसि (सामवेद)

हे शिष्य ये 'तत् + त्वं+असि, तीन शब्द हैं सामवेद के।

दोहा—सामवेद के वचन है, तत्–त्व–असि–पद तीन।
जानों इनको अर्थ जिन, लियो सार तिन बीन॥

अर्थात—तत्—वह सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म और त्वं—कहिये तूही और असि माने है अर्थात शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म तू ही है, असत् जड़,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दुख रूप जीव नहीं है । क्योंकि कहा भी है कि—

चौ०—ईश्वर अंश जीव अविनाशी । चेतन अमल सहज सुख राशी ।

श्लोक—ममैवांशो जीव लोके जीव भूतः सनातनः [गीता]

अर्थात्—गीता, रामायण व सामवेद सभी कहते हैं कि जीव ही ईश्वर है । शंका—तव तो शिष्य बोला भगवान यह असत्—जड़—दुख रूप जीव ब्रह्म कैसे हो सकता है ।

उत्तर—गुरुजी बोले शास्त्र में जहति, अजहति तथा भोग त्याग ये तीन लक्षणायें आती हैं । अतः भाग त्याग लक्षणा से यहाँ पर एकता दर्शाते हैं। दृष्टान्तः

एक नगर में गुरु और शिष्य गये, वहाँ पर राजा देवदत्त को देखा हाथी के ऊपर सोने की अम्बारी पर वैठा है छत्र विराजमान है तथा चंवर ढल रहे हैं, सेना तथा गाजे बाजे रानियाँ सभी राज सामग्री साथ में है । उसी राजा को जब वैराग्य हो गया तब तो सब कुछ छोड़कर कोपीन लगा कमण्डल लेकर गंगा जी के रेते में लेट रहा था । फिर उन्हीं गुरु और शिष्य को मिल गया । गुरु बोले—हे शिष्य ! सोऽयं देवदत्तः यह वही राजा देवदत्त है । शिष्य बोला कि यह देवदत्त राजा नहीं है, क्योंकि देवदत्त तो हाथी की सवारी पर था सेना तथा रानियां उसके साथ में थी । किन्तु इसके पास तो कुछ भी नहीं है एक कोपीन व कमण्डल ही है । तब गुरु भाग त्याग लक्षणा से समझाने लगे कि छत्र, चँवर, रानी, सेना तथा हाथी की सवारी पहले के सभी सामान को त्याग दे, और इस समय के कौपीन व कमण्डल को भी त्याग कर, केवल शरीर मात्र को ही देख कि यह देवदत्त का ही शरीर है जो गंगा किनारे पर पड़ा हुआ है, तव तो शिष्य ने कहा बिल्कुल ठीक है, यही देवदत्त है । इसी तरह ब्रह्म का तो सत्—चित्—आनन्द स्वरूप और जीव का असत्—जड़—दुःख रूप दोनों को त्याग कर सत्ता मात्र से देखो दोनों एक ही हैं । इस प्रकार शिष्य अपने स्वरूप को जान कर सुखी हुआ ।

❖ कवित्त—यात्री दृष्टान्त ❖

यात्री दस चले शहर बीच नदी उतराव,

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तैर तैर पार भये पार भ्रम आयो है ।
जोई गिन देखे सोई आपे को न गिने,
एक डूब गयो जानि महा शोक उपजायो है ॥
और सभी पंथी आये न्यारे न्यारे समझाये,
गिन के दसों बताये तब सुख पायो है ।
तैसे सुकदेव गुरुदेव उपदेश करि,
तेरो ही स्वरूप पुनि तोहि समझायो है ।

ज्ञान के दो भेद हैं एक परोक्ष दूसरा अपरोक्ष ।

१ "अक्षेभ्य: परं, परोक्ष" अर्थात् आखों से परे यानी, सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म है । यह परोक्ष ज्ञान है ।

२—सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म मैं ही हूं ऐसा निश्चय अपरोक्ष ज्ञान है और वह भी दृढ़ और अदृढ़ भेद से दो प्रकार का होता है । अब उसे गुरु तथा वेद वाक्य से दृढ़ अपरोक्ष ब्रह्मज्ञान हो गया ।

महावाक्य अहं ब्रह्मास्मि [यजुर्वेद]

भावार्थ यानी—सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म मैं ही हूं असत्, जड़ तथा दु:ख रूप जीव मैं नहीं हूं ऐसा दृढ़ निश्चय हो गया ।

श्लोक—अहं ब्रह्मास्मि विज्ञानात् , कल्पकोटि शतार्जितम् ।
सञ्चितं विलयं याति, प्रबोधात्स्वप्न कर्मवत ॥

भावार्थ—मैं ब्रह्म हूं ऐसा ज्ञान होते ही करोड़ों जन्मों के संचित कर्म ऐसे नष्ट हो जाते हैं जैसे स्वप्न की अवस्था के कर्म जगने पर लीन हो जाते हैं ।

कवित्त

अहं ब्रह्मास्मि प्रथम दृढ़ निश्चय करि,
इदं सर्व अहं एक पुनि सत्य मानिये ।
वासुदेव सर्वमिदं भेदो नास्ति वास्तव,
अहं त्वं जीव, ईश कल्पना न आनिये ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अचल अन्नत सम सच्चिदानन्द घन,
अद्वितीय पूरण ब्रह्म अनुभव रूप जानिये ॥
तत्व का ज्ञान यही देव का ध्यान यही,
निर्भय राम आपको ही आप पहचानियै ॥

श्लोक—भिद्यते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि, तस्मिन्दृष्टेः परावरे ॥
[मुण्डकोपनिषद् २ खण्ड २ मं० ८]

भावार्थ—उस परिवार में दृष्टि के हो जाने पर हृदय की ग्रन्थि का भेदन हो जाता है, तथा सभी संशय निवृत्त हो जाते हैं और सभी कर्मों का क्षय हो जाता है ।

श्लोक—जीवात्मनोरैक्य मतो विचार्य, त्यागामृतं येहि पिवन्ति धीराः ।
ब्रह्मास्म्यहं वै प्रवदन्ति नित्यं, धन्या भवेत्ते खलु शान्ति भाजः ॥

भावार्थ—जीव तथा आत्मा की एकता के इस मत को विचार कर जो धीर पुरुष त्याग रूप अमृत का पान करते हैं, तथा मैं ही शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म हूं ऐसा नित्य कहते हैं वे शान्ति के पात्र हैं और वे ही धन्य हैं । ऐसा निश्चय कर कोई मुमुक्षु यह भजन बोला—

भजन

अहर्निश यही मंत्र मुख से पुकारो, अहं ब्रह्म अस्मि, अहं ब्रह्म अस्मि ।
सदा सच्चिदानन्द रूप विचारो, अहं ब्रह्म अस्मि, अहं ब्रह्म अस्मि ॥टेक॥
अखण्डेक आनन्द नित्याविनाशी, शिवं शाश्वतं शुद्ध शान्तं निराशी ।
निराकार मैं षट् विकारों से न्यारो, अहं ब्रह्म अस्मि, अहं ब्रह्म अस्मि ।
अहर्निश यही मंत्र ॥१॥
नहीं देह त्रय पञ्चकोषादि हूं मैं, नहीं लोभ मोहादि दोषादि हूं मैं ।
अजन्मा अमर शिव सदा निर्विकारी, अहं ब्रह्म अस्मि, अहं ब्रह्म अस्मि ।
अहर्निश यही मन्त्र ॥३॥
नहीं वर्ण आश्रम नहीं रंक राई, न हिन्दु मुसलमां न मैं हूं इसाई ।

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कहें 'गीतानन्द' शुद्ध मन से उच्चारो, अहं ब्रह्म अस्मि, अहं ब्रह्म अस्मि ॥
अहर्निश यही मंत्र ॥४॥

श्लोक—दृष्टि ब्रह्ममयी कृत्वा, पश्येद् ब्रह्म मयं जगत् ।
सादृष्टि परमौदारा, न नासाग्रावलोकनी ॥

भावार्थ—दृष्टि को ब्रह्ममयी, परमात्मामयी बनाकर पुनः समस्त संसार को ब्रह्ममय [सर्वं खल्विदं ब्रह्म] देखे। इस प्रकार की दृष्टि परम उदार है न कि नासिका के अग्रभाग को देखने वाली।

श्लोक—एहि वृत्ति समारूढा, परिपक्वा च सा पुनः ।
ते वै सत्पुरुषा धन्याः, वन्द्यास्ते भुवनत्रये ॥

भावार्थ—इस प्रकार की वृति बना कर उसे बढ़ावे और फिर भली भाँति परिपक्व करे क्योंकि जिनकी ऐसी वृति है वे ही सत्पुरुष धन्य हैं और तीनों लोकों के वन्दनीय हैं।

श्लोक—समाधिना साधु विनिश्चला मना ।
पश्यात्म तत्त्वं स्फुट वोध चक्षुसा ।
निःसंशयं समयग् वेक्षितश्चे -
च्छ्रुतः पदार्थो न पुनर्विकल्पते ॥

भावार्थ—समाधि के द्वारा भली प्रकार निश्चल चित्त और विकसित ज्ञान नेत्रों से इस आत्मतत्त्व को देखो, क्योंकि सुना हुआ पदार्थ निःसन्देह होकर भली भाँति देख लिया जाता है तो उसमें कोई संशय नहीं रहता।

❖ ज्ञान समाधि ❖

श्लोक—निरन्तराभ्यास शान्तदित्थं, पक्वं मनौ ब्रह्मणि लीयते सदा ।
तदा समाधिः सविकल्प वर्जित, स्वतोऽद्वयानन्द रसानुभावकः ।

भावार्थ—जिस समय रात दिन के अभ्यास से परिपक्व होकर मन ब्रह्म में लीन हो जाता है, उस समय अद्वितीय ब्रह्मानन्द रस का अनुभव करने वाली यह निर्विकल्प समाधि स्वयं सिद्ध हो जाती है।

श्लोक—देहाभिमाने गलिते, विज्ञाते परमात्मनि ।
यत्र-यत्र मनो याति, तत्र-तत्र समाधयः ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भावार्थ—जिसका देह अभिमान गलित हो गया है और परमात्मा का ज्ञान हो गया है कि सर्वत्र सबमें आत्मा ही व्यापक है, उसका जहाँ जहाँ मन जाता है वहीं वहीं पर उसकी समाधि है। क्योंकि उसका मन ब्रह्म विचार रूप ही हो गया है। कहा भी है कि—

◈ मन की ब्रह्म स्वरूपता—सवैया ◈

जो मन नारि की ओर निहारत, तो मन होत है ताहि को रूपा।
जो मन माया ही माया रटे तब, तो मन बूढ़त माया के कूपा॥
जो मन काहू सो क्रोध करे तब, क्रोध मयी ह्वै जाइ तद्रूपा।
सुन्दर जो मन ब्रह्म विचारत, तो मन होत है ब्रह्म स्वरूपा॥

श्लोक—सति सक्तो नरो याति सद्भावं ह्येक निष्ठया।
कीटको भ्रमरं ध्यायन्भ्रमरत्वाय कल्पते॥

एकाग्र चित्त से निरन्तर सत्स्वरूप ब्रह्म में स्थित रहने से मनुष्य ब्रह्मस्वरूप ही हो जाता है, जैसे भृंगी कीट का भय पूर्वक ध्यान करते करते कीड़ा भृंगी रूप हो जाता है।

◈ ज्ञान की सात भूमिकायें ◈

श्लोक—शुभेच्छा प्रथमा स्याद्वै द्वितीया सुविचारणा,
तनु मानसाहि तृतीयास्यातसत्त्वापत्तिश्चतुर्थिका।
पञ्चमा स्यादसंसक्तिःपदार्थाभावनीतथा,
सप्तमी तुर्या प्रोक्ता तुर्यातीत मतः परम्॥

भावार्थ—ज्ञान की सात भूमिकायें हैं शुभेच्छा, सुविचारणा, तनुमानसा सत्त्वापत्ति, असंसक्ति, पदार्था भावनी और तुर्या अवस्था।

१—शुभेच्छा-जन्म मरण संसार से छूटने और मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा शुभेच्छा है।

२—सुविचारणा-सत् असत् का विचार करना सुविचारणा है।

३—तनुमानसा-मन को तनु यानी सूक्ष्म करना निग्रहकरना तनुमानसा है।

४—सत्त्वापत्ति-सत्त्वगुण की वृद्धि का होना सत्त्वापत्ति हैं।

५—असंसक्ति-आसक्ति का कम हो जाना असंसक्ति है।

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

६—पदार्था भवानी-पदार्थों का अभाव होना ही पदार्थां भवानी है।
७—तुर्या-अर्थात् ज्ञान अवस्था को ही तुर्या अवस्था कहते हैं।
इस प्रकार विद्वान् ज्ञान की ७ भूमिकाएँ वर्णन करते हैं।

प्रश्न—वह परब्रह्म परमात्मा सब में रहते हुए भी सभी का रूप होते हुए निर्लेप कैसे है ?

◈ परब्रह्म बोधक श्रुतियाँ ◈

उत्तर—अब अग्नि के दृष्टांत से उस परब्रह्म परमेश्वर की व्यापकता और निर्लेपता का वर्णन करते हैं।

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो, रूपं रूपं प्रतिरूपो वभूव।
एकस्तथा सर्व भूतान्तरात्मा, रूपं रूपं प्रतिरूपो वहिश्च: ॥
(कठोपनिषद् अ० २ वल्ली २।६)

अर्थ—जिस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड में एक ही अग्नि नाना रूपों में उनके समान रूप वाला ही हो रहा है वैसे ही समस्त प्राणियों का अन्तरात्मा परब्रह्म एक होते हुए भो नाना रूपों में उन्हीं के जैसे रूप वाला (हो रहा है) और उनके वाहर भी है। (वही वात वायु दृष्टांग से कहते हैं)

वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो, रूपं रूपं प्रतिरूपो वभूव।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा, रूपं रूपं प्रतिरूपो वहिश्च: ॥
(कठ अ० २ वल्ली २ मं० १०)

अर्थ—जिस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड में प्रविष्ट एक (ही) वायु नाना रूपों में उनके समान रूप वाला ही हो रहा है वैसे (ही) सब प्राणियों का अन्तरात्मा परब्रह्म एक होते हुए भो नाना रूपों में उन्हीं के जैसे रूप वाला (हो रहा है) और उनके वाहर भी है।

इस मन्त्र में सूर्य के दृष्टान्त से परमात्मा की निर्लेपता दिखलाते हैं—

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न, लिप्यते चाक्षु षेवह्यिदोषै।
ऐकस्थता सर्वभूतान्तरातमा, न लिप्यते लोकदु:खैन वाह्य ॥
(कठ अ० २ व० २ मं० ११)

अर्थ—जिस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड का प्रकाशक सूर्य देवता लोगों की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आंखों से होने वाले बाहर के दोषो से लिप्त नहीं होता, उसी प्रकार सब प्राणियों का अन्तरात्मा एक परब्रह्म परमात्मा लोगों के दुखों से लिप्त नहीं होता, क्योंकि सबमें रहता हुआ भी सबसे अलग है ॥

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा, एकं रूपं बहुधा यः करोति ।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा—
स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् ॥
[कठ अ० २ व० मं० १२]

अर्थ—जो सब प्राणियों का अन्तर्यामी अद्वितीय एवं सब को वश में रखने वाला [परमात्मा] [अपने] एक ही रूप को बहुत प्रकार से बना लेता है उस अन्दर रहने वाले [परमात्मा] को जो ज्ञानी पुरुष निरन्तर देखते रहते हैं, उन्हीं को सदा अटल रहने वाला परमानन्द स्वरूप सुख [मिलता है,] दूसरों को नहीं ।

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनाना—
मेको बहूनां यो विदधाति कामान् ।
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा—
स्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् ॥
[कठ अ० व० २ मं० १३]

अर्थ—जो नित्यों का [भी] नित्य [है,] चेतनों का [भी] चेतन है [और] अकेला ही इन अनेक [जीवों] की कामनाओं का विधान करता है, उस अपने अन्दर रहने वाले [पुरुषोत्तम] को, जो ज्ञानी निरन्तर देखते रहते है, उन्हीं को सदा अटल रहने वाली शान्ति [प्राप्त होती है,] दूसरों को नहीं ।

एको देवः सर्व भूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्षः सर्वे भूताधिवासः साक्षी चेता केवलानिर्गुणश्च ॥

अर्थ—वह परब्रह्म एक प्रकाश स्वरूप सभी प्राणियों में आवृत सर्वत्र व्यापी भूतों का आत्मा कर्म फल दाता सभी प्राणियों का निवास स्थान सबका साक्षी, ज्ञान स्वरूप, सहाय शून्य निर्गुण है ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नतत्र सूर्योभाति न चन्द्र तारकं, नेमा विद्युतोभान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेवभान्तमनुभाति सर्वं तस्य भाषा सर्वमिदं विभाति ॥
(कठ अ० २ वल्ली ५ मं० १५)

अर्थ—वहाँ न तो सूर्य प्रकाशित होता है, न चन्द्रमा और तारों का समुदाय [ही प्रकाशित होता है] और न ये बिजलियाँ ही [वहां] प्रकाशित होती हैं, फिर यह [लौकिक] अग्नि कैसे [प्रकाशित] हो सकता है [क्योंकि] उसके प्रकाशित होने पर [उसी के प्रकाश से] ऊपर बतलाये हुए सूर्यादि सब प्रकाशित होते हैं, उसी के प्रकाश से यह सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित होता है।

० अथ सोऽहं ध्यान वर्णन ०

श्लोक—हकारेण बहिर्याति, सकारेण वसुत्पुनः।
प्राणस्तत्र स एवाऽहं, हंस इत्यभिधीयते ॥

अर्थ—श्वास जब बाहर जाता है तब हकार यानी मन्त्र का अर्द्ध भाग 'ऽहं' इस शब्द के साथ जाता है और सकार यानी सो इस शब्द के साथ अन्दर आता है। तत्र कहिये वहां पर सोऽहं इस प्रकार का जो प्राण है वह मैं ही सच्चिदानन्द स्वरूप हूं ऐसी भावना करे। इस प्रकार से उच्चारण किया हुआ मंत्र हंस [यानी श्रेष्ठ] है ऐसा कहा जाता है।

अब पंचदशी के आधार पर बोध की मोक्ष के हेतु प्रधानता दिखाते हैं।

० मोक्ष में आत्म बोध ही प्रधान हैं ०

श्लोक—वैराग्योपरति पूर्णे, बोधस्तु प्रतिवध्यते।
यस्य तस्य न मोक्षोऽस्ति, पुण्य लोकस्तपो बलात् ॥ [पंचदशी]

अर्थ—जिसके वैराग्य और उपरति ये दोनों साधन पूर्ण हों तथा आत्म-बोध नहीं हुआ हो, उसका मोक्ष नहीं होता। तपोबल से पुण्य लोकों की प्राप्ति हो जाती है।

पूर्णे बोधे तदन्यौ द्वौ, प्रतिवद्धोयदा तदा ।
मोक्षो विनिश्चतः किन्तु, दृष्ट दुःखं न नश्यति ॥

किन्तु जिसको बोध तो पूर्ण हो, और वैराग्य तथा उपरति नहीं भी हों तो उसका मोक्ष तो निश्चय ही हो जाता है किन्तु दृष्ट दुःख नष्ट नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

शंका—बिना वैराग्य और उपरति के बोध कैसे हो सकता है ?

उत्तर—जिन पुरुषों को बिना वैराग्य और उपरति के आत्मबोध हो जाता है उनके पिछले जन्म में वैराग्य तथा उपरति पूर्णतया किये होते हैं ।

० नानात्व निषेध ०

परिपूर्णमनाद्यन्तमप्रमेयविक्रियम् ।
एक मेवाद्वयं ब्रह्म नेह नानास्ति किञ्चन ॥

[श्रुति कहती है—] वास्तव में सर्वत्र परिपूर्ण अनादि, अनन्त, अप्रमेय और अविकारी एक अद्वितीय ब्रह्म ही है, उसमें और कोई नाना पदार्थ नहीं है ।

० निजस्वरूप प्रदर्शन : कवित्त ०

दीनता को त्याग नर आपनो स्वरूप देख,
तू तो शुद्ध ब्रह्म अज सर्व को प्रकाशी है ।
आपने अज्ञान ते जगत सब तू ही रचे,
सर्व को संहार करे आप अविनाशी है ॥
मिथ्या परपंच देखि दुःख जनि जानि जिय,
देवन को देव तू तो आप सुखराशी है ।
जीव जग ईश होय माया सें प्रभा से तुही,
जैसे रज्जु सांप सीप रूपा ह्वै प्रभासी है ॥

० आनन्द सिन्धु = सवैया ०

आनन्द के सिन्धु में आन बसे, तिनको न रह्यो तन को तपनो ।
जब आप में आप समाय गयो, तब आप में आप लह्यो अपनो ॥
जब आप में आप लह्यो अपनो, तब अपनो ही जाप रह्यो जपनो ।
जब ज्ञान के भान प्रकाश भये, जग जीवन होय रह्यो सपनो ॥

०कर्त्तव्य का निषेध तथा प्रपंच का बोध—इन्द्रव छन्द ०

नाहि ख पुष्प समान प्रपंच तो ईश कहां कर्ता जो कहावे ।
साक्ष्य नहीं इमि साक्षि स्वरूप न, दृश्य नहीं दृक काहि जनावे ।

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बन्धहु होय तो मोक्ष बने अरु, होय अज्ञान तो ज्ञान नसावे ।
जानि यही कर्त्तव्य तजे सब, निश्चल होत ही निश्चल पावे ॥

दोहा—यही चिन्ह अज्ञान को, जो मानै कर्त्तव्य ।
सोई ज्ञानी सुधर नर, नहि जाकूं कर्त्तव्य ॥

श्लोक—यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्चच मानवः ।
आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य मार्यं न विद्यते ॥(गीता अ० ३।१७)

अर्थ जिसका आत्मा में ही रति है, तथा जो आत्मा में ही तृप्त है, तथा आत्मा में ही नित्य सन्तुष्ट है, उसके लिए कोई कर्त्तव्य नहीं है।

० ज्ञानी की अचाहता ०

जाके हिये ज्ञान उजियारो, तम अन्धियारो खरो विनाश ।
सदा असंग एकरस आतम, ब्रह्मरूप सो स्वयं प्रकाश ॥
ना कछु भयो न है नहिं है जगत मनोरथ मात्र विलास ।
ताकि प्राप्ति निवृत्ति न चाहत, त्यों ज्ञानी के कोउ न आस ॥

० ज्ञानी निज को कर्त्ता नहीं मानता ०

नैव किञ्चित्करोमीति, युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यञ्श्रृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन् ॥८॥
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्त्तन्त इति धारयन् ॥९॥
[गीता अ० ५ श्लोक ८–९]

हे अर्जुन ! तत्व को जानने वाला साख्य योगी तो देखता हुआ, सुनता हुआ, स्पर्श करता हुआ, सूंघता हुआ, भोजन करता हुआ, गमन करता हुआ, सोता हुआ, श्वास लेता हुआ, बोलता हुआ, त्यागता हुआ, ग्रहण करता हुआ, तथा आंखों को खोलता और मीचता हुआ, भी सब इन्द्रियां ही अपने-अपने अर्थो में वर्त रही हैं, इस प्रकार समझता हुआ निःसन्देह ऐसे माने कि मैं कुछ भी नही करता हूं तथा और भी पंचदशी में कहा है कि—

देवार्चन स्नान शौचे, भिक्षादौ वर्ततां वपुः ।
तारं जपतु वाग्–यद्वा पठत्वाम्नाय मस्तकम् । [पंचदशी]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विष्णुर्ध्यायति धीर्यद्वा, ब्रह्मानन्दे विलीयताम् ।
साक्ष्यहं किञ्चदप्यत्र, नकुर्वे नापि कारये ।। [पंचदशी]

भावार्थ—चाहे यह शरीर देवार्चन करे, स्नान करे, शौच को जाय भिक्षादि में वर्ते, अथवा चाहे यह वाणी तारक मन्त्र का जाप करे, उपनिषदों का पाठ करे तथा बुद्धि विष्णु का ध्यान करे. या ब्रह्मानन्द में विलीन हो जावे किन्तु मैं तो यहां साक्षी भाव से हूं, न कुछ करता हूं न कराता हूं तथा विचार सागर में भी यही लिखा है कि—

० ज्ञानी का अकर्त्तापन ०

निज विषयन में इन्द्रिय वर्ते, तिनते नांही मेरो संग ।
मैं इन्द्रिय नहिं मम इन्द्रिय नहिं, मैं साक्षी क़ूटस्थ असंग ।।
त्यागहु विषय कि भोगहु इन्द्रिय, मोकूं लगे न रंचक रंग।
यह निश्चय ज्ञानी को याते, कर्त्ता दीखे करे न अंग ।।

० अथ लक्षणा वर्णन ०

लक्षण तीन हैं १—जहती २—अजहती ३—भाग त्याग लक्षणा। १—जिस स्थान में सम्पूर्ण वाच्य अर्थ को त्याग कर उसके सम्बन्ध की प्रतीति होवे वह जहती लक्षणा है जैसे कि—गंगामाँ घोष: प्रति वसति। अर्थ—गंगा में ग्राम बसा हुआ है, अत: गंगा जी के अन्दर तो जल का प्रवाह है वहाँ पर ग्राम वस नहीं सकता। इसलिये सम्पूर्ण अर्थ को त्याग कर सम्बन्धी का ग्रहण यानी उदाहरणार्थ—गंगा जी के किनारे पर ग्राम बसता है। यह ग्रहण करना जहती लक्षणा है।

२—अजहती लक्षण—जिसमें वाच्य [यानी कहा हुआ] अर्थ पूरा रहता है और अधिक का ग्रहण किया जाता है उसे अजहती लक्षणा कहते हैं उदाहरणार्थ जैसे १—शोण धावति २—काकेभ्यो दधिरक्षताम् ।

१—शोण धावति-अर्थ यानी लाल रंग दौड़ता है, तो यहां वाच्य अर्थ पूरा रहेगा और सम्बन्धी अधिक अर्थ का ग्रहण होगा यानी लाल रंग का घोड़ा दौड़ता है यह विशेष अर्थ मिला दिया जायगा क्योंकि लाल रंग का दौड़ना संभव नहीं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ख—काकेभ्यो दधि रक्षताम् 'अर्थ' कौए से दही की रक्षा करो यहाँ वाच्य अर्थ पूरा रहेगा किन्तु सम्बन्धी अधिक अर्थ भी लिया जायेगा । जैसे दही के अन्य नष्ट करने वाले, कुत्ते, बिल्ली आदि से भी दही की रक्षा करनी हैं केवल कौए से ही नहीं, सभी से रक्षा करने से दही की रक्षा होगी यह अजहती लक्षण है ।

३—भाग त्याग लक्षग—जिस पद के वाक्य अर्थ में एक भाग का त्याग और एक भाग का ग्रहण होता हैं, उसें भाग त्याग लक्षणा कहते है—जैसे पहले देखे हुए पदार्थ को या पुरुष को अन्य देश में देखकर यह कहना कि यह तो वही पुरुष है यह भाग त्याग लक्षणा है चाहे किसी भी रूप में क्यों न हो। भाग त्याग लक्षणा से जैसे समुद्र का जल यदि शीशी में रखा हो तो भी वह समुद्र ही हैं, शीशी के जल की लघुता और समुद्र की महानता दोनों का परित्याग करने पर जल रूप से दोनों एक ही हैं, इसी प्रकार जीव, ब्रह्म भी हैं। जीव के अल्पज्ञतादि दोष और ब्रह्म के सर्वज्ञ सर्वव्यापकतादि गुणों का, भाग त्याग लक्षणा से परित्याग करके सत्ता मात्र से जीव और ब्रह्म एक ही है ।

० आत्मानुभव का उपदेश ०

श्लोक—भवानपीदं परतत्त्वमात्मन; स्वरूपमानन्दधनं विचार्य ।
विधूय मोहं स्वमनः प्रकल्पितं, मुक्तः कृतार्थो भवतु प्रबुद्धः ।।

हे शिष्य! तुम भी आत्मा के इस परम तत्त्व और आनन्दघन स्वरूप का विचार करते हुए अपने मनः कल्पित मोह को छोड़कर मुक्त हो जाओ। और और अज्ञान निद्रा से जगकर कृतार्थ हो जाओ ।

० अथ बोधोपलब्धि ०

इति गुरु वचनाच्छ्रुति प्रमाणा -त्परमवगम्य सतत्त्वमात्मयुक्तया
प्रशमित करणः समाहितात्मा क्वचिदचला कृतिरात्म निष्ठितो ऽभूत् ॰

अर्थ—इस प्रकार गुरु के श्रुति प्रमाण युक्त बचन और अपनी युक्तियों द्वारा परमात्म तत्व को जानकर चित्त और इन्द्रियों के शान्त हो जाने से कोई एक शिष्य निश्चल वृति रुप में स्थित हो गया ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कश्चितकालं समाधाय. परे ब्रह्म णि मानसम्।
व्युत्थाय परानन्दादिदं वचनमब्रवीत् ॥

और कुछ देर तक पब्ररह्म में चित्त को समाहित कर फिर उस परमानन्दमयी स्थित से उठकर इस प्रकार वचन बोला —

श्लोक—सर्वाधारं सर्वं वस्तु प्रकाशं, सर्वाकारं सर्वग सर्वं शून्यम्।
नित्यं शुद्धं निश्चलं निर्विकल्पं, ब्रह्माद्वेतं यत्तदेवाहमस्मि ॥

जो सब का आधार, सब वस्तुओं का प्रकाशक सर्व रुप, सर्व व्यापी, सबसे रहित, नित्य शुद्ध, निश्चल और निर्विकल्प अद्वैत ब्रह्म हैं सो वही ब्रह्म मैं हूँ।

ब्रह्मै वाहं न संसारी, नचाहंब्रह्मणः पृथक।
नाहं देहो नमें देहः:, केवलोऽहं सदाशिवः ॥

अरे! मैं तो(शुद्ध) ब्रह्म ही हूं संसारी जीव नहीं हू, मैं ब्रह्म से पृथक नहीं हूं, (अरे) यह देह मैं नहीं हूं, और यह देह भी मेरा नहीं है। मैं तो केवल शिव रूप ही हूं।

◈ षट् ऊर्मियाँ ◈

क्षुधा पिपासा प्राणस्य, हर्ष शोक मनस्तथा।
जन्म मरण शरीरस्य, षट् ऊर्मी रहितः शिवः ॥

अरे! यह क्षुधा और पिपासा प्राण के धर्म हैं, तथा हर्ष और शोक ये मन के धर्म हैं, जन्म तथा मरण ये शरीर के धर्म हैं: मैं तो छहों उर्मियों से रहित सदा शिव स्वरूप ही हूं।

आत्म स्तोत्रम्

मनो बुद्धयहंकार चित्तानि नाहं,
नच श्रोत्र जिह्वै नच घ्राण नेत्रे।
नच व्योम भूमिर्न तेजो न वायु—
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥१॥

अरे! मैं (शुद्धात्मा)मन, बुद्धि, चित और अहंकार नहीं हूं। कान, जिह्वा, और नेत्र भी नहीं हूं, अकाश, पृथ्वी, तेज, जल और वायु भी नहीं हूँ किन्तु मैं चिदानन्द रूप शिव ही हूं शिव ही हूं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अहं प्राण वर्गो न वैपञ्च वायु—
नैवा सप्त धातुर्नवा पंचकोषाः ॥
न वाक्पाणि पादौ न चोपस्थ पायु—
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥२॥

मैं (प्रत्यगात्मा हूं) प्राणों का समूह नहीं हूं, मैं पञ्च वायु भी नहीं हूं तथा सत्त धातु, पंच कोश, वाणी, हाथ, पांव, शिश्न, और गुदा भी नहीं हूं किन्तु मैं तो चिदानन्द रूप शिव हूं, शिव हूं ।

न में राग द्वेषौ न मे लोभ मोहौ,
मदौ नैव मे नेव मात्सर्य भावः ।
नधर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष —
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं ॥३॥

मुझ में राग, द्वेष, लोभ, मोह, तथा मद और मात्सर्य का भाव नही है । मेरे लिये, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भी नहीं हैं । मैं तो केवल सच्चिदानन्द रूप शिव हूं, शिव हूं ॥३॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं,
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदो न अज्ञाः ।
अहं भोजनं नैव भज्यं न भोक्ता,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं ॥४॥

अर्थ —पुण्य-पाप, सुख-दुःख, मन्त्र, तीर्थ, वेद और यज्ञ आदि सब मेरे नहीं हैं। मैं न भोजन हूं और न भौक्ता हूं, किन्तु चिदानन्द रूप शिव हूं, शिव हूं ॥४॥

न मे मृत्यु शंका न मे जाति भेदः,
पिता नैव में नैव माता च जन्म ।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य—
चिदानन्द रूपः शिवौऽहं शिवोऽहम् ॥५॥

मुझे मृत्यु का भय नहीं है, मेरा जाति भेद नहीं है, न पिता है माता है, न जन्म है, न मृत्यु है, न वन्धु हैं, न मित्र है, और न गुरु है, न शिष्य है, अतः मैं चिदानन्द रूप शिंव हूं, शिव हूं ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अहं निर्विकल्पी निराकार रूपी,
विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणि ।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्ध—
चिदानन्द रूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम्।।६।।

भावार्थ—मैं निर्विकल्प और निराकार विभुत्व रूप हूं, तथा सर्वत्र सब इन्द्रियों में व्याप्त हूं। मुझ में सदा समता भाव रहा है, बन्ध और मोक्ष मेरे लिए नहीं हैं अत: मैं तो चिदानन्द रूप शिव हूं शिव हूं ।।६।।

◈ आत्म स्तोत्र का पद्यानुवाद भजन—◈

मन्त्र प्यारा जपो तजो मन का वहम् ।
शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं ।।टेक।।
बाल, नाखून, हड्डी न मैं चर्म हूं ।
कर्ता भोक्ता नहीं न क्रिया कर्म हूं ।।
भूमि आपो न वायु न अग्नि न खम ।।शिवोऽहं ।।१।।
थूक कफ पित्त पसीना न मै मांस हूं ।
मेद मज्जा रुधिर न क्षुधा प्यास हूं ।
जन्म मरने की मुझको न चिंता न गम ।।शिवोऽहं।।२।।
शुद्ध चेतन शिवो निर्विकारा हूं मैं ।
देह त्राय पंच कोशों से न्यारा हूं मैं ।
मैं न मरता न डरता न लेता जन्म ।।शिवोऽहं ।।३।-
सच्चिदानन्द घन मैं निराकार हूं ।
सारे जग का मैं ही एक आधार हूं ।
मैं हूं व्यापक अजन्मा अनादि परम् ।। शिवोऽहं ।।४।।
नाम रूपादि धर्मो से न्यारा हूं मैं ।
सारे कल्पित जगत का सहारा हूं मैं ।
पाप पुण्यादि सुख-दुख न मेरा धरम ।।शिवोऽहं।।५।।
'गीतानन्द' कहें मेरा वह देश है ।
वर्ण आश्रम का जिसमें नहीं लेश है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जिसमें लेना न देना न ज्यादा न कम ।।शिवोऽहं।।६।।

ब्रह्मनिष्ठ का फल

घटे नष्टे यथा व्योम, व्योमैव भवति स्फुटम् ।
तथैवोपाधि विलये, ब्रह्मैव ब्रह्मवित्स्वयम् ।।

घड़े के नष्ट होने पर जैसे घटाकाश महाकाश ही हो जाता है, वैसे ही उपाधि कर लय होंने पर ब्रह्म ही हो जाता है ।

श्रुति प्रमाण--ब्रह्मविद ब्रह्मैव भवति । अर्थात् ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म ही हो जाता है ।

श्लोक—सदात्मैकत्व विज्ञान दग्धा विद्यादि वर्ष्मण: ।
अमुष्य ब्रह्म भूतत्वाद्, ब्रह्मण: कुत उद्भव: ।।

ब्रह्म और आत्मा के एकत्व ज्ञान रूप अग्निसे अविद्या जन्य शरीरादि उपाधि के दग्ध हो जाने पर तो यह ब्रह्म वेत्ता ब्रह्म रूप ही हो जाता है और ब्रह्म का फिर जन्म कैसा ?

प्रमाण श्रुति—न तस्य प्राणा ह्युत्क्रामन्ते तत्रैव ।
प्रविलीयन्ते ब्रह्मैव सन् ब्रह्मैव भवति ।।

अर्थ—उस ब्रह्मवेत्ता के प्राण लोकान्तर में गमन नहीं करते वहीं पर विलीन हो जाते हैं, अर्थात ब्रह्म के साथ मिलकर ब्रह्म ही हो जाता है ।

प्रश्न—तो फिर ज्ञानी का व्यवहार कैसे होता है ।

उत्तर–ज्ञानी का व्यवहार निरूपण

प्रारब्ध कर्म परिकल्पित वासनाभि, ।
संसार विच्चरति भुक्तिषु मुक्त देह: ।। (इत्यादि)

भावार्थ—यानी मुक्त पुरुषों का शरीर प्रारब्ध कर्म से कल्पित, वासनाओ द्वारा संसारी पुरुष के समान नाना भोगों को भोगता है ।

स्रोतसो नीयते दारु, यथा निम्नोन्वत स्थलम् ।
दैवेन नीयते देहो, यथा कालोपभुक्तिषु ।

जैसे जल के प्रवाह से लकड़ी ऊँचे नीचे स्थानों में वहा ले जाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जाती है उसी प्रकार दैव के द्वारा ही उसका शरीर समयानुकूल भोगों को प्राप्त करता है । उसी ज्ञान को प्राप्त करके इन पांचों ज्ञानियों के व्यवहार प्रारब्ध कर्म भिन्न-भिन्न होने के कारण पृथक-पृथक ही हुए ।

कृष्णोभोगी शुकस्त्यागी राजानौ जनक राघवौ ।
वशिष्ठ: कर्म कर्त्तास्यात् पञ्चैते ज्ञानिन: समा: ॥

जैसे कृष्ण भगवान ने योगी होते हुए भी बहुत सी रानियों का उपभोग किया । तथा उसी ज्ञान को प्राप्त कर शुकदेव जी सर्व त्यागी हुए, तथा भगवान राम और राजा जनक इन्होंने राज-काज युद्धादि आचरण किये । तथा वशिष्ठ जी इसी ज्ञान को पाकर आजीवन कर्म-काण्डी ही बने रहे, किन्तु व्यवहार भिन्न-भिन्न होते हुए भी ज्ञान में पांचों बरावर ही थे ।

आरब्ध कर्म नानात्वादवुधानामन्मथान्यथा ।
वर्तनं तेन शास्त्रार्थे भ्रमितव्यं न पण्डितै ॥ (पंचदशी)

आरब्ध कर्म भिन्न-भिन्न होने के कारण विद्वानों का अन्यथा-अन्यथा आचरण होता है, अतः शास्त्र के अर्थ में पंडितों को भ्रम नहीं करना चाहिए ।

पद्य—बोध यदपि है एक भिन्न प्रारब्ध बना है ।
जैसा है प्रारब्ध प्रज्ञ वर्ते तैसा है ॥
कोई मांगे भीख राज्य कोई है करता ।
कोई दे उपदेश ध्यान कोई है धरता ॥
भोला तजि सन्देह दे भेद न किञ्चित मान रे ।
आत्म में सब देख रे आत्मा में सब जान रे ॥

ज्ञानी की रहनि—हरिगीत छन्द

१—कहिए किसे ज्ञानी कहें, विषयी जगत् में कौन है ।
कैसे करे व्यवहार ज्ञानी, बोलता या मौन है ॥
जन्मादि बन्धन जगत् के, किस युक्ति से वह काटता ।
है रहनि ज्ञानी की अजब, ज्ञानी हि उसको जानता ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

२—कहिं ध्यान योगी आत्म दर्शन चाहता है ध्यान से ।
कहिं भक्ति योगी मोह वश, उन्मत्त हो रोवे हँसे ॥
कहिं कर्म योगी कर्म से ही मुक्त होना चाहता ।
है रहनि ज्ञानी की अजब, ज्ञानी ही उसको जानता ॥
३—करता शुभाशुभ कर्म कहता, ये सभी निष्काम हैं ।
ये कृष्ण अर्पण हो चुके, इनसे मुझे क्या काम है ॥
अपनी अनेकों कल्पनायें दूसरे की मानता ।
है रहनि ज्ञानी की अजब, ज्ञानी हि उसको जानता ॥
४—सद्गुरु मिले ज्ञानी हमें, नहिं मुक्ति अब कुछ दूर है ।
हमने सुना सब जगत् में एक आत्म ही भरपूर है ॥
मैं ब्रह्म हूं, है लक्ष, सोंहं की हि बन्सी फूँकता ।
है रहनि ज्ञानी की अजब, ज्ञानी हिउसको जानता ॥
५—रहता दिगम्बर वेश में घर ग्राम को दुःॐ जानता ।
जग कीं न रक्खे चाह वह, नित मौंन में सुख मानता ॥
तो भी कुटी से प्रेंम करता, पुत्रं नारी त्यागता ।
है रहनि ज्ञानी कीं अजब, ज्ञानी ही उसको जानता ॥

क्वचिन्मूढ़ो विद्वान् क्वचिदपि महाराज विभवः,
क्वचिद्भ्रान्तः सौम्यः क्वचिद् जगराचार कलितः
क्वचित्पात्री भूतः क्वचिद् वमोः क्वाप्यविदिति—
श्चरत्येवं प्राज्ञः सतत परमानन्द सुखिनः ॥

अर्थ—ब्रह्मवेत्ता महापुरुप कहीं मूढ़ कहीं विद्वान्, ओर कहीं पर राजा महा राजाओं के ठाठ वाट से युक्त दिखाई देता है। वह कहीं भ्रान्त, कहीं शान्त ओर कहीं अजगर के समान निश्चल भाव से पड़ा दीख पड़ता है। इस प्रकार निरन्तर परमानन्द में मग्न हुआ विद्वान् कहीं सम्मानित, कहीं अपमानित और कहीं अज्ञात रह कर अलक्षित गति से विचरता है।

शुष्क पर्णवत् ज्ञानी की रहनि

दो०—भ्रमण करत ज्यों पवन ते सूखो पीपर पात ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

शेष कर्म प्रारब्ध ते क्रिया करत दरशात ॥१॥
दो०—कबहुंक चढ़ि रथ बाजि गज बाग बगीचे देखि।
नग्न पाद पुनि एकले फिर आवत तेहि लेखि ॥२॥
दो०—विविध वेश शैय्या शयन. उत्तम भोजन भोग।
कबहुंक अनशन गिरिगुहाँ, रजनि शिला संयोग ॥३॥
दो०—करि प्रणाम पूजन करत, कहुं जन लाख हजार।
उभय लोकते भ्रष्ट लखि, कहत कर्मि धिक्कार ॥४॥
दो०—जो ताकी पूजा करत, संचित सुकृत सो लेत।
दोष दृष्टि तिहिं जों लखे, ताहि पाप फल देत ॥५॥
दो०—ऐसे ताके देह को, विना नियम व्यवहार।
कबहुं न भ्रम सन्देह ह्वै, लह्यो तत्त्व निरधार ॥६॥
दो०—नहिं ताको कर्त्तव्य कछु भयो भेद भ्रम नाश।
उपज्यो वेद प्रमाण ते, अद्वय ब्रह्म प्रकाश ॥७॥

ज्ञानी

१—कोऊ चाहत मुक्ति को कोऊ मुक्ति शरीर।
भोग मोक्ष दोऊ तजे बिरले मति धीर ॥
२—चाह न जीवन मरण की, तजे पदारथ चार।
ना कछु तजैं न संग्रहै, ते बिरले संसार ॥
३—लाभ न जाके होन तें, मिटे नहीं कछु हानि।
धन्य तात ते सन्त जन सुखी रहत यह जानि ॥
४—छीन दृष्टि जगते भई, इन्द्रिय तजे विकार।
ना कछु गहे न तजि सके, छीन भयो संसार ॥
५—स्तुति निन्दा सब तजे, हरष शोक कछु नाहिं।
मुक्त महा सुख मे रहे, लेनदेन के माहिं ॥
६—काम न सुन्दर नारि लखि, मृत्यु देखि भय नाहिं।
ज्ञानी हरष विषाद तजि, रहे अचल सुख माहिं ॥
७—सुख- दुख संपति विपत्ति सम, शत्रु मित्र कछु नाहिं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ज्ञानी गुन औगुन तजे, समदरसी सब माहिं ॥

The UPnishads are the sources of the Vedant philosophy.

अर्थात उपनिषदें वेदान्त दर्शन के आदि श्रोत हैं।

◈ उपनिषद् सिद्धान्त ◈

१—ब्रह्म सगुण निर्गुण तथा, निराकार साकार ।
परमात्मा परमेश विभु, विश्व-विश्व आधार ॥

२—प्रणव यज्ञ यज्ञेश सब, प्रकृति पुरुष पर वेद ।
भेद रहित नित भेदमय; संयुत भेदाभेद ॥

३—सर्व रूप शुचि सर्वमय, शाश्वत सर्वातीत ।
शुद्ध सत्त्व पुनि त्रिगुण मय, यद्यपि त्रिगुणातीत ॥

४—नारायण नरसिंह श्री कृष्ण, राम गोपाल ।
सूर्य शक्ति गण नाथ शिव, रुद्र स्वयम्भू काल ।

५—नाम रूप लीला विविध, तत्त्व एक वेदान्त ॥
वाणी मन मति से परे, औपनिषद् सिद्धान्त ॥

शिष्य विदा

श्लोक—इति श्रुत्वा गुरोर्वाक्यं, प्रश्रयेण कृतानतिः ।
स तेन समनुज्ञातो ययौ निर्मुक्त बन्धनः ॥

भावार्थ—गुरुदेव से ऐसे वचन सुनकर शिष्य ने उन्हें नम्रता पूर्वक प्रणाम किया और संसार बन्धन से मुक्त होकर गुरु जी की आज्ञा पाकर चला गया।

गुरुदेव सदानन्द सिद्धौ निर्मग्न मानस :
पावयन्वसुधां सर्वा विचार निरन्तरम् ॥

और गुरुदेव भी सच्चिदानन्द समुद्र में मग्न मन हुए सम्पूर्ण पृथ्वी मण्डल को निज उपदेश से पवित्र करते हुए निरन्तर विचरने लगे।

—◈◈—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

।। अभिनन्दन-पत्र ।।

अनन्त श्री विभूषित महामण्डलेश्वर
विश्वगुरु जी महाराज के प्रति
कन्या पाठशाला तिनसुकिया आसाम की ओर से सादर समर्पित

हे गुरुवर श्री विश्व गुरु जी दीनबन्धु सुखकारी।
भक्ती भाव जगादो हममें पाप पुन्ज भय हारी ।।
आज विश्व है स्वार्थ लिप्त यह मानव भटक रहा है।
निज कर्त्तव्यों से च्युत हो पथभ्रष्ट प्रसुप्त महा है ।।
परम ब्रह्म परमेश्वर का नहीं स्वप्न में धरता।
क्या करता है क्या पायेगा नहीं भावना भरता।।
हे ब्रह्मनिष्ठ अरु परम तपस्वी धीर वीर अविकारी।
जन--जन में नव ज्योति जगादो परमानन्द हितकारी ।।
गूंजे अमर कीर्ति तव जग में पावन मंगल कारी ।
मृदु मंगल मय विश्व बने यह जन मन रंजन कारी ।।
गंगा जी के पावन तट पर वेद धाम के सृष्टा।
सत्य सनातन वेद विज्ञ अरु ज्ञान भक्ति के दृष्टा ।।
अखिल विश्व कल्याण हेतु तव कीर्ति पताका फहरे।
वेद निकेतन पद पंकज को धोती गंगा लहरे।।
प्रति भाषित हो कण-कण में हे सद्गुरु तुम्हारी वाणी।
पुनः प्रतिष्ठित जग में हो भारत की अमर कहानी ।।
विश्व गुरु की यह मर्यादा भारत फिर पा जाये।
तव चरणों में नमन प्रभो यह जीवन लहराये ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

◈ अभिनन्दन पत्र ◈

अनन्त श्री विभूषित महामण्डलेश्वर

विश्वगुरु जी महाराज के प्रति

उद्योग नगर तिनसुकिया (आसाम) के समस्त नागरिकों की
ओर से सादर समर्पित

मंगल कारी गुरु के चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।
अज्ञान तिमिराच्छादित हिय में, बन्दन करते सकुचाता हूं ॥
वेद मर्मज्ञ महा तपस्वी, त्याग मूर्ति से लगते हो।
परम शान्ति की प्राप्ति हुई, अज्ञान तिमिर को हरते हो ॥
रवि-रश्मि सदृश तव ज्ञान सूक्ति, अज्ञान तिमिर को दूर करे।
पावन होकर मम जीवात्मा, परमानन्द मन मोद भरे ॥
हे परम तपस्वी ब्रह्मनिष्ठ, एकाग्र चित्त सन्यासी।
मेरे जीवन घट में भर दो, ज्ञान-भक्ति की राशी ॥
मेरे मानस में दया-भाव का, आजस्र स्रोत वहा दो।
स्वयं भूल जाऊँ मैं जिसमें, सुविमल भक्ति जगा दो ॥
काव्य कुसुम के इन हारों में, मनोभाव सौरभ अर्पित।
हे त्याग मूर्ति तुव चरणों में, है यह अभिनन्दन-पत्र समर्पित ॥

भेंट कर्ता—
धर्मप्रेमी समस्त सज्जनवृन्द
तिनसुकिया (आसाम)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

◈ वेद निकेतन धाम के प्रति शुभ कामना ◈

रचियता—श्री धर्मदेव जी आचार्य विद्या मार्तण्ड [देवमुनि वानप्रस्थ]
आनन्द कुटीर, ज्वालापुर (हरिद्वार)

ऐसा धाम हो वेद निकेतन ॥

वेद पठन को आये जहाँ पर, देश-विदेशों के सज्जन ।
जहाँ रात-दिन बड़े प्रेम से, हो परमेश्वर का कीर्तन ॥१॥ ऐसा धाम

खुले यहाँ ऐसा शुभ गुरुकुल, हों नैष्टिक ब्रह्मचारी ।
वेद प्रचार निमित्त लगा दें, जो अपना सब तन मन धन ॥२॥ ऐसा धाम

साधक आवें दूर–दूर से, त्यागी और तपस्वी ।
योगाभ्यास करें श्रद्धा से, ईश प्राप्ति की होय लगन ॥३॥ ऐसा धाम

बने यज्ञशाला अति सुन्दर, वैदिक यज्ञों से सुरभित ।
भव्यभावना से परिपूरित, होवे सब का ही जीवन ॥४॥ ऐसा धाम

गौशाला में रहें दुधारू, हृष्ट पुष्ट सब गौवें ।
जिनका दुग्ध पान करके हो, पुष्ट सभी का ही शुभ मन ॥५॥ ऐसा धाम

विमल तरंगें गंगा जी की, मन में उज्ज्वल भाव भरें ।
शीतलता ऐसी छा जावे, करें प्रेम से सभी भजन ॥६॥ ऐसा धाम

उच्च लक्ष्य से पूर्ण विश्वगुरु जी महाराज की यह रचना ।
शीघ्र पूर्ण हो दिव्य शान्ति को पावे यह सारा त्रिभुवन ॥७॥ ऐसा धाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

◈ ऋषिकेश के प्रति प्रेम ◈

रचयिता श्री धर्मदेव जी आचार्य (देवमुनि वानप्रस्थ)
आनन्द कुटीर, ज्वालापुर (हरिद्वार)

मुझे प्रेम क्यों ऋषिकेश से, इतना मैं यह नहि जानूँ ।
मास मास में एक वार पर, आये विना नहीं मानू ॥१॥
हिम से आवृत उन्नत पर्वत, निर्मल सलिला सुरसरिता ।
इनका आकर्षण महान है, प्रभु आकर्षण यह मानूँ ॥२॥
ये रमणीय दृश्य अति सुन्दर, मेरे मन को हरते हैं ।
इनमें शंकर का कर लखकर, कष्ट न मैं कोई मानूँ ॥३॥
लगता मुझे कि पूर्व जन्म में, मैंने यहां तपस्या की ।
प्रथम दर्श में भी अतिपरिचित, मैं इन दृश्यों को मानूँ ॥४॥
ऋषि मुनियों ने करी तपस्या, विरजानन्द महात्मा ने ।
कण कण में उनके प्रभाव की, पुण्यभूमि को मैं जानूँ ॥५॥
ब्रह्म तत्त्व के चिन्तन में मैं, पाता यहां विशिष्टानन्द ।
इसका विशेष कारण क्या है, स्वयं न मैं इसको जानूँ ॥६॥
नहीं जानना यह आवश्यक, मेरा अनुभव ही पर्याप्त ।
भागा-भागा जो आता हूँ, अन्तर प्रेम इसे मानूँ ॥७॥
उसके ही पावन चिन्तन में, मैं दिन रात निमग्न रहूँ ।
उससे बढ़कर नहीं प्रेम का. केन्द्र किसी को मैं मानूँ ॥८॥
जीवन अपना धन्य बनाऊं, ज्ञानानन्द शान्ति को पा ।
पर उपकार परायण निशिदिन, आत्मतुल्यं सबको मानूं ॥९॥
सरिता को पर्वत तरुओं को, सबको हंसता पाता हूं ।
मैं भी निशिदिन हँसता रहता, मंगलमय को मैं जानूं ॥१०॥
गंगातट पर यहां बना है, सुन्दर वेद निकेतन धाम ।
इसे विश्वगुरु जी महाराज, के तप का ही फल मानूँ ॥११॥

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्री विश्वगुरु जी महाराज के चरणों में सादर समर्पित

'वहादुरचन्द' मेहता व मित्र मण्डल, जोधपुर के सम्पूर्ण सदस्यों द्वारा

भजन : विश्वगुरू हो तो ऐसा हो

मचादी धूम दुनियां में विश्वगुरु हो तो ऐसा हो ॥
कहेंगे खरी-खरी वातें विश्वगुरु हो तो ऐसा हो ॥
विश्वगुरु जी महाराज तो हिमालय खण्ड से आये।
दिखाते सत्य मार्ग को "शेर" नर हो तो ऐसा हो ॥
किया ब्रह्मचर्य का पालन जगत का स्वाद सब त्यागा।
वताते वेद मन्त्रों को कि "मुनिवर" हो तो ऐसा हो ॥
जगाया जोधपुर को भी पड़ा सोता था गफलत में।
गया हुआ धर्म फिर आया मुकद्दर हो तो ऐसा हो ॥
मोक्ष का मार्ग वतलाते हमें कुछ ज्ञान सिखाते हैं।
ऋषी, योगी, गुणी, ज्ञानी, "तपेश्वर" हो तो ऐसा हो ॥
दास 'वहादुर' तो विश्वगुरु जी के चरणों का चाकर है।
ये कहता "मित्र मण्डल" गुरुदेव हो तो ऐसा हो ॥

अभिनन्दन-पत्र समर्पित

जोधपुर में श्री गीता जयन्ती महोत्सव के शुभ अवसर पर

दि० १२-१२-६७ को श्री गङ्गश्यामजी के मन्दिर में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

परमपूज्य महामण्डलेश्वर

श्री विश्वगुरु जी महाराज

वेद निकेतन धाम स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश (हिमालय)

कुण्डलियां

सत भाषी साहसी सजग, शीतल जैसे चन्द ।
सीधे सरल स्वभाव के सन्त मुनीशानन्द ।।
सन्त मुनीशानन्द, चार वेदों के ज्ञाता ।
योग-यज्ञ प्रचार करन में हैं विख्याता ।।
करम वीर उत्साह युक्त, ऐसे साधु चन्द हैं ।
सीधे सरल स्वभाव के, संत मुनीशानन्द हैं ।।
वेद भवन निर्माण हित, भ्रमत फिरत चहुं देश ।
जनता के कल्याण हित, आन कहत ऋषिकेश ।।
कहत आन ऋषिकेश, साधना योग करन से ।
आत्म ज्ञान को होय, जिज्ञासा गुरु चरनन से ।
है आदेश वेदान्त को मिटते जिससे द्वन्द हैं ।
सीधे सरल स्वभाव के, सन्त मुनीशानन्द हैं ।।
अन्न-जल-पुण्य प्रभाव से, मरुथल पहुंचे आप ।
महेश ख्याति की भूमि पै, की व्याख्या बेलाप ।।
की व्याख्या बेलाप, श्याम के मन्दिर जाई ।
सत्संग भवन विराज, 'कथा' की धूम मचाई ।।
श्री गीता का उत्सव किया, रहत आप निर्द्वन्द हैं ।
'अम्बा' सरल स्वभाव के, सन्त मुनीशानन्द हैं ।।

प्रकाशक व प्रचारक:
वीर जुगराज बोहरा 'गोभक्त'
भू. पू. सदस्य नगरपरिषद्
जोधपुर

रचयिता :
सेवक—अम्बालाल जौहरी
[सत्संग भवन] सरदारपुरा,
जोधपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्री विश्वगुरु जी महराज का अभिनन्दन—जोधपुर

सब राजन के राज गुरु महाराज बड़े उपकारी ॥
मैं बार वार वलिहारी ॥ टेक ॥
जिस ओर गुरुवर जाते हैं, कलियुग में सतयुग लाते हैं।
दर्शन को आते दौड़ दौड़ नरनारी ॥ मैं वार ॥१॥
घर घर में धर्म फैलाया है, प्राणियों को प्रेम सिखाया है।
नहीं तो चलती खटपट की तेज कटारी ॥ मैं बार ॥२॥
घर बार से नाता तोड़ दिया, पत्नी सुत को भी छोड़ दिया।
भर यौवन में दुनियाँ को ठोकर मारी ॥ मैं वार ॥३॥
लाखों में एक ही साधू है, बोली पर चलता जादू है।
वाणी है आपकी अमृत से भी प्यारी ॥ मैं वार ॥४॥
श्री मुनीशानन्द जी जन्म लिया, सब भक्तों का कल्याण किया।
अभिनन्दन होवे जय जय देव तुम्हारी ॥ मैं वार ॥५॥

भजन

हे गुरुदेव दयानिधि स्वामी, आपको मैं किस भांति रिझाऊँ ॥टेक॥
तन मन धन सब नश्वर जग में, कौन वस्तु सेवा में लगाऊँ।
वेद शास्त्र सब आप पढ़ायें, केहि विधि स्तुति गाय सुनाऊँ ॥१॥
जन्म मरण का फन्द छुड़ाया, आप से उरिण नहीं हो पाऊँ।
प्रेम का पुष्प ध्यान का दीपक, चित्त चरणों में भेंट चढ़ाऊँ ॥२॥
ऐसी कृपा करी गुरुदेवा, घर बैठे आनन्द मनाऊँ।
ब्रह्मज्ञान अमृत बरसाया, अनुभव करके मगन हो जाऊँ ॥३॥
सब शास्त्रों का सार बताया, घट में ज्ञान का दीप जलाऊँ।
ज्ञान प्रकाश हुआ घट भीतर, मूल अविद्या दूर हटाऊँ ॥४॥
स्वयं प्रकाश साक्षी चेतन कर अनुभव तुरिया पद पाऊँ।
तीन गुणों से अतीत आत्मा, तीन अवस्था का साक्षी कहाऊँ ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दृष्टा दर्शन दृश्य जगत का, उपदृष्टा को मैं ही रहाऊँ।
ऐसा ज्ञान दिया गुरुदेवा, वाणी से कहने नहीं पाऊँ ॥६॥
सद्गुरु विश्वगुरुजी महाराज, आपके चरण कमल सिर नाऊँ।
"सुमन देवी" की अरज यही है, जनम मरण में कबहुँ न आऊँ ॥७॥

उपदेश सूत्र=श्री विश्वगुरु जी से प्राप्त

१—धनवान बनने की इच्छा न करो सुखी बनने की इच्छा करो, धन थैलियों में रहता है और सुख सन्तोष में, जिसे धन नहीं पा सकता।

२—चार बातों में मनुष्य का कल्याण है :— १—वाणी के संयम में २—अल्प निन्द्रा में, ३—अल्प आहार में, ४—भगवत्स्मरण (आत्मचिन्तन) में।

३—क्रोध दिलाने पर भी चुप रहना, बड़ी भारी बुद्धिमानी और महान महत्त्व का लक्षण है। मौन में ही सारी शक्ति भरी है।

४—हृदय की सरलता और निर्मलता ही ईश्वरीय ज्योति है, वह ज्योति ही ईश्वरीय मार्ग को दिखलाती है।

५—जो श्रद्धा और भक्ति से भगवान् का पल्ला पकड़ता है, भगवान् उसका समस्त भार अपने कन्धों पर उठाते हैं।

६—आत्मरति का अर्थ है अपने आप में ही बिना मन के और बिना बुद्धि के क्रीड़ा करना।

७—जो अन्तःकरण रूपी चश्मे को उठाकर देखता है उसे सर्वत्र परमात्मा ही भासता है।

८—मैं का अर्थ आदमी नहीं है, मैं का अर्थ सबका अधिष्ठान आत्मा है, अहं के बिना इदं की प्रतीति नहीं होती।

९—अपने अधिष्ठान को भूल कर अपना अस्तित्व अलग अनुभव करना, इसी को अहं भाव या सीमित ज्ञान कहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

१०–अपने अधिष्ठान का विस्मरण हो जाना ही अज्ञान है। जिसका विस्मरण है, उसका स्मरण हो जाय और सीमित अहंभाव का ज्ञान हो जाय, अर्थात् अहंभाव गल जावे, यही अपना नित्य स्वरूप है।

अनन्त श्री विभूषित महामण्डलेश्वर विश्वगुरु जी महाराज के वेद विहित उपदेश एवं आज्ञायें

इन उपदेश एवं आज्ञाओं का पालन करने से मुक्ति अवश्य होगी

पहला— सत्य बोलो और दूसरों को सत्य बोलने की प्रेरणा दो।

दूसरा— सद्ग्रन्थों का नित्य स्वाध्याय करते रहो।

तीसरा—किसी के साथ छल एवं कपट का व्यवहार मत करो।

चौथा— संसार को मिथ्या समझो तथा उसमें आसक्त मत हो।

पाँचवाँ—कल्याणकारी भगवान् का नाम सदैव लेते रहो। जितना वन सके।

छठा— दीन एवं दुःखी जनों की सहायता सदैव करते रहो।

सातवाँ—ऐसी वाणी मत बोलो, जो दूसरों को कष्ट देने वाली हो।

आठवाँ—आलस्य को त्याग कर प्रबल पुरुषार्थी वनो।

नौवाँ— परमात्मा हमें देख रहा है, ऐसा समझ कर बुरे कर्मों से बचो।

दसवाँ— वेद के बताये हुये मार्ग पर चलो, एवं वैसा ही आचरण करो।

ग्यारहवाँ–इसी जीवन में मुक्ति मिल जाये ऐसी साधना करो।

श्री गुरुदेव भगवान् की=जय हो॥ श्री वेद भगवान् की=जय हो। श्री सच्चिदानन्द भगवान की=जय हो। श्री वेदनिकेतन धाम की=जय हो। गंगा मैया की=जय हो। सब सन्तों की=जय हो, सब भक्तों की=जय हो। आज के आनन्द की=जय हो॥

॥ हर हर महादेव ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

॥ जय विश्वगुरु ॥

विश्वगुरु प्रार्थना

हे पूरण परमात्मा, पावन हों जीवात्मा ।
विश्व बने धर्मात्मा, सुखी रहें सब आत्मा ॥

विश्व कल्याण योजना

विश्वव्यापी-चरित्र निर्माण आन्दोलन

वेद निकेतन धाम (सिद्ध पीठ) का परिचय

संस्थापक

अनन्त श्री विभूषित महामण्लेश्वर विश्वगुरु जी महाराज
वेदनिकेतन धाम (सिद्ध पीठ) विश्वगुरु नगर पोस्ट स्वर्गाश्रम
वाया ऋषिकेश उत्तराखण्ड (हिलालय) फोन : २७९
तार—विश्वगुरु स्वर्गाश्रम

॥ ॐ जय विश्वगुरु ॥

विश्व कल्याण योजना

(विश्वव्यापी चरित्र निर्माण आन्दोलन)

विश्वगुरु नगर वेद निकेतन धाम परिचय

अनन्त श्री विभूषित विश्वगुरु जी महाराज (मुनीशानन्द जी)
की पवित्र प्रेरणा से

वेदनिकेतन धामं विश्वगुरु नगर में १०८ गुफायें, ५०१ कमरे, विश्वगुरु-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विद्यालय, विश्वगुरु चिकित्सालय (अस्पताल) विश्वगुरु पुस्तकालय, विश्वगुरु आदर्श गोशाला, वेदमन्दिर, भागीरथ कुण्ड इत्यादि रचनात्मक जगत का निर्माण हो रहा है।

वेद निकेतन धाम की अन्य (७) सप्त शाखायें

१– बद्रीनाथ धाम, २– गंगोत्री धाम, ३– उत्तर काशी, ४– गुप्तकाशी ५– देव प्रयाग, ६– काशी, ७–वृन्दावन धाम।

इन पुण्य स्थानों पर आश्रम बनाने की योजना है। इन स्थानों पर आश्रम बनाने वाले दानी सज्जनों के पत्र प्रायः आते रहते हैं। दानी महानुभाव आगे लिखे पते पर ही पत्र व्यवहार करें।

प्रेमी सज्जनो! आज समस्त विश्व में अशांति फैली हुई है। दशों दिशाओं में दुःख ही दुःख छाया हुआ है। जिसको कम करने के लिए अस्पताल एवं मनोरंजन के विभिन्न साधन जुटाए गए। किन्तु दुःख कम नहीं हुआ। वरन् दिन दूना रात चौगुना बढ़ता ही जा रहा है। इन सब दुःखों को दूर करने का एक मात्र साधन है योग!

योग से चरित्र निर्माण, शक्ति एवं शान्ति मिलती है। जिसके द्वारा सुन्दर समाज का निर्माण होकर राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण होगा।

योगो भवति दुःखहाः—योग सब दुःखों को दूर करने वाला है।

कोई तन दुःखी, कोई मन दुःखी, कोई धन हित रहत उदास।
सुखी वही हो पायेगा, जो करे योगाभ्यास॥
मन अपने को मारले, करले योगाभ्यास।
जिससे ये सब इन्द्रियां, बनी रहें तब दास॥

भव तापेन तप्तानां योगहि परमौषधम्
भवतापों से दुःखी प्राणियों के लिए योग ही परम औषधि है।

विश्व शिक्षक योजना

विश्व को शिक्षा देने हेतु सभी विद्यालयों के इच्छुक छात्र एवं छात्राओं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्यापकों, व्यापारियों, कृषकों एवं सद्गृहस्थों को भी निःशुल्क शिक्षित किया जायेगा।

वे शिक्षक सभी पुत्र, पुत्रियों, सम्बन्धियों एवं मित्रों को सिखायेंगे। समय समय पर ऐसे शिविर लगते रहेंगे।

शिक्षा काल :—कम से कम एक सप्ताह, एक पक्ष या एक मास, अधिक से अधिक छः मास, एक वर्ष तथा बारह वर्ष तक भी होगा। लम्बी शिक्षाओं के मध्य में गृह कार्य के लिए अथवा साधना के लिए बीच में भी घर जा सकेंगे।

विश्वगुरु विद्यालय

यह विद्यालय ऋषिकुल प्रणाली से होगा। जिसमें ऐसे विद्यार्थियों के प्रशिक्षण एवं शिक्षा हेतु व्यवस्था की जायेगी जिनके माता पिता उन्हें विश्वकल्याणार्थ सेवाओं के लिए आजीवन दान में दे देंगे।

ऐसे जीवन दानी विद्यार्थी ४ से ६ वर्ष की आयु के होंगे। जो कि आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे। यह विद्यार्थी ऋषि प्रणाली द्वारा वेदाध्ययन एवं चारों प्रकार के योग की भी शिक्षा प्राप्त करेंगे। तथा संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी, जर्मनी, जापानी, रूसी, चीनी, मराठी, गुजराती, तेलगू पंजाबी, मारवाड़ी इत्यादि भाषाओं के ज्ञान से परिपूर्ण होकर आधुनिक वैज्ञानिकों को मिलाकर ज्ञान और विज्ञान के साथ विश्व का आध्यात्मिक एकीकरण करेंगे। ज्ञान सहित विज्ञान अलौकिक अनुसन्धानों द्वारा विश्व में सुख शांति स्थापित करेगा। जो कि समस्त राष्ट्र व विश्व के लिए आवश्यक है।

इन विद्यार्थियों का आहार धारोष्ण गौ दूध एवं फल ही होगा। तथा अन्न साधारण मात्रा में दिया जायेगा।

विद्यार्थियों के प्रशिक्षण एवं निवास हेतु भवन निर्माण भी होगा। जिस के एक कमरे [स्नानघर शौचालय सहित] की लागत ८००१ रु० होगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दानी महानुभाव विशेष विवरण आगे देखें। अवैतनिक एवं सेवा कार्य करने वाले अध्यापक तथा अध्यापिकायें भी सम्पर्क करें।

विश्वगुरु आदर्श गौशाला

विद्यार्थियों के दुग्धपान के लिए तथा सार्वजनिक हितार्थ वृहद एवं आधुनिक ढंग की आदर्श गौशालाएं बनाने की योजना है। जिससे भारतभूमि को अपनी प्राचीन स्थिति पर लाया जा सके। जैसा कि प्राचीन समय में दूध घी की नदियां बहती थीं। इसी का वास्तविक रूप लाने के लिए देश विदेशों से अच्छी नस्ल की दुधारु गोओं को विशेष प्रकार से तैयार किया गया चारा घास इत्यादि दिया जायेगा।

जैसा कि प्राचीन युग में श्री कृष्ण भगवान की बांसुरी की धुन पर गौयें मुग्ध हो जाती थीं। उसी के आधार पर परीक्षण तथा अनुसन्धान (Research) विभिन्न स्थानों पर हो रहा है। जिससे सिद्ध हुआ है कि संगीत की ध्वनि गौओं के निकट होने से उसका दूध बढ़ जाता है।

अतः ऐसे ही आधुनिक एवं वैज्ञानिक ढंग से गौओं के लिए व्यवस्था की जायेगी इन सब साधनों के साथ साथ गौओं के निवास स्थान में ऐसी जालियां लगा दी जायेंगी। जिनसे गौओं को शुद्ध वायु मिलती रहे। परन्तु उन को मक्खी मच्छर आदि न सतायें।

इस प्रकार विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर आदर्श गौशालाओं की स्थापना की जावेगी। जिससे सर्वसाधारण को शुद्ध, दही, मक्खन तथा घी इत्यादि कम मूल्य पर मिल सकें।

इन गौशालाओं का दूध निःशुल्क चलने वाले विभिन्न चिकित्सालयों विद्यालयों, अनाथ आश्रमों, सैनिकों के परिवारों तथा लूले, लंगड़े, अपाहिजों इत्यादि को बिना मूल्य बांटा जाया करेगा।

गोदान ५०१), १००१), तथा २००१) तक किया जा सकता है। तथा गौशाला की भूमि के सुधार, व्यवस्था एवं चारा घास उगाने के लिए दान देने वाले महानुभाव विशेष विवरण आगे देखें। तथा पत्र व्यवहार करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विश्वगुरु अस्पताल (चिकित्सालय)

चार प्रकार के अस्पताल (चिकित्सालय) खोले जायेंगे। इनमें विभिन्न पद्धतियों का समन्वय करके एक नवीन प्रणाली निकाली जायेगी। जहां रोगों के निदान के साथ-साथ अनुसंधान कार्य भी होगा। निम्न चार प्रकार के अस्पताल खोले जायेंगे।

यौगिक एवं प्राकृतिक अस्पताल—आज की सांसारिक स्थिति को देखते हुए प्राकृतिक चिकित्सालयों की स्थापना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि अब अधिकांश लोग कृतिम जीवन से ऊब कर प्रकृति की ओर वापस आने लगे हैं।

अतः प्राकृतिक चिकित्सालयों की स्थापना भी अत्यन्त आवश्यक है। पौराणिक युगों में तो प्रत्येक गृहस्थ के परिवारों में पूर्ण ज्ञान रहता था। जिस से विभिन्न रोगों का निदान तो स्वयंमेव ही कर लेते थे तथा प्रकृति के सम्पर्क में रहने से रोगों से बचे भी रहते थे। उसी प्रथा को घर घर पहुंचाने हेतु प्राकृतिक चिकित्सा का व्यापक प्रचार भी किया जायेगा। जिससे उसे सर्वसाधारण के लिए उपयोगी बनाया जा सके तथा इच्छुक व्यक्तियों को ट्रेनिंग भी दी जायेगी। ऐसे चिकित्सालय जिनमें यौगिक क्रियाओं तथा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से रोगों का निदान किया जावेगा, उचित एवं अनुकूल स्थानों पर ही बनाये जायेंगे। चिकित्सालय हेतु सहयोग देने वाले सज्जन पत्र व्यवहार करें। तथा लागत दरें आगे देखें।

२. आयुर्वेदिक चिकित्सालय:—जैसा कि वेदों में स्वयं भगवान की वाणी द्वारा आयुर्वेदिक चिकित्सा का वर्णन किया गया है। अतः आयुर्वेदिक पद्धति के चिकित्सालयों की स्थापना करके अनुभवी वैद्यों द्वारा रोगों का निदान होगा।

तथा हिमालय की जड़ी-बूटियां प्राप्त करके कुशल व्यक्तियों द्वारा स्वच्छता का पूर्ण ध्यान रखते हुए औषधियां तैयार की जायेगी। एवं सस्ते मूल्य में सर्व साधारण के लिए उपलब्ध होगी।

३. ऐल्योपैथिक अस्पताल:—इस प्रकार के अस्पतालों में बड़े-बड़े

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आपरेशन, एक्सरे तथा दुर्लभ औषधियों की सुलभता हेतु अनुसन्धान कार्य एवं विभिन्न रोगों का निदान भी किया जायेगा।

इन अस्पतालों की ओर से समय-समय पर निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आदि लगाये जायेंगें। जिनसे दीन हीन जनता का कल्याण हो।

इस प्रकार के पुण्य कार्यों में सभी का सहयोग वांछनीय है। विशेष विवरण हेतु पत्र व्यवहार करें। तथा भवन निर्माण की लागत दरें आगे देखें।

४. होम्योपैथिक अस्पताल :—इस पद्धति के अस्पतालों को जगह-जगह स्थापित किया जायेगा। तथा अनुभवी डाक्टरों द्वारा हर प्रकार के रोगों का निदान किया जायेगा। इसके साथ-साथ अनुसन्धान कार्य भी होगा।

इन विभिन्न पद्धतियों के समन्वय से एक नयी सुलभ प्रणाली का आविष्कार किया जावेगा। तथा प्रत्येक अस्पताल में निःशुल्क व्यवस्था होगी। एवं समय-समय पर निःशुल्क शिविर, सुरक्षा सैनिकों के लिए एवं उनके परिवारों के लिए विशेष व्यवस्था, बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों तथा किसी रोग ग्रस्त क्षेत्र में शिविर इत्यादि लगाकर निःस्वार्थ सेवा करना ही मुख्य लक्ष्य होगा।

इस निमित्त अवैतनिक सेवा कार्य करने वाले डाक्टर, वैद्य, नर्स, कमपाउन्डर तथा अन्य कार्यों में निपुण महानुभाव सम्पर्क करें। भवन निर्माण औषधियों तथा अन्य कार्यों में सक्रिय सहयोग देने वाले दानी सज्जन पत्र व्यवहार करें।

विश्वगुरु पुस्तकालय

इसमें ४ वेद ६ शास्त्र, १०८ उपनिषदें, गीता, रामायण, महाभारत, सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द जी के समस्त ग्रन्थ, गुरु नानक देव जी कृत गुरु ग्रन्थ साहिब, सूरदास, कबीरदास, मीरा, ईसामसीह, जैन धर्म, बौद्धमत, विवेकानन्द, रामतीर्थ. पलटू, दादू, महर्षि मेंटी, अखण्डानन्द जी, शिवानन्द जी ...िकजी, विश्वगुरु मुनीशानन्द, ब्रह्मानन्द एवं समस्त विश्व के ग्रन्थ होंगे तथा उनकी मूर्तियां एवं झांकियाँ भी बनायी जायेंगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इस पुस्तकालय में हस्त लिखित ग्रन्थ तथा दुर्लभ ग्रन्थ भी एकत्रित किये जायेंगे। जिन्हें भेंट स्वरूप देने वाले सज्जन सम्पर्क करें। तथा मूल्य देकर भी ऐसे अन्य ग्रन्थ लिये जायेंगे।

पुस्तकालय हेतु सहयोग देने वाले दानी महानुभाव लागत दरें आगे देखें।

विश्वगुरु वेद मन्दिर

यह मन्दिर पण्ढरपुर के दक्षिण ढंग से ११ मंजिल का बनाया जायेगा। जिसमें वेद भगवान विराजमान होंगे। तथा सभी देवता, भक्त, ऋषि, मुनि, अवतार, संत महात्मा, तुलसीदास, सूरदास, गौतम बुद्ध, गुरु नानक, विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ इत्यादि महापुरुषों की मूर्तियां स्थापित की जायेंगी। तथा ११ मंजिल शिखर पर विशाल शिवलिंग की स्थापना की जायेगी। जिसके दर्शन मीलों दूर से किये जा सकेंगे। इस मन्दिर के प्रवेश द्वार विलक्षण होंगे। प्रत्येक प्रवेश द्वार पर किसी पशु जैसे हाथी का मुँह इतना बड़ा बनाया जायेगा कि उससे होकर प्रवेश होगा। इसी प्रकार सिंह, अजगर, मछली, मगर इत्यादि के मुख से होकर आने-जाने का मार्ग बनाया जायेगा।

इस मन्दिर में एक ओर प्रवेश तथा दूसरी ओर से निकास होंगे तथा अन्दर का सारा मार्ग मूर्तियों, वेद मन्त्रों, गीता के श्लोकों एवं रामायण जैसे ग्रन्थों के सम्पूर्ण पाठ से ओतप्रोत होगा। विभिन्न आकर्षक झाँकियाँ सजीव रुप से बनायी जायेंगी। एक झाँकी की लागत ५००१), एक प्रवेश द्वार की लागत ५००१) तथा १ कक्ष (मंजिल) की लागत २५००१) होंगे। विशेष विवरण आगे देखें।

विश्वगुरु अन्न क्षेत्र

(स्थापित संवत् २०३०, सन् १९७३)

श्री गंगा जी के पावन तट पर उत्तराखण्ड हिमालय, विश्वगुरु वेद निकेतन आश्रम में भिक्षा की व्यवस्था करने हेतु अन्न क्षेत्र स्थापित किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यह उत्तराखण्ड हिमालय सदा सर्वदा से ऋषि, मुनि, योगी, यती, साधू, सन्यासियों की तपो भूमि रहा है। यहाँ पर श्री शंकर भगवान ने कैलाश पर, श्री राम जी ने देव प्रयाग, श्री लक्ष्मण जी ने लक्ष्मण झूला, श्री भरतजी ने ऋषिकेश, श्री शत्रुघ्न जी ने मुनी की रेती, गोरक्षनाथ, मच्छन्दर नाथ जी ने वर्गाश्रम, कर्ण ने कर्ण प्रयाग, तथा वशिष्ठ जी, व्यास जी, भारद्वाज जी, अत्रि जी, विश्वामित्र जी, गौतम जी, जमदग्नि जी, कश्यप जी, गुरुनानक देव जी, स्वामी रामतीर्थ जी आदि महा पुरुषों ने तपश्चर्या की है। तथा आज भी श्री गंगा जी के पावन तट पर एवं हिमालय पर्वत की कन्दराओं, गुफाहों. खोहों में अनेक साधू, सन्त, ऋषि, मुनि महात्मा, तपश्चर्या कर रहे हैं। उनकी भिक्षा के लिए अथवा अन्धे, लूले, लंगडे, अपाहिज विधवाओं, अनाथों की भिक्षा के लिये विश्वगुरु अन्न क्षेत्र खोल दिया गया है। इसकी स्थायी समिति भी बना दी गयी है।

गुफाओं, कन्दराओं, खोहों, में ध्यान एवं स्वाध्याय करने वाले विद्यार्थी एवं सन्तों की विशेष व्यवस्था की जाती है। जिसमें आप सभी का योगदान वांछनीय है।

भागीरथ कुण्ड की रचना

श्री गंगा जी की धारा निकाल कर वेद निकेतन धाम के सामने हर की पैड़ी का दृश्य बनाया जायेगा। जिसमें संगमरमर द्वारा निर्मित घाट होंगे। तथा पुरुष एवं महिलाओं की व्यवस्था अलग-अलग होगी।

इस कुण्ड में जल का प्रवाह एक ओर से तथा निकास दूसरी ओर से निरन्तर होता रहेगा। जिससे जल शुद्ध बना रहे। इसके बीच में गंगोत्री का एक मन्दिर भी बनाया जायेगा तथा शिव लिंग की स्थापना होगी।

कुण्ड के चारों ओर संगमरमर का बड़ा प्लेटफार्म बनाया जायेगा। जिसके ३ × ३ मीटर के संगमरमर का निर्माण लागत १०७१) विशेष विवरण आगे देखें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भूमि दान योजना

श्री गंगा जी के पावन तट पर आदर्श गौशाला, विश्वविद्यालय, वे मन्दिर, अस्पताल इत्यादि के लिए १०० बीघा भूमि लेने की विशाल योजना है।

१ बीघा भूमि की लागत ५०१) है। दानी महानुभाव जितनी भूमि दान करना चाहे उतनी धनराशि अग्रिम ही भेजें। तथा विशेष विवरण हेतु पत्र व्यवहार करें।

वृक्षा रोपण योजना

विश्वगुरु नगर में वृक्षा रोपण की भी योजना है। उचित एवं आवश्यक स्थानों पर सुन्दर-सुन्दर वृक्ष लगाये जायेंगे। तथा सुन्दर पार्क भी जगह-जगह बनाये जायेंगे।

१ आम के वृक्ष के लिये ५१) होंगें। जो सज्जन फल वाले वृक्ष-फूल वाले पौधे इत्यादि भी देना चाहे वे भेज सकते हैं। विशेष दानी महानुभाव सम्पर्क करें।

विश्वगुरु मुद्रणालय

इस मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रेस) में आफसेट प्रिंटिंग की मशीनें लगायी जायेंगी। जिनसे मासिक पत्रिका विभिन्न दुर्लभ ग्रन्थ, वेदों का सरल भाष्य गीता, रामायण इत्यादि का प्रकाशन होगा।

विश्वगुरु ट्रस्ट की ओर से "विश्वगुरु सन्देश" मासिक पत्रिका शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। यह पत्रिका विभिन्न भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, जर्मन, रूसी इत्यादि भाषाओं में भी प्रकाशित होगी।

विभिन्न दुर्लभ ग्रन्थ जो प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं। उन्हें भी प्रकाशित किया जायेगा। वेदों का सरल भाषा में भाष्य करके विभिन्न देश-विदेश की भाषाओं में प्रकाशन होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इसका मुख्य उद्देश्य सुन्दर, सरल, सस्ता साहित्य उपलब्ध कराना ही है। सहयोग हेतु दानी महानुभाव सम्पर्क करें।

विद्यार्थियों के निवास एवं प्रशिक्षण हेतु योगाभ्यास तथा गृहस्थ यात्रियों निवास के लिए ५०१ कमरे १०८ गुफायें विद्यालय, पुस्तकालय, छात्रावास आदर्श गौशाला, यज्ञशाला, सत्संग भवन, गंगाघाट आदि बन रहे हैं। बद्रीनाथ धाम में भी आश्रम बनाया जा रहा है। निर्माण कार्य की लागत दरें न हैं :—

बद्रीनाथ धाम एवं गंगोत्री धाम में निर्माण की लागत दरें:—

१ स्पेशल कमरा रसोई, स्नान, शौचालय सहित लागत ········२१००१)

१ साधारण कमरा, बराण्डा सहित १०००१), १ छोटा कमरा ५००१)

वेद निकेतन धाम में हर की पौड़ी का दृश्य-गंगा जी की धारा निकालकर प्रवाहित भागीरथ कुण्ड की रचना :—

भागीरथ कुण्ड में तीन वर्ग मीटर के संगमरमर के फर्श की लागत १००१)

श्री गंगा जी का मन्दिर भागीरथ कुण्ड के अन्दर २५००१)

एकादश (११) मंजिल ऊँचा भव्य वेद मन्दिर १ मंजिल की लागत ;;

१ झांकी की लागत ५००१) प्रत्येक प्रवेश द्वार की लागत ५००१)

भूमिदान योजना—आदर्श गौशाला में हरा चारा एवं वृक्ष लगाने हेतु १ बीघा भूमि की लागत ५०१)

वृन्दावन, काशी, वेदनिकेतन धाम, स्वर्गाश्रम ऋषिकेश में निर्माण की निम्नलिखित लागत दरें हैं :—

१ स्पेशल भवन ५३ × १२ के ३ कमरों का फ्लैट, स्नानगृह, रसोई, फ्लश शौचालय, स्टोर, पार्क सहित लागत २२००१)

१ बड़ा कमरा १३ × १२ के २ कमरों का फ्लैट स्टोर, स्नानगृह, रसोई शौचालय पार्क सहित लागत ११५०१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

१ कमरा १३ X १२ स्टोर, रसोई, स्नानगृह, शौचालय सहित

१ कमरा ११ X ९ रसोई, स्नानगृह, शौचालय

१ कमरा १०॥ X ८॥ वरान्डा सहित लागत

१ सत्संग भवन ६० X १०० बरान्डा सहित लागत

१ विश्व विद्यालय ४ वेद ६ शास्त्र व अष्टांग योग की शि लागत

१ वेद मन्दिर चारों वेदों सहित लागत

१ गंगाजी के घाट के हिस्से की लागत ५००१) ११००१

१ गंगाजल प्याऊ की लागत

१ पानी की टंकी की लागत

१ गौदान ५०१) १००१)

१ नल लगवाई

१ बैंच मारबल की लागत

१ पंखा व विद्युत प्रकाश

१ तख्त पोश

१ दरी बड़ी

१ बर्तनों का सैट १ थाली २ कटोरी १ गिलास

१ रजाई, गद्दा, चादर, तकिया लागत

१०१ दान देने वालों का नाम भी कीर्तिस्तम्भ दिया जाता है।

यदि इस पुण्य कार्य में आप कोई आर्थिक सहयोग देना ... पते पर ही भेजें।

पता—अनन्त श्री विभूषित महामण्डलेश्वर विश्वगुरु ज... संस्थापक श्री वेद निकेतन धाम, विश्वगुरु नगर पो० स्वर्गाश्र... ऋषिकेश (हिमालय) फोन २७९ तार-विश्वगुरु स्वर्गाश्र...

—:*:*:—

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

ic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

ath, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundatio

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon